परिवार आकार निर्धारण में जनमाध्यमों की भूमिका : इलाहाबाद जनपद के प्रभाती अध्ययन स्वरूप के संदर्भ में

("Role of Mass-Media in family size Determination- A study of effectivity pattern in Allahabad District")

(इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल्० उपाधि के लिये प्रस्तुत)

शोध-प्रबन्ध

अनुसन्धाता

अरुण कुमार बांका

एम०ए०, पी०जी०डी०जे०, ए०आर०

निर्देशक

डा० बी० के० त्रिपाठी

रीडर

अर्थशास्त्र विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद

1993

श्रद्धेय स्वर्गीय पिताश्री की स्मृति में समर्पित

अन्तर्विषयः अनुक्रम

प्राक्कथन

जनसंख्या किसी भी देश के आर्थिक विकास का प्रमुख निर्धारक कारक होती है । भारत जैसे विकासशील देश में तीव्र जनसंख्या वृद्धि में कमी लाने के लिए, लोगों को छोटा परिवार आकार सिद्धान्त स्वीकारने के लिए, सरकार के विभिन्न जनमाध्यमों का सहारा लिया है । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के द्वारा जनसामान्य में छोटा परिवार आकार सिद्धान्त स्वीकारने एवं उन्हें प्रेरित करने में जनमाध्यमों की भूमिका का, इलाहाबाद जनपद के संदर्भ में अध्ययन किया गया है ।

यद्यपि अध्ययन के द्वारा जनसामान्य में लोगों के विभिन्न जनांकिकी चरों पर उनके विचारों में आये परिवर्तन एवं तथा उनके प्रेरित होने का विश्लेषण किया गया है, और अधिक से अधिक निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया गया है । किन्तु इस विषय पर और अधिक शोध की आवश्यकता राष्ट्रीय स्तर पर आवश्यक है, जिससे कि जनमाध्यमों को क्षेत्रानुसार और अधिक प्रभावी बनाकर लोगों को छोटा परिवार आकार रखने के लिये प्रेरित किया जा सके, जो कि देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण प्रयास होगा ।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निर्देशन के लिए मैं अपने निर्देशक डा० बी०के० त्रिपाठी जी के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मार्गदर्शन कर शोध कार्य में उचित निर्देशन दिया । मैं प्रो० वी०के०आनन्द, विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय का आभारी हूँ जिनका निर्देशन मुझे सदैव प्राप्त होता रहा । इसके साथ ही विभाग के प्रो० पी०एन० मेहरोत्रा, प्रो० कृष्ण लाल, प्रो० डी०एस० कुशवाहा, डा० प्रह्लाद कुमार, डा० जगदीश नारायन, डा० राजकिशोर द्विवेदी, डा० ए०के०सिंह एवं डा० जी०सी० त्रिपाठी का भी मैं आभारी हूँ जिनसे समय-समय पर उचित मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा । मैं इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मास कम्युनिकेशन दिल्ली के सहयोग तथा प्रो० राज बावेजा, निदेशक कमला नेहरू हास्पीटल एवं डा० पी०सी० सक्सेना एसोसिएट प्रोफेसर कार्डियोलाजी विभाग मेडिकल कालेज के उचित मार्गदर्शन के लिए आभारी हूँ । मैं अपनी माताश्री के आर्शीवाद तथा परिवार के समस्त सदस्यों के अमूल्य योगदान के कारण ही यह कार्य पूर्ण कर सका । मैं अपने सहयोगी कोशलेन्द्र प्रताप जायसवाल का भी आभारी हूँ जिनके सहयोग से ही यह कार्य पूर्ण हो सका ।

आपका

अरुण कुमार बाँका

(अरुण कुमार बाँका)

दिनांक - 20-12-93

अध्याय-1 : प्रस्तावना

CHAPTER-I : INTRODUCTION

अध्याय - 1

प्रस्तावना : (INTRODUCTION)

1.1 शोध अध्ययन की प्रकृति, आवश्यकता एवं महत्व (NATURE, NEED AND SIGNIFICANCE OF THE RESEARCH STUDY)

जनसंख्या किसी भी देश के आर्थिक विकास की साधन एवं साध्य होती है। अर्थशास्त्र में जनसंख्या दो भूमिकायें निभाती हैं - प्रथम यह श्रम शक्ति के माध्यम से उत्पादन का साधन बनकर आती है। दूसरी ओर जनसंख्या ही अर्थशास्त्र की समस्त क्रियाओं का अन्त भी हैं, क्यों कि आर्थिक क्रियाओं का उद्देश्य अपनी जनसंख्या का अधिकतम् कल्याण करना होता है। अधिकतम् कल्याण की स्थिति तब ही संभव हो सकती है, जब उस देश की जनसंख्या वहां के प्राकृतिक एवं अन्य उपलब्ध संसाधनों के समानुपाती हो ।

आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू जनाधिक्य की समस्या का निदान करना है। विश्व के अधिकांश अति जनसंख्या पीड़ित देशों ने इसे अपनी आर्थिक एवं सामाजिक योजनाओं का आधार बनाया है ।

देश के आर्थिक विकास में विकास की गति प्राय: जनांकिकीय चरों जनसंख्या का आकार, जनसंख्या विकासदर, आयु संरचना, से बहुत हद तक प्रभवित होती है। ये घटक उत्पादन, उपभोग, शुद्व विनियोग आदि को प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से प्रभावित करते ही रहते हैं, जिससे कि विकास की गति पर नियंत्रण सा लगा रहता है।

अर्थव्यवस्था में जनसंख्या के आकार का प्रति व्यक्ति आय पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की दर को कम कर देती है। इसके साथ ही किसी भी देश की कार्यशील जनसंख्या को, वहां की राष्ट्रीय आय का निर्धारक तत्व माना जा सकता है। मृत्यु दर की दृष्टि से यदि अवकाश प्राप्त लोगों की मृत्यु अधिक हो रही है, तो देश में आर्थिक संवृद्धि बढेगी । पर आर्थिक नीति का यह उद्देश्य नहीं होना चाहिए । साथ ही किसी भी देश का प्रति व्यक्ति आय का वहां की जनसंख्या वृद्धि एवं कमी से सम्बन्ध होता है जिसे निम्न चित्र-1.1 द्वारा समझा जा सकता है :-

चित्र संख्या 1.1
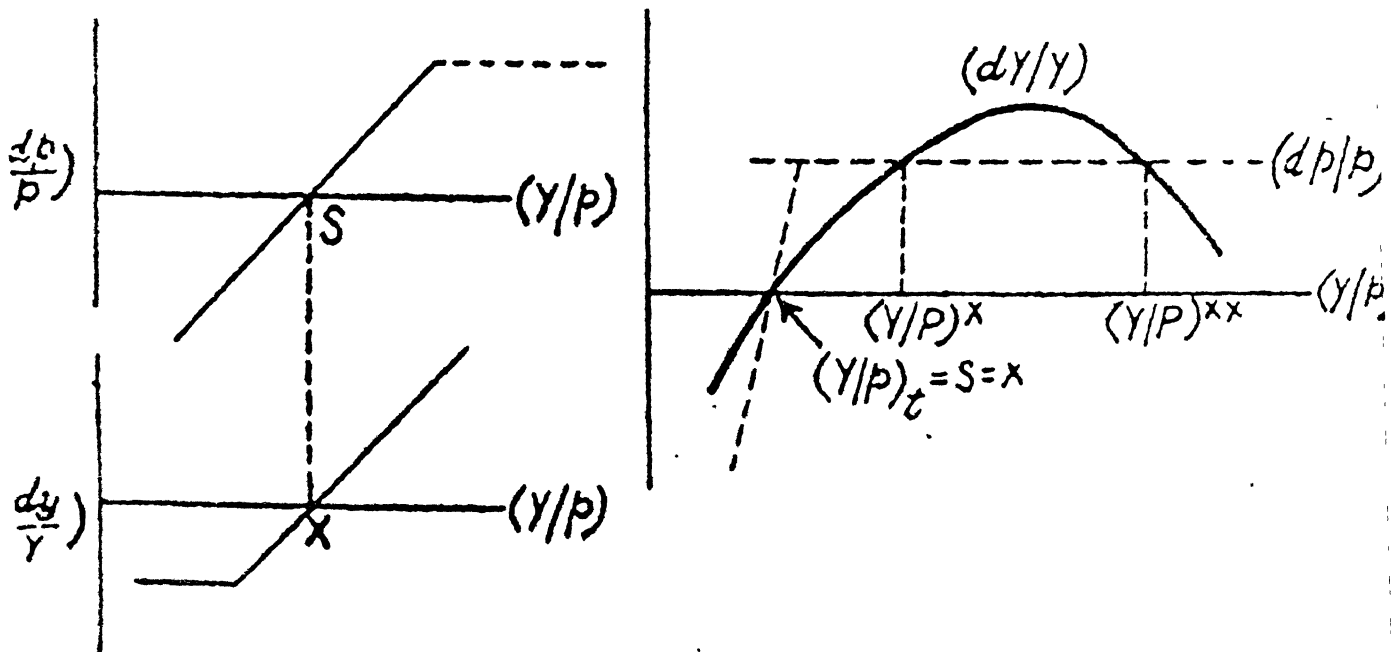
उपर्युक्त चित्र में (dp/p), (dy/y) तथा (y/p) क्रमशः जनसंख्या वृद्धि दर, आय वृद्धि दर प्रति व्यक्ति आय को दर्शाते हैं । किसी भी जीवन निर्वाह स्तर पर, जहां कि (dp/p) तथा (dy/y) वक्र एक दूसरे को काटते हैं, स्थिर संतुलन प्राप्त होगा, इस समय प्रति व्यक्ति आय (y/p) होगी । आय में वृद्धि के किसी भी प्रकार के प्रयत्न के फलस्वरूप जनसंख्या में तेज वृद्धि होगी, जिससे कि अर्थव्यवस्था पुनः निचे ले बिन्दु पर संतुलन में आ जायेगी । इस प्रकार इस अवरोध (trap) से राहत पाने के लिये जनसंख्या वृद्धि दर से आय वृद्धि दर तीव्र होनी चाहिये । यदि इस प्रकार वृद्धि से $(y/p)^{x}$ प्रति व्यक्ति आय की अवस्था तक पहुंचा जा सके तो बिना किसी प्रकार सरकारी प्रयत्न के स्थिर साम्य बिन्दु $(y/p)^{xx}$ तक आसानी से पहुंचा जा सकता है।

अतः बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण, अर्थव्यवस्था में उत्पादन ह्रास नियम लागू होने लगता है, और प्रति व्यक्ति आय घटने लगती है, जो कि आगे के चित्र संख्या 1.2 से स्पष्ट है:—
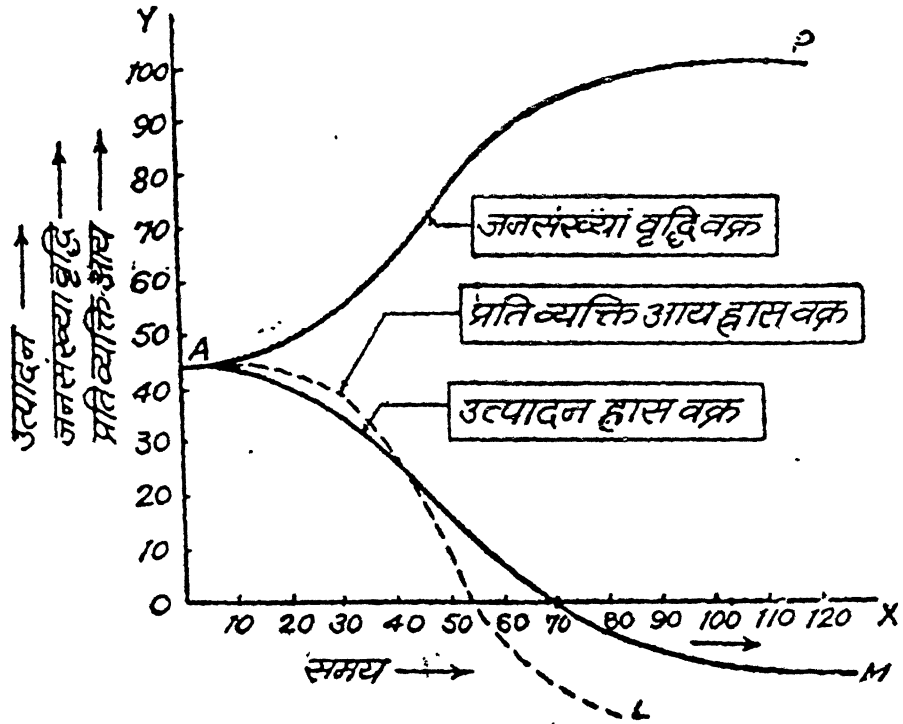
चित्र संख्या 1.2

चित्र में (AP) वक्र जनसंख्या वृद्धि को, (AM) वक्र प्रतिव्यक्ति आय ह्रास तथा (AL) वक्र उत्पादन ह्रास को दिखाता है। चित्र से स्पष्ट है कि जैसे-जैसे जनसंख्या में वृद्धि होती जाती है, प्रतिव्यक्ति आय में कमी एवं उत्पादन में ह्रास होने लगता है। इस चित्र में समय वर्ष में OX अक्ष पर तथा उत्पादन, जनसंख्या वृद्धि एवं प्रति व्यक्ति आय को OY अक्ष पर प्रदर्शित किया है। यहां स्पष्ट है, जहां जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है वहीं प्रति व्यक्ति आय में लगातार ह्रास हो रहा है और उत्पादन ह्रास प्रति व्यक्ति आय से एक सीमा तक तेजी से गिर रहा है, किन्तु उसके बाद प्रति व्यक्ति आय तेजी से गिर रही है। अतः यह आवश्यक है कि इसमें संतुलन स्थापित करने के लिये उपर्युक्त परिवार आकार के दृष्टिकोण से जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित किया जाय ।

जनसंख्या वृद्धि के साथ प्रति व्यक्ति आय में संतुलन और आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से विश्लेषण को चित्र 1.3 में प्रदर्शित किया गया है:-

चित्र संख्या 1.3
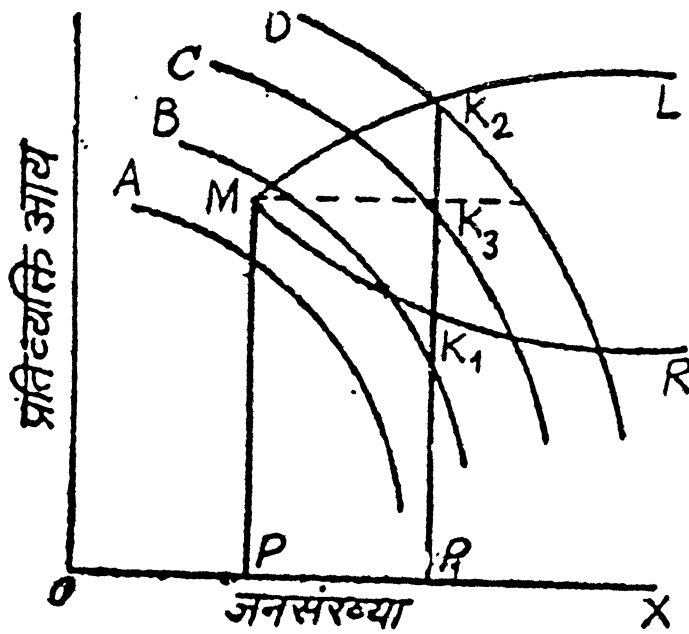
उपरोक्त चित्र से निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट है :-

(1) जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ यदि प्राविधिक उन्नति (Technological advancement) होती रहे, तो जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि होगी और प्रति व्यक्ति आय (ML) वक्र के पथ पर चलेगा तथा अर्थव्यवस्था में किसी प्रकार की संकट की स्थिति उत्पन्न न होगी।

(2) किन्तु किसी भी प्रकार की प्राविधिक उन्नति की अनुपस्थिति में यह पथ (MR) होगा, जो कि क्रमशः ह्रासमान प्रवृत्ति का द्योतक है।

(3) इसी प्रकार (pp_1) जनसंख्या वृद्धि की अवस्था में प्राविधिक उन्नति के साथ प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि (k_3k_2) के बराबर होगी अर्थात (PM) से बढ़कर (p_1k_2) हो जायेगी। किन्तु यदि किसी भी प्रकार की प्राविधिक उन्नति नहीं हो रही है। तो प्रति व्यक्ति आय (PM) से (p_1k_1) रह जायेगी अर्थात इसमें (k_1k_3) के बराबर कमी होगी।

संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रकाशित आकड़ों के अनुसार, विश्व में प्रति मिनट 176 बच्चे जन्म लेते हैं । इस प्रकार विश्व में प्रतिदिन 253542 लोग जन्म लेते हैं। डा0 एडवर्ड सांपन के अनुसार सन् 2025 तक विश्व की जनसंख्या लगभग 85 अरब तक पहुंच जायेगी ।

जनसंख्या में तीव्र वृद्धि, उसकी आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं तथा परिवार नियोजन के महत्व के बारे में लोगों को जानकारी देने में जन-माध्यमों (Mass - Media) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण, जन्मदर में तीव्र वृद्धि होता है। अतः जन्म दर में वृद्धि को कम करने के लिये, परिवार आकार को छोटा रखने में जन-माध्यमों की भूमिका का पता लगाने के लिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की आवश्यकता महसूस हुई ।

प्रस्तुत शोध अध्ययन "परिवार आकार निर्धारण में जन-माध्यमों" की भूमिका के अन्तर्गत हमने जन्मदर वृद्धि के प्रमुख कारकों सन्तानोत्पत्ति, संतानोत्पत्ति अन्तराल, विवाह आयु एवं संबंधित कारणों को सम्मिलित किया है।

जन-माध्यमों द्वारा आज आदर्श परिवार आकार (छोटा-परिवार आकार) रखने एवं उसके कल्याण का प्रयास किया जा रहा है। हमारे अनुसंधान का उद्देश्य इस तथ्य का पता लगाना है कि इन माध्यमों का जनसमूह पर क्या प्रभाव पड़ा है, तथा क्या वे छोटे परिवार के महत्व को समझते हुए परिवार आकार निर्धारण में इसे कार्यान्वित कर रहे हैं ।

परिवार आकार का छोटा या बड़ा होना, किसी भी देश की जनसंख्या वृद्धि अथवा कमी का मापदण्ड होता है । परिवार आकार का छोटा होना या बड़ा होना विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं मानसिक तत्वों पर निर्भर करता है । इस अध्ययन द्वारा यह भी जानने का प्रयास किया जायेगा कि परिवार आकार को बड़ा रखने में कौन से तत्व अधिक सहायक होते हैं, और क्या हमने अपने जन माध्यमों से इन कारकों को लेकर जनसमूह पर प्रभाव डालने का प्रयास किया है तथा क्या कमियां रह गयी हैं । इसी प्रकार परिवार आकार छोटा रखने में जो कारक सहायक होते हैं, उनकी जानकारी देने में जनमाध्यमों की क्या भूमिका रही है?

प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व इस लिए भी बढ़ जाता है, कि विभिन्न देशों में परिवार आकार को छोटा रखने के लिए जनमाध्यमों के योगदान को महत्वपूर्ण ढंग से स्वीकार किया गया है तथा इसकी सहायता से योजनाओं का सफलतापूर्वक क्रियान्वन किया जा रहा है । जन माध्यमों का प्रयोग न केवल परिवार आकार को छोटा रखने के लिए किया जा रहा है, बल्कि परिवार की सुख, समृद्धि एवं कल्याण के लिए इसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है ।

भारत जैसे विकासशील देश के सम्मुख, जनसंख्या विस्फोट की स्थिति विद्यमान है । जनसंख्या में तीव्र वृद्धि देश के आर्थिक विकास में समस्या बनी हुई है । 1991 की जनगणना के अनुसार हमारे देश को जन संख्या 843930861 तक पहुंच चुकी है ।

देश की जनसंख्या वृद्धि को निम्न सारणी 1.1 से देखा जा सकता है । सारणी से स्पष्ट है कि देश की जनसंख्या में वर्ष 1981-91 के मध्य दस वर्षीय वृद्धि दर 23.50 प्रति हजार है, जो कि वर्ष 1971-81 के मध्य दस वर्षीय वृद्धि दर 24.66 प्रति हजार से नाम मात्र कम है :-

सारिणी 1.1 भारत में जनसंख्या वृद्धि की स्थिति

वर्ष	जनसंख्या	दस वर्षीय वृद्धि दर	1901 के पश्चात् वृद्धि दर प्रति हजार
1901	2383 96327	-	-
1951	3610 88090	13.31%	51.47%
1981	6833 29097	24.66%	186.64%
1991	8439 30861	23.50%	254%

(मनोरमा इयर बुक 1993 पृष्ठ 235)

देश की जनसंख्या वृद्धि एवं उन्मुखता को निम्न रेखा चित्रों 1.5 तथा ग्राफ 1.1 तथा 1.2. से भी देखा जा सकता हे :-

900
800
700
600
500
400
300
200
100
0

1901 1911 1921 1931 1941 1951 1961 1971 1981 1991

जनगणना वर्ष
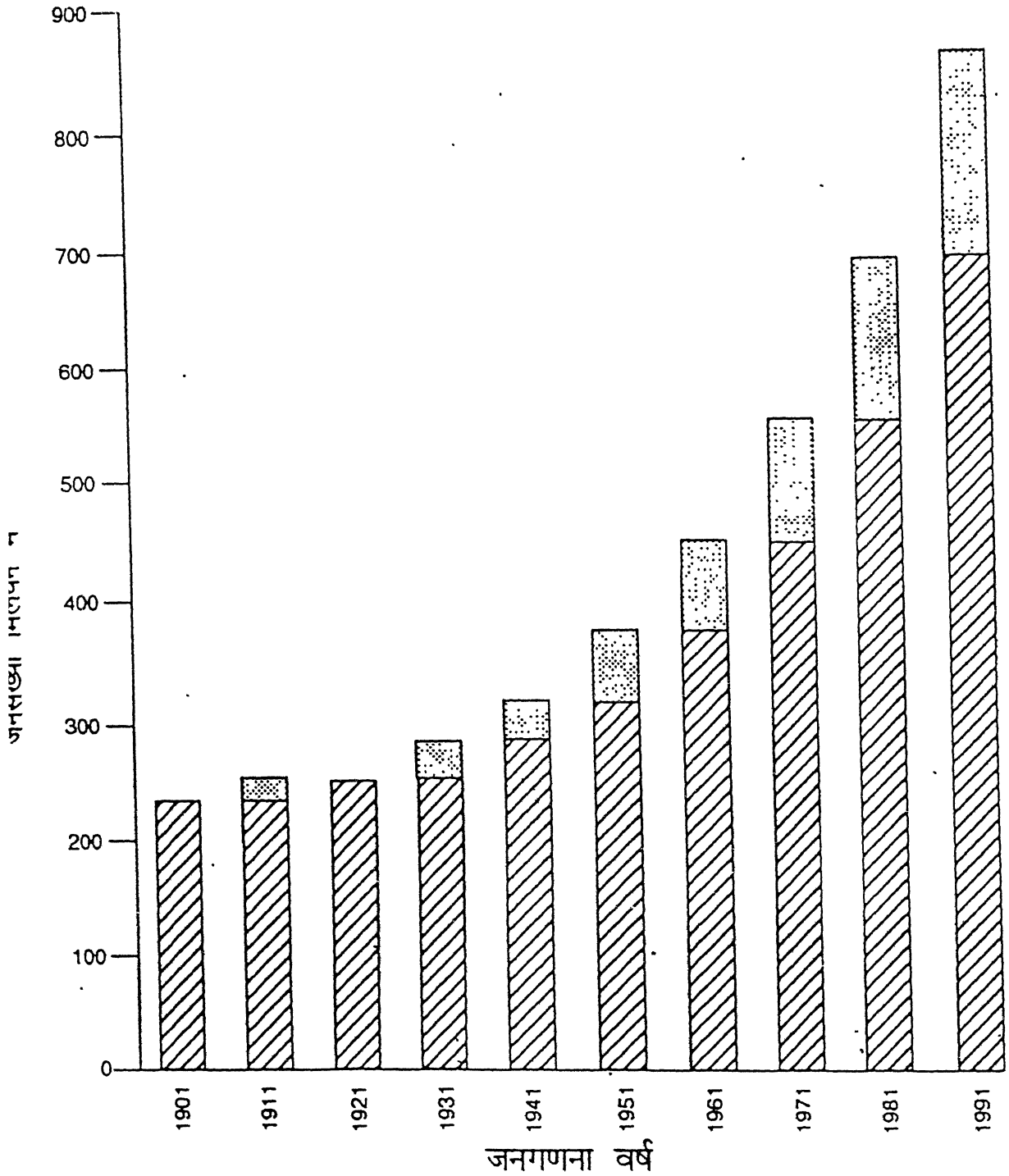
दशकीय वृद्धि

चित्र संख्या 1.5

स्रोत भारत की जनगणना 1991 अंनतिम आंकड़े
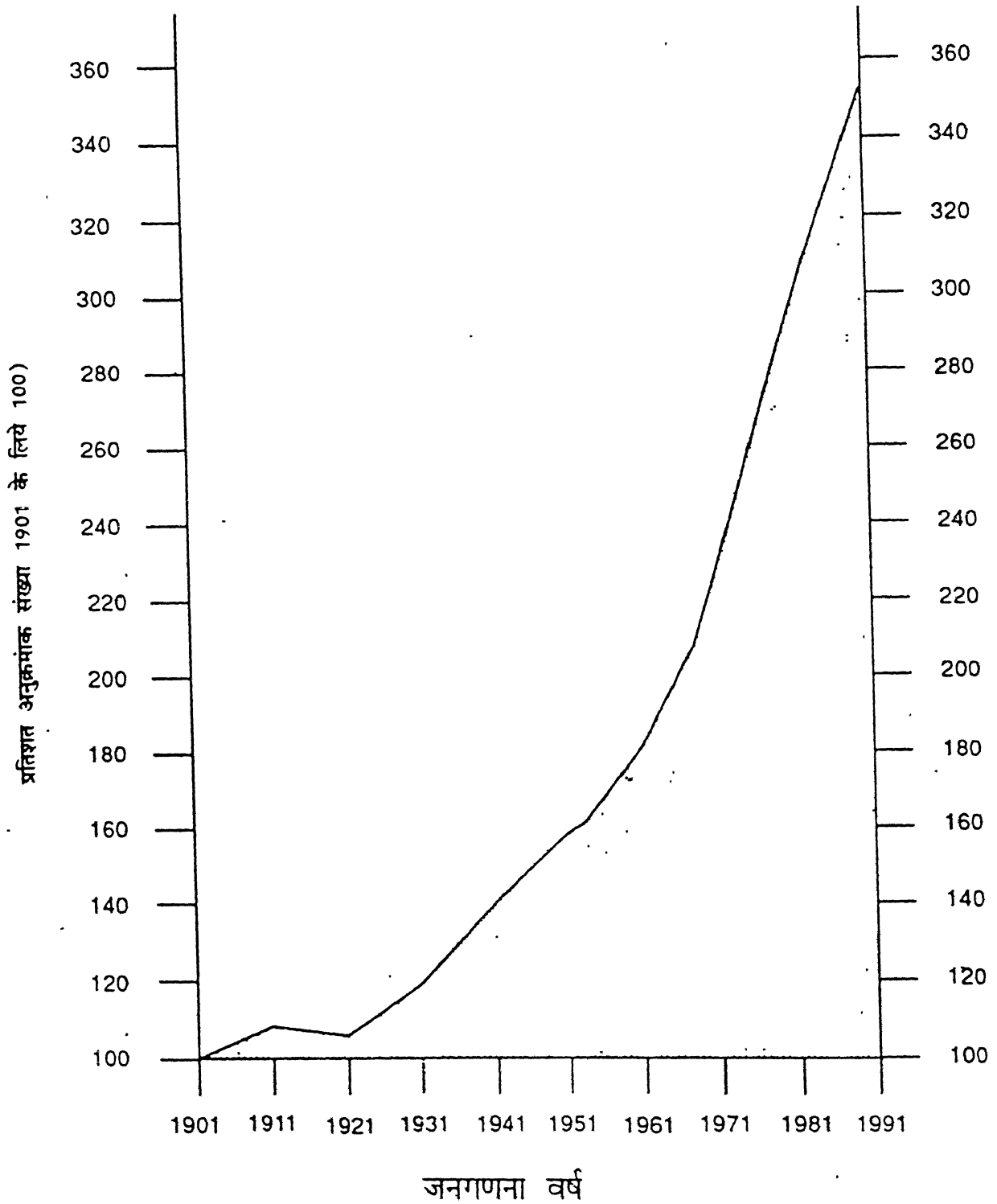
स्रोत: भारत की जनगणना 1991, अनन्तिम आंकड़े

ग्राफ संख्या 1.2

दशक में जनसंख्या वृद्धि 1901-91 की उन्मुखता
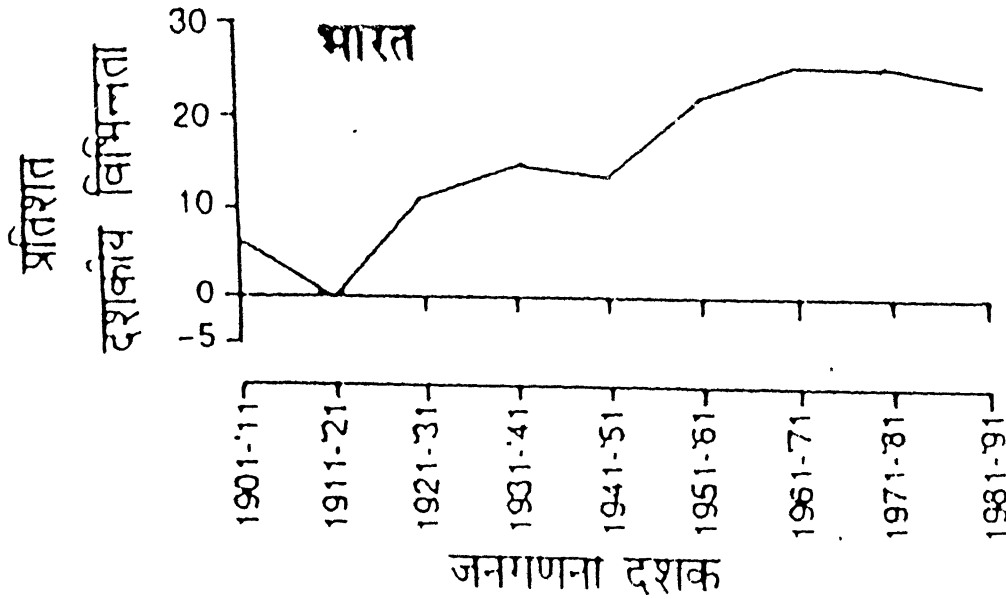
उपरोक्त चित्र संख्या 1.5 तथा ग्राफ संख्या 1.1 एवं 1.2 से निम्न तथ्य स्पष्ट हैं :-

चित्र संख्या 1.5 से स्पष्ट है कि वर्ष 1901 में देश की जनसंख्या जहां 238 मिलियन से अधिक थी वही स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1951 में 361 मिलियन से अधिक हो गयी। 1981 में यह 683 मिलियन तथा 1991 में यह बढ़कर 843 मिलियन हो गयी है।

ग्राफ संख्या 1.1 में देश की जनसंख्या का 1901 से 1991 तक का वृद्धि दर वक्र दिखाया गया है। जो कि वर्ष 1911 से 1921 के मध्य अवस्था को छोड़कर निरन्तर जनसंख्या वृद्धि दर को दिखाता है।

ग्राफ संख्या 1.2 में देश की दशकीय जनसंख्या वृद्धि का उन्मुखता वक्र दिखाया गया है। वक्र के अनुसार 1911 से 1921 की अवधि में जनसंख्या में कमी हुयी है। इसके अतिरिक्त सभी दशकों में जनसंख्या वृद्धि हुई है।

आज भी हमारे देश में प्रति मिनट 45 बच्चे पैदा होते हैं तथा 14 व्यक्ति मरते हैं इस तरह प्रति मिनट 31 व्यक्तियों की वृद्धि होती है ।

हमारे देश में, तीव्र जनसंख्या वृद्धि को देखते हुये आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से जनसंख्या नियोजन का बहुत महत्व है । एक ओर जहां देश की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हो रही है, वहीं दूसरी ओर देश के घरेलू उत्पाद में तुलनात्मक रूप से कमी हो रही है । देश के घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 1989-90 में जो 6 प्रतिशित थी, वह घटकर 1990-91 में 5.6% रह गयी। वास्तविक आधार पर प्रति व्यक्ति आय जो 1989-90 में 2148 रूपये थी, 1990-91 में बढ़कर 2227 रूपये हो गयी ! कृषि मंत्रालय द्वारा खाद्यान्न उपज के अंतिम आकड़ों के अनुसार 1989-90 में खाद्यान्न को 17 करोड़ 10 लाख 40 हजार टन की उपज की तुलना में 1990-91 में 17 करोड़ 62 लाख 30 हजार टन खाद्यान्न उत्पादन हुआ ।स्पष्ट है कि प्रति व्यक्ति आय एवं खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि, जनसंख्या वृद्धि की तुलना में नगण्य है । जनसंख्या वृद्धि का देश के आर्थिक विकास पर निरन्तर प्रतिकूल प्रभाव बना हुआ है । जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए सरकार ने विभिन्न योजनाओं को प्रारम्भ किया है एवं जनमाध्यमों के माध्यम से परिवार आकार को छोटा रखने का प्रयास किया गया है ।

जन माध्यमों ने परिवार नियोजन के बारे में अनेक प्रकार की गलत धारणाएं दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । हमारे देश की अधिकतर आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है । उनके इन कार्यक्रमों के बारे में सही जानकारी उपलब्ध करने में इन माध्यामों ने निश्चय ही प्रमुख योगदान किया है । परिवार आकार को छोटा रखने के लिए एवं उसकी सुख समृद्धि के लिए, सरकार ने परिवार कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न जनमाध्यमों का सहारा लिया है । इननमें प्रमुख रूप से रेडियो, टी.वी., समाचार पत्र, पत्रिकाएं, परिवार कल्याण केन्द्र एवं पोस्टर आदि हैं । कुछ विद्वानों ने जन माध्यमों के अन्तर्गत प्रेस, रेडियों एवं टेलीविजन को सम्मिलित किया है ।

जनमाध्यम की परिभाषा को संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) ने विस्तृत अर्थ में लिया है एवं इसके अन्तर्गत प्रेस, रेडियो, टेलीविजन, एवं

फिल्म को सम्मिलित किया है।[1] जन माध्यमों के विभिन्न औपचारिक साधनों दृश्य और श्रव्य में सरकारी अभिकरणों का स्थान प्रमुख है, जिनमें रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म प्रभाग, विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, प्रकाशन विभाग, क्षेत्र प्रचार निदेशालय संगीत और नाटक प्रभाग इत्यादि है । इसके अतिरिक्त निजी क्षेत्र की पत्र पत्रिकाएं अपना अलग स्थान रखती है ।

1.2 'परिवार आकार' एवं जन - माध्यम -(FAMILY SIZE AND MASS-MEDIA)

'परिवार पर्याप्त निश्चित यौन सम्बंध द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है, जो बच्चों के जनन एवं लालन पालन की व्यवस्था करता है[2]

लूसी एवं मेयर के अनुसार - 'परिवार एक गार्हस्थ्य समूह है जिसमें माता-पिता और संतान साथ-साथ रहते हैं । इसके मूल रूप में दम्पति और उसकी संतान रहती है' ।[3]

इस तरह परिवार को जैविकीय सम्बंधों पर आधारित एक सामाजिक समूह के रूप में परिभाषित कर सकते हैं, जिसमें माता-पिता और बच्चे होते है तथा जिसका उद्देश्य अपने सदस्यों के लिए सामान्य निवास, आर्थिक सहयोग, यौन संतुष्टि और प्रजनन, सामाजीकरण और शिक्षण आदि की सुविधायें जुटाती है ।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर, हमने अपेन शोध प्रबंध में परिवार आकार से आशय दम्पति एवं उनकी संतानों से लिया है । संतान वृद्धि ही जन्मदर अंततः जनसंख्या वृद्धि का मूल कारण है , अतः हमने शोध-प्रबंध में संतानोत्पत्ति की संख्या एवं उनके कारको पर ध्यान दिया है ।

परिवार आकार का छोटा या बड़ा होना किसी भी देश की जनसंख्या वृद्धि अथवा कमी का मापदण्ड होता है । परिवार आकार का छोटा होना या बड़ा होना अथवा निर्धारण उस परिवार में प्रत्यक्षतः उत्पन्न संतान, मृत्यु एवं प्रवसनसे होता है, चूंकि जन्मदर ही परिवार आकार बड़ा होने एवं अंततः जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण है अतः जन्म दर वृद्धि के कारक संतानोत्पत्ति एवं सहकारकों जैसे विवाह आयु, संतानोत्पत्ति अंतराल एवं अन्य कारणों का भी अध्ययन करने का हमने अपने शोध प्रबन्ध में प्रयास किया है ।

1- HASKOVES, Introduction to News Agency Journalism Page 11, 1972.

2. मेकाइवर एवं पेज "सोसायटी" पृष्ठ 238

स्पष्ट है कि परिवार आकार का संबंध जनसंख्या से होता है । तीव्र जनसंख्या वृद्धि को देखते हुए छोटा परिवार एवं सुखी परिवार की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है। लोगों के मन से गलत धारणाएं हटाने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे वे परिवार नियोजन की आवश्यकता को समझ सके तथा तीव्र जनसंख्या वृद्धि रोकी जा सके । इन सभी कार्यों में जन माध्यमों का महत्वपूर्ण स्थान है । परिवार आकार के निर्धारण में इनकी भूमिका निर्विवाद सत्य है, जिसका परीक्षण हमने अपने अनुसंधान कार्य से किया है ।

हमने अपने शोध प्रबन्ध में जन माध्यमों को विस्तृत अर्थ में लेते हुए तीन भागों में विभक्त किया है । प्रथम मुद्रण जनमाध्यम, द्वितीय श्रव्य जनमाध्यम, तृतीय दृश्य जन माध्यम । मुद्रण जन माध्यमों में हमने समाचार पत्र, पत्रिकाएं दीवार प्रिंटिंग, पोस्टर आदि को, श्रव्य जनमाध्यम में रेडियो तथा दृश्य जन माध्यम में चल चित्र एवं दूर दर्शन को सम्मिलित किया है तथा अन्य जन माध्यमों में परिवार कल्याण केन्द्र एवं मित्रों को सम्मिलित किया है ।

इलाहाबाद जिले को, अपने सर्वेक्षण का क्षेत्र चुनने का प्रमुख कारण जिले को जनांकिकी, राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियां देश की परिस्थितयों से मेल खाती है । जिले की जन्मदर अधिक है तथा दसवर्षीय जनसंख्या वृद्धि दर, देश की जनसंख्या वृद्धि दर से अधिक है । जिले में विभिन्न जन माध्यमों की उपलब्धता भी देश में विभिन्न जन माध्यमों को उपलब्धता से मेल खाती है ।

अतः हमारे शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को सम्पूर्ण देश पर लागू माने जा सकते है ।

1.3. शोध अध्ययन का उद्देश्य : (OBJECTIVES OF THE STUDY)

परिवार आकार को छोटा रखने के कार्य को आगे बढाने में, यद्यपि भिन्न-भिन्न जनमाध्यमों की भिन्न भिन्न उपलब्धियां रही है, किन्तु इन माध्यमों के उपयोग में कुछ कमियां भी रही है । अतः उपयुक्त होगा कि उन कमियों को पूरा करके, उनका प्रभावी उपयोग किया जाय । संक्षेपतः इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है :-

1. शोध कार्य का प्रथम उद्देश्य जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख चर परिवार आकार को

छोटा रखने में जन माध्यमों की भूमिका का मूल्यांकन करना है । हमने अपने अनुसंधान के द्वारा इस तथ्य का मूल्यांकन करने का प्रयास किया है कि जो व्यक्ति जन माध्यमों द्वारा छोटा परिवार आकार रखने हेतु प्रभावित हुआ है, उसकी जन-माध्यमों की प्रभाविकता के पूर्व औसत संतानोत्पत्ति में तथा जन माध्यमों की प्रभाविकता के पश्चात औसत संतानोत्पति में क्या अंतर है ।

2. जन-माध्यमों की, परिवार आकार छोटा रखने के सह-चर संतानोत्पति अंतराल की समयावधि बढ़ाने में क्या भूमिका रही है । दूसरे शब्दों में जन-माध्यमों से प्रभावित व्यक्तियों द्वारा प्रभावित होने के पूर्व संतानों के उत्पत्ति के मध्य रखे गये समय अंतराल तथा प्रभावित होने के पश्चात संतानोत्पति के मध्य रखे गये समय अंतराल में क्या कोई अंतर है ।

3. परिवार आकार छोटा रखने के लिये एक अन्य सह-चर विवाह आयु वृद्धि के संबंध में जन माध्यमों को भूमिका का पता लगाना है । हमारा उद्देश्य इस तथ्य का पता लगाने का है कि क्या जन माध्यमों के प्रभाव के पश्चात लोगों द्वारा सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु या उससे अधिक की विवाह आयु को अमल में लाया गया है?

4. जन माध्यमों के द्वारा लोगों के परिवार आकार संबंधी विचारों में हुये परिवर्तनों को जानना हमारे अनुसंधान का एक अन्य उद्देश्य है । दूसरे शब्दों में जन माध्यमों के प्रभाव के पश्चात लोगों का वर्तमान समय में औसत संतान संख्या, औसत संतानोत्पति अंतराल, औसत विवाह आयु संबंधी विचारों में क्या कोई परिवर्तन आया है, यह जानना हमारे अध्ययन का उद्देश्य है ।

5. जन माध्यमों को प्रभाविकता की दृष्टि से यह जानने का हमने प्रयास किया है कि लोगों पर परिवार आकार छोटा रखने में सर्वाधिक प्रभावी जन माध्यम कौन है ?

6· हमारा यह भी उद्देश्य है कि सर्वाधिक लोग किस समयावधि एवं आयु में जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित हुये ।

7· विभिन्न जनमाध्यमों की समाज में उपलब्धता, एवं उपलब्धता में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना भी हमारा उद्देश्य है। जनमाध्यमों के समुचित विकास के बावजूद भी यदि लोग इन माध्यमों से लाभ नहीं उठा पा रहे हैं तो इसके लिए कौन-कौन कारक{Factor} उत्तरदायी है ? भाषा की, इस समस्या में क्या भूमिका रही है ।

8· हमारा उद्देश्य विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता एवं उस पर लोगों द्वारा दिया जाने वाला समय एवं उनकी प्रभाविकता में मध्य के संबंध को भी जानना है ।

9· परिवार नियोजन के साधनों की जानकारी को भी हमने अपने अध्ययन में लेने का प्रयास किया है । हमारा यह उद्देश्य है कि लोगों को कौन-कौन से परिवार नियोजन के साधनों की जानकारी है तथा इन साधनों की जानकारी उन्हें किस जनमाध्यम से मिली ।

10· उपरोक्त सम्पूर्ण उद्देश्यों का, नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के लोगों अलग-अलग अध्ययन एवं तुलनात्मक विश्लेषण कर उनमें समानता अथवा विभिन्नता का पता लगाना भी हमारे अध्ययन का उद्देश्य है ।

1.4 संबद्ध साहित्य की समीक्षा - (REVIEW OF RELEVENT LITERATURE)

इस महत्वपूर्ण अनुसंधान के विषय पर किसी भी अनुसंधानकर्ता द्वारा कार्य न करना बड़े ही आश्चर्य की बात है । विभिन्न अनुसंधानों में भी यह उपेक्षित रहा । अतः संबंद्ध साहित्य का अभाव है । किन्तु जहां तक संभव हो सका है संबंद्ध साहित्य को खोजने का प्रयास किया गया है । यदि हम प्राचीन ऐतिहासिक काल पर दृष्टि डाले तो स्पष्ट होता है कि कि उस काल में यद्यपि परिवार आकार छोटा रखने की बात नहीं की गयी है, किन्तु रामायण में भगवान राम के मात्र दो पुत्र लव - कुश का होना, इस बात का पर्याप्त प्रमाण है, कि उस युग में भी दो संतानों को आदर्श परिवार आकार माना जाता था, किन्तु फिर भी प्राचीन युग में अधिक संतान उत्पत्ति के पक्ष में तर्क दिये जाते थे ।

अकर्मण्य विचार धारा :

हमारे यहां चिन्तन की एक प्रबल धारा है:-

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम

दास मलूका कह गऐ, सबके दाता राम

इसी का रूप उस कहावत में आ जाता है कि मुंह चीरने के पहले ही ईश्वर का प्रकृति की तरफ से खाने की व्यवस्था हो जाती है । चाणक्य नीति में यह श्लोक आता हे :-

का चिन्ता मम जीवने यदि हरि विश्वभरो

गीयसे नो वेदर्भक जीवनाय जननी स्तन्य कंथ निः सरेज

यानी यदि भगवान, विश्वम्भर के रूप में गीतों में गाये जाते हैं, तो मुझे क्या चिन्ता। वे विश्वम्भर, है इस कारण जन्म के साथ माता के स्तन में दूध उतरता है ।

इस प्रकार की अकर्मण्य विचारधारा उस समय चल गई, जब आबादी थोड़ी थी और जमीन बहुत थी । पर इस समय विश्व बैंक के भूतपूर्व अध्यक्ष राबर्ठ एस0 मैकनामारा के अनुसार, ' अवस्था यह हो चुकी है कि संसार के आधे लोग हर समय भूख से पीड़ित रहते हैं, उनको कभी भरपेट खाने को नहीं मिलता । उनके अनुसार सबसे बड़ा दुःखद तथ्य यह है कि बच्चों को भी खाने को नहीं मिलता, जब कि अब यह ज्ञात हो चुका है कि पहले चार साल में ही बच्चों के शरीर, विशेषकर मस्तिष्क की बनावट तैयार हो जाती है । इस

प्रकार संसार में एक तरफ मानसिक और शारीरिक दैत्य पैदा होते है और दूसरी तरफ मानसिक बौनो की बस्ती तैयार होती है । अर्द्ध भूखे होते हुए भी यानी घास-फूस से पेट भरते हुए भी काम इतना प्रबल है कि अर्द्ध भूखे और इस कारण रोगी लोग बच्चे पैदा करते जाते हैं । इस प्रकार भूखों, नंगों, अपुष्ट मस्तिष्क लोगों की फौज तैयार होती जाती है । बच्चे अपराधों की ओर झुकते है और बच्चियां वेश्यावृत्ति की ओर। भूखों,को नैतिक उपदेश देना व्यर्थ है, केवल यही नहीं कि 'भूखे भजन न हो हि गुपाला' बल्कि 'बुभक्षितः कि न करोति पाप' यानी भूखा भला कौन से पाप नहीं करता ?

पुन्नाम नरक की कल्पना :-

जिस समय आबादी कम थी और हर समय लड़ाई होती रहती थी, चिन्तकों ने पुन्नाम नरक की कल्पना करते हुए कहा कि इस नरक से जो त्राण दिलाता है,वह पुत्र है । यह भी कहा गया कि 'पुत्रार्थे क्रियते भार्या' यानी विवाह का उद्देश्य ही है पुत्र की प्राप्ति।

पर तब से संसार बहुत आगे बढ़ चुका है । अब एक बच्चे का उत्पादन फौरन मा-बांप का ही नहीं, राष्ट्र का बोझ बढ़ाता है । भोजन चाहिये, विद्यालय चाहिए, अस्पताल चाहिए, और जाने क्या - क्या चाहिए । क्या नहीं चाहिए ?

महान क्रान्ति :-

आबादी के क्षेत्र से सबसे बड़ी क्रांति यह हुई कि पहले मनुष्य असहाय था । यौन-मिलन के साथ सन्तान का प्रजनन जुड़ा हुआ था । पर विज्ञान की उन्नति के साथ -साथ प्रकृति पर इतना नियन्त्रण प्राप्त किया जा चुका है कि यौन - मिलन को गर्भ धारण से पृथक कर दिया गया है, जिससे अब सन्तान का प्रजनन बाध्यातामूलक नहीं रहा । यो देखा जाए तो विज्ञान के क्षेत्र में हरेक पग मनुष्य को प्रकृति पर नियंत्रण देता है । हम प्रकृति के नियमों को जानकर, उन्हीं नियमों के द्वारा प्रकृति पर अपनी इच्छा लादते जा सकते हैं । इसलिये यह कहना कि यौन क्षेत्र में गर्भाधान को रोककर या अवांछित गर्भाधारण को तोड़कर हम किसी प्रकार की ज्यादती करना चाहते हैं, यह गलत और हास्यास्प्रद है । वैज्ञानिक परिवार नियोजन में विशेषता यह है कि प्राण संचार के पहले ही काम हो जाता है, देर हो जाने पर गर्भपात कराया जाता है । भिखमंगे और वेश्याएं, विकल

या विकृतमस्तिष्क या अपुष्ट मस्तिष्क बच्चे उत्पन्न करने के बजाय, बोझ या अपुत्रक बने रहना कहीं श्रेयस्कर है, सामाजिक दृष्टि से और वैयक्तिक दृष्टि से ।

प्राचीन काल से शिशु हत्या :-

अत्यन्त प्राचीनकाल से सभी देशों में और जातियों में जहां 'दूधों नहाओ पूतो फलो' रूपी आशीर्वाद प्रचलित था, वहीं किसी न किसी रूप में अवांछित सन्तान से मुक्ति के उपाय भी बरते जाते थे, अक्सर धर्म की आड़ में ।

कामशास्त्र की प्राचीन पुस्तकों में बन्ध्यात्व, रजोविरति आदि के सम्बन्ध में चर्चा है, केवल यह नहीं कि कैसे बांझपन दूर हो, बल्कि यह भी कि कैसे बांझपन प्राप्त किया जाए । वात्स्यायन ने कई हालतों में गर्भधारण निषिद्ध बतलाया है । आधुनिक चिकित्सा शास्त्र बतलाता है कि कई दुरारोग्य रोग सन्तानों को वसीयत में मिलते हैं, कई रोगों की केवल प्रवृत्ति सन्तानों में उतरती है। क्या ऐसे पिता-माता को सरकार की तरफ से सन्तानोत्पति में असमर्थ बना देना, किसी भी दृष्टि से अनुचित होगा ? स्वराज्य के पहले ही इन विषयों में योजनाएं बन जानी चाहिए थी, पर नहीं बनी तो अब बने । किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार नहीं है कि वह प्रमाद या आलस्य में फंसकर ऐसी सन्तान उत्पन्न करे जो दुरारोग्य रोग लेकर पैदा हो । माता-पिता को स्वयं यह बात समझनी चाहिए, पर यदि वे न समझे तो सरकार का यह अपरिहार्य कर्तव्य है कि ऐसे लोगों को कान पकड़कर राह पर ले आए।

प्राचीन काल से बांझपन उत्पन्न करने के उपायों पर चर्चा की जाती रही है । ज्योतिष शास्त्र में ऐसे मुहुर्तो का उल्लेख है, जिनमें गर्भाधान नहीं होता । यहां यह बता दिया जाए कि ये चर्चाएं प्रायोगिक आधार पर निर्पित नहीं की गई, बल्कि बहुत कुछ अटकल पच्चू आधार पर बनाई गई । त्रिवेणी तथा गंगासागर में माता-पिता द्वारा बच्चों को धार्मिक कृत्य के रूप में डुबा देना, अंग्रेजों के आने के बाद भी बहुत वर्षो तक जारी रहा । कहा तो यह जाता था कि ऐसा करने से बच्चे तथा उसके माता-पिता को स्वर्ग की प्राप्ति होती है, पर इस धारणा के पीछे सन्तान नियोजन की धारण छिपी हुई थी । कहते हैं कि घड़ियाल फेंके हुए बच्चों को छलांग लगाकर रोक लेते थे, जैसे फेंकी हुई रोटी के टुकड़ों को गप से पकड़ लेते हैं। यह प्रथा उतनी बर्बर थी जितनी सती प्रथा, जिसे राममोहन राय ने घोर

आन्दोलन के बाद कानून बनाकर बंद किया । गंगा सागर में अब भी साल दो साल में बच्चा डालने की एकाध कहानी सुन पड़ती है ।

अब हम जब प्राचीन काल में जनमाध्यामों पर दृष्टि डालते है तो उस युग में जनमाध्यम का प्रमुख साधन परिव्राजक ऋषियों का निरन्तर भ्रमण करना था । सूत एवं पौराणिक लोग जनभीड़ में महापुरूषों के द्वारा जनहित के लिए गये कार्यो का प्रज्ञापन करते थे । इसी प्रकार तीर्थ स्थानों में पुराणों का पाठ एवं श्रवण भी जनसामान्य में सूचना प्रसारण का महत्वपूर्ण साधन था ।[1] इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों पर अभिलेख खुदवा कर जन हित के कार्यो को प्रचारित करना, प्राचीन भारत में महत्वपूर्ण उपाय था । इसका प्राचीनतम प्रमाण अशोक के अभिलेखों में प्राप्त होता है ।[2]

जनसंख्या समस्या से संबंधित क्षेत्र पर हुए अन्य अनुसंधानों का अध्ययन किया गया, किन्तु किसी भी अनुसंधानकर्ता ने इस संपूर्ण विषय पर न तो अनुसंधान कार्य किया है और न ही पर्याप्त प्रकाश डाला है ।

एक अनुसन्धान 'ए स्टडी आफ दी एटिटियूड टुवर्डस फेमिली प्लानिंग इन देवरिया डिस्ट्रिक'[3]का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि अध्ययन कर्ता ने कहीं भी परिवार नियोजन में जनमाध्यमों की भूमिका पर प्रकाश नहीं डाला है ।

अनुसंधान कर्ता ने अपने शोध में परिवार नियोजन में प्रेरक स्त्रोत पर प्रकाश डाला है, जो कि हमारे अध्ययन के लिए कुछ उपयोगी लगा । इस अध्ययन में विज्ञापन एवं रेडियो को अलग-अलग स्त्रोत के रूप में लिया है । यह वर्गीकरण उचित प्रतीत नहीं होता है, क्यों कि विज्ञापन तो हर जनमाध्यम में होता है, तथा रेडियो स्वयं एक जनमाध्यम का साधन हैं । अनुसंधान कर्ता ने अध्ययन के द्वारा यह निष्कर्ष निकाला है कि परिवार नियोजन का सर्वाधिक प्रभावी प्रेरक स्त्रोत विज्ञापन है । अनुसंधानकर्ता ने नगरीय क्षेत्र के जिन 627 लोगों से

---

1. मंगलसेन, डिक्शनरी आफ पालिप्रापइनेन्स भाग-1 पृष्ठ 799
2. सरकार - सेलेक्ट इन्स्क्रिप्शन्स, कलकत्ता 1946, पृष्ठ - 72
3. A study of Attitude towards family palnning in Deoria District 1977, Page 238. Ram Prakash Mani Tripathi.

जानकारी प्राप्त की उनमें से 77.67% लोगों ने विज्ञापन को सर्वाधिक प्रेरक स्त्रोत बताया । इसी प्रकार अनुसंधान कर्ता ने जिन 619 ग्रामीण क्षेत्र के व्यक्तियों से जानकारी प्राप्त की उसमें से भी 74.55% लोगों ने विज्ञापन को ही सर्वाधिक प्रेरक स्रोत बताया । क्यों कि विज्ञापन जनमाध्यमों का एक महत्वपूर्ण साधन है अतः यह निष्कर्ष हमारे अनुसंधान हेतु कुछ महत्वपूर्ण लगा ।

उल्लेखनीय है कि विज्ञापन के प्रमुख साधन समाचार पत्र, दूरदर्शन, रेडियो एवं फिल्म है । अतः स्पष्ट है कि इन माध्यामों की परिवार आकार निर्धारणमें महत्वपूर्ण भूमिका है । अनुसंधान कर्ता ने इस तथ्य को छोड़ दिया है कि ये साधन न केवल विज्ञापन के माध्यम से जनसमूह पर प्रभाव डालते हैं अपितु विज्ञापन के अतिरिक्त भी इनकी भूमिका प्रभावकारी रहती है । विभिन्न कार्यक्रमों इत्यादि के द्वारा भी जनसमूह पर प्रभाव डाला जाता है । अध्ययन में आदर्श बच्चों की संख्या पर प्रकाश डाला गया है । अध्ययन के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र के 64% व्यक्ति 3 या 4 बच्चे पसंद करते है तथा नगरीय क्षेत्र के भी 68% व्यक्ति 3 या 4 बच्चों पसंद करते हैं किंतु इन विचारों पर विज्ञान एवं जनमाध्यम का प्रभाव नहीं बताया गया है ।

उपरोक्त अध्ययन में परिवार नियोजन में विश्वास करने का प्रमुख कारक, आर्थिक स्थिति को बताया गया है । ग्रामीण क्षेत्र में किए गये सर्वेक्षण में 71.29% तथा नगरीय क्षेत्र में किये गये सर्वेक्षण में 68.02% लोगों ने आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाये रखने के लिये परिवार नियोजन में विश्वास किया है । दूसरा महत्वपूर्ण कारक जहां ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार की खुशी बतायी गयी वही नगरीय क्षेत्रों में उचित पालन पोषण बताया गया है । उक्त अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि आर्थिक परिस्थति, पारिवारिक खुशी एवं बेहतर पालन पोषण इत्यादि कारकों को हम जनमाध्यमों में ले सकते हैं एवं लोगों को यह बोध करा सकते हैं कि छोटा परिवार आकार अच्छी आर्थिक स्थिति, पारिवारिक, खुशी एवं बच्चो के अच्छे पालन पोषण के लिए आवश्यक है । इस तथ्य को उक्त अनुसंधान कार्य में पूर्ण रूप से उपेक्षित रखा गया है ।

इसी प्रकार अध्ययन में उन कारकों पर भी प्रकाश डाला गया है, जिसके कारण लोग परिवार

नियोजन में विश्वास नहीं करते । इनमें प्रमुख प्रभावी कारक नैतिक एव धर्मपरायण स्थिति तथा शरीर पर हानिकारक प्रभाव इत्यादि है । इन कारकों को भी हम अपने जनमाध्यम कार्यक्रम मे ले सकते हैं और लोगों में व्याप्त गलत धारणाओं एवं भ्रान्तियों को दूर कर सकते हैं ।

एक अन्य अनुसंधान 'फ़रटिलिटी पैटर्न, इन दि रूरल पार्ट आफ मिर्जापुर डिस्टिक'[1] पर हुआ है । इस अध्ययन से भी जन माध्यमों के योगदान पर कहीं कोई प्रकाश नहीं डाला गया है । इसमें परिवार आकार पर प्रकाश डाला गया है जो कि हमारे अध्ययन का एक पक्ष है। अतः हमारे लिए यह अध्ययन कुछ उपयोगी लगा ।अध्ययन में ।0।। लोगों के विचार प्राप्त किये गये हैं इनमें से 603 अर्थात 59.62% लोगों ने 3 से 5 बच्चों का परिवार में होना उचित माना है । इसके अन्तर्गत 240 लोगों ने अर्थात 23.73% लोगों ने 5 बच्चों का किसी परिवार में होना उचित बताया है तथा उसमें भी 3 लड़के व 2 लड़कियां होनी चाहिए । 205 लोगों ने अर्थात 20.27% लोगो ने 3 बच्चों का परिवार में होना उपयुक्त बताया जिसमें 2 लड़के व । लड़की होनी चाहिए । स्पष्ट है कि अनुसंधान के निष्कर्षानुसार अभी लोग लड़कियों की अपेक्षा लड़कों के जन्म को अधिक पसन्द करते हैं । जनमाध्यम का प्रभाव लोगों के परिवार आकार के विचारों के परिवर्तन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, इस पर अध्ययन में प्रकाश नहीं डाला गया है ।

दोनों अध्ययनों पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि दोनों में जन माध्यमों को पूर्ण रूप से उपेक्षित रखा गया है । इसके साथ ही उल्लेखित प्रथम अध्ययन में जहां परिवार आकार को निर्मित रखने में सहायक कुछ कारकों का उल्लेख किया गया है एवं एक जनमाध्यम रेडियो को लिया गया है । किन्तु इन कारकों का अन्य जनमाध्यमों से संबंध का उल्लेख नहीं है । इसके विपरीत दूसरे अध्ययन में 59.62% लोग 5 बच्चों वाले परिवार को उचित मानते है, जब कि जनमाध्यमों के बढ़ते हुए प्रभाव से यह बात सही नहीं प्रतीत होती।

इसके अतिरिक्त कुछ और अध्ययन भी हुए हैं और जो अनुसंधान से संबंधित हैं, इनमें श्री नवल सिंह का अध्ययन 'लिमिटेशन आफ ओपीनियन लीडर्स, इन फैमिली प्लानिंग

---

1. Fertility pattern in the rural parts of Mirzapur District - BHULAN, 1976, Page 185.

कम्युनिकेशन इन रूरल इंडिया[1] है । डा0 टी0 वी रामाराव का अध्ययन 'नीड बेल्ड फेमिली प्लानिंग प्रोग्रामंस कन्टेन्ट एण्ड ट्रीटमेन्ट गाइड लाइन्स फार टी0 वी0 प्रोडयुसर्स' भी महत्वपूर्ण है[2] किन्तु ये अध्ययन भी सम्पूर्ण पक्ष पर प्रकाश नहीं डालते ।

एक अन्य अध्ययन में बताया गया है कि जापान ही एक ऐसा प्रथम राष्ट्र था, जहां के समाचार पत्रों ने अत्यधिक जनसंख्या को अपनी संपादकीय नीति में लिया तथा परिवार नियोजन की आवयश्यकता पर बल दिया ।[3]

जापान में जन माध्यमों ने परिवार नियोजन कार्यक्रम को जनसाधारण में स्वीकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है । 1959 में हुए एक सर्वेक्षण के अनुसार पत्र पत्रिकाएं गर्भ निरोध के क्रियात्मक ज्ञान की प्रमुख स्त्रोत हैं । इस सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार जापान की स्त्रियों को गर्भ निरोध जानकारी देने में वहां के समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है । जो लोग केवल गर्भनिरोध शब्द से परिवित है उनमें 69% लोगों को यह जानकारी समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं से प्राप्त हुई । इसी प्रकार जिन लोगों को इसकी पूरी जानकारी है उससे भी 67.7.% लोग समाचार पत्र उएवं पत्रिकाओं से प्रभावित है । जापान में वर्ष में दो बार शादी के समय चार बड़ी पत्रिकाएं इस प्रकार की जानकारी के लिए छपती है, जिसके लेख डाकटर लिखते हैं ।

के0 जी0 जोगलेकर ने अपने लेख में जन माध्यमों को प्रचार माध्यम के रूप में परिवर्तन का साधन बताया है।[4] इसके महत्व को बताते हुए उन्होने प्रदर्शित किया है कि अकबर के समय तक रेडियों एवं टेलीवीजन सशक्तः जनप्रचार माध्यम के रूप में नहीं उभरे थे । उक्त लेख से स्पष्ट है कि यदि उस समय उक्त जनमाध्यम होते तो समाजिक क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान होता ।

एक शोध पत्र जनमाध्यमों द्वारा महिलाओं को जानकारी, महिला पत्रिकाओं के विशेष संदर्भ में यह बताया गया है कि सर्वाधिक 67.5.% महिलायें सूचना प्राप्ति हेतु

---

1. The Journal of family welare Vol XXI No. 3 March-75.
2. The Journal of family welfare Vol XXI. No. 4, June-75.
3. Research in family planning in chapters "Problems of Motivation and Communication, Page - 566
4 के0 जी0 जोगलेकर, रोजगार समाचार 7-15 अप्रैल 1990 ।

पत्रिकाएं पढ़ती है[1]। इस शोध में जनमाध्यम के एक मात्र साधन पत्रिका की बात की गयी है, किन्तु पत्रिका की परिवार आकार छोंटा रखने में जानकारी देने की भूमिका को छोड़ दिया गया है, जब कि परिवार आकार का छोटा होना ही महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन लाने का साधन हे ।

1.5 शोध कार्य की परिकल्पनाये (HYPOTHESIS OF THE RESEARCH STUDY)

आज की परिस्थितियों में एक तथ्य सर्वविदित है कि जनमाध्यम ही किसी गलत विचाराधारा या पुर्व धारणा के प्रति परिवर्तन ला सकते है ।

1. मुद्रण माध्यम जैसे समाचार पत्र, पत्रिकाएं, दीवार प्रिटिंग, पोस्टर आदि जनमाध्यमों से जो परिवार आकार एवं कल्याण संबंधी प्रचार किया जाता रहा है, उसका प्रभाव बहुत ही कम लोगों पर पड़ा है, क्योंकि वह शिक्षित और अधिकतम नगरीय वर्ग के लिये है । यद्यपि इस तथ्य का परीक्षण हमने अपने अनुसंधान द्वारा करने का प्रयास किया है ।

2. कुछ अध्ययनों में विज्ञापन को ही परिवार आकार छोटा रखने का प्रभावी स्त्रोत बताया गया । यद्यपि विज्ञापन पत्र - पत्रिकाओं, रेडियो, टी0वी0, इत्यादि द्वारा लोगों तक पहुंचते है । अतः अनुसंधान द्वारा हम यह भी निष्कर्ष प्राप्त कर सकते है कि जन माध्यमों में लोगों को विज्ञापन लेख अथवा फोटो फीचर में कौन अधिक प्रभावी है ।

3. श्रव्य माध्यम जैसे रेडियो एवं दृश्य माध्यम जैसे टी. वी., चलचित्र आदि ने लोगों को परिवार आकार निर्धारण करने संबंधी विचार धाराओं पर विशेष प्रभाव डाला है । यद्यपि इनकी उपलब्धियां एवं प्रभाव अधिकांश नगरीय वर्ग पर ज्यादा है, किन्तु ग्रामीण वर्ग पर भी इनका प्रभाव कुछ हद तक पड़ा है । छोटा परिवार आकार के मुख्य निर्धारक चर कमसन्तानोत्पति पर जनमाध्यमों का धनात्मक प्रभाव रहा है । दूरदर्शन ने परिवार आकार छोटा रखने मेंप्रभावशाली भूमिका निभायी है ।

4. जनमाध्यम द्वारा लोगों को छोटा परिवार आकार रखने हेतु प्रभावित एवं प्रेरित

---

1. मनोज दयाल - शोध पत्र 'भारतीय आर्थिक शोध संस्थायें' द्वारा आयोजित 'महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन' विषय पर पढ़ा गया ।

किया गया है तथा वे छोटा परिवार आकार अपनाने के विचारों से सहमत हैं ।

5· जनमाध्यमों द्वारा लोगों को इस बात के लिए प्रभावित किया गया है कि विवाह के बाद प्रथम बच्चा कुछ वर्षों के बाद होना चाहिए तथा दो बच्चों के मध्य सनतोनोत्पति की समय अन्तराल अवधि ' कम से कम दो से तीन वर्ष होनी चाहिए तथा अधिकांश लोग जनमाध्यमों के इस संदेश से सहमत है ।

6· जनमाध्यमों द्वारा सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु को जन सामान्य में स्वीकारने हेतु प्रेरित किया गया है । जिसका कि धनात्मक प्रभाव सामने आया है वर्तमान समय में लोग सरकार द्वारा निर्धारित या उससे अधिक की विवाह आयु के विचारों से सहमत हैं ।

7· परिवार आकार छोटा रखने में सहायक विभिन्न परिवार नियोजन के साधनों की जानकारी में भी जनमाध्यमों ने महत्वपूर्ण एवं लगभग एकाधिकारी भूमिका निभायी है तथा लोगों को विभिन्न परिवार नियोजन के साधनों की जानकारी हुई है ।

8· इसके साथ ही वृद्ध आयु की अपेक्षा नवयुवकों पर माध्यमों का अधिक प्रभाव पड़ता है । इसका कारण यह है कि वृद्ध लोग अपने पुराने परम्परावादी विचारों के कट्टर समर्थक होते हैं, एवं वह अपने विचारों में परिवर्तन के लिए तैयार नहीं होते । इसके विपरीत नयी पीढ़ी के नवयुवक जो अधिक शिक्षित एवं जागरूक होते हैं, उन पर इस जनमाध्यम का अधिक प्रभाव पड़ता है ।

1·6 अध्याय क्रम (CHAPTER PLAN)

प्रथम अध्याय के बाद अध्याय 2 में हमने जनमाध्यमों द्वारा लोगों को छोटे परिवार रखने की जानकारी देने एवं प्रभावित करने का सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक अध्ययन किया है । इसमें जनमाध्यमों के आधार सूचना संचरण सिद्धान्त, जनमाध्यमों के विभिन्न साधन मुद्रण, दृश्य, श्रव्य समाचार पत्र, रेडियों, दूरदर्शन एवं चलचित्र की कार्यविधि एवं संक्षिप्त इतिहास तथा

समाचार पत्र, पत्रिका, दीवार प्रिंटिंग - पोस्टर, रेडियों, चलचित्र एवं दूरदर्शन की तुलनात्मक प्रभाविकता का अध्ययन किया है। जनमाध्यमों के विभिन्न उपकरण समाचार, लेख, विज्ञापन एवं फोटो फीचर का विश्लेषण किया है। परिवार आकार निर्धारण में जनसंख्या नियोजन के संदर्भ में जनमाध्यमों की भूमिका का सैद्धान्तिक विश्लेषण के साथ-साथ देश के योजना काल में उनके व्यवहारिक योगदान का अध्ययन किया है।

अध्याय - 3 में इलाहाबाद जनपद की भौगोलिक, सामाजिक जनांकिकी एवं जनमाध्यमों की स्थिति का अध्ययन किया है। इस अध्याय में जिले की भौगोलिक, सामाजिक स्थिति, 1901 - 1991 तक जनसंख्या वृद्धि दर, वर्तमान जनसंख्या स्थिति, ग्रामीण एवं नगीय जनसंख्या एवं आवासीय मकान एवं परिवारों का विवरण दिया गया है। साथ ही जिले में वर्तमान समय में जनमाध्यमों की उपलब्धता का अध्ययन किया गया है।

अध्याय - 4 सर्वेक्षण से सम्बन्धित अध्याय है। इसमें सर्वेक्षण क्षेत्र का निर्धारण, उसका कारण, प्रतिदर्श विधि, न्यायदर्श का चयन, प्रश्नोत्तरी पत्रक दिया गया है। क्षेत्र के सर्वेक्षण तथा सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त अनुभव को बताया गया है । साथ ही न्यायदर्श जनसंख्या से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर न्यायदर्श जनसंख्या का सामाजिक एवं आर्थिक विश्लेषण किया गया है।

अध्याय - 5 में चयनित क्षेत्र के सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्षों का ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया है। साथ ही जनमाध्यमों की नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के परिवार आकार निर्धारण में व्यवहारिक भूमिका का मूल्यांकन किया गया है । पहले नगरीय क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्षों फिर ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्षों का विश्लेषण कर उनकी तुलनात्मक स्थिति का अध्ययन किया गया है।

अध्याय - 6 में चयनित क्षेत्र सकल जनपद के सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्ष जो कि इलाहाबाद जनपद का प्रतिनिधित्व करते हैं का विश्लेषण किया गया है। एवं जनमाध्यमों की जनपद के परिवार आकार निर्धारण में व्यवहारिक भूमिका का मूल्यांकन किया गया है ।

अध्याय - 7 में सम्पूर्ण शोध अध्ययन का सारांश में निष्कर्ष दिया गया है एवं नीतिपरक सुझाव दिये गये हैं।

इस तरह प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सम्पूर्ण विश्लेषण के दृष्टिकोण से निम्नलिखित सात अध्याय हैं:-

1. प्रस्तावना ।
2. जनमाध्यमों का परिवार आकार तथा जनसंख्या नियोजन के संदर्भ में योगदान ।
3. इलाहाबाद जनपद भौगोलिक, सामाजिक, जनांकिकी एवं जनमाध्यमों की स्थिति ।
4. शोध अध्ययन विधि तथा सर्वेक्षण ।
5. सर्वेक्षण से प्राप्त नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के निष्कर्षों का तुलनात्मक अध्ययन ।
6. सर्वेक्षण से प्राप्त सकल जनपद के निष्कर्षों का विश्लेषण ।
7. सारांश, निष्कर्ष तथा नीतिपरक सुझाव ।

अध्याय-2 : जनमाध्यमों का परिवार आकार तथा जनसंख्या नियोजन के सन्दर्भ में योगदान

CHAPTER-2 : THE ROLE OF MASS-MEDIA IN FAMILY SIZE AND POPULATION PLANNING

अध्याय 2 (CHAPTER - 2)

जनमाध्यमों का परिवार आकार तथा जनसंख्या नियोजन के सन्दर्भ में योगदान

(Role of Mass-Media with the reference of family size and population planning)

जन माध्यमों का जनसंख्या नियोजन में योगदान का विश्लेषण करने के पूर्व हम जनमाध्यमों के आधार एवं भूमिका पर प्रकाश डालेंगे।

2.1 जनमाध्यमों का आधार सूचना संचरण सिद्धान्त (Base of Mass-Media: Information Theory)

भावाभिव्यक्ति के सभी संसाधनों को जनमाध्यम कहते हैं। आधुनिक जन माध्यम अपने उद्देश्यों की सफलता के लिए मूलतः संचार पर निर्भर है। मानवीय सम्वेदनाओं और अनुभूतियों के पारस्परिक आदान-प्रदान को संचार (Communication) कहते है। संचार या संवाद की प्रक्रिया कहीं पर अत्यन्त सूक्ष्म और कहीं पर अत्यन्त स्थूल होती है। जब मानव-मन अपने को व्यक्त करने के लिए केवल संकेतों की भाषा में बात करता है, तब यह अभिव्यक्ति संचार की सूक्ष्म स्थिति में होती है, और जब भाषा का प्रयोग किया जाता है तो अभिव्यक्ति का भौतिक स्वरूप भी स्थूल हो जाता है।

आज हमारे चारों ओर ज्ञान-विज्ञान की जो प्रगति और प्राविधिकी के जितने उपकरण और संसाधन दिखाई दे रहे हैं, इन सबकी मूलभूत प्रेरक शक्ति मानव मन की अपने को अभिव्यक्त करने की अनन्त आकांक्षा ही है। अभिव्यक्ति की सफलता के लिए किए गए प्रयासों के फलस्वरूप ही आज हम अनेक प्रकार के संचार-यन्त्रों की सहायता से सागरों की अथाह गहराई, आकाश की अनंत ऊँचाई और धरती के सुदूर विस्तार पर विजय प्राप्त करने में सफल हो गए हैं। बड़े-बड़े विशाल देश सिमट कर छोटे-छोटे घर और गांव जैसे बनते जा रहे हैं। मानव-सभ्यता का इतिहास क्रमशः पाषाणयुग, लौहयुग, ताम्रयुग और स्वर्णयुग की सीमा पार करके एटम इलेक्ट्रानिक और अन्तरिक्ष युग में पहुंच गया है।

पाषाण खण्डों, वृक्षपत्रों और धातुपत्रों के माध्यम से अपना संदेश देने वाले उस युग के संदेशवाहकों ने उपग्रहों और कम्प्यूटरों का कदाचित स्वप्न भी नहीं देखा होगा। उस युग का पत्रकार कदाचित नारद मुनि के समान पदयात्रायें करके ही मौखिक रूप से सन्देश देता

रहा होगा। किन्तु आज की स्थिति उस युग से सर्वथा भिन्न है। लगभग समाप्त हो चुकी है।

जनमाध्यमों का आधार-सूचना संचरण सिद्धान्त है। सूचना, विचारों और अभिव्यक्तियों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक सम्प्रेषित करने की कला का नाम ही संचार है। इस सिद्धान्त की प्रक्रिया में मुख्यतः चार केन्द्र बिन्दु है -

(1) कम्युनिकेटर - (Communicator)

कम्युनिकेटर संचार-प्रक्रिया के एक छोर पर रहता है। इसको व्यावसायिक भाषा में एनकोडर (Encoder) कहते हैं।

(2) सन्देश- (Massage)

यह चिन्हों (Sign) प्रतीकों (Symbol) शब्दों अथवा चित्रों या इन सभी रूपों में हो सकता है।

(3) सुरुचि- (Channel)

जन संचार के क्षेत्र में किसी माध्यम को 'चैनल' कहते हैं।

(4) श्रोतागण- (Audience)

इसमें सम्मिलित व्यक्ति को 'डिकोडर' (Decoder) कहते हैं।

इस सिद्धान्त की उपयुक्त चारों बातों की स्थिति को चित्र संख्या 2.1 में प्रदर्शित किया गया है :-

चित्र संख्या 2.1
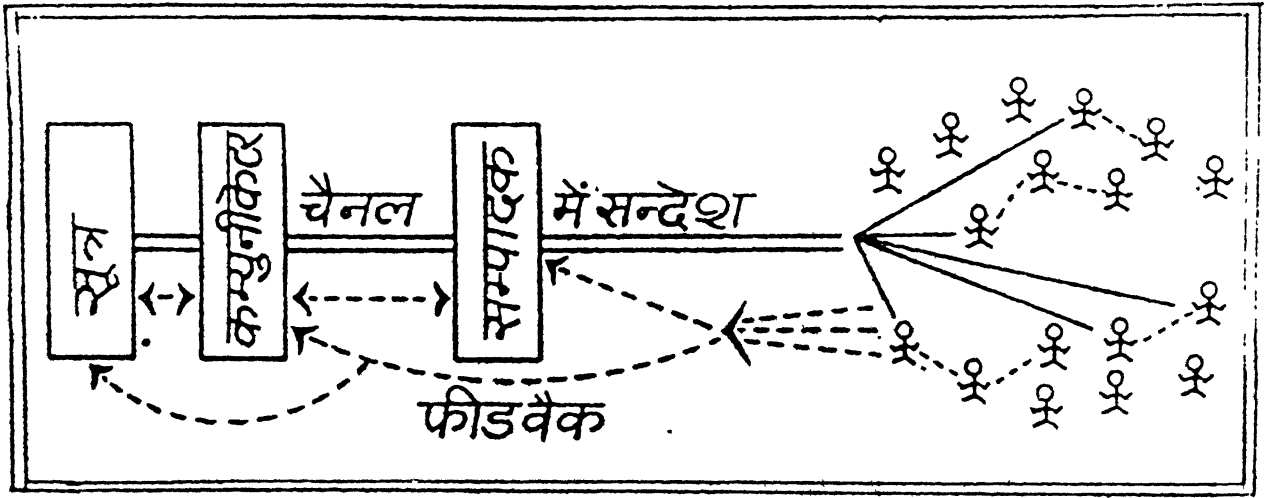
संचार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका प्रतिपुष्टि (Feedback) प्रभाव की होती है। चित्रसंख्या 2.1 द्वारा जनसंचार (Mass-Communication) सूत्र (Source) पत्रकारिता धर्मी संचारक (Communicato) सम्पादक और उसके द्वारा नियंत्रित किए गए 'माध्यम' या चैनल को भी प्रतिपुष्टि से प्रभावित दिखाया गया है। मानवाकृतियों (श्रोतावर्ग) के चित्रण में स्पष्ट किया गया है कि कुछ श्रोता माध्यम या चैनल से संदेश (समाचार या शिक्षण) सीधे (directly) और कुछ अप्रत्यक्ष (indirectly) प्राप्त करते हैं। किन्तु कुछ श्रोता ऐसे भी

होते हैं, जिन तक या तो सन्देश नहीं पहुंच पाता, या वे उसे ध्यान से नहीं सुनते। चित्र में प्रतिपुष्टि क्रियाएं (Feedback interaction) भी घटित होती दिखाई गई है ।

जब परस्पर दो व्यक्ति आमने-सामने बातचीत करते हैं और किसी भी प्रकार की बाधा उनके बीच आती है तो दोनों व्यक्ति अपनी बात को पुनः उन्हीं शब्दों में दोहराकर या आवश्यकतानुसार शब्द बदल कर परस्पर समझ लेते हैं । सूचना संचरण सिद्धांत का प्रयोग करके किन्हीं विशिष्ट दशाओं में मनुष्य द्वारा सूचना ग्रहण करने की शक्ति का पूर्वानुमान भी लगाया जा सकता है । क्वेस्टलर तथा वोल्फ ने भाषा, संगीत और मौलिक गणित की समस्याओं में संकेतों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि मानव से सम्बन्धित सूचना संचार की प्रणाली की महत्तम क्षमता (सी) 25 बिट प्रति सेकेंड है । सूचना संचरण के सिद्धान्त को सरलतापूर्वक समझने के लिए हम टेलीफोन अथवा तार प्रणाली में से किसी एक को उदाहरण के रूप में ला सकते हैं । इन उपकरणों के एक छोर पर ध्वनि को विद्युतधारा में परिवर्तित करने का यन्त्र होता है जिसे प्राविधिक भाषा में इनकोडर (Encoder) कहा जाता है और दूसरे छोर पर विद्युत धारा को ध्वनि के रूप में परिवर्तित करने का यन्त्र होता है जिसे डिकोडर (Decoder) कहा जाता है । इन दोनों छोरों अर्थात "इनकोडर" और "डिकोडर" के मध्य में एक जो तार प्रणाली होती है उसे संचार चैनल (Communication Channel) या संचार माध्यम कह सकते हैं । इन तीन भौतिक (1) सूचना स्रोत (2) संचार माध्यम तथा गन्तव्य स्थल (Destination) कह सकते हैं । सूचना स्रोत और संचार माध्यम का अर्थ तो व्योहारतः स्पष्ट है । अब प्रथम घटक सूचना स्त्रोत की तुलना उत्तेजक (Stimulus) या जैविकीय दशाओं से और दूसरे घटक, संचरण माध्यम की तुलना प्रतिक्रिया (Responses) तथा तीसरे घटक की तुलना सर्वेक्षक से करते हुए अपने उस विषय पर विचार करना जिसमें जीव किसी उत्तेजना जनित सूचना को अपनी प्रतिक्रिया के माध्यम से सर्वेक्षक तक पहुंचा सकता है । यह भी सम्भव है कि वांछित या अपेक्षित उत्तेजना मिलने पर भी कोई जीव उचित प्रतिक्रिया न व्यक्त करे या प्रतिक्रिया सर्वेक्षक तक न पहुंचे । इस प्रकार के दोष की तुलना भी टेलीफोन की तार प्रणाली में किसी प्रकार के दोष या किसी

कारण से उत्पन्न बाधा से की जा सकती है । बाधा और जनसंचार की प्राविधिक भाषा में इसे शोरगुल (Noise) कहा जाता है । जनसंचार के क्षेत्र में भी व्यवहृत सूचना संचरण के सिद्धान्त के अनुसार शोर-गुल उन जैवकीय तथा सामाजिक श्रोतों से उत्पन्न होने वाली अनेक प्रकार की बाधाओं को कहा जाता है जिनके कारण सन्देश या सूचना का शुद्ध प्रभाव श्रोताओं तक नहीं पहुंच पाता । इस प्रकार के शोर-गुल या बाधाओं का अध्ययन भी जनसंचार अनुसन्धान में किया जाता है । शोर-गुल की मापक इकाई को प्राविधिक भाषा में "बिट" (Bite) कहा जाता है । "बिट" शब्द अंग्रेजी के बाइनरी डिजिट के संक्षिप्त रूप से बना है । हिन्दी में बाइनरी डिजिट या "बिट" का अर्थ द्विपदीय अंक होता है । यदि कोई संकेत इस प्रकार भेजा जाता है कि प्राप्तकर्ता की अनिश्चितता आधी अर्थात 1/2 रह जाती है तो इसको इस प्रकार कहा जा सकता है कि संचारक ने "बिट"(Bit) की सूचना प्रेषित की है । उदाहरणार्थ मान लीजिए कि सूचना पाने वाले को इस बात का ज्ञान नहीं है कि सूचना का विषय (Subject) पुरूष है अथवा स्त्री तो इस प्रकार की विषय के लिंग (Gender) के सबंध में की गई सूचना में उस सूचना के प्राप्तकर्ता की अनिश्चितता 1/2 आधी हो जाती है । इस प्रकार यह सूचना की एक इकाई अथा 1 बिट हुई इसी प्रकार यदि सूचना प्राप्तकर्ता को यह नहीं ज्ञात हो पाता कि विषयी चार भाषाओं में से किस भाषा में बोल रहा है तो उसकी भाषा के सम्बन्ध में 2 बिट होगें, जैसा कि 4×1/2×1/2 =1 से स्पष्ट है । इस प्रकार यदि N समान रूप में सम्भव विकल्पों (Alternative) को कोई संकेत (Singal) निश्चित होता है, तो इसे प्राविधिक भाषा में कहा जाता है कि वह संकेत $\log_2 N$ इकाई प्रसारित कर रहा है । शैनन ने अपने अनुसन्धान पत्र (Research Paper) में संकेत द्वारा प्रेषित की जा सकने वाली सूचना की मात्रा (H) के लिए निम्नलिखित समीकरण की रचना की है :-

$$H = P \log_2 P_1$$

उपरोक्त समीकरण में शैनन के अनुसार P_1 उन संकेत के चयन किए जाने की सम्भावना के लिए है और उस सूचना स्त्रोत की सन्निहित शक्ति अर्थात इन्ट्रापी

के लिए है । इन धारणाओं के अनुसार शोर-गुल विहीन संचार प्रणाली के मौलिक प्रमेय (Orignal Theorem) का कथन इस प्रकार हो सकता है :-

C = H - R max

इसमें C = संचार प्रणाली की क्षमता (Capacity of Rmax = Channel) प्रति सेकेण्ड प्रेषित किए गए संकेतों की महत्तम संख्या है । इसकी इकाई संकेत प्रति सेकेण्ड और संचार की क्षमता की इकाई बिट प्रति सेकेण्ड (Bit per Second) होती है । इस सिद्धान्त में "शोर-गुल" का तात्पर्य ऐसी किसी भी स्थिति में हो सकता है जो उत्तेजक तथा प्रतिक्रिया में पूर्ण सह-सम्बन्ध होने की स्थिति में बाधा पहुंचाती है इसका कारण अनेक विख्यात जनसंचार अनुसन्धान विशेषज्ञों की यह धारणा भी है कि मनुष्य की बहुत सी मानसिक और शारीरिक सीमाएं भी उसकी सूचना या सन्देश ग्राहृयता (Massage Acceptibility) पर प्रभाव डालती है ।

2·2 जनमाध्यमों के विभिन्न साधन-मुद्रण, दृश्य, श्रव्य :-

(Different Resources of Mass-Media-Print, Vedio, Audio)

जनमाध्यम के विभिन्न साधन मुख्यतः मुद्रण, दृश्य एवं श्रव्य के रूप में है जैसा कि निम्न चित्र संख्या 2·2 से स्पष्ट है :-

चित्र संख्या 2.2
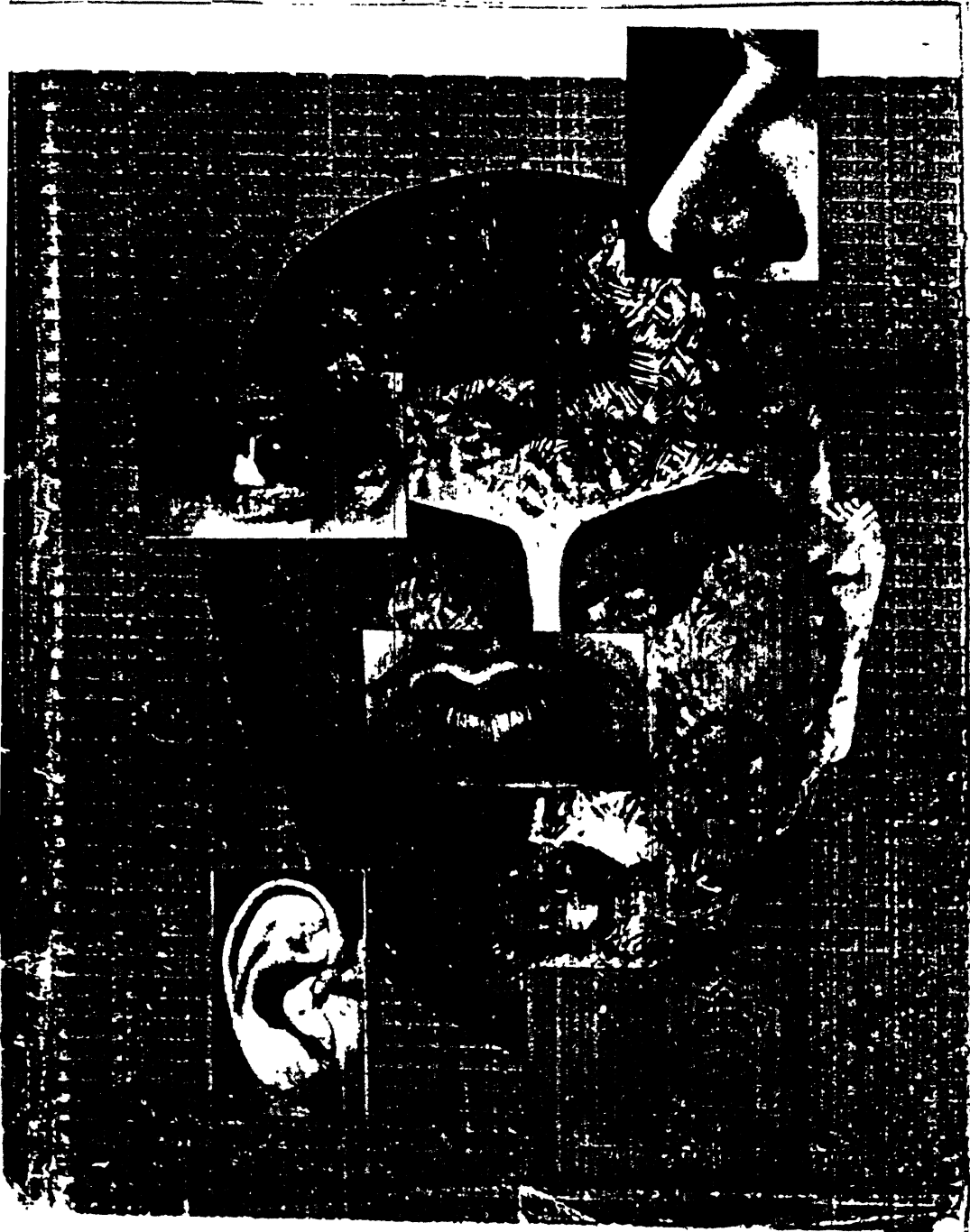
उपरोक्त चित्र के अनुसार कोई भी व्यक्ति चक्षुइन्द्रिय श्रव्य इन्द्रिय एवं ज्ञानेन्द्रिय द्वारा किसी भी सूचना विचार धारा को ग्रहण करता है। उपरोक्त चित्र के अनुसार चक्षुन्द्रिय के द्वारा मनुष्य मुद्रित अक्षरों या चित्रों अथवा दोनों से संदेश प्राप्त करता है। रेडियों का संदेश वह श्रवणेद्रिय से प्राप्त करता है दूरदर्शन एवं चलचित्र माध्यम का संबंध नेत्र एवं श्रवण दोनो इन्द्रियों से होता है । अतः कोई भी जनमाध्यम किसी भी व्यक्ति को उसकी इन इद्रिन्यों के द्वारा ही प्रभाव डालता है ।

इस तरह यदि हम जनमाध्यमों को M, के रूप में दिखाये तथा मुद्रण को P, दृश्य को V तथा श्रव्य को A से दिखाये, तो इसे हम निम्न समीकरण के रूप में लिख सकते हैं :-

$$M = P + V + A$$

इस तरह जनमाध्यम के प्रभाव को यदि Me से दिखाये तो जनमाध्यम के प्रभाव का समीकरण निम्न होगा :-

$$Me = Pe + Ve + Ae$$

(जहां e प्रभाव का द्योतक है)

अब जनमाध्यमों के विभिन्न साधन मुद्रंण, दृश्य एवं श्रव्य के अलग अलग प्रभावों का अध्ययन निम्न विश्लेषण द्वारा किया जायेगा । सर्व प्रथम मुद्रण जनमाध्यम के प्रभाव का विलेश्लेषण किया गया है। उसके पश्चात् दृश्य एवं श्रव्य जनमाध्यमों के प्रभाव का अलग अलग विश्लेषण किया गया है ।

इस तरह यदि हम किसी एक साधन जैसे मुद्रण (P) का प्रभाव जानना चाहे तो इस समीकरण को निम्न रूप में भी रखा जा सकता है :-

$$P_e = \frac{Me}{Ve + Ae}$$

इसी तरह दृश्य (V) माध्यम का प्रभाव जानने हेतु इस समीकरण को निम्न रूप से लिखा जा सकता है :-

$$Ve = \frac{Me}{Pe + Ae}$$

इसी तरह श्रव्य (A) माध्यम का प्रभाव जानने हेतु इसे निम्न समीकरण के रूप से रखा जा सकता है :-

$$Ae = \frac{Me}{Pe + Ae}$$

मुद्रण (P) के विभिन्न साधनों में हम मुख्यतः चार पत्र, पत्रिकाएं, दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर को सम्मिलित करते हैं । इस तरह यदि समाचार पत्र को n से, पत्रिकाओं को m से, तथा दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर को w से दिखाये, तो P का मान निम्न रूप से रखा जा सकता है :-

$$P = n + m + w$$

इस तरह मुद्रण जनमाध्यम में समाचार पत्रों को चित्र सं0 2.3, पत्रिकाओं को चित्र सं0 2.4, तथा पोस्टर को चित्र सं0 2.5 द्वारा दिखाया गया है :-

चित्र संख्या 2.3
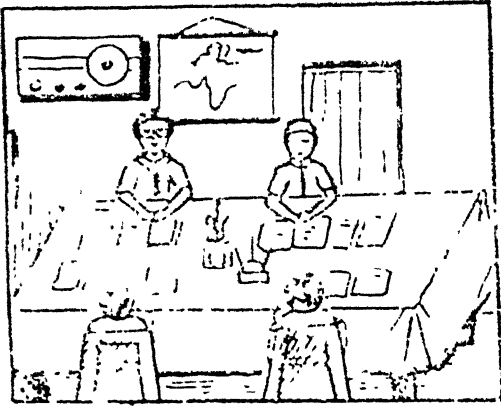
(समाचार पत्र)

चित्र संख्या 2.4

(पत्रिकाएँ)
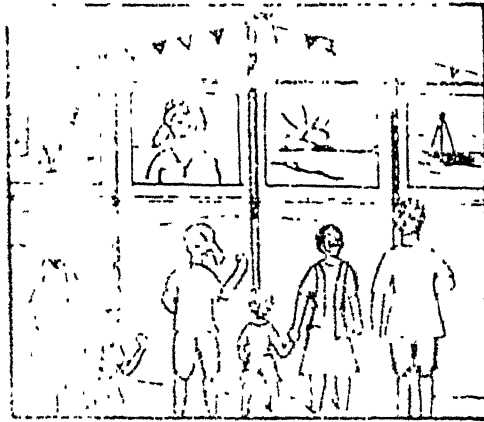
चित्र संख्या 2.5

(पोस्टर)
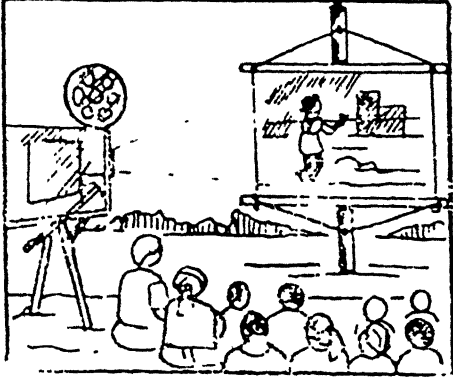
चित्र संख्या 2.6

(चल चित्र)
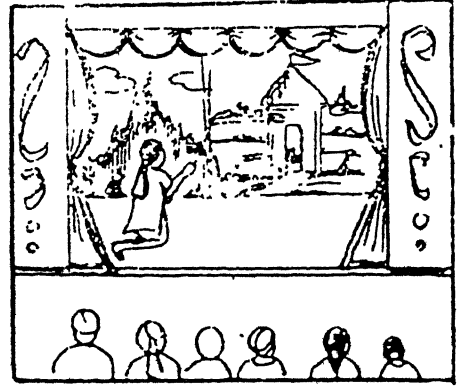
चित्र सख्या 2.7

(पारंपरिक लोफ नृत्य एवं गीत)
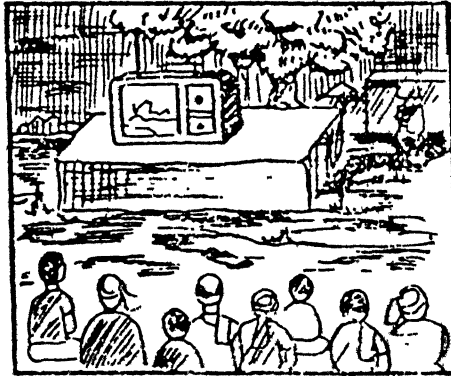
चित्र संख्या 2.8

(रेडियों)

उपरोक्त चित्रों के अनुसार समाचार पत्र, पत्रिकाएं एवं पोस्टर एसे जनमाध्यम हैं जो कुछ एक समूह पर एक साथ प्रभाव डालते हैं ।

दृश्य (V) के विभिन्न माध्यमों में हम दूरदर्शन, चलचित्र एवं पारंपारेक लोक गीत एवं नृत्य को सम्मिलित करते हैं । इस तरह यदि दूरदर्शन को d से, चलचित्र को c से, दिखाये तथा पारंपरिक लोक नृत्य को (f) से दिखायें तो V का मान निम्न रूप से भी लिखा जा सकता है :-

$$V = d + c + f$$

इस तरह दृश्य जनमाध्यम चलचित्र को चित्र सं0 2.6 एवं पारंपरिक लोकनृत्य एवं गीत को चित्र सं0 2.7 से दिखाया गया है ।

उपरोक्त चित्रनुसार चलचित्र पारंपरिक लोक गीत एवं नृत्य जनमाध्यम भी कुछ एक समूह पर प्रभाव डालते हैं जिन्हें लोग एकत्र होकर देखते हैं ।
श्रव्य माध्यम(A) में मुख्यतः हम रेडियो को सम्मिलित करते हैं अतः यदि रेडियो को r से दिखायें तो निम्न समीकरण लिखा जा सकता है :-

$$A = r$$

इस तरह श्रव्य जनमाध्यम रेडियो को चित्र सं. 2.8 से दिखाया गया है। :-

उपरोक्त चित्रानुसार रेडियों भी किसी एक समूह या समाज पर एक साथ प्रभाव डालता है लोग इसके कार्यक्रम एक साथ या अलग-अलग सुनते हैं

2.3 समाचार पत्र, रेडियो, दुरदर्शन एवं चल चित्र की कार्यविधि एवं संक्षिप्त इतिहास (The working methodology & History of News Paaper, Radio, Doordarson & Cinema)

(1) समाचार - पत्र

जब संसार में कागज का आविष्कार नहीं हुआ था, तब भी मनुष्य अपने सन्देश या सम्वाद के लिये माध्यम के रूप में 'पाषाण - सन्देशों का उपयोग करता था । हमारे देश में

जैन तथा बौद्धकाल में अनेक पाषाण सन्देशों का प्रचलन था । सम्राट अशोक ने बुद्ध के जन्मस्थान लुम्बिनी के एक पाषाण सन्देश में कहा था कि भगवान् तथागत् के जन्म स्थान के प्रति अपना सम्मान व्यक्त करने के लिए इसे सभी प्रकार के करों से मुक्त कर दिया गया है ।

विश्व की आधुनिक पत्रकारिता का इतिहास अधिक पुराना नहीं है । 1566 ई0 के आसपास युरोपीय शहरों के चौराहों पर सरकार के आदेश से लिखे गए समाचार पत्र जोर - जोर से पढ़कर सुनाए जाते थे और पढ़ने वाले को 'गजोटा' नामक एक सिक्का दिया जाता था । इस गजोटा से ही बाद में गजट की व्युत्पत्ति हुई, जो आज भी समाचार पत्र के अर्थ में प्रचलित है ।

अधिकांश विद्वानों के मतानुसार आधुनिक अर्थ में सबसे पहला समाचार पत्र जर्मनी में सन् 1609 में प्रकाशित हुआ था ।
कुछ विद्वान जर्मनी के 'न्यू जाइटुंग' (New Jeitung) को आधुनिक समाचार पत्रों का आदि पुरूष मानते हैं । आधुनिक समय में समाचार पत्रों के मुद्रण का कम्पयुटरीकरण हो गया है जो कि चित्र सं0 2.9 से दिखाया गया है :-

निम्न चित्र में एक प्रदर्शन के समय बटन दबाते ही समाचार पत्र को निकलते हुये दिखाया गया है ।

चित्र संख्या 2.9

भारत में पत्र - भारत दर्ष में संचार और सम्वाद वहन का कार्य मध्यकालीन मुसलमान शासकों के समय में ही प्रारंभ हो गया था । उन दिनो प्रत्येक जिले में 'वाक्यानवीस' या संवादाता नियुक्त किये जाते थे ।

सितम्बर सन् 1768 कलकत्ते के सार्वजनिक स्थानों से लेकर कौंसिलहाल तक अनेक इश्तहार चिपकाये गये थे । इन इश्तहारों को लिखने वाले थे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एक अधिकारी विलियम वोल्ट्स (William Bolts) उन्होने इश्तहार में कहा था कि ' शहर में छापेखाने के अभाव में आम जनता को सूचित करने का यही तरीका है।'

उपरोक्त इश्तहार को हम आधुनिक भारतीय 'समाचार पत्र' का आदि जनक कह सकते हैं । इसके कई वर्षों बाद अन्ततः 29 जनवरी 1780 को ईस्ट इंण्डिया कम्पनी कर्मचारी अंग्रेज जेम्स आगस्टस हिक्की (James Augustus Hicke) ने बंगाल गजट (Bengal Gazette) नामक पत्र प्रकाशित किया, जो 'कलकत्ता जनरल एडवर्टाइजर' और जन सामान्य में 'हिक्की गजट' के नाम से विख्यात हुआ ।

भारतीय भाषाओं में सबसे पहला नियत कालीन पत्र कलकत्ते से ईसाई धर्म प्रचारक जे0 सी0 मार्शमान ने सन् 1818 में ' दिग्दर्शन ' के नाम से प्रकाशित किया ।

हिन्दी के सबसे पहले पत्र के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है । नवीनतम जानकारी के अनुसार हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र कानपुर निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं0 जुगल किशोर सुकुल ने ' उदन्त मार्तण्ड ' के नाम से, कलकत्ते से दिनांक 30 मई सन् 1826, तदनुसार जेष्ठ्य वदी सम्बत् 9,1883 को निकाला था ।तब से लेकर अब तक भारतीय समाचार पत्रों की संख्या में निरंतर तीव्र वृद्धि होती जा रही है । चित्र सं0 2.10 में विभिन्न भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों को दिखाया गया है ।-

१. नवभारत टाइम्स (हिन्दी), २. आन्ध्रप्रभा (तैलगू), ३. लोकसत्ता (मराठी), ४. तन्ती (तमिल), ५. सन्देश (गुजराती , ६. हिन्दू (सिन्धी), ७: सुधर्मा (संस्कृत), ८. समाज (उड़िया), ९. इण्डियन एक्सप्रेस (अंग्रेजी), १०. आनन्द बाजार पत्रिका (बंगाली), ११. दैनिक असम (असमियाँ), १२. प्रताप (उर्दू), १३. मातृभूमि (मलयालम), १५. प्रजावाणी (कन्नड़),

(2) रेडियोः-

डा० ली० डी० फारेस्ट (Lee De Forest 1906) ने एक ऐसे वैक्यूमट्यूब (Vacuumtube) का आविष्कार किया जिससे ध्वनि प्रसारण भी सम्भव हो गया । इस प्रकार हम डा० फारेस्ट को रेडियो का पिता भी कह सकते हैं ।

सर्वप्रथम अमेरिका में ही वायरलेस को रेडियो की संज्ञा 1912 में दी गई । इसी अवधि में प्रायोगिक स्तर पर रेडियो का प्रयोग किया जाता रहा । इंग्लैण्ड में 14 नवंबर 1922 में ब्रिटिश ब्राड कास्टिंग कम्पनी (B.B.C.) को प्रसारण की स्वीकृति दी गई । बाद में इसी को ब्रिटिश ब्राड कास्टिंग कारपोरेशन के रूप में परिवर्तित किया गया ।

रेडियो को जन माध्यम के रूप में अधिक व्यापक बनाने तथा जन सामान्य तक रेडियो कार्यक्रमों को पहुंचाने में अमरीकी वैज्ञानिकों, शाकले (Shocley) ब्रेटेन (Brattain) और बार्डीन (Bardein) द्वारा ट्रांजिस्टर के आविष्कार की महत्वपूर्ण भूमिका है । ट्रांजिस्टर के अविष्कार के परिणाम स्वरूप विकासशील देशों के सामान्य आय के नागरिक भी अपने साथ एक जेबी रेडियो हर समय रखने लगे हैं ।

रेडियों प्रसारण के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए कक्ष में, एक व्यक्ति माइक्रोफोन के सामने ठीक उसी प्रकार बात करता है, जैसे टेलीफोन के द्वारा बात चीत की जाती है । उसकी आवाज तीव्रता (Intensity) और आवृत्ति (Frequency) में अन्तर रखते हुए कम्पन (Viverations) उत्पन्न करती है । यदि स्वरमान नीचे स्तर का होता है, तो कम्पन धीमा होता है । माइक्रोफोन में ध्वनि के ये कम्पन विद्युतीय आवेगों में परिवर्तित हो जाते हैं । ये कम्पन ध्वनिवर्धक द्वारा वर्द्धित होते हैं और वाहक तरंग में पहुंचने के पहले ही ट्रान्समीशन केन्द्रो में कई गुना कभी कभी लाखों गुना वृर्द्धित हो जाते हैं । अधिमिश्रित तरंग (Modulated Wave) एंटेना टावर से लगभग 1,86,000 मील प्रति सेकेन्ड (प्रकाशगति) से विकीर्ण होती है। कुछ तरंग भूमि की ओर चलती है,

उन्हें भूमि तरंग कहते हैं, तथा जो ऊपर की ओर जाती है उन्हें आकाशीय तरंग कहते हैं । रेडियों केन्द्र से अधिमिश्रित तरंगे होम रिसीविंग ऐंटिना के द्वारा ग्रहण कर ली जाती है । जिन्हें श्रोतागण रेडियो कार्यक्रम के रूप में उसी प्रकार सुनते हैं जिस प्रकार वे रेडियो केन्द्रों से प्रसारित किये जाते हैं । विभिन्न प्रसारण केन्द्रो से अलग-अलग आवृत्तियों पर कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं,इसतरह अलग अलग केन्द्रीय कार्यक्रमों को इच्छानुसार सुना जा सकता है

भारत में प्रसारण :-

भारत में प्रसारण सेवा का श्री गणेश 23 जुलाई 1927 को बम्बई में हुआ । इण्डियन ब्राडकास्टिंग कम्पनी के नाम से 1.5 कि0 वा0 की क्षमता वाले इस प्रथम भारतीय प्रसारण केन्द्र का उद्घाटन तत्कालीन वाइसराय लार्ड इरविन ने किया था । लार्ड इरविन ने अपने उद्घाटन भाषण में जो कुछ कहा था, उससे प्रसारण केन्द्र के प्रारम्भिक उद्देश्यों का भी स्पष्ट आभास मिलता है । उन्होने कहा था 'प्रसारण के विकास के लिए भारत में विशेष संभावनायें हैं '।

15 अगस्त 1940 के पश्चात् भारत मे प्रसारण सेवाओं का तीव्र गति से विस्तार हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप स्वातंत्रय पूर्व केवल 6 कार्यक्रम केन्द्रों के मुकाबलें 84 केन्द्र(6 अक्टूबर 1976)तक थे। इनमें 124 मीडियम वेव, 32 शार्ट वेव और 1 एफ0 एम0 है। इस समय भारतीय रेडियो कार्यकर्मों में संगीत, नाटक, भाषा, शिक्षा, फीचर्स, सामयिक मामले, वृतान्त, वाद-विवाद, : समाचार, रेडियो न्यूजरील एवं संसद-समीक्षा प्रसारण शामिल है । सामूहिक कार्यक्रमों को पुरूष, महिला, श्रमिक, व बालक और आदिवासी आदि में भी वर्गीकृत किया गया है । इस समय भारतीय प्रसारण सेवाओं में क्रमशः 92 और 218 में बहु परिवर्तन करना पड़ा ।

प्रति 26 व्यक्ति एक रेडियो :-

भारतीय इलेक्ट्रानिक विभाग की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 1978-79 की अवधि में रेडियो इंडस्ट्री द्वारा 44,20,000 रेडियो सेटों का उत्पादन किया गया । सन् 1977

---

1. प्रवीण दीक्षित, जनमाध्यम एवं पत्रकारिता, पृष्ठ 72, 1980

के अन्त तक 20,4000,00 लाइसेंसी रेडियों थे । किन्तु 1978 में इस प्रकार के लाइसेंसी सेटों की संख्या 2,38,00,000 हो गई, जब कि भारत की जनसंख्या लगभग 62,00,00,000 थी । इस प्रकार हमारे देश में वर्ष 1978 में प्रति 26 व्यक्तियों पर एक रेडियो सेट का औसत था। पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत सन् 77-78 के लिए 50,00,000 रेडियो रिसीवर बनाने की योजना थी जब कि केवल 39,80,000 ही रेडियो रिसीवर बन पाए । रेडियो और ट्रांजिस्टर निर्माण एक प्रकार से भारत में गृह उद्योग बन गया है, अतः यह अनुमान लगाना कठिन है कि उपरोक्त सॉंख्यिकी आंकड़े सत्य के कितने निकट है । व्यवहारतः तो ऐसा प्रतीत होता है कि जनसंख्या की दृष्टि से प्रति व्यक्ति एक रेडियो ट्रांजिस्टर आवश्यक होगा ।

मुद्रित माध्यम से प्रतियोगिता :-

परम्परागत मुद्रित 'जनमाध्यम ' और इलेक्ट्रानिक जन माध्यम में एक प्रकार की मौन स्वस्थ प्रतिस्पर्धा स्वाभाविक है । एक बार नेशनल ब्राडकास्टिंग कम्पनी के डेविड ब्रिंकेल ने अमेरिकी समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन में पत्रकारिता की समस्याओं पर विचार करते समय यहां तक कह दिया था कि 'आप हमसे प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते'।उन्होने यह भी कहा था कि हमारे सामने समाचार पत्रों का स्थान लेने का प्रश्न अब भी ज्यों का त्यों बना हुआ है । इनमें निजी क्षेत्र जैसी भावना नहीं हैं ।[1]

(3) चलचित्र :-

विश्व के जन-जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने की दृष्टि से चलचित्रों को सभी जनमाध्यमों में शीर्ष स्थान दिया जा सकता है । आधुनिक सभ्यता ने छपाई की मशीन बना कर साहित्य को प्रत्येक व्यक्ति के लिये सुलभ कर दिया था । उसी प्रकार सिनेमा प्राचीन दृश्य नाटकों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति को संसार के कोने कोने तक पहुंचा सकती है। चल चित्र हमारे आधुनिक जीवन में इतने सामान्य हो गये हैं कि हमें यह कल्पना भी नहीं होती कि 100 साल पहले उनका अस्तित्व तक न था । आज मनोरंजन के सबसे अधिक प्रमुख साधन के रूप

---

1. David Brincley- American Society of News Paper, Editor Proceeding 1965.

में चलचित्र जन-जीवन पर छा गये हैं । इतना ही नही चल चित्र एक कला विशेष तथा अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में आधुनिक समाज के एक आवश्यक अंश बन गऐ हैं ।

चल चित्रों में अपने दर्शक को प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता है । प्रदर्शन के समय वे प्रत्यक्ष रूप से दर्शकों की चेतना को इस सीमा तक प्रभावित करते हैं, कि दर्शक अपने वास्तविक जीवन में भी उनके प्रभाव का अनुभव करता है । इसी लिये चल चित्र एक बड़ी सीमा तक समाज के आचार-व्यवहार पर असर डालते हैं । चल चित्र आमतौर पर नये नये फैशनी तौर तरीकों को समाज में लाते है और दर्शको की विचारधाराओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर सकते हैं । इसलिये चलचित्रों का महत्व विश्वविद्यालयों, चिकित्सालयों और धार्मिक संस्थानों जैसी सामाजिक महत्व के संस्थानों से किसी प्रकार कम नहीं हैं ।

विख्यात फ्रांसीसी फिल्म निर्माता एवं निर्देशक आस्त्रुक लिखे हुए शब्दों को तरह फिल्म को भी भाषा का ही रूप मानते हैं । महेन्द्र भटनागर ने इसे नाटक और एकांकी के समान दृश्य काव्य का ही एक वैज्ञानिक रूप, और फिल्म इंस्टीटयूट आफ इण्डिया के प्रो0 सतीश बहादुर ने इसे भाषा सम्वाहन का दृश्य-श्रव्य माध्यम बताया हे । फिल्म का माध्यम के रूप में, लुइस डागुइर ने एक प्रोजेक्टर की सहायता से (1860-70 ई.) में स्क्रीन पर चित्र का प्रदर्शन किया ।

भारतीय चल - चित्र :-

भारतीय चलचित्र का इतिहास बहुत ही पुराना नहीं है। भारतीय चल चित्र जगत के इतिहास में गोविन्द फालके (1870-1944) को प्रथम भारतीय चलचित्र निर्माता और उनके द्वारा निर्मित राजा हरिश्चन्द्र (17 मई 1913) को प्रथम भारतीय चलचित्र माना जाता है ।

भारत का प्रथम सवाक चलचित्र आलम आरा (14 मार्च 1931) माना जाता है जिसे इम्पीरियल फिल्म के श्री अदेशर ईरानी ने बनाया था । भारत में वृत्त चित्रों को, प्रतिदिन 5650 स्थाई सिनेमाघरों में, एक अनुमान के अनुसार प्रतिदिन 9926000 व्यक्ति चल चित्र देखते हैं जिसके दर्शकों में 80% केवल शहरी क्षेत्र का होता है ।

----

(4) दूरदर्शन (टेलीविजन):-

सन् 1884 में एक जर्मन वैज्ञानिक नोपकोव ने (Nipkow) वायरलेस द्वारा चित्र प्रेषित करने के लिये एक स्केनिंग डिस्क (Scanning Disk) का पेटेन्ट कराया था । इसके पश्चात् अमेरिका में जेनस्बिस और फ्रांस में रोगनोक्स और फोरनियर ने टेलीविजन बनाने की दिशा में कई प्रयोग किए । मारकोनी की विजिबल टेलीफोन की भविष्यवाणी (1915) के कुछ ही वर्ष पश्चात्, ब्लाडीमीर जोरीकिन ने अपने ओइकोनोस्कोप का पेटेन्ट कराया, जो वस्तुतः टेलीविजन कैमरा ट्यूब का आदि रूप ही था । अन्ततः एलेक्सेन्डर्सन फरांचयं और जे0 एल0 बेयर्ड ने टेलीविजन बनाने में प्रारम्भिक सफलता प्राप्त कर ली । बेयर्ड ने सिद्धान्त रूप में टेलीविजन का प्रदर्शन रायल इंस्टीट्यूशन में 1926 में किया था।

टेलीविजन (दूरदर्शन) सिद्धान्त :-

टेलीविजन के प्रारम्भिक अध्याय फोटोसेल (Photocell) के आविष्कार के साथ प्रारम्भ हुआ। फोटोसेल के द्वारा प्राप्त विद्युत धारा के उतार चढ़ाव को रेडियों तरंगों के द्वारा उसी प्रकार प्रसारित किया जा सकता है, जिस प्रकार माइक्रोफोन द्वारा प्राप्त की गयी आवाज के अनुरूप विद्युत धारा के उतार चढ़ाव को प्रसारित किया जा सकता है। कोई भी चित्र वह अनेक छोटे - छोटे बिन्दुओं (Dots) से बना होता है। यदि किसी तरह एक निश्चित क्रमानुसार इन विन्दुओं को विद्युत संकेतों में परिवर्तित कर दिया जाय, तो चित्र का प्रसारण संभव हो जाता है। जिस प्रकार सिनेमा फिल्म में तेजी के साथ विभिन्न मुद्राओं को चलाकर दिखाने से चित्रों की सचलता का आभास होता है, उसी प्रकार का आभास टेलीविजन में भी होता है। आधुनिक टेलीविजन को अधिक सक्षम बनाने में केमरे में क्रमवीक्षण इलेक्ट्रान- किरणावली प्रणाली का उपयोग होता है। निम्न चित्र संख्या 2.11, 2.12, 2.13, 2.14, 2.15, 2.16, एवं 2.17 द्वारा दूरदर्शन प्रसारण के उपकरणों एवं कार्यविधि को दिखाया गया है:-

चित्र संख्या 2.11
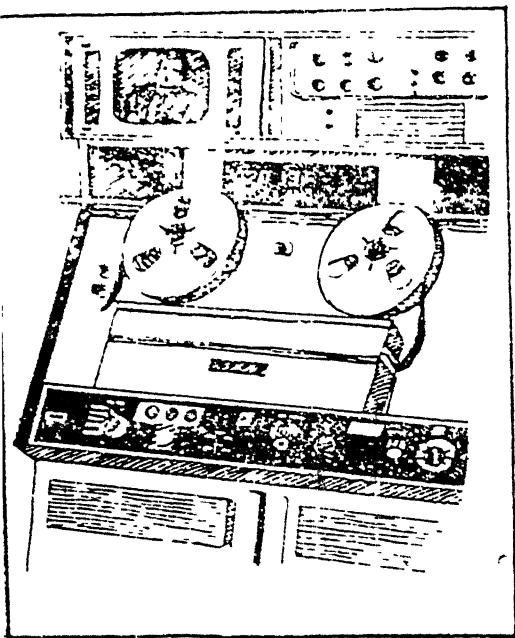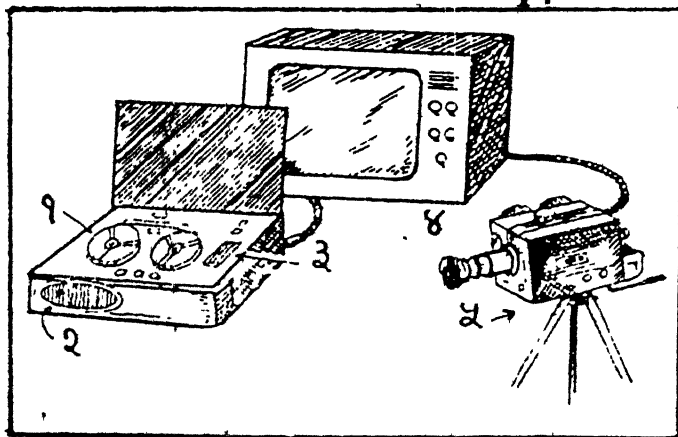
चित्र संख्या 2.12
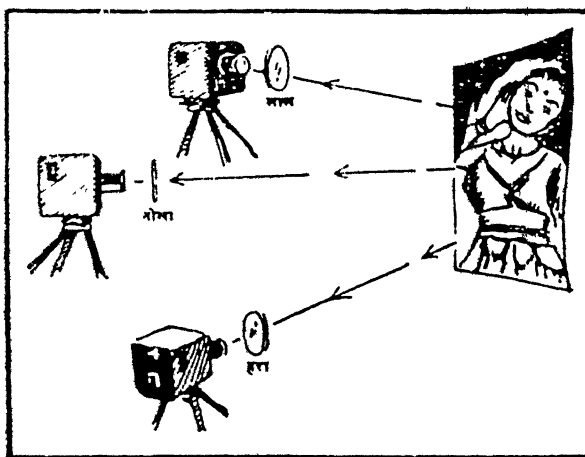
चित्र संख्या 2.13
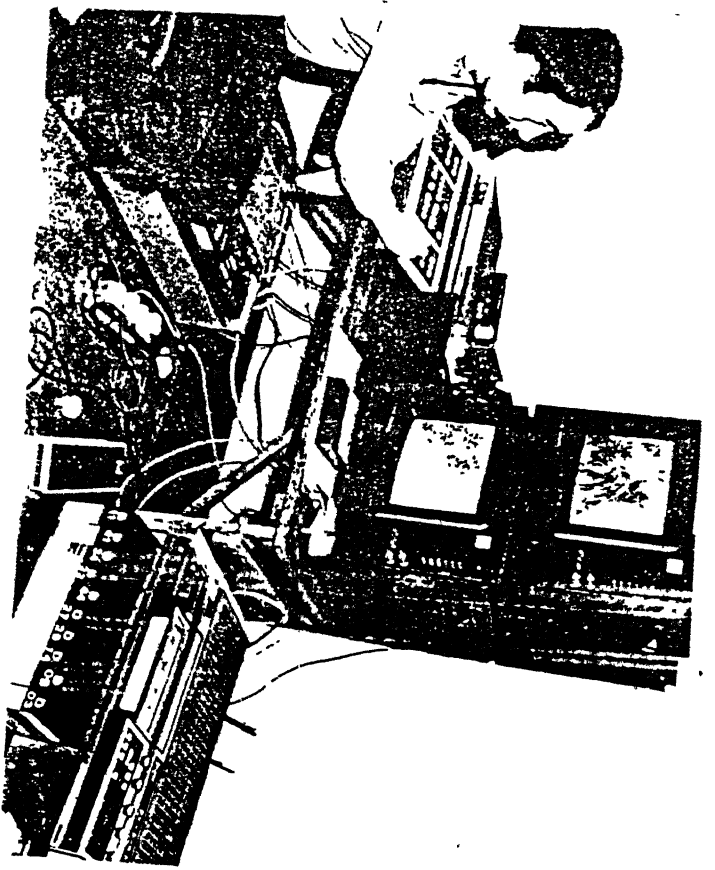
चित्र संख्या 2.14
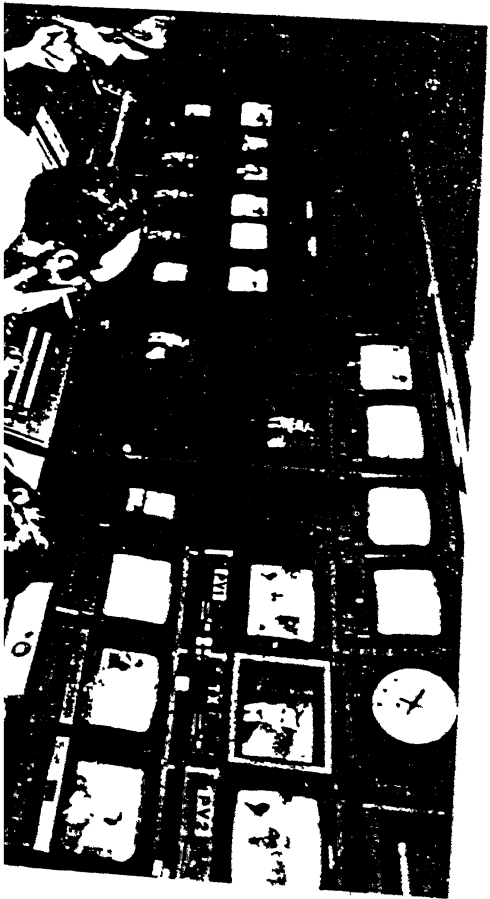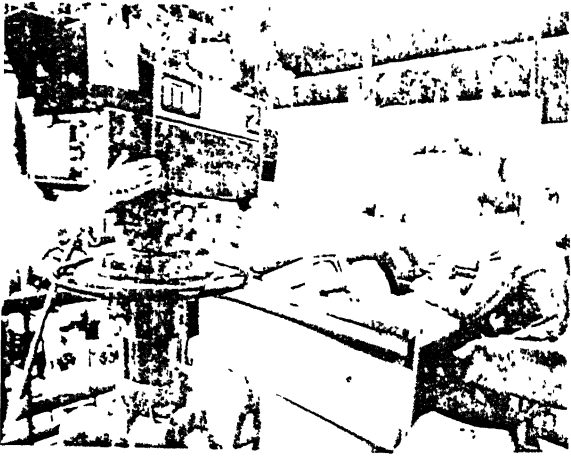
चित्र संख्या 2.16
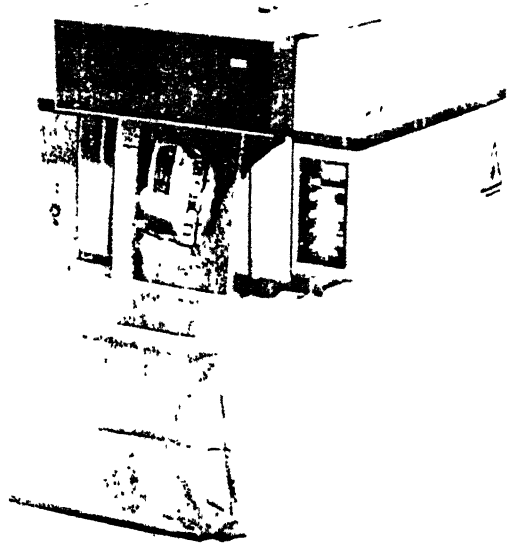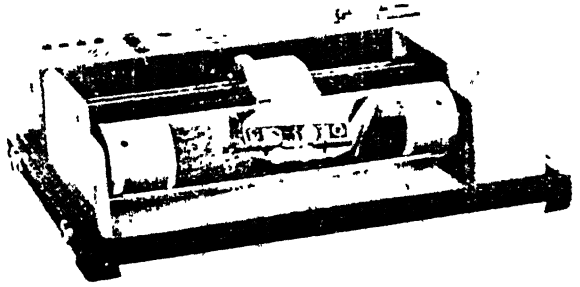
चित्र संख्या 2.17

उपरोक्त चित्रों में, चित्र संख्या 2.11 में वीडियों टेपरिकार्डर को दिखाया गया है। वर्तमान समय में टेलीविजन से प्रसारित कार्यक्रमों से अधिक रुचि वीडियों रिकार्डर द्वारा स्वयं तैयार किये गये कार्यक्रमों में ली जाती है । चूंकि परिवार नियोजन से सम्बन्धित कार्यक्रमों का निर्माण वीडियों रिकार्डर द्वारा बहुत ही कम होता है, एवं इसके द्वारा प्रदर्शित कार्यक्रमों की पद्धति एवं प्रभाव दूरदर्शन के समान होता है, अतः हमने अपने अध्ययन में दृश्य माध्यम के अन्तर्गत इसे दूरदर्शन से अलग नहीं लिया है।

चित्र संख्या 2.12 में दूरदर्शन केन्द्र में स्थित वीडियो, आडियो, उपकरण, पिक्चर रिकार्डर (Picture Recorder) को दिखाया गया है, जिसमें क्रमानुसार 1- टेप, 2- स्पीकर, 3- माइक, 4- रिसीवर, 5- टीवी केमरा है। यह सब मिलकर पिक्चर को रिकार्ड करते हैं ।

चित्र संख्या 2.13 से स्पष्ट है कि प्रारम्भ के समय में रंगीन चित्रों को दिखाने के लिये तीन कैमरों के सामने तीन रंगों लाल, हरी, नीली चरखी लगानी पड़ती थी। किन्तु आधुनिक टी.वी.कैमरो में अब इस तरह की व्यवस्था नहीं करनी पड़ती व स्वतः रंगों का निर्माण करते हैं ।

चित्र संख्या 2.14 में कार्यक्रम के प्रस्तुतीकरण हेतु संक्षिप्तीकरण एवं सम्पादीयकरण (Editorial) को करते हुये दिखाया गया है ।

चित्र संख्या 2.15 में दूरदर्शन के कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण के समय नियंत्रण कक्ष के कार्यविधि को दिखाया गया है जिसमें निदेशक, प्रोडक्शन असिस्टेन्श एवं प्रीड्यूसर बैठे हैं ।

चित्र संख्या 2.16 भी दूरदर्शन केन्द्र की आंतरिक कार्यविधि का है जब कि कार्यक्रम प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

चित्र संख्या 2.17 पूर्ण उच्च गति के टेलीफोटो सिस्टम उपकरण का है, जिसमें दूसरे स्टेशन के चित्रों को अपने हेड आफिस में भेजा जाता है। यह उपकरण पोर्टेबल होता है ।

भारत में दूरदर्शन :-

भारत में टेलीविजन एवं उसके कार्यक्रम को 'दूरदर्शन' कहा जाता है।

भारत में दूरदर्शन की स्थापना का बीजारोपण नवम्बर 1956 में दिल्ली में हुए यूनेस्कों सम्मेलन में हुआ था । इस सम्मेलन में ही शिक्षा, ग्राम सुधार और सामुदायिक विकास कार्य के लिए जनमाध्यम के रूप में दूरदर्शन कार्यक्रम प्रारम्भ करने का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। इस प्रस्ताव के क्रियान्वयन के लिए कई विशेषज्ञो द्वारा विचार विमर्श के बाद एक योजना बनाई गई और अक्टूबर 1959 में आल इंडिया रेडियो तथा यूनेस्कों के मध्य एक समझौता सम्पन्न हुआ । उस समय भी जनसंख्या नियोजन के संबंध में स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम को एक उद्देश्य के रूप में रखा गया -

(क) ग्रामीण क्षेत्रों और शहरों की स्थिति तथा आवश्यकता के अनुरूप कार्यक्रमों की एक ऐसी श्रृंखला तैयार करके प्रसारित करना, जिससे प्रौढ़ शिक्षा और स्वास्थ्य शिक्षा में सुधार हो सके ।

(ख) मनोरंजन की सामुदायिक गतिविधियों का विकास और एक सीमा में रहते हुए स्कूलों में दी जाने वाली शिक्षा के पूरक कार्यक्रम प्रस्तुत किऐ जा सके ।

(ग) प्रसारित किए गऐ कार्यक्रमों का अवलोकन और उन पर खुली चर्चाओं के लिए दृश्य केन्द्रो को संगठित करना ।

(घ) इस नये जनमाध्यम से नगर, क्षेत्रीय और ग्रामीण नागरिकों पर पड़ने वाले प्रभाव का वैज्ञानिक ढंग से आंकलन और अध्ययन करना । एक ओर भारत में संयुक्त राष्ट्र संघ के सहयोग से दूरदर्शन कार्यक्रम प्रारंभ किए तो दूसरी ओर सन् 1961 में आल इण्डिया ने भी फोर्ड फाउन्डेशन (Ford foundation)के सहयोग से स्कूलों के लिए एक प्रसारण परियोजना दिल्ली में प्रारंभ की ।

उपग्रह शैक्षणिक दुर संचार प्रयोग :-

भारत में 15 अगस्त 1965 के पूर्व, नियमित दूरदर्शन, प्रसारण की व्यवस्था नहीं थी । इस अवधि में संघीय जर्मन गणराज्य की ओर से भारत को दुरदर्शन यंत्रों का उपहार दिया गया जिन्हें आल इण्डिया रेडियो के ही एक स्टूडियो कक्ष में स्थापित करके, उसी को काम चलाऊ दुरदर्शन प्रसारण केन्द्र बनाया गया । सुप्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक डा0 विक्रम साराभाई उन दिनों जीवित थे । इस योजना के लिए उनके विशेष प्रयास से 1967 में अहमदाबाद में एक परीक्षणात्मक ग्राउण्ड स्टेशन (SAC) स्थापित किया गया । भारत की ग्रामोन्मुखी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए खेड़ा (गुजरात) से व्यवहारिक कार्यक्रम प्रसारण केन्द्र अब साइट (SITE= Satelite Instructional Television --- Experiment) के नाम से अपने सार्थकता के कारण विश्वविख्यात हो गया । भारतीय टेलीविजन। अप्रैल 1976 से आल इण्डिया रेडियो का ही एक अंग न होकर अब दुरदर्शन के नाम से उसके पृथक अस्तित्व का विकास कर रहा है ।

दुरदर्शन सरणि :-

टेलीविजन प्रसारण में रेडियो तरंग की पट्टी को सरणि कहते हैं टेलीविजन में जो चित्र प्रदर्शित करना होता हैं उसके लगभग 25,00,000 भाग किऐ जाते हैं। किसी चित्र को चलता हुआ दिखाने के लिए हमारी आंखों के सामने प्रति सेकेण्ड कम से कम 24 चित्र बनना अनिवार्य है । इसी सिद्धान्त के अनुसार टेलीविजन दृश्यों में गतिमयता के आभास के लिए टेलीविजन तरंग प्रति सेकेण्ड लगभग 60 लाख संकेत ले जाना आवश्यक है । 1945 में बने नियमानुसार प्रत्येक टेलीविजन केन्द्र के लिए पृथक पृथक सारणियां सुनिश्चित की गयी है । यहां पर इस सम्बंध में भारतीय स्थिति का विश्लेषण सारिणी 2.1 में दिया गया है :-

भारतीय सारणियां

सारिणी 2.1

सारणी सं0	आवृति, मगाहर्ट्ज में
1.	+
2.	47 - 54
3.	54 - 61

4.	61 - 68
5.	174 - 181
6.	181 - 188
7.	188 - 195
8.	195 - 202
9.	202 - 209
10.	209 - 216
11.	216 - 223
12.	223 - 230

सहकारी ऐन्टीना दुरदर्शन :- (CATV)

दूरदर्शन प्रसारणों को प्रसारण केन्द्र से लगभग 100 किलोमीटर की दूरी तक ही स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । लम्बे मार्गों के कारण, जो संकेत किंचित विलम्ब से पहुंचते हैं उनसे भूतों जैसी बहुत हल्की आकृति बनती है । दुरी की स्थिति में चित्रों के धुंधलेपन और निकटता की स्थिति में भूत जैसी समस्याओं से निपटने के लिए बनाई गयी, सहकारी योजना कोआपरेटिव एन्टीना दुरदर्शन (सी.ए.टी.वी.) कहते हैं । इस योजना के अन्तर्गत दुरदर्शन केन्द्रों के संकेत किसी ऊँचे स्थान पर लगे एन्टीना द्वारा ग्रहण कर लिए जाते हैं तथा उन्हें शक्तिशाली बनाकर टेलीफोन जैसी तार प्रणाली द्वारा नगर के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले उपभोक्ताओं में वितरित कर दिया जाता है। इस योजना में ग्राहक अपने घर पर लगे दुरदर्शन सेट पर उस कार्यक्रम को भी देख सकता है, जिसका (टेलीकास्ट) नहीं किया जाता है । किन्तु दिखाने की व्यवस्था की जाती है ।

चन्द्र परिपथ दुरदर्शन :- (CCTV)

दुरदर्शन कैमरे को तारों द्वारा किसी दुर रखे रिसीवर से जोड़ देने पर भी दृश्य चित्र बन जाते हैं। इस प्रकार दृश्य अथवा चित्र प्रेषण के लिए ट्रान्समीटर या ऐन्टीना की आवश्यकता नहीं होती । इस प्रणाली को बन्द परिपथ दुरदर्शन अथवा क्लोज्ड सर्किट टेलीविजन- (सी.सी.टी.वी.) कहते हैं ।

2·4 समाचार पत्र, पत्रिकाएं, दीवार प्रिंटिंग-पोस्टर, रेडियो, चलचित्र एवं दूरदर्शन की तुलनात्मक प्रभाविकता (The Comparative effective study of the News Paper, Magzine, Wall Printing, Poster, Radio, Cinema and Doordarshan)

(अ) सैद्धान्तिक पक्ष :

समाचार पत्र, पत्रिकाएं, दीवार प्रिंटिंग-पोस्टर :-

मुद्रण जनमाध्यम में, समाचार पत्र जहाँ व्यक्ति सामान्यतः लगभग प्रतिदिन पढ़ता है, वहीं पत्रिका व्यक्ति सप्ताह में 15 दिन में या 1 माह में या कभी कभी पढ़ता है । किन्तु जहाँ तक वह समाचार पत्र पढ़ता तो लगभग प्रतिदिन है किन्तु उस पर समय पत्रिका पढ़ने की अपेक्षा कम देता है । इसी तरह पत्रिका में चित्रों की भरमार होती है, अतः पत्रिका का अपना महत्व है । किन्तु पत्रिका वह काफी समय अंतराल में पढ़ता है, जिससे कि कुछ समय बाद उसका प्रभाव उसके मस्तिष्क से हट जाता है । किन्तु समाचार पत्र वह लगभग नियमित पढ़ता है । दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर पर व्यक्ति का ध्यान कभी-कभी पड़ता है तथा पुनः उनको देखने में काफी समय अंतराल रहता है, अतः इनका प्रभाव कुछ कम ही पड़ता है । यद्यपि किसी भी जनमाध्यम का प्रभाव व्यक्ति की मानसिक एवं मनःस्थिति पर निर्भर करता है, तथा यह एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है, फिर भी हम यह मान सकते हैं कि यदि एक समय (t) पर ही तीनों साधन पढ़े जाये, तो समाचार पत्र एवं पत्रिका का प्रभाव बराबर होगा तथा दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर का कम, किन्तु कुछ समय (t_{+1}) बाद पत्रिका का प्रभाव भी कम होने लगता है । इस तरह समाचार पत्रों का प्रभाव व्यक्ति पर बना रहता है, जबकि पत्रिकाओं का प्रभाव कुछ समय बाद कम होता जाता है । जबकि दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर का प्रभाव भी समय के साथ-साथ घटता रहता है । अतः हम इसे निम्न रूप से लिख सकते हैं :=-

$$Pe_t \text{ में}, \; ne_t = me_t > we_t$$

$$Pe_{t+1} \text{ में}, \; ne_{t+1} > me_{t+1} > we_{t+1}$$

(जहाँ Pe मुद्रण जनमाध्यम, ne समाचार पत्र, me पत्रिका, We दीवार प्रिंटिंग

अतः मुद्रण माध्यम प्रभाव का चक्र जनमाध्यम उपलब्धता एवं समय के साथ नीचे से ऊपर की ओर उठता है जो आगे चलकर घटती हुई दर से प्रभाव की वृद्दि दिखता है ।

रेडिया :-

श्रव्य जनमाध्यम में रेडियो का प्रभाव व्यक्ति के हृदय एवं मस्तिष्क पर तुरन्त पड़ता है किंतु कुछ समय बाद यह भी मस्तिष्क से हटने लगता है अतः

$At = rt$

At_{+1} में, $ret > ret_{+1}$

{ जहां A_e श्रव्य, r_e रेडियो जनमाध्यमों के प्रभाव को दर्शाते हैं }

अतः श्रव्य माध्यम का वक्र भी जनमाध्यम उपलब्धता एवं समय के साथ बढ़ता है किंतु एक निश्चित समय बाद इसके प्रभाव की वृद्दि भी घटती दर से होती है ।

चलचित्र, दूरदर्शन तथा पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य :-

दृश्य जनमाध्यम में चलचित्र (c) एवं दूरदर्शन (d) पारंपरिक लोक नृत्य (f) ऐसे माध्यम है जिनका कि प्रभाव व्यक्ति के मस्तिष्क एवं हृदय पर विभिन्न समयावधियों में बराबर बना रहता है । अतः

Ve_t में $de_t = ce_t = fe_t$

Ve_{t+1} में $de_{t+1} = ce_{t+1} = fe_{t+1}$

{जहां V_e दृश्य जनमाध्यम, d_e दूरदर्शन, c_e सिनेमा, f_e पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य को दर्शाते हैं }

अतः दृश्य माध्यम का वक्र भी माध्यम उपलब्धता एवं समय के साथ-साथ लगभग समान दर से बढ़ता हुआ होता है ।

इस तरह हमने मुद्रण, दृश्य एवं श्रव्य माध्यमों के प्रभावों के वक्रों को मिलाकर निम्न चित्र 2.18 में कुल जनमाध्यमों के प्रभाव के वक्र को खींचा गया है :-

चित्र संख्या 2.18
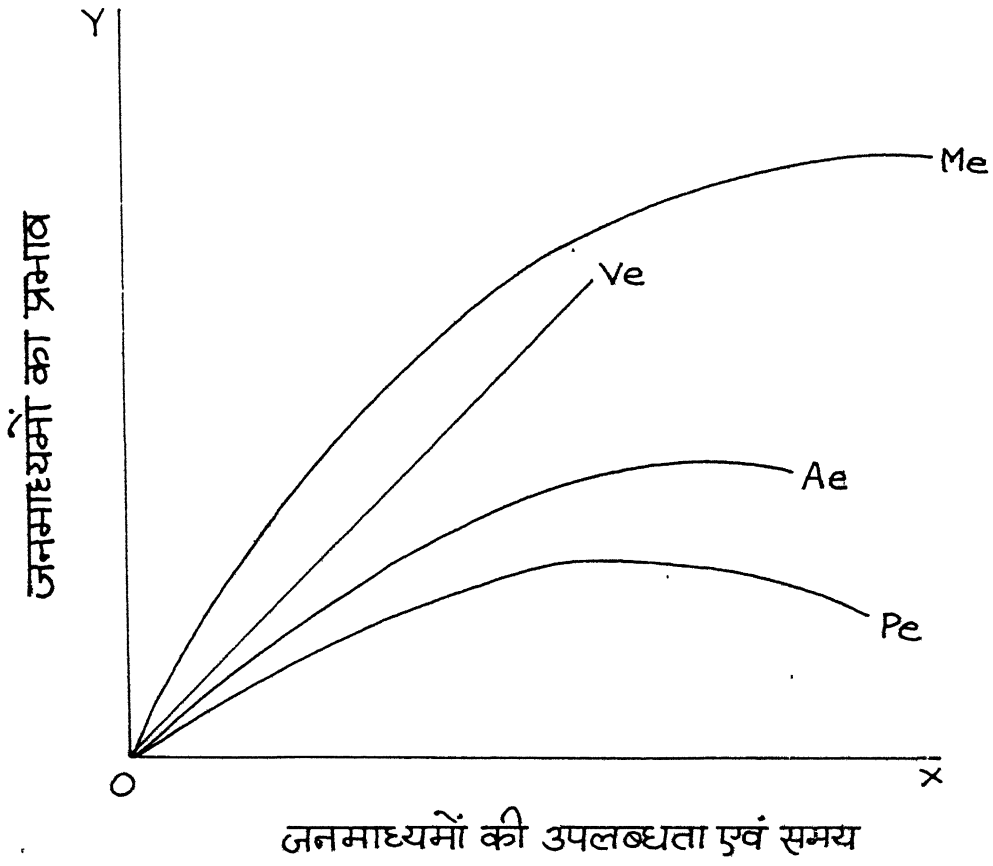
उपरोक्त चित्र में Pe एवं Ae वक्र क्रमशः मुद्रण एवं श्रव्य माध्यम के प्रभाव को दिखाते हैं जो कि समय वृद्धि के साथ - साथ कम प्रभाव वृद्धि को दिखाते हैं एवंVe वक्र जो कि दृश्य माध्यम का वक्र है जो कि लगभग 45^0 की सीधी रेखा में है, तथा जो समय वृद्धि के साथ-साथ समान वृद्धि का प्रभाव दिखाता है । Me वक्र कुल जनमाध्यमों के प्रभाव को दिखाता है, तथा यह वक्र Pe एवं Ae वक्र के कारण आगे चलकर घटती वृद्धि दर का प्रभाव दिखाता है ।

(ब) व्यवहारिक पक्ष :-

जनमाध्यम को प्रभावशाली बनाने के लिये उसकी इन्द्रियग्राह्य आवश्यकता की ओर भी ध्यान रखना पड़ता है । मानव-समाज किसी व्यक्ति या समूह की अनुभूतियों या अभिव्यक्तियों को समझने के लिए केवल दो ज्ञानेन्द्रियों पर निर्भर है । (1) नेत्रेन्द्रिय (2) श्रवणेन्द्रिय । नेत्रेन्द्रिय के द्वारा मनुष्य मुद्रित अक्षरों या चित्रों अथवा इन दोनों से संदेश प्राप्त करता है । ये संदेश समाचार पत्र, पत्रिकाओं, पुस्तकों, पैम्फ्लेट्स, इश्तहार या डाइरेक्ट डाक सर्कुलर्स आदि के रूप में हो सकते हैं । रेडियो एक ऐसा जनमाध्यम है जिससे हम श्रवणेन्द्रिय के द्वारा संदेश ग्रहण करते हैं । दूरदर्शन और चलचित्र ये दो ऐसे माध्यम है जिनका सम्बन्ध नेत्र और श्रवण दोनों ही इन्द्रियों से हैं । अतः स्पष्ट है कि नेत्र मूलक माध्यमों की सुदर्शता, कर्ण मूलक माध्यमों की शब्द ध्वनि मधुरता आदि के लिए प्रभावकारी सुनियोजित प्रयास किए जाये ।

दैनिक समाचार पत्रों का उपयोग स्थानीय, क्षेत्रीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय समाचारों, अभिमत, मनोरंजन और विज्ञापन के लिए किया जाता है । साप्ताहिक पत्रों से समाचारों की पृष्ठभूमि तथा उस पर विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है । पत्रिकाओं का उपयोग महत्वपूर्ण प्रान्तीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों से सम्बन्धित पृष्ठभूमि, सूचना अभिमत, मनोरंजन और विज्ञापन के लिये किया जाता है । पुस्तकों से हमें विविध विषयों की विस्तृत

जानकारी और दीर्घकालिक मनोरंजन प्राप्त होता है । पैम्फलेट, डाइरेक्ट मेल, सर्कुलर्स और इतश्तहारों का उपयोग व्यवसायिक विज्ञापनों के साथ - साथ नागरिक संगठनों के कार्यक्रमों तथा गतिविधियों के सार्वजनिक ज्ञापन के लिए किया जाता है । रेडियो और दूरदर्शन के द्वारा नागरिकों को अपने घर बैठे सार्वजनिक क्रार्यक्रमों तथा महत्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है । इन दोनों माध्यमों का उपयोग समाचार, विचार मनोरंजन तथा विज्ञापन के लिए भी किया जाता है । चलचित्रों का उपयोग जनता का मनोरंजन करते हुए उसे अपने उद्देश्य (शिक्षा) से सूचित करते हुए उसकी ओर प्रेरित करना होता है ।

आधुनिक जन माध्यम का विश्व के मनोविज्ञान, समाजविज्ञान, शिक्षा कानून आचार संहिता, भाषा, संस्कृति चिकित्सकीय निदान विज्ञान (Semiology) विलासिता और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों पर व्यापक प्रभाव पड़ रहा है । विश्व की संचार समस्याओं के अध्ययन के लिए गठित अन्तर्राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष सी एन मैकब्रीड के अनुसार मनुष्य के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक अथवा सांस्कृतिक जीवन पर जन माध्यम का व्यापक प्रभाव पड़ता है । यदि यह कहा जाए कि मनुष्य के सामान्य ज्ञान का अधिकांश भाग जन माध्यम की ही देन है, तो अत्युक्ति नहीं होगी ।

अभी हाल ही में, इंगलैण्ड में एक वैज्ञानिक ने बालकों में अपराध भावना का एक मुख्य कारण टेलीविजन में प्रदर्शित कार्यक्रमों के अपराध दृश्यों को ही बताया था । अमेरिका में युवा पीढ़ी के उठने, बैठने, बोलने, मुस्कराने, चलने, चिल्लाने और यहां तक कि प्रेम करने में भी टी. वी. मैनरिज्म की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है इस लिए वहां की युवा पीढ़ी को "टेलीविजन जेनरेशन" तक कहा जाने लगा है ।

सन 1974 में वाशिंगटन में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार संसार में क्या हो रहा है, यह जानने के लिए अधिकतर लोग टी.वी. (33 प्र0 श0), उससे कम रेडियो (32 प्र0 श0), उसके बाद समाचार पत्र (26 प्र0 श0) और सबसे कम साप्ताहिकों (6 प्र0 श0) पर निर्भर रहते हैं ।[1] प्रतिदिन समाचार पढ़ने के लिए समय लगाने का विवरण इस प्रकार है :-

---

1. प्रवीण दीक्षित, जनमाध्यम एवं पत्रकारिता (प्रथम खण्ड) पृष्ठ 4

सारिणी संख्या 2.2

समाचार पत्रों पर दिये गये समय का विवरण :

समय	प्रतिशत
कम से कम 15 मिनट	17 प्र0 श0
15 से 30 मिनट	27 प्र0 श0
30 मिनट से 1 घन्टा	34 प्र0 श0
1 घन्टे से अधिक	22 प्र0 श0

हमारे देश की युवा पीढ़ी पर भी लोक प्रिय पत्रिकाओं, रेडियो और सिनेमा का प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जा सकता है । छोटे - छोटे अबोध बच्चों को प्रेम गीत सिखाने और युवा छात्रों को हिप्पी फैशन से सजाने का श्रेय वास्तव में रेडियो और सिनेमा को ही है । अन्य जन माध्यमों का प्रभाव चाहे प्रत्यक्ष न हो, किन्तु यह भी नहीं समझना चाहिए कि अन्य जनमाध्यम जनजीवन पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डालते ।

जन माध्यम का मुख्य उद्देश्य केवल जानकारी और कभी - कभी पृष्ठभूमि सहित जानकारी देना ही होता है, न कि अपनी राय के अनुसार एक नया समाज बनाना । जब जन माध्यम से कोई राय भी दी जाती है, तब उसका उद्देश्य यह नहीं होता कि किसी व्यक्ति वर्ग, समूह या समाज पर बलपूर्वक अपनी राय लादी या थोपी जाये । जनमाध्यम वस्तुतः एक ऐसा उपक्रम है, जिसका उद्देश्य चयनात्मक अभिव्यक्ति करण (Selective Exposure) है ।

स्पष्ट है कि तुलनात्मक प्रभाविकता की दृष्टि से समाचार पत्र संक्षिप्त सूचना एवं जानकारी के साथ दैनिक जीवन से जुड़े है जब कि पत्रिका विस्तृत जानकारी देती है। दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर यदा कदा दिखते हैं वे न तो नियमित उपलब्ध होते हैं और न ही विस्तृत रूप में । रेडियो चलचित्र एवं दूरदर्शन की तुलनात्मक प्रभाविकता की दृष्टि से दूरदर्शन एवं चल चित्र ही प्रभावी जनमाध्यम है, क्योंकि यह दृश्य एवं श्रव्य दोनों माध्यम है तथा मनुष्य की चक्षु एवं श्रवणइन्द्रिय पर प्रभाव डालते हैं ।

2.5 जनमाध्यमों के विभिन्न उपकरण -समाचार, लेख, विज्ञापन, एवं फोटोफीचर

(Defferent Instruments of Mass-Media-News, Article, Advertisement, & Photo Feature)

जनमाध्यमों का प्रभाव उसके विभिन्न उपकरणों समाचार, लेख, विज्ञापन एवं फोटो फीचर पर निर्भर करता है । यदि हम लेख को a से, विज्ञापन को ad से, फोटो फीचर को ff से दिखाये तो हम कह सकते हैं कि

$$Me = f (a, ad, ff)$$

समाचार - यह प्रतिपादित विशिष्ट '6 ककार' सिद्धांत क्या (What) कहां (Where), कब(When), किसने (Who), क्यों (Why), कैसे (How), के आधार पर किसी घटना का प्रस्तुतीकरण ही समाचार है । उपरोक्त सिद्धांत में 5 अक्षर अंग्रेजी के W 'अक्षर से प्रारंभ होते हैं अतः इसे 'फाइव डबल्यूज थ्योरी' (Five Ws Theory) भी कहते हैं ।[1] किंतु आधुनिक पत्रकार व्यवहारिक कठिनाई होने के कारण प्रत्येक आमुख में इन 6 ककारों का उत्तर का निहित होना आवश्यक नहीं मानते ।[2]

समाचार पत्र किसी घटना का प्रस्तुतिकरण करते हैं। अतः इस उपकरण का परिवार आकार छोटा रखने के लिए लोगों को प्रभावित करने में इसका कोई विशेष महत्व नहीं हैं, अतः हमने अपने सर्वेक्षण के दौरान इससे संबंधित लोगों की जानकारी लेना आवश्यक नहीं समझा ।

लेख -

लेख किसी भी सामयिक विषय पर सम्पूर्ण जानकारी एवं विचार प्रस्तुत करने की कला है । लेख लोगों की मानसिकता पर अच्छा प्रभाव डालतें हैं । यह विस्तृत प्रभावकारी तथा लोगों को किसी भी विचार को अपनाने में प्रेरित करने वाले होते हैं ।

---

1. Edwin L. Shoeman, Practical, Journalism 1894 Page 57.
2. John Honenberg, The Professional Journalist, Page-74 1978.

विज्ञापन -

सामाजिक विज्ञापकों की ऐसे निर्माताओं के रूप में गणना की जानी चाहिये जो सदेव पर्दे के पीछे 'अनाम' रहकर अपना काम करते हैं । विज्ञापक ही किसी बात को 'मास पब्लि सिटी' का रूप देने में सक्षम होते हैं तथा विज्ञापन एक आवश्यक उपकरण (Tool) हैं । विज्ञापन के अन्तर्गत हम सेवा भावना, आशावादी दृष्टिकोण, एवं लक्ष्य एवं उद्देश्य को ध्यान में रखते हैं । यह एक जनमाध्यम का प्रभावी उपकरण हैं ।

फोटो फीचर -

सम-सामयिक घटनाओं, विचार धाराओं का सचित्र विवरण प्रस्तुत करने को ही फोटो फीचर कहते हैं ।[1] चित्र = 1000 अयह बात एक पारंपारिक कहावत के रूप में प्रचलित हैं कि चित्र 1000 शब्दो के बराबर होता है । चित्रों एवं शब्दों के मिले जुले माध्यम से पाठक के मस्तिष्क में जितना अधिक कम्युनिकेटिव प्रभाव पड़ सकता है उतना अन्य किसी प्रकार संभव नहीं है ।[2] इस तरह फोटो फीचर जनमाध्यमों का प्रमुख सर्वाधिक प्रभावी उपकरण है ।

चित्र सं0 2.19 एक फोटो फीचर का उदाहरण है जिसमें एक गरीब की भूख का सामयिक चित्री करण है :-

---

1. प्रवीण दीक्षित, जनमाध्यम एवं पत्रकारिता (द्वितीय खण्ड), 1980 पृष्ठ 613
2. Wilson Hicks-Words and picture 1952 Page-104.

चित्र संख्या 2.19

2.6 परिवार आकार तथा जनसंख्या नियोजन के संदर्भ में जनमाध्यमों का योगदान -

सैद्धान्तिक पक्ष (Role of Mass-Media with reference to family size & Population Planning)

परिवार आकार से आशय किसी दम्पति की कुल संतानों से होता है । इस तरह परिवार आकार का निर्धारण उस परिवार में हुये जन्म, मृत्यु, एवं प्रवसन (Migration) से होता है । प्रवसन के द्वारा परिवार आकार में होने वाली वृद्धि या कमी से उस स्थान की जनसंख्या में वृद्धि या कमी हो सकती है किन्तु कुल जनसंख्या में कोई विशेष अन्तर नहीं होता है। कुल जनंसख्या में होने वाली वृद्धि की दृष्टि से जन्म एवं मृत्यु ही मुख्य तत्व है । किसी भी स्थान की जन संख्या में वृद्धि कमी का विश्लेषण निम्न चित्र संख्या 2.20 से देखा जा सकता है :-

परिवार से प्रवसन
परिवार से प्रवसन
जन्म
कुल जनसंख्या
परिवार में जन्म
जन्म (परिवार में)
परिवार में प्रवसन
मृत्यु (परिवार में)
परिवार में मृत्यु
परिवार में मृत्यु
मृत्यु
परिवार में प्रवसन
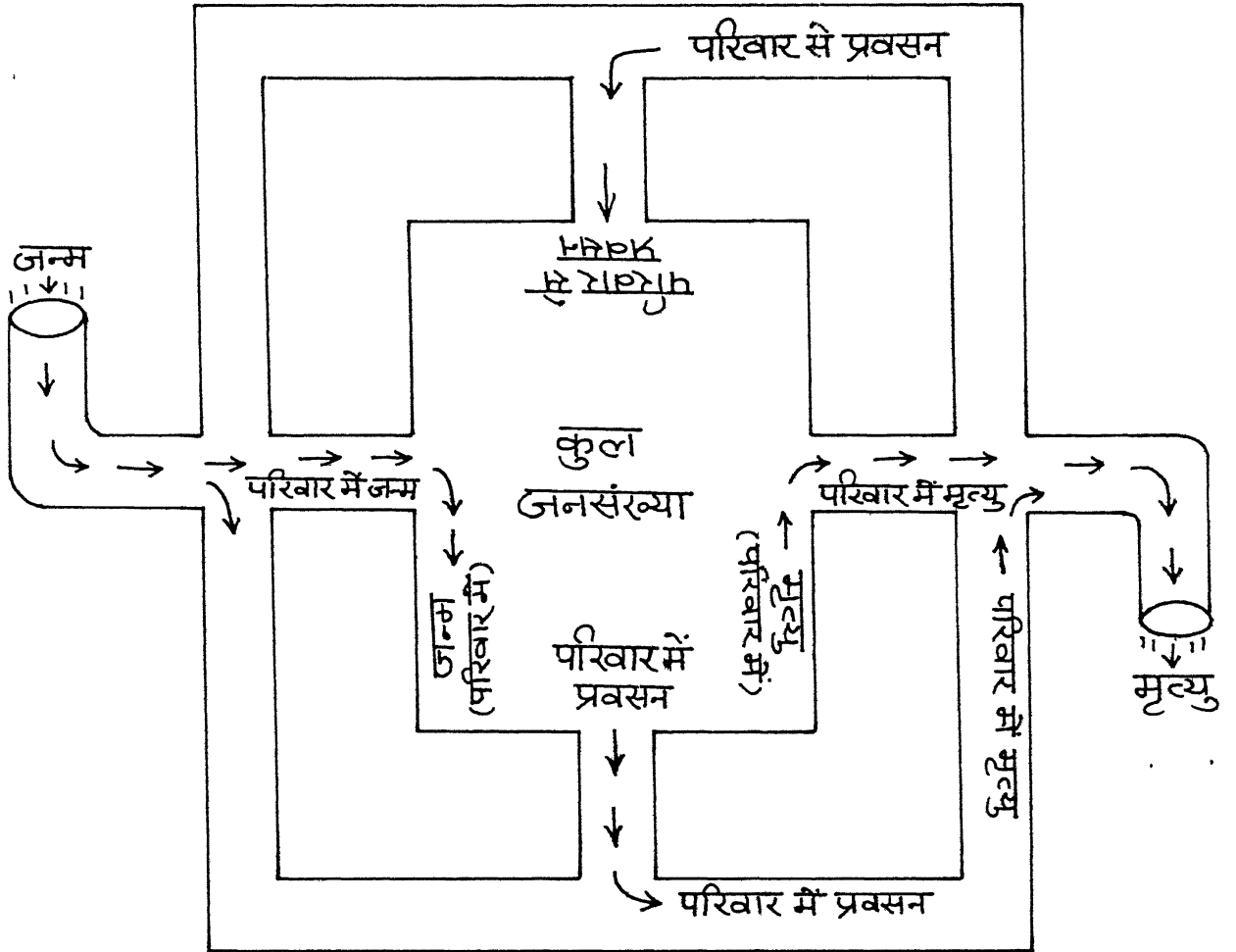
चित्र संख्या 2.20

उपरोक्त चित्र सं0 2.20 से स्पष्ट है कि बाहरी आयत परिवार आकार का है तथा भीतरी आयत कुल जनसंख्या का है । चित्र से स्पष्ट है कि परिवार से दोनों प्रकार के होने वाला प्रवसन कुल जनसंख्या वृद्धि में कोई परिवर्तन नहीं लाता है । जब कि परिवार में होने वाली अतिरिक्त जन्म कुल जनसंख्या में वृद्धि लाती है तथा परिवार में होने वाली मृत्यु कुल जनसंख्या में कमी लाती है । अतः ऊँची जन्म दर ही जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारक है।

इस तरह परिवार आकार मुख्यतः परिवार में हुये जन्म, मृत्यु एवं प्रवसन से निर्धारित होता है । अब यदि परिवार आकार को (Fs) से, जन्म को (B) से, मृत्यु को (e) से दिखाये, तथा प्रवसन को (u) से दिखाये तो निम्न समीकरण बनता है । :-

$$F_S = B + e \pm u$$

चूंकि जन्म दर (B) विवाह आयु, संतानोत्पति अंतराल, पर, निर्भर करती है अतः इसे निम्न रूप में भी लिख सकते है -

$$B = f\ (ma,\ cbg)$$

(जहां ma = विवाह आयु, cbg = संतानोत्पति अंतराल को प्रकट करता है।)

चूंकि प्रवसन का कुल जनसंख्या वृद्धि में विशेष महत्व नहीं होता है अतः किसी भी देश की जनसंख्या जन्म एवं मृत्यु पर निर्भर करती है । यदि किसी देश की कुल जनसंख्या को (P)) से दिखाये तो किसी समय विशेष में जन्मदर (Br) को निम्न रूप से दिखा सकते हैं

$$Br_t = \frac{B}{P}$$

इसी तरह यदि एक वर्ष में होने वाली कुल मृत्यु को (E) से दिखो, तो किसी समय विशेष में मृत्युदर (Er) को निम्न रूप से दिखा सकते हैं :-

$$Ert = \frac{E}{P}$$

अब यदि किसी देश में जन्म दर मृत्यु दर से अधिक है तो जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होगी ($Brt > Ert = P\uparrow$) तीव्र जनसंख्या वृद्धि या इसे इस तरह भी लिख सकते हैं:-

$$\frac{B}{P} > \frac{E}{P} = P\uparrow$$

अब यदि जनमाध्यमों का प्रभाव (M), परिवार आकार जन्म दर पर देखें तो

$$M \rightarrow B$$
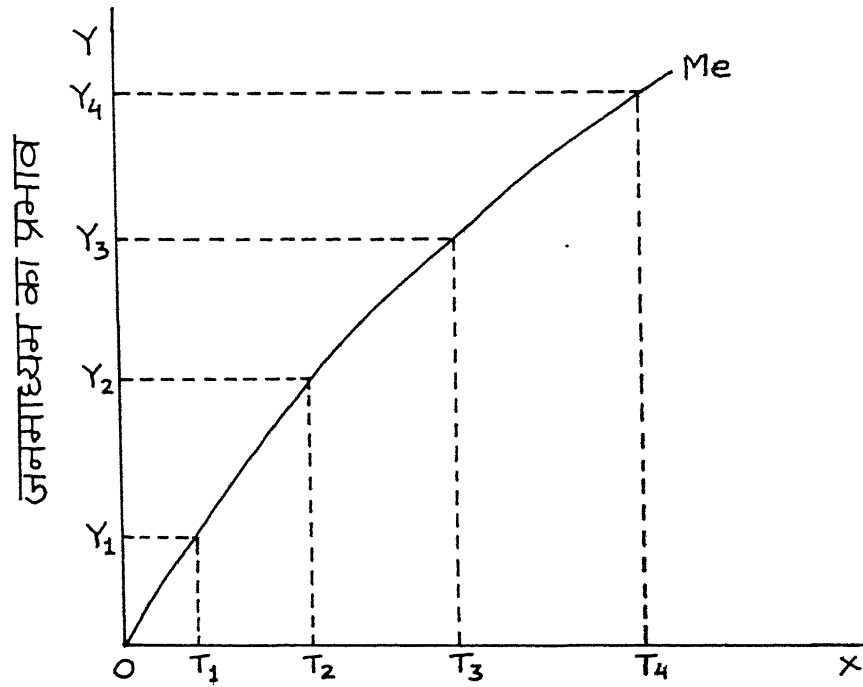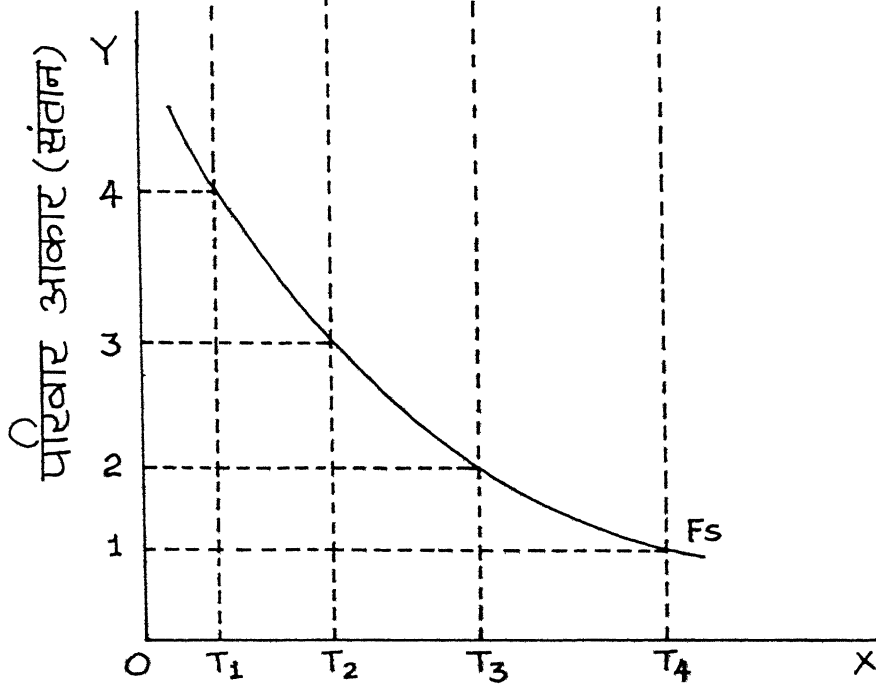
Y
Me
Y_4
Y_3
Y_2
Y_1
जनमाध्यम का प्रभाव
O
T_1
T_2
T_3
T_4
X
समय एवं जनमाध्यमों की उपलब्धता
Y
परिवार आकार (संतान)
4
3
2
1
Fs
O
T_1
T_2
T_3
T_4
X
समय एवं जनमाध्यमों की उपलब्धता

चित्रसंख्या 2.21

चित्र सं0 2.21 जनमाध्यम प्रभाव वक्र (Me) है जो कि समय एवं जनमाध्यमों की उपलब्धता की वृद्धि के साथ - साथ जनमाध्मयों के प्रभाव को दिखाता है । इस प्रभाव वक्र को लेते हुए परिवार आकार (संतानोत्पत्ति) का वक्र खींचा है जो यह बताता है कि जैसे जैसे जनमाध्यमों का प्रभाव बढ़ता है लोग कम संतान उत्पत्ति करते हैं । चित्र देखने से स्पष्ट है कि (T_1) समयवधि में जब जनमाध्यम का प्रभाव (OY_1) है तो लोग 4 संतान उत्पत्ति करते हैं । जन जनमाध्यमों की उपलब्धता (T_2) समय में बढ़ती है तथा वह छोटे परिवार आकार के लाभों एवं उपाय की जानकारी देते हैं तो जनमाध्यमों का प्रभाव बढ़कर (OY_2) हो जाता है तथा लोग 3 संतान उत्पन्न करते हैं । इसी तरह (T_3) एवं (T_4) समायावधि में जनमाध्यम का प्रभाव बढ़कर (OY_3, OY_4) हो जाता है तथा लोग कम क्रमशः 2 एवं । संतान उत्पत्ति करते हैं ।

व्यवहारिक पक्ष - भारतीय संदर्भ में जनमाध्यमों की भूमिका :-

वर्तमान समय में जन माध्यमों के बढ़ते महत्व को यूनेस्कों की एक रिपोर्ट में कहा गया है 'आज जन सम्पर्क समाज की अवस्था है और लोग संचार माध्यमों में, जन माध्यम बाजार की व्यवस्था करते हैं '।[1]

जन माध्यमों द्वारा वर्तमान समय में आदर्श परिवार आकार (छोटा एवं नियोजित परिवार आकार) रखने एवं उसके कल्याण का प्रयास किया जा रहा है । जन माध्यम किसी भी देश में आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति के परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । जापान में 1959 में हुए एक सर्वेक्षण के अनुसार पत्र-पत्रिकाएं, गर्भ निरोधक क्रिया कलाप के ज्ञान की प्रमुख स्त्रोत है । जनसंख्या की तेजी से वृद्धि, उसकी आर्थिक और सामाजिक समसयाओं तथा परिवार नियोजन के महत्व के बारे में लोगों को जानकारी देने के मामलें में जनमाध्यमों ने प्रमुख भूमिका निभाई है । हमारे देश में जन माध्यमों के प्रमुख साधन के रूप में समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, दूर दर्शन, चल चित्र, पोस्टर एवं दीवार प्रिन्टिंग, पारम्परिक लोक गीत एवं नृत्य, स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम हैं । इसके अतिरिक्त अन्य जन माध्यमों में परिवार कल्याण केन्द्र एवं मित्र प्रमुख हैं ।

भारत में परिवार नियोजन सरकारी कार्यक्रम के रूप में 1952 में शुरू किया गया था , परन्तु प्रारंभ में इसके बारे में लोगों को अपेक्षित जानकारी देने की उपयुक्त व्यवस्था नहीं थी। इसलिए 1966 में इसके लिए परिवार नियोजन नाम से एक अलग विभाग खोला गया और इसके साथ प्रसार की व्यवस्था भी जोड़ी गयी। विभिन्न प्रचार माध्यमों के साथ तालमेल करके इन कार्यक्रमों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने और इसे जन आंदोलन का रूप देने का कार्य शुरू किया गया ।

देश के योजनाकाल में दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि जन माध्यमों के द्वारा परिवार कल्याण कार्यक्रम अपनाने हेतु सर्व प्रथम तृतीय पंचवर्षीय योजना में कार्यरूप दिया गया। तृतीय पंचवर्षीय योजना में चिकित्सीय दृष्टिकोण के स्थान पर परिवार नियोजन कार्यक्रम को जनता तक अपनी बात पहुंचाने के लिए जन सम्पर्क माध्यमों की आवश्यकता महसूस की गई तथा जन शिक्षा एवं माध्यम एकक की स्थापना की गई । चतुर्थ योजना में प्रचार में मुख्य रूप से परिवर्तन किया गया, तथा ग्रामीण क्षेत्रों एवं छोटे कस्बों में जन शिक्षा क्रिया कलापों पर जोर दिया गया एवं आर्थिक दृष्टिकोण का प्रचार किया गया। पांचवीं योजना में मातृ सेवा तथा बच्चों की देख रेख का विषय भी सम्मिलित किया गया तथा नये माध्यम दूरदर्शन के उपयोग पर जोर दिया गया । साथ ही ग्रामीणोन्मुख दृष्टिकोण अपनाने की घोषणा की गई तथा लोकगीत, लोक नृत्य एवं गीत नाटक इत्यादि जैसे स्थानीय माध्यमों पर जोर दिया गया । छठीं योजना में स्थानीय माध्यमों पर जोर दिया गया जैसे लोगों में जा जाकर व्याख्यान करने, लोक कलाओं तथा प्रसारण माध्यमों जैसे स्थानीय माध्यमों की सहायता से जन माध्यम कार्यक्रमों का और अधिक विकेन्द्रीकरण किया गया । जिससे यह सन्देश निम्नतम जनता तक पहुंच सके । इस अवधि के दौरान रेडियो, दूरदर्शन, प्रेस, क्षेत्रीय प्रचार, दृश्य श्रव्य, प्रचार, निदेशालय एवं नाटक जैसे माध्यमों ने परिवार नियोजन कार्यक्रम के विचारों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

हमारे देश में विभिन्न पम्पलेटो, विज्ञापनों द्वारा परिवार आकार छोटा रखने एवं मातृ शिशु कल्याण कार्यक्रम को अपनाने हेतु प्रेरित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाये गये हैं । जिसके कुछ चित्र निम्न हैं :-

चित्र संख्या 2.22
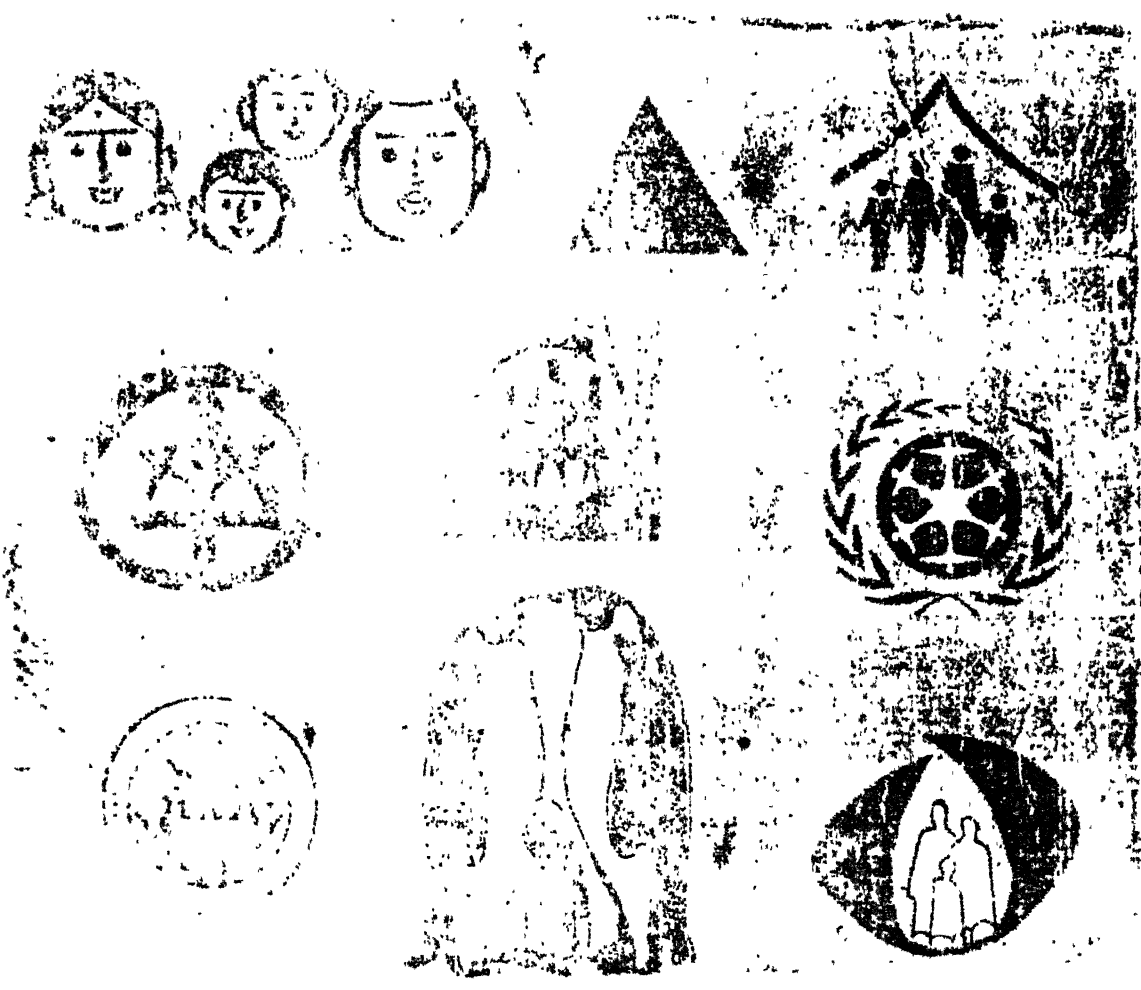
चित्र संख्या 2.24

च्चे भारत का भविष्य हैं। और यह हम पर निर्भर है कि हम अपने देश के विष्य को क्या रूप दे। जितना स्वस्थ हम आज अपने बच्चों को बनाएँगे, ना ही उज्ज्वल कल हमारा भविष्य होगा।

यद्यपि हमारा देश स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ चुका है, फिर भी साथ साथ एक कडवा सच यह भी है कि भारत में हर वर्ष लाखों बच्चे, बचपन की नलेवा बीमारियो का शिकार हो जाते हैं। यह बीमारियाँ या तो बच्चों के लिए तक सिद्ध होती हैं या उम्र भर के लिए उन्हें अपंग व रोगी बना जाती हैं।

यह छ खतरनाक बीमारियाँ हैं:

गलघोटू (डिपथीरिया), काली खाँसी, टेटनस, तपेदिक (टी.बी.), पोलियो और सरा (मीजल्स)। यह बीमारियाँ दस्त, निमोनिया, अंधापन, बहरापन, साँस नकलीफ और दिमागी कमज़ोरी जैसे और रोगों को भी बढ़ावा देती हैं।

टीकाकरण इन बीमारियों से बचने का अचूक साधन है। टीकाकरण गर्भवती महिलाओं और शिशुओं को इन बीमारियों से बचा कर उनका जीवन सुरक्षित बनाता है।

2

5

1. टेटनस
2. खसरा (मीज़ल्स)
3. काली खाँसी
4. पोलियो
5. तपेदिक (टी.बी.)

चित्र संख्या 2.25

टीकाकरण में सफलता के लिए टीकों की एक सूची भी बनाई गई है। इस सूची में यह बताया गया है कि गर्भवती महिला और शिशु को कौन से महीने में कौन से टीके लगने चाहिए। साथ में उपयोगी निर्देश और सावधानियाँ भी दी गई हैं।

उचित टीकाकरण सूची	
गर्भवती महिलाओ को:–	
गर्भावस्था में जितनी जल्दी हो सके	टिटनस-1 का टीका
टिटनस-1 के 1 माह बाद	टिटनस-2 या बूस्टर का टीका
बच्चे के लिए –	
[illegible] माह पर	बी सी जी *
	डी पी टी-1 का टीका और पोलियो-1 की खुराक
2 माह पर	डी पी टी-2 का टीका और पोलियो 2 की खुराक
3 माह पर	डी पी टी-3 का टीका और पोलियो 3 की खुराक
9 माह पर	खसरे का टीका
16 से 24 माह के बीच में	डी पी टी और पोलियो की बूस्टर टीका, खुराक

*यदि बच्चे का जन्म अस्पताल/क्लिनिक में हुआ है, तो उसे जन्म के समय ही बी सी.जी का टीका लगाएँ।

एक वर्ष का होने से पहले शिशु को बी सी. जी. का एक टीका, डी.पी.टी. के तीन टीके, पोलियो की तीन खुराकें और खसरे का एक टीका लग जाना चाहिए।

खसरे का टीका

इन छः जानलेवा बीमारियों में से खसरा सबसे खतरनाक है। यह बच्चों के लिए या तो घातक सिद्ध होता है या उन पर कई प्रकार के बुरे असर छोड़ जाता है जैसे दस्त, निमोनिया, अंधापन, बहरापन, फेफड़ों की बीमारियाँ, दिमागी कमजोरी इत्यादि। खसरा रोग से पीड़ित बच्चों में यह बीमारियाँ और भी खतरनाक होती हैं। इसलिए खसरे का टीका लगवाना अति आवश्यक है। यह टीका बच्चे को नौ महीने का हो जाने के बाद और एक वर्ष का होने से पहले लगाना चाहिए ताकि वह इस खतरनाक बीमारी से सुरक्षित रहे। इस टीके के बिना टीकाकरण संपूर्ण नहीं होता।

टीकाकरण कार्ड

टीकाकरण कार्ड से गर्भवती महिला, शिशु की मा और स्वास्थ्य कार्यकर्ता, सबको पता रहता है कि कौन सा टीका कब दिया गया था। स्वास्थ्य कार्यकर्ता इस कार्ड की मदद से अपने क्षेत्र में टीकाकरण की स्थिति भी जाँच सकते हैं।

चित्र संख्या 2.26
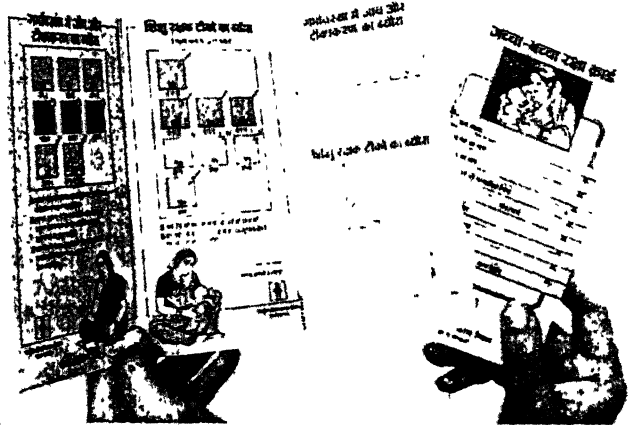
चित्र सं0 2.22 परिवार कल्याण कार्यक्रम से आने वाले उज्ज्वल भविष्य को इंगित करता है, चित्र सं0 2.23 में सरकार द्वारा जन्म को स्वेच्छा पर आधारित बताया गया है । चित्र सं0 2.24 में सरकार द्वारा परिवार नियोजन कार्यक्रम में अपनाये जाने वाले विभिन्न प्रतीको को दिखाया गया है । चित्र सं0 2.25 एवं 2.26 में मातृ एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत टीका कारण को दिखाया गया है । उपरोक्त सभी मुद्रण सामग्री ने लोगों को परिवार कल्याण कार्यक्रम अपनाने हेतु प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है ।

हमारे देश में 1992 में 126.16 लाख दैनिक समाचार पत्र तथा 176.59 लाख अदैनिक समाचार पत्र छपते हैं । इस तरह हमारे देश में प्रति 07 आदमी पर एक दैनिक समाचार पत्र तथा प्रति 48 आदमी पर । अदैनिक समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं छपती हैं ।

रेडियो के प्रसारण की शुरूआत हमारे देश में 1927 में बम्बई एवं कलकत्ता में हुई। 1930 में इण्डियन ब्राड कास्टिंग सेवा प्रारम्भ की गई । आज ए.आई.आर. अपने 124 स्टेशन 139 एम. डब्लू. ट्रांसमीटर, 43 एस. डब्लू. ट्रान्समीटर एवं 36 एफ. डब्लू. ट्रान्समीटर के साथ देश के कुल क्षेत्र का 85 प्रतिशत एवं कुल जनसंख्या का 95.7 क्षेत्र कवर करता है ।

जनमाध्यमों में क्रान्तिकारी ढंग से लोकप्रिय माध्यम दूरदर्शन की स्थापना हमारे देश में सितम्बर 1959 में दिल्ली में हुई । 15 अगस्त 1984 को राष्ट्रीय प्रसारण की शुरूआत की गई । देश में सर्वाधिक प्रभावी होने वाला यह माध्यम कुल जनसंख्या में 78 प्रतिशत लोगों के मध्य उपलब्ध है । 1989 में देश में कुल 169.73 लाख श्वेतश्याम तथा 55.65 लाख रंगीन कलई टी.वी. सेट थे । इस तरह वर्ष 1989 में प्रत्येक 38 व्यक्तियों पर एक दूरदर्शन सेट उपलब्ध था। 1992 तक बढ़कर इनकी संख्या दुगनी हो गई है ।

परिवार आकारको छोटा रखने एवं देश की जनसंख्या को नियोजित करने में जनमाध्यमों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है । एक ओर जहां इन जनमाध्यमों ने लोगों में व्याप्त गलत धारणाओं को दूर किया है वहीं लोगों को कम संतान उत्पन्न, करने संतानोत्पति के मध्य

समयावधि अधिक रखने, विवाह आयु की सरकारी उम्र को स्वीकारने एवं मातृ एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम को अपनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

परिवार नियोजन और सरकारी प्रचार माध्यमों की भूमिका

हमारा देश अब नारों और प्रतीकों से काफी आगे निकल चुका है । 'लाल तिकोन' निशान को देखते ही गांव के अनपढ़ गंवार लोगों के मस्तिष्क में भी परिवार नियोजन तथा जनसंख्या के बारे में कुछ न कुछ भावना आये बिना नही रहती । आजकल परिवार नियोजन के पोस्टर तथा नारे आदि ग्रामीण क्षेत्रों की कच्ची दीवारों से लेकर शहरी क्षेत्रों की टेलीफोन खंभों सभी पर लगे दिखाई पड़ते हैं । शब्दों, चित्रों तथा ध्वनियों की गरज जनसंचार के हर माध्यम से लोगों को इस बात के संदेश दिये जा रहे हैं कि विकास के लिए परिवार नियोजन का बहुत अधिक महत्व है । प्राचीन काल के जन संचार माध्यम कठपुतली जो आज भी एक सशक्त और लोकप्रिय कला विधा हैं, से लेकर अत्याधुनिक जन संचार माध्यम टेलीविजन तक का इस दिशा में उपयोग किया जा रहा है । परिवार नियोजन का संदेश लोगों को केवल देश भक्ति की भावना से ही नहीं, बल्कि अपने दैनिक उपयोग के रूप में ग्रहण करना है । यह उनके जीवन का उत्थान करने वाला महत्वपूर्ण साधन है । आज कल के प्रचार माध्यमों से चौकाने वाले आंकड़े देकर, लोगों को परिवार नियोजन के प्रति आकृष्ट नहीं किया जाता है । बल्कि लोगों को इस बारे में सही सूचना दी जाती है और उनके दृष्टिकोण को व्यापक बना कर उन्हें प्रेरित किया जाता है । आधुनिक जनमाध्यम का उपयोग समाज के हर वर्ग - किशोरो, विवाह से पहले युवक युवतियों, सद्य विवाहितों, एक बच्चे वाले दम्पत्तियों, दो बच्चे वाले दम्पत्तियों, दो या उससे अधिक बच्चे वाले दम्पत्तियों सामाजिक कार्यकर्ताओं, नेताओं आदि विभिन्न वर्गो के अनुरूप किया जाता है । जनमाध्यमों के साधन, समाज के हर वर्ग जैसे, पंचायत - प्रधान, ग्रामीण - अध्यापक, युवा- क्लब, महिला मण्डल मजदूर नेता, शिक्षित युवती, राजनीतिक सामाजिक कार्यकर्ता हर वर्ग के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर उपयोग में लाये जाते हैं ।

अब से कुछ वर्ष पहले समाज में 'सेक्स' और गर्भ निरोध के बारे में बात चीत करना घृणास्पद माना जाता था । परन्तु जनमाध्यमों ने सावधानी से और धीरे धीरे लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । कुछ वर्ष पूर्व रेडियो पर कंडोम या निरोध का प्रचार बहुत बुरा माना जाता था । परन्तु आजकल इससे कोई नाराज नहीं हो रहा है 16 मिलीमीटर की टेलीविजन फिल्में परिवार नियोजन कार्यक्रमों के बारे में प्रस्तुत की जाती हे और उन्हें बच्चे से लेकर बूढ़े सभी बेठकर एक साथ देखते हैं । कुछ सीमित फिल्में सीमित युवा वर्ग को दिखाने के लिए भी बनायी जा रही है । उन्हें भी देखकर लोग परिवार नियोजन के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं ।

जनमाध्यमों ने परिवार नियोजन के बारे में अनेक प्रकार की गलत धारणाएं दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । इस समय देश में अधिकांश लोग सीमित परिवार के महत्व को समझने और अनुभव करने लगे हैं । हमारे देश की अधिकतर आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है । उनमें इन कार्यक्रमों के बारे में सही जानकारी उपलब्ध कराने में इन माध्यमों ने निश्चिय ही प्रमुख योगदान किया है । प्रारंभ में, जब परिवार नियोजन के बारे में जनमाध्यमों का कम उपयोग किया जाता था, तो लोगों में तमाम गलत धारणांए पैदा हो गयी थी । जैसे पांच-सात प्रसव के बाद कुछ कमजोर महिलाओं ने 'लूप' लगवाये तथा 'आपरेशन' करवाये तो उन्हें कमर में दर्द, सिर दर्द, बुखार आदि व्याधियां हुई और उन्होने इसे परिवार नियोजन के सिर पर थोप दिया । इसी प्रकार जब आठ-दस बच्चों के प्रौढ़ पिता ने ढलती उम्र में नसबंदी के आपरेशन कराये तो उनको शारीरिक कमजोरी होनी अनिवार्य थी । ऐसे लोगों ने अपनी इस प्रकार की कमजोरियों और दाम्पत्य जीवन की अक्षमता को परिवार नियोजन के मत्थे मढ़ दिया। परिणाम यह हुआ कि छठे और सातवें दशक के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में अज्ञानता, अशिक्षा, गरीबी और रूढ़ियों से ग्रस्त समाज में परिवार नियोजन कार्यक्रम के बारे में अनेक प्रकार की मिथ्या धारणाएं पैदा हो गयी । जनमाध्यमों ने इन भ्रांतियों और मिथ्या धारणाओं को दूर करने में अपना उत्कृष्ट योगदान किया और परिवार नियोजन के बारे में लगातार अनुकूल वातारण बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

आकाशवाणी के प्रसारणों ने परिवार नियोजन के बारे में जागृति लाने में उल्लेखनीय योगदान किया है ।आजकल विभिन्न कार्यक्रमों के बीच में एक - दो पंक्तियां परिवार नियोजन के बारे में प्रसारित की जाती है। युवा और महिला कार्यक्रमों में परिवार नियोजन संबंधी जानकारी दी जाती है । इन कार्यक्रमों में किसी डाक्टर के साथ गोष्ठी या 'ग्रुपडिसकशन्स' के माध्यम से लोगों को परिवार नियोजन कार्यक्रमों की उपयोगिता और अच्छाइयों के विभिन्न पहलुओं के बारे में अवगत कराया जाता है । देश के आकाशवाणी के 36 केन्द्रो में परिवार नियोजन के 'सेल' कायम किये गये हैं । यहां से जिला प्रसार कार्यालयों को टेप-रिकार्डर दिये जाते हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में ग्रुप मीटिंगों में ले जाकर सुनाये जाते हैं । इसके अतिरिक्त, आकाशवाणी के सामयिकी, स्पाट लाइट, कृषि-जगत आदि विभिन्न कार्यक्रमों में समय समय पर जनसंख्या की समस्या तथा परिवार नियोजम के बारे में जानकारी दी जाती है । विभिन्न प्रकार के तरीकों के बारे में चिकित्सकों और विशेषज्ञों की राय आदि जैसी अनेक प्रकार की जानकारियां प्रसारित की जाती है । रेडियो के माध्यम से ये कार्य क्रम देश के दूर दराज के क्षेत्रों तक पहुंचतें रहते हैं । आकाशवणी के विविध भारती के विज्ञापन कार्यक्रम के माध्यम से भी परिवार नियोजन के बारे में 'स्लोगन' प्रसारित किये जाते हैं । इनमें 'दो या तीन बच्चे' रखने, परिवार नियोजन संबंधी आपरेशन कराने, बच्चों के जन्म में अंतर रखने, मां की स्वास्थ्य रक्षा, जनसंख्या की भयावह स्थिति आदि के बारे में जानकारी प्रस्तुत की जाती है ।

विज्ञापन और दृश्य प्रचार विभाग ने अनेक फोल्डरों, पुस्तिकाओं और पोस्टरों आदि को प्रकाशित किया है । अब हर वर्ष कम से कम 50 हजार शिविर आयोजित किये जाते हैं और हर शिविर में कम से कम 40 व्यक्तियों की आमंत्रित किया जाता है । इस प्रकार उनके माध्यम से हर वर्ष कम से कम 20 लाख व्यक्तियों को जानकारी दी जाती है। स्थानीय भाषाओं में अनेक प्रकार के फोल्डर और पुस्तिकाएं आदि प्रकाशित की जाती है । और लोगों को उपलब्ध करायी जाती है । भारत सरकार का पत्र सूचना कार्यालय भी समय समय पर परिवार नियोजन तथा जनसंख्या आदि के बारे में आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराता

है । पत्र सूचना कार्यालय से 'भित्तिपत्र' (वाल न्यूजपेपर) भी प्रकाशित किये जाते है जो देश के दूरदराज के भागों में उपयुक्त स्थानों पर प्रदर्शित किये जाते हैं । पोस्टरों के जल्दी फट जाने की संभावना रहती है । इसलिए अब धातु के 'स्ट्रिप' तैयार कराये जा रहे हैं जो काफी दिनों तक काम देते हैं । लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिए जगह जगह 'ग्रुप डिसकशन्स' कराये जाते हैं जिनमें लोग खुल कर इन कार्यक्रमों के बारे में अपने विचार प्रकट करते हैं । इन विचार विमर्शो के दौरान परिवार नियोजन कार्यक्रमों की अच्छाइयों और खामियों की भलीभांति जानकारी मिलती है, और उन्हें दूर करने के लिए प्रचार माध्यमों को तेज करने में और सुविधा मिलती है ।

भारत सरकार का क्षेत्र प्रचार निदेशलाय छपी हुई प्रचार सामग्रियों को वितरित करने और लोगों को प्रेरित करने में प्रमुख भूमिका निभाता है । परिवार नियोजन विभाग तथा अन्य प्रचार माध्यम मिलकर प्रदर्शिनियां आयोजित करते हैं। इन प्रर्दर्शनियों का उपयोग लोगों को जानकारी देने और उन्हें परिवार नियोजन के लिए प्रेरित करने के वास्ते किया जाता है । चिकित्सा दल गर्भ धारण तथा गर्भ निरोध के बारे में जानकारी देते हैं । प्रदर्शन मंचों से अनेक प्रकार के प्रचार माध्यमों का उपयोग किया जाता है । जैसे कठपुतली, भाषण आदि । सरकारी विभाग के संगीत और नाटक दल विभिन्न स्थानों पर जाते हैं और सिनेमा स्लाइडों के माध्यम से लोगों को अनेक प्रकार की जानकारी उपलब्ध कराते हैं । आजकल बसों, दीवारों, तथा अनेक स्थानों पर परिवार नियोजन संबंधी पोस्टर लगाये जाते है, और तो और, दियासलाई की डिब्बियों पर भी इनके बारे में जानकारी मिलती हैं ।

ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य चिकित्सा केन्द्रों के डाक्टर इस कार्यक्रम को स्वैच्छिक बनाने में महत्वपूर्ण प्रेरक का काम करते हैं । इन केन्द्रो पर शिविरों का आयोजन किया जाता है । इन शिविरों में ग्राम अध्यापकों, प्रसार शिक्षकों, दाइयों आदि को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है । हर शिविर पर सरकार की ओर से दो सौ रूपये खर्च किये जाते हैं । प्रसार शिक्षा विभाग स्थानीय लोगों और अधिकारियों सभी के बीच सम्पर्क रखता है । इन शिविरों में कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया जाता है । गर्भ

निरोधक के तरीकों और 'लूप' के बारे में शिकायतों आदि के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त होने के बाद उसके 'फालोअप' की व्यवस्था की जाती है । यदि कहीं चिकित्सकों की लापरवाही के कारण कोई घटना होती है तो उसके बारे में भी आवश्यक कार्यवाही की जाती है । कम पढ़े लिखे लोगों के मन से यह भ्रांति निकालने की कोशिश की जाती है कि परिवार नियोजन का यह मतलब नहीं है कि बिल्कुल कोई बच्चा न हो बल्कि इसके अन्य लाभ भी है । स्थानीय डाक्टर, प्राइवेट नर्सिंग होम और स्वयंसेवी संगठन आदि इस मामले में आवश्यक जानकारी देते रहते हैं ।

नगरीय क्षेत्रों में परिवार नियोजन कार्यक्रमों के बारे में अब लगभग शत प्रतिशत जानकारी है, लेकिन इन क्षेत्रों के भी निम्न मध्यम वर्ग के भी लोगों में कुछ मिथ्या धारणाएं अभी भी बाकी है । इन वर्गो की महिलाएं अभी भी चिकित्सकों के 'क्लीनिक' तक जाने में संकोच करती है । लेकिन प्रसार माध्यमों ने इस बारे में उन्हें काफी सम्बल प्रदान किया है । ग्रामीण क्षेत्रों की ही भांति नगरीय और कस्बई क्षेत्रों में परिवार नियोजन संबंधी फिल्में दिखाई जाती है और लोगों के मन से परिवार नियोजन के कार्यक्रमों के प्रति मिथ्या धारणाएं दूर कर, आवश्यक चेतना जगाई है । महिला मण्डल, स्थानीय नेता, स्वयंसेवी कार्यकर्ता, डाक्टर आदि इस दिशा में आवश्यक प्रचार प्रसार करते हैं । एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को जानकारी, आपसी वार्ता आदि से क्रमशः फैलती जाती है ।

जनमाध्यमों में अब दूरदर्शन ने महत्वपूर्ण स्थान बनाया है । परिवार नियोजन के बारे में सीधे सादे रूप में प्रचार कार्य शुरू के साथ, उपग्रह संचार प्रणाली के सफल प्रयोग से छोटी छोटी फिल्मों, वृत्त चित्र आदि के माध्यम से लोगों को इनके बारे में अच्छी जानकारी मिल रही है। दूरदर्शन पर परिवार नियोजन के पक्ष और विपक्ष के बारे में विचार गोष्ठियों में मत प्रस्तुत करने से इनके बारे में लोगों को यथेष्ट जानकारी मिल रही है ।

जनसंख्या की समस्या को देखते हुए अब इसे शिक्षा कार्यक्रमों में शामिल कर लिया गया है। मार्च 1985 तक कम से कम 10 करोड़ विद्यार्थियों को जनसंख्या शिक्षा देने का लक्ष्य रखा गया था । इसके लिए विशेषतौर पर अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया था । और उसके लिए 15 भाषण तैयार कराये गये थे । देश में इस समय 400 व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र है इन केन्द्रों के माध्यम से अभी जनसंख्या के बारे में शिक्षा दी जा रही है ।

जन माध्यमों की भूमिका के फलस्वरूप लोगों को परिवार नियोजन के बारे में अधिक से अधिक जानकारी मिलती रही है और छोटे परिवार आकार रखने की उपयोगिता के बारे में प्रेरित हुये हैं । स्वयंसेवी संगठनों और स्थानीय नेताओं ने भी परिवार नियोजन कार्यक्रमों को और प्रसारित करने में महत्वपूपर्ण भूमिका निभानी है ।

अध्याय-3 : इलाहाबाद जनपद - भौगोलिक, सामाजिक, जनांकिकी एवं जनमाध्यमों की स्थिति

CHAPTER-3 : ALLAHABAD DISTRICT - THE SITUATION OF GEOGRAPHICAL, SOCIAL, DEMOGRAPHICAL AND MASS-MEDIA

अध्याय - 3 (CHAPTER-3)

इलाहाबाद जनपद - भौगोलिक, सामाजिक, जनांकिकी एवं जनमाध्यमों की स्थिति :-
(Allahabad District- The situation of the Geographical, Social, Demographic & Mass-Media.)

इलाहाबाद जिले के उत्तर में रायबरेली, प्रतापगढ़ एवं जौनपुर की सीमाएं आती हैं, तथा दक्षिण में बांदा तथा रीवां की सीमाएं हैं । पूर्व में इसके मिर्जापुर तथा वाराणसी की सीमाएं एवं पश्चिम में फतेहपुर की सीमाएं लगी हुई है । जिले में गर्मियों में अधिक गर्मी, सर्दियों में अधिक सर्दी एवं वर्षा-ऋतु में अधिक वर्षा होती है । जिले का उच्चतम तापमान (1990-91) में 44 सेंटीग्रेट डिग्री रहा तथा न्यूनतम 4.5 सेंटीग्रेड डिग्री रहा । गंगा एवं जमुना नदियों ने इलाहाबाद जिले को तीन भागों में विभक्त कर दिया है :-

(अ) द्वाबा - इलाहाबाद जनपद में गंगा और जमुना के बीच का भाग द्वाबा कहलाता है । इसमें चायल, सिराथू और मंझनपुर तहसीलें हैं ।

(ब) गंगा पार - गंगा के उत्तर का क्षेत्र गंगापार कहलाता है । इसमें सोरांव, फूलपुर हंडिया तहसीलें हैं ।

(स) यमुना पार - यमुना के दक्षिण क्षेत्र को यमुनापार कहते हैं, इसमें करछना, मेजा और बारा तहसीलें हैं ।

इस तरह जिले में कुल 9 तहसीलें हैं ।

इलाहाबाद शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र है । भारतवर्ष का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय भी यही पर है । देश एवं विदेश के विद्यार्थी यहां अध्ययनार्थ आते हैं । इसमें प्रत्येक विषय के उद्‌भट एवं योग्य विद्वान शिक्षक हैं । इस विश्वविद्यालय के साथ ही साथ 16 महाविद्यालय एवं इन्जीनियरिंग कालेज, मेडिकल कालेज, पालिटेकनीक कालेज, आई. टी. आई. और कृषि संस्थान आदि यहां पर है । इसके अतिरिक्त 227 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, 1900 जूनियर हाई स्कूल विद्यालय, 596 सीनियर बेसिक स्कूल हैं । यहां पर इस प्रदेश का उच्च न्यायालय

है तथा इलाहाबाद की कमीश्नरी, माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश का कार्यालय भी यहां ही है ।

प्राचीन काल से यह नगर धार्मिक स्थान रहा है, इस नगर को प्रयाग भी कहते हैं। इसको महत्ता का वर्णन धार्मिक ग्रन्थों में मिलता है । इसकी श्रेष्ठता के कारण ही इसे तीर्थराज कहा गया है । गंगा - यमुना और सरस्वती यहीं पर मिलती हैं । जिसे संगम या त्रिवेणी कहते हैं । भारद्वाज ऋषि का आश्रम भी यहीं हैं । माघ के महीने में प्रतिवर्ष यहां धार्मिक मेला लगता है । किन्तु छः वर्ष और बारह वर्ष के अन्तर पर लगने वाले अर्ध कुम्भ एवं कुम्भ का धार्मिक मेला, अत्यंत पुनीत और मोक्षदायक माना जाता है। जिसमें भारत के सभी प्रदेश के लोग तथा साधु सन्त आते है। सन् 88 में कुम्भ का मेला लगा था जिसमें देश विदेश से तीर्थयात्री संगम स्नान करने के लिए आये थे। राजनीति के क्षेत्र में भी यह शहर अद्वितीय रहा है। इस क्षेत्र के प्रमुख स्तम्भ मोती लाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू, स्वरूपरानी नेहरू, कमला नेहरू, महामना मदन मोहन मालवीय, कैलाश नाथ काटजू आदि थे । भारतीय स्वाधीनता संग्राम में चन्द्रशेखर आजाद, इसी शहर के कम्पनी बाग में गोरी सरकार का विरोध करते हुए शहीद हुए थे । भारतीय स्वतंत्रा संग्राम में स्वराज्य भवन एवं आनन्द भवन प्रमुख स्थल रहे हैं । स्वराज्य भवन से स्वतंत्रता की चिनगारी उठी थी और सम्पूर्ण देश में व्याप्त हो गई थी । स्वराज्य भवन को जब गोरी सरकार ने जप्त कर लिया अर्थात् अपने अधिकार में लिया, तो आनन्द भवन गोरी सरकार के विरोध का केन्द्र स्थल बन गया था। भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति में इस शहर का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

इलाहाबाद आवागमन के साधनों से परिपूर्ण है । कलकत्ता से पेशावर तक जाने वाली ग्रैन्ड ट्रंक रोड इस शहर से ही गई है । इलाहाबाद उत्तर मध्य तथा उत्तरी पूर्वी रेलवे का जंक्शन है । पूरब में हावड़ा और पश्चिम में दिल्ली तक रेलवे लाइन से यह नगर जुड़ा हुआ है । यहां पर छः रेलवे स्टेशन है । जहां से बम्बई, लखनऊ, बनारस तथा कानपुर आदि शहरों में जाने आने की सुव्यवस्था है । हवाई जहाज का भी अड्डा बमरौली में है, जो कि इलाहाबाद को भारत वर्ष के प्रमुख शहरों से जोड़ता है । सरकारी एवं प्राइवेट बसों तथा टैक्सी के द्वारा आने जाने की सुविधाजनक व्यवस्था है ।

इलाहाबाद जिले की जनसंख्या भी देश की जनसंख्या वृद्धि के साथ तीव्र दर से बढ़ रही है । 1991 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक जनसंख्या विस्फोट वाला जिला इलाहाबाद है तथा 1991 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 49,20,713 है ।

उत्तर - प्रदेश में जनसंख्या को दृष्टि से, सर्वाधिक जनसंख्या वाले प्रथम चार जिले निम्न सारणी से स्पष्ट है :-

सारिणी संख्या - 3.1

जिला	1991 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या
इलाहाबाद	49,20,713
वाराणसी	47,98,729
काननुर	46,21,994
देवरिया	44,27,345

(स्रोत - मनोरमा इयर बुक, 1993 पृष्ठ 179)

सारिणी से स्पष्ट है कि उ0 प्र0 में सबसे अधिक जनसंख्या वाला जिला इलाहाबाद है जिसकी कुल जनसंख्या 49,20,713 है द्वितीय स्थान वाराणसी जिले का हे जिसकी जनसंख्या 47,98,729 है । तृतीय स्थान कानपुर जिले का है जिसकी कुल जनसंख्या 46,21,994 है । चतुर्थ स्थान देवरिया जिले का है जिसकी जनसंख्या 44,27,345 है। इस तरह इलाहाबाद की जनसंख्या उ0 प्र0 में सबसे अधिक है। इलाहाबाद जिले की जनसंख्या वृद्धि निम्न सारणी से स्पष्ट है :-

सारणी संख्या 3.2

इलाहाबाद जिले की जनसंख्या वृद्धि 1901 - 1991

जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या	प्रति दशक प्रतिशत अन्तर
1901	1488129	-
1911	1464931	- 1.6
1921	1402350	- 4.3
1931	1489303	- 6.2
1941	1808866	+ 21.5
1951	2044117	+ 13.0
1961	2438376	+ 19.3
1971	2937278	+ 20.5
1981	3797033	+ 29.3
1991	4920713	+ 29.6
1901 - 91		+230.7

(स्त्रोत - इलाहाबाद जनपद की सांख्यिकीय पत्रिका 1991 पृष्ठ .33)

सारिणी से स्पष्ट है कि इलाहाबाद जिले की जनसंख्या में जहां वर्ष 1901 - 11 में जहां प्रतिदशक वृद्धि 1.6 प्रतिहजार थी, वहीं 1981 - 91 में बढ़कर यह 29.6 प्रति हजार हो गयी । यह वृद्धि दर देशकी वृद्धि दर से अधिक है । 1901 से 1991 के मध्य जिले की जनसंख्या में 230.7 प्रतिहजार वृद्धि रही ।

इलाहाबाद जिले की 1991 की जनगणना के अनुसार ग्रामीण एवं नगरीय, स्त्री पुरूष एवं साक्षर व्यक्तियों की जनसंख्या की सारिणयां निम्न है :-

सारिणी संख्या 3.3.

जिले की कुल जनसंख्या में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की जनसंख्या एवं प्रतिशत 1991

	कुल जन संख्या	प्रतिशत
ग्रामीण क्षेत्र	3898348	(79.22%)
नगरीय क्षेत्र	1022365	(20.78%)
योग	4920713	100%

(स्त्रोत - इलाहाबाद जिले की जनगणना 1991)

जिले की कुल जनसंख्या 4920713 में 3898348 (79.22 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्र के निवासी, तथा 1022365 (20.78 प्रतिशत) नगरीय क्षेत्र के निवासी है ।

सारिणी संख्या 3.4

जिले की कुल जनसंख्या में पुरूष एवं स्त्रियों की संख्या एवं प्रतिशत1991

	कुल जनसंख्या	प्रतिशत
पुरूष	2624581	(53.34%)
स्त्रियां	2296132	(46.66%)
योग	4920713	100%

(स्त्रोत - इलाहाबाद जिले की जनगणना - 1991)

जिले की कुल जनसंख्या 4920713 में 2624581 (53.34 प्रतिशत) पुरूष है जब कि 2296132 (46.66 प्रतिशत) स्त्रियां हैं ।

सारिणी संख्या 3.5

जिले की कुल जनसंख्या में साक्षर व्यक्तियों की संख्या एवं प्रतिशत 1991

पुरूष	1270362	48.4% (कुल पुरूषों में प्रतिशत)
स्त्री	449357	19.5% (कुल स्त्रियों में प्रतिशत)
	-----------	--------------
योग	1719719	34.9% (कुल जनसंख्या में प्रतिशत)

(स्त्रोत - इलाहाबाद जिले की जनगणना - 1991)

जिले में कुल 1719719 व्यक्ति साक्षर है, जो कि कुल जनसंख्या का 34.9 प्रतिशत है। इस तरह जिले में साक्षरता का प्रतिशत 34.9 है । 1270362 पुरूष साक्षर है, जो कि कुल पुरूष जनसंख्या का 48.4 प्रतिशत है जब कि 449357 स्त्रियां साक्षर हैं, जो कि कुल स्त्री जनसंख्या का 19.5 प्रतिशत है इस तरह पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियां कम साक्षर हैं ।

इलाहाबाद जिले में 1991 की जनगणना के अनुसार ग्रामीण एवं नगरीय तथा कुल आवासीय मकानों तथा परिवारों का विवरण निम्न सारणियों से स्पष्ट है ।

सारिणी संख्या - 3.6

जिले में कुल आवासीय मकानों का ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रानुसार विवरण एवं प्रतिशत - 1991

जिले में कुल 770935 मकान है जिसमें 618358 (80.21 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्र

में हैं जब कि 152577 (19.79 प्रतिशत) नगरीय क्षेत्र में हैं ।

	आवासीय मकान	प्रतिशत
ग्रामीण क्षेत्र	618358	(80.21%)
नगरीय क्षेत्र	152577	(19.79%)
योग	770935	(100%)

(स्त्रोत - इलाहाबाद जिले की जनगणना - 1991)

सारिणी संख्या 3.7

जिले में कुल परिवारों का ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रानुसार वितरण एवं प्रतिशत - 1991)

	कुल परिवार	प्रतिशत
ग्रामीण क्षेत्र	633619	(79.70%)
नगरीय क्षेत्र	161307	(20.30%)
योग	794926	100%

(स्त्रोत -इलाहाबाद जिले की जनगणना - 1991)

जिले में कुल 794926 परिवार है, जिसमें 633619 (79.70 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्र में, 161307 (20.30 प्रतिशत) नगरीय क्षेत्र में हैं ।

जिले की जनसंख्या वर्ष 1961 में 6 से 7 लाख थी, जो कि वर्ष 1981 में बढ़ कर 38 लाख हो गई । 1991 में यह बढ़कर 4920713 हो गई है । इस तरह 1981 से

1991 के मध्य वृद्धि दर 29.6 प्रति हजार रही, जो कि देश की वृद्धि दर से अधिक है। जनसंख्या का घनत्व जिले में 579 व्यक्ति, प्रति वर्ग कि0मी0 है। जिले में जन्म दर 40.5 प्रति हजार एवं मृत्यु दर 16.2 प्रति हजार है। जनगणना के अनुसार जिले के ग्रामीण क्षेत्र में 3898348 व्यक्ति निवास करते हैं, जब कि नगरीय क्षेत्र में 1022365 व्यक्ति निवास करते हैं। इस तरह जिले में नगरीय क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों का प्रतिशत 20.4% है। जिले में कुल परिवार 794926 है जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में 633619 एवं नगरीय क्षेत्र में 161307 है। अतः ग्रामीण क्षेत्र में 80.21 प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र में 19.79 प्रतिशत परिवार है। जिले में उत्पन्न सन्तान का औसत आकार 4.5 का है। जिले में स्त्रियों की विवाह की मध्य औसत आयु 17 वर्ष है। जिले में प्रति घंटे 22 बच्चे पैदा होते हैं, तथा 9 व्यक्ति मरते हैं। इस तरह जिले की जनसंख्या में प्रति घन्टे 13 व्यक्तियों की वृद्धि होती है। लिंगानुसार प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या 1991 की जनगणना के अनुसार 876 है एवं साक्षरता का प्रतिशत 34.9 है।

इलाहाबाद जिले में जन माध्यमों का तीव्र विकास हुआ है। जन माध्यमों में जिले में अखबार, पत्रिकायें, पोस्टर, दीवार प्रिन्टिंग, रेडियो, दूरदर्शन, चल चित्र, स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम, परिवार कल्याण केन्द्र पारम्परिक लोक गीत, एवं नृत्य तथा मित्र हैं। 1865 में प्रथम बार इलाहाबाद में 'पायनियर' नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। हिन्दी पत्रकारिता के अन्तर्गत 1868 में इलाहाबाद में सर्व प्रथम वृतान्त दर्पण नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। 26 जून 1874 को हाईकार्ट के वकील रतन चंद ने नाटकों की मासिक पत्रिका 'नाटक प्रकाश' का प्रकाशन प्रारंभ किया। वर्ष 1983 मे जिले में 4 दैनिक समाचार पत्र छपते थे, इनके नाम थे दैनिक जागरण, अमृत प्रभात, एन आई0 पी0 एव मेल जोल तथा इसकी प्रसार संख्या लगभग 50 हजार थी। साथ ही 12 साप्ताहिक, 7 पाक्षिक एवं 19 मासिक पत्रिकायें छपती थी। वर्तमान समय में जिले में मुद्रण माध्यम का तीव्र विकास हुआ हे तथा आज जिले में 9 दैनिक समाचार पत्र छपते हैं। जिसमें आज, अमृत प्रभात, एन.आई.पी. प्रयाग राज

टाइम्स, इलाहाबाद केशरी, सुर्ख विस्फोट, अपना दोस्त, सफीरेनों हैं। पांच साप्ताहिक पत्रों में नवांक, इन्वीस्ट स्टडेन्ट, टी0 के0 टाइम्स, फूलपुर टाइम्स एवं हमारा मिजाज, छपता है। पाक्षिक पत्रिकाओं में माया, एवं श्रोता समाचार प्रमुख हैं । मासिक पत्रिकाओं में मनोरमा आदि हैं । इसके अतिरिक्त अन्य जिलों में प्रकाशित होने वाले दैनिक एवं पाक्षिक समाचार पत्र एवं पत्रिकायें जिले में वितरित होकर लोगों तक पहुंचते हैं । जिले में श्रव्य जनमाध्यम में रेडियो का इलाहाबाद आकशवाणी केन्द्र लोगों के मध्य कार्यक्रम प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, । एवं एक सशक्त जनमाध्यम के रूप में लोक प्रिय है । दृश्य जनमाध्यम में जिले में । अगस्त 1983 को दूरदर्शन ट्रान्समीटर का उद्घाटन हुआ । तब से दूरदर्शन का राष्ट्रीय प्रसारण का कार्यक्रम लोगों तक प्रभावी रूप से लोक प्रिय हुआ है एवं दूरदर्शन एक सशक्त माध्यम के रूप में प्रकट हुआ है। जिले के कुल 40 सिनेमा घर है, जिसमें 17 नगर में एवं 23 गांवों में हैं ।

जहां तक जिले में परिवार कल्यांण कार्यक्रम को अपनाने हेतु एवं छोटा परिवार का विचार लोगों में पहुंचाने हेतु एवं प्रेरित करने हेतु सरकारी प्रयासों की स्थिति है, जिले में 29 पारिवारिक कल्याण केन्द्र, 27 मातृ शिशु कल्याण केन्द्र तथा 596 उपकेन्द्र है। स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी का दावा है कि जिले में सरकारी प्रयासों के अन्तर्गत जिले में अप्रैल 92 से जनवरी 93 तक 19360 कापर टी, लगाई गई। तथा 22475 चक्रीय गोलियों का वितरण किया गया तथा 262301 3 निरोध बांटे गये । साथ ही स्वास्थ्य शिक्षा प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत जिले में विभिन्न स्थानों पर पोस्टर, बैनर, एवं दीवार पेन्टिंग द्वारा छोटा परिवार आकार रखने एवं परिवार कल्याण हेतु प्रेरक स्लोगन छपवाये गये । साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में चल चित्र एवं स्वास्थ्य शिक्षा के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं ।

अध्याय-4 : शोध अध्ययन विधि तथा सर्वेक्षण

CHAPTER-4 : RESEARCH STUDY MATHODLOGY AND SURVEY

अध्याय - 4 (CHAPTER-4)

शोध अध्ययन विधि तथा सर्वेक्षण (Research study Methodology & Survey)

हमने अपने शोध प्रबन्ध को सर्वेक्षण पर आधारित रखा है तथा सर्वेक्षण के निष्कर्षों से प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर ही विश्लेषण किया गया है ।

4.1 सर्वेक्षण क्षेत्र का निर्धारण - इलाहाबाद जनपद (The determination of Survey field- Allahabad District)

जैसा कि हमने अपने शोध प्रबन्ध के अध्याय तीन में, इलाहाबाद जनपद की जनांकिकी एवं जनमाध्यमों की स्थिति का वर्णन किया है तथा जिससे स्पष्ट है कि जनपद की जनसंख्या, देश की जनसंख्या से तीव्र गति से बढ़ रही है। जनपद में जन्म दर अधिक है एवं मृत्यु दर कम है।

इलाहाबाद जनपद को हमने अपने सर्वेक्षण क्षेत्र हेतु चयन किया, जिसका प्रमुख कारण जनपद की सामाजिक, राजनीतिक एवं जनांकिकी परिस्थितियां, देश की परिस्थितियों से मेल खाती हैं। जनमाध्यमों की जनपद में उपलब्धता भी देश में जनमाध्यमों की उपलब्धता के समान है।

4.2 प्रतिदर्श विधि (Sampling Method)

समस्त में से चुने गये ऐसे कुछ को जो कि समग्र का उचित प्रतिनिधित्व करता है प्रतिदर्श कहते हैं। समस्त में से हमने बहुस्तरीय दैव प्रतिदर्श विधि का प्रयोग किया। इस विधि द्वारा प्रतिदर्श प्राप्त करने से लाभ यह है कि इसमें पक्षपात की कोई सम्भावना नहीं रहती है। समग्र का संक्षिप्त चित्र लिया जाता है, तथा समय धन एवं श्रम की बचत होती है। हमने अपने अनुसंधान में उन सभी वांछनीय लोगों से साक्षात्कार लिया जो 15 वर्ष से अधिक की आयु के हैं।

4.3 न्यायदर्श का चयन (Selection of Sample)

हमने सर्वेक्षण के लिए क्रमशः तहसील का, ब्लाक का, गांवों का, वार्डों का, आवासीय मकानों का एवं तत्पश्चात परिवारों का चयन किया।

(क) तहसील का चयन

हमने अपने अनुसंधान में सर्वेक्षण के लिए जनपद के प्रत्येक भाग द्वाबा, गंगापार और जमुनापार, जिसमें प्रत्येक में तीन - तीन तहसील है प्रत्येक में से एक एक तहसील का चयन किया है। इस तरह गंगापार से सोरांव, जमुनापार से करछना एवं द्वाबा से चायल तहसीलों का सर्वेक्षण हेतु चयन किया।

(ख) ब्लाक का चयन

तहसीलों के चुनाव के पश्चात हमने प्रत्येक तहसील में से एक एक ब्लाक का चुनाव किया। इस तरह सोरांव तहसील में कौडिहार ब्लाक, करछना तहसील में चाका, ब्लाक तथा चायल तहसील में चायल ब्लाक का चयन किया। प्रत्येक ब्लाक में स्थित गांवों में से 2 प्रतिशत गांव हमने अपने अध्ययन के लिए चुना। इस तरह कौड़िहार ब्लाक से निम्न दो गांव का लाटरी पद्धति से चयन किया -

अ - सिंगरोर

ब - मलाक हरीहर उपरहार

इसी तरह चाका ब्लाक से निम्न दो गांव का लाटरी पद्धति से चयन किया -

अ - छिवकी

ब - अरैल

इसी तरह चायल ब्लाक से निम्न दो गांव का लाटरी पद्धति से चयन किया -

अ - मनौरी गांव

ब - पीपल गांव
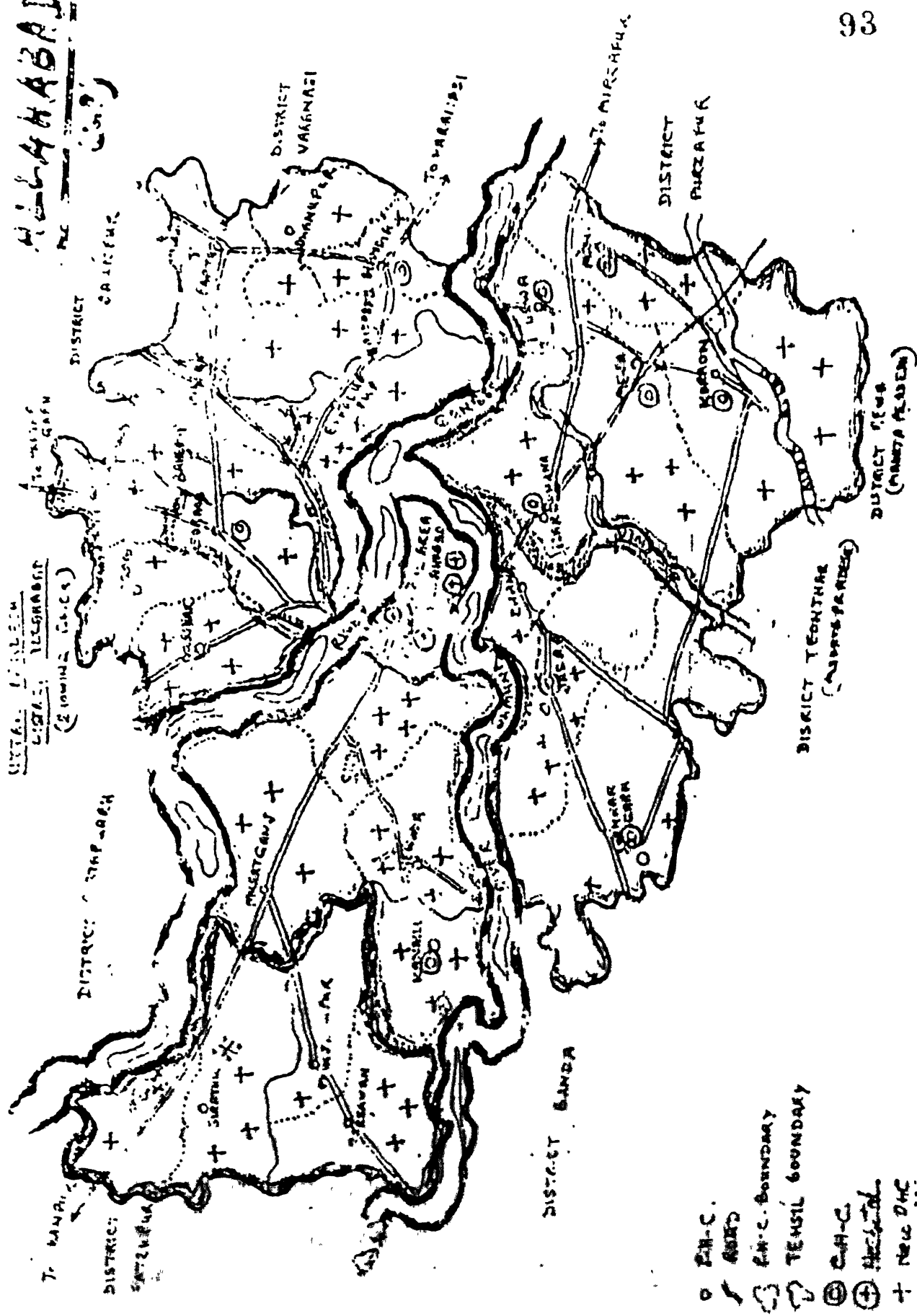
ALLAHABAD
DISTRICT
DISTRICT VARANASI
DISTRICT BANDA
AREA
TO MIRZAPUR
TO VARANASI
DISTRICT
KANHRAN
DISTRICT REWA
P.H.C.
P.H.C. BOUNDARY
TEHSIL BOUNDARY
C.H.C.
Hospital
New PHC

इस तरह कुल 6 गांवों का जिले के ग्रामीण क्षेत्र के अध्ययन हेतु चयन किया।

इलाहाबाद जिले का नगरीय क्षेत्र, नगर महापालिका द्वारा 40 वार्डो में विभक्त है। 0.5 प्रतिशत वार्डो का चयन लाटरी पद्धति द्वारा किया इस तरह निम्न दो वार्डो को नगरीय क्षेत्र के सर्वेक्षण हेतु चयन किया -

अ - वार्ड नं0 14

ब - वार्ड नं0 20

परिवार का चयन

इस तरह सर्वेक्षण के लिए चयन किये गये गांवों में, प्रत्येक 10 वें मकान को तथा नगरीय क्षेत्र के लिए चयन किये गये वार्डो में प्रत्येक 40 वें मकान को सर्वेक्षण हेतु चुना, जो कि जिले के द्वितीयक आंकड़ों में दिये गये ग्रामीण एवं नगरीय मकानों के अनुपात से लगभग समान है।

इस तरह ग्रामीण क्षेत्र में कुल 486 मकानों का तथा नगरीय क्षेत्र में कुल 91 मकानों का न्यादर्श हेतु चयन किया। ग्रामीण क्षेत्र कुल 498 परिवारों के तथा नगरीय क्षेत्र में कुल 131 परिवारों के प्रतिवादी हमारे न्यादर्श हेतु चयनित किये गये।

प्रतिवादियों का चयन

परिवार में दम्पति के पति अथवा पत्नी जो भी सदस्य सर्वेक्षण के दौरान उपलब्ध था, उससे प्रश्नोत्तरी पत्रक के प्रश्नों की पूछतांछ कर उसकी पूर्ति की। इस तरह ग्रामीण क्षेत्र में 498 प्रतिवादी तथा नगरीय क्षेत्र में 131 प्रतिवादियों का न्यादर्श हेतु चयन किया। जिसमें से ग्रामीण क्षेत्र के 4 तथा नगरीय क्षेत्र के 2 प्रतिवादियों ने प्रश्नोत्तरी पत्रक के प्रश्नों का उत्तर देने से इंकार कर दिया। नगरीय क्षेत्र के 3 प्रतिवादियों से कई बार संपर्क करने पर भी मुलाकात न होने के कारण सहयोग न मिल सका। इस तरह ग्रामीण क्षेत्र के 494 प्रतिवादियों तथा नगरीय क्षेत्र के 126 प्रतिवादियों तथा कुल 620 प्रतिवादियों ने प्रश्नोत्तरी पत्रक के प्रश्नों के उत्तर दिये।

साक्षात्कार स्वयं अनुसंधानकर्ता ने लिया एवं प्रश्नावलियों को स्वयं भर कर पूर्ण किया।

4.4 प्रश्नोत्तरी पत्रक (Schedule Proforma)

1. नाम
2. पता
3. धर्म
4. जाति
5. काम कहां करते हैं? गांव/शहर
6. व्यवसाय
7. शिक्षा
8. आयु (वर्षों में)
9. दम्पति की कुल मासिक आय (रूपयों में)
10. विवाह की आयु (वर्षों में)
11. क्या आप परिवार आकार को छोटा रखने के लिए किसी जनमाध्यम से प्रभावित हुए?
    हाँ/नहीं
12. यदि हां, तो सर्वाधिक प्रभावित करने वाले जनमाध्यम का नाम
13. उक्त जनमाध्यम ने आपको किस उम्र में प्रभावित किया (वर्षों में)
14. उत्पन्न संतानों का विवरण

-	संतान लिंग	संतान की वर्तमान	विवाह आयु
पुरूष	महिला	आयु (वर्षो में)	(वर्षो में)

15. विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता (उम्र से/वर्ष से)

(क) अखबार

(ख) पत्रिका

(ग) रेडियों

(घ) दूरदर्शन

(ड.) पोस्टर/दीवार प्रिंटिंग/अन्य प्रिंटिंग

(च) चलचित्र

(छ) पारंपरिक लोकगीत, नृत्य, कठपुतली एवं अन्य पारंपरिक जनमाध्यम

(ज) परिवार कल्याण केन्द्र

(झ) परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्र

16. जनमाध्यमों को न उपलब्धता का कारण

(क) अखबार

(ख) पत्रिका

(ग) रेडियों

(घ) दूरदर्शन

(ड.) पारंपरिक लोकगीत, नृत्य, कठपुतली एवं अन्य पारंपरिक माध्यम

(च) परिवार कल्याण केन्द्र

(छ) परिवार कल्याण कार्य क्रम की जानकारी रखने वाले मित्र

17. आपके द्वारा विभिन्न जनमाध्यमों पर एक दिन में दिया जाने वाला समय (मिनट एवं घंटों में)

(क) अखबार

(ख) पत्रिका

(ग) रेडियों

(घ) दूदर्शन

18. परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी देने एवं प्रभावित करने में जनमाध्यमों में निम्न में कौन सर्वाधिक प्रभावी - विज्ञापन/लेख/फोटो फीचर

19. आपकी दृष्टि में जनमाध्यमों के प्रभावी होने में बाधक कारण

20. सुझाव

21. परिवार कल्याण कार्यक्रम को अधिक प्रभावी बनाने में कौन जनमाध्यम आपकी दृष्टि से सर्वाधिक प्रभावी

22. आपकी दृष्टि में उपयुक्त परिवार आकार (संख्या में)

लड़का

लड़की

23. आपकी दृष्टि में प्रथम संतान उत्पति विवाह के बाद कितने समय के बाद उपयुक्त

(वर्ष में)

24. आपकी दृष्टि में दो संतानों के उत्पति के मध्य उपयुक्त समय अन्तराल (वर्ष में)

25. आपकी दृष्टि में उपयुक्त विवाह आयु (वर्ष में)

लड़का

लड़की

26. आपकी दृष्टि में परिवार नियोजन का कौन साधन सर्वाधिक उपयुक्त

27. आपको उपरोक्त परिवार नियोजन के साधन की जानकारी किस जनमाध्यम से मिली।

4.5 चयनित क्षेत्र का सर्वेक्षण तथा प्राप्त अनुभव (The survey & experience of the selected field)

निर्देशन में कुल 629 प्रतिवादी थे, उपर्युक्त प्रतिवादियों में से केवल 620 प्रतिवादियों ने प्रश्नावली पत्रक के प्रश्नोत्तर देकर हमारे कार्य में सहयोग दिया। शेष 9 प्रतिवादियों में से 6 प्रतिवादियों ने प्रश्नोत्तरी पत्रक के उत्तर देने से इंकार कर दिया जबकि 3 प्रतिवादियों से कई बार जाने पर भी भेंट न हो सकी जिस कारण उनका सहयोग न मिल सका।

सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हो गया कि सैद्धान्तिक और व्यवहारिक ज्ञान में बहुत अन्तर है। साथ ही यह भी सिद्ध हो गया कि सिद्धान्त के रूप में जो सत्य है वह व्यवहार में सत्य हो भी सकता है और असत्य भी। अतः दोनों प्रकार की संभावनाएं समान भी हो सकती हैं। हमें सर्वेक्षण काल में अनेक प्रकार के अनुभव हुए। सर्वेक्षण के समय में कभी तो रूलाने वाली, कभी हंसाने वाली, कभी आश्चर्यचकित करने वाली तथा कभी गम्भीरता से सोचने वाली स्थिति उत्पन्न हो जाती थी। विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से मिलने से विभिन्न प्रकार की मानव प्रवृत्तियों का अनुभव हुआ, जो कि बहुत ही आनन्ददायक रहा। सर्वेक्षण काल में जो अनुभव हुआ, उसका उल्लेख निम्न प्रकार है -

एक बेरोजगार मुस्लिम धर्म के अनुयायी स्नातक युवक ने प्रश्नोत्तरी पत्रक का उत्तर

देंना अस्वीकार कर दिया और उसका व्यवहार ऐंसा था जैसा एक अनपढ़ व्यक्ति भी न करता होंगा। जिससें यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षित व्यक्ति भी संकुचित विचारधारा कें कारण समष्ठिभावी विचारों कें अनुसंधान में सहयोंग प्रदान नहीं कर सकता है।

हिन्दू भक्त कें अनुयायी एवं पुरानें विचार धारा कें व्यक्ति सें मिलनें पर उन्होंनें प्रश्नोंत्तरी पत्रक के उत्तर देंतें हुए प्रश्न किया। वह प्रश्न इस प्रकार था मेंरें परिवार में उत्पन्न हुए कुल बच्चों की संख्या पूछनें का क्या प्रयोंजन है? इस पर मैनें उन्हें स्पष्टतः बताया कि मैं यह अध्ययन करना चाहता हूं कि क्या जनमाध्यमों कें प्रभाव सें आप लोंग परिवार आकार छोंटा रखना पसंद करतें हैं? इस पर उन्होंनें कहा कि आप कम बच्चें पैदा करनें की बात तों करतें हैं किन्तु जिनकें पास कोंई बच्चा नहीं है, क्या आप उनकों बच्चा दें सकतें हैं? उनका प्रश्न वास्तव में विचारणीय एवं सकतें में डालनें का था कि जों चीज हम दें नहीं सकतें उसें रोंकनें का क्या हमें अधिकार है? उन्होंनें बताया कि बच्चें तों भगवान की देंन हैं।

जब मैं एक अशिक्षित हरिजन से प्रश्नोत्तरी पत्रक के उत्तर पूछ रहा था तो उसने पैदा हुए कुल बच्चों की संख्या को बताने से इनकार कर दिया। वह मन ही मन भयभीत हो रहा था कि मैं कहीं उसके बच्चों की संख्या सरकार को सूचित न कर दूं और उसकी नसबन्दी कर दी जाये । जब मैंने उसको भली भांति समझाया कि यह मात्र व्यक्तिगत अनुसंधान के लिए ही पूछ रहा हूं। मेरी बातों से संतुष्ट होने पर उसने अपने बच्चों की कुल संख्या बताया। जिससे यह ज्ञात हुआ कि बलात् नसबंदी के भय से अशिक्षित जनता प्रश्नोत्तरी पत्रक का उत्र देने में भयभीत हो रही थी।

लेकिन कुछ व्यक्ति ऐसे भी मिले जिन्होने प्रश्नोत्तरी पत्रक की पूर्ति सहानुभूति पूर्वक कराई। साथ ही अनुसंधान कार्य के लिए हमें उनसे प्रोत्साहन भी मिला। इन व्यक्तियों में से अधिकांश शिक्षक तथा वकील थे।

जिन व्यक्तियों ने प्रश्नोत्तरी पत्रक की पूर्ति कराने में भली भांति सहयोग दिया उनमें से अधिकांश शिक्षित तथा व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। इसके साथ ही साथ जिन व्यक्तियों ने प्रश्नोत्तरी पत्रक की पूर्ति कराना स्वीकार नहीं किया उनमें से अधिकांश अशिक्षित या संकुचित विचारधारा के लोग थे।

इस प्रकार यह ज्ञात हुआ कि बहुत ही थोड़े व्यक्ति जिन्होने प्रश्नोत्तरी पत्रक का उत्तर नहीं दिये, उनके अतिरिक्त अधिकांश व्यक्तियों का सहयोग सदैव मिलता रहा।

सर्वेक्षण के दौरान गांव श्रंमदेरपुर में एक आश्चर्यजनक एवं उल्लेखनीय तथ्य यह उभर कर आया कि वहां पर पिछले चार वर्षो से कोई समाचार पत्र गांव में नहीं आता है।

अन्ततः सर्वेक्षण कार्य बहुत ही आनन्ददायक रहा। सर्वेक्षण करने से यह ज्ञात हुआ कि सर्वेक्षणकर्ता के। धैर्यवान, व्यवहार कुशल तथा क्षेत्र की रीति - रिवाजों से भली भांति परिचित होना चाहिए। इसके साथ ही साथ प्रश्नोत्तरी पत्रक की पूर्ति करने का काल सामान्य रूप से शान्तिपूर्वक होना आवश्यक है।

4.6 न्यादर्श जनसंख्या की समाजिक - आर्थिक संरचना
(The Socio Economic Structure of sampled Population)

हम अपना अध्ययन न्यादर्श की जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक संरचना से प्रारम्भ करते हैं। हमारे न्यादर्श में कुल 620 प्रतिवादी थे, जिसमें 494 ग्रामीण क्षेत्र के तथा 126 नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादी थे। इस तरह 79.68% ग्रामीण तथा 20.32% नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादी थे, जो कि जनपद के द्वितीयक आंकड़ो 1991 की जनगणना में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के व्यक्तियों के प्रतिशत के लगभग बराबर है। न्यादर्श में 362 पुरूष तथा 258 महिला प्रतिवादी थे। इस तरह 58.39% पुरूष तथा 41.61% महिला प्रतिवादी थे, जो कि जनपद के द्वितीयक आंकड़ों 1991 की जनगणना में दिये गये पुरूष महिलाओं के प्रतिशत के लगभग बराबर है।

प्रतिवादियों की संख्या का उनकी विभिन्न आयु अंतरालों के अनुसार वितरण निम्न सारणी 4.1 में दिखाया गया है :-

सारणी संख्या - 4.1

विभिन्न आयु अंतरालों के अनुसार प्रतिवादियों का वितरण

आयु - अंतराल (वर्षों में)	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
15-20	42	6.77
20-25	59	9.52
25-30	71	11.45
30-35	81	13.06
35-40	79	12.74
40-45	74	11.94
45-50	55	8.87
50-55	47	7.58
55-60	37	5.97
60 से ऊपर	75	12.10
योग :	620	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि कुल 620 प्रतिवादियों का उनकी आयु अंतराल के अनुसार वितरण इस प्रकार मिला है कि कुल 620 में से 42 (6.77 प्रतिशत), 59 ((9.52 प्रतिशत), 71 (11.45 प्रतिशत), 81 (13.06 प्रतिशत), 79 (12.74 प्रतिशत), 74 (11.94 प्रतिशत), 55 (8.87 प्रतिशत), 47 (7.58 प्रतिशत), 37 (5.97 प्रतिशत) तथा 75 (12.10 प्रतिशत) प्रतिवादियों की आयु, क्रमशः (15-20), (20-25), (25-30), (30-35), (35-40), (40-45), (45-50), (50-55), (55-60) तथा (60 से ऊपर) आयु अंतराल में है।

विभिन्न आयु अंतरालों में कुल प्रतिवादियों का पुरूषो - महिलाओं तथा नगरीय वं ग्रामीण क्षेत्रानुसार वितरण एवं प्रतिशत

आयु अंतराल वर्ष में	ग्रामीण प्रतिवादी			नगरीय प्रतिवादी			कुल योग	प्रतिशत
	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	योग (5+7)	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7	8	9
15 - 20	20 (6.47%)	18 (9.73%)	38 (7.69%)	1 (1.89%)	3 (4.11%)	4 (3.17%)	42	(6.77%)
20 - 25	22 (7.12%)	24 (.12.97%)	46 (9.31%)	6 (11.32%)	7 (9.59%)	13 (10.32%)	59	(9.52%)
25 - 30	35 (11.33%)	17 (9.19%)	52 (10.52)	11 (20.75%)	8 (10.96%)	19 (15.08%)	71	(11.45%)
30 - 35	35 (11.33%)	25 (13.51%)	60 (12.15%)	10 (18.87%)	11 (15.07%)	21 (16.67%)	81	(13.06%)
35 - 40	36 (11.65%)	20 (10.81%)	56 (11.34%)	8 (15.09%)	15 (20.55%)	23 (18.25%)	79	(12.74%)
40 - 45	35 (11.33%)	22 (11.89%)	57 (11.54%)	5 (9.43%)	12 (16.44%)	17 (13.49%)	74	(11.94%)
45 - 50	30 (9.71%)	12 (6.49%)	42 (8.50%)	3 (5.66%)	10 (13.70%)	13 (10.32%)	55	(8.87%)
50 - 55	30 (9.71%)	10 (5.41%)	40 (8.10%)	2 (3.77%)	5 (6.84%)	7 (5.56%)	47	(7.58%)
55 - 60	20 (6.47%)	14 (7.57%)	34 (6.89%)	2 (3.77%)	1 (1.37%)	3 (2.38%)	37	(5.97%)
60 से ऊपर	46 (14.88%)	23 (12.43%)	69 (13.96%)	5 (9.43%)	1 (1.37%)	6 (4.76%)	75	(12.10%)
योग -	309 (100%)	185 (100%)	494 (100%) 99.98	53 (100%)	73 (100%)	126 (100%)	620	(100%)

यह सारणी विभिन्न आयु अंतरालो में कुल प्रतिवादियों का पुरूषों, महिलाओं तथा नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रानुसार वितरण एवं प्रतिशत को दर्शाती है । सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में कुल 309 पुरूष तथा 185 महिला प्रतिवादी हैं। इस तरह ग्रामीण क्षेत्र में 62.55% प्रतिशत पुरूष तथा 37.45% प्रतिशत महिला प्रतिवादी हैं । नगरीय क्षेत्र में कुल 53 पुरूष तथा 73 महिला प्रतिवादी है । इस तरह नगरीय क्षेत्र में 42.06 प्रतिशत पुरूष तथा 57.94% महिला प्रतिवादी हैं ।

इस सारणी से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कुल पुरूष प्रतिवादियों में से लगभग दो तिहाई से अधिक 15 - से 50 वर्ष आयु अंतराल के हैं, जब कि ग्रामीण क्षेत्र के कुल महिला प्रतिवादियों में से लगभग तीन चोथाई महिला प्रतिवादी 15 से 50 वर्ष आयु अंतराल की है । जब कि कुल ग्रामीण प्रतिवादियों में से लगभग तीन चौथाई प्रतिवादी 15 से 50 वर्ष आयु अंतराल के हैं । नगरीय प्रतिवादियों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट है कि कुल पुरूष प्रतिवादियों में से तीन चोथाई से अधिक पुरूष प्रतिवादी 15 - 50 आयु वर्ष के हैं तथा कुल नगरींय महिला प्रतिवादीयों में से तीन चोथाई से अधिक प्रतिवादी 15 - 50 वर्ष आयु अंतराल के हैं । जब कि कुल नगरीय प्रतिवादियों में से तीन चोथाई से अधिक 15 - 50 वर्ष आयु अंतराल के हैं । प्रतिवादियों का धर्मानुसार वितरण निम्न सारणी 4.3 में दिया गया है :-

सारणी संख्या 4.3

कुल प्रतिवादियों का उनके धर्मानुसार एवं ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रानुसार वितरण :

धर्म	ग्रामीण प्रतिवादी		नगरीय प्रतिवादी		कुल प्रतिवादी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
हिन्दू	310	62.75	94	74.60	404	65.16
मुस्लिम	162	32.79	28	22.22	190	30.65
सिख	18	3.64	03	2.38	21	3.39
ईसाई	2	0.40	1	0.79	03	0.48
धर्म नहीं बताया	02	0.40	-	-	02	0.32
योग	494	99.98	126	99.99	620	100.00

यह सारणी कुल प्रतिवादियों का उनके धर्म के अनुसार वितरण दर्शाती है । सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के 310 (62.75 प्रतिशत), 162 (32.79 प्रतिशत), 18 (3.64 प्रतिशत) 2 (0.40 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः हिन्दू, मुस्लिम सिख, ईसाई धर्म के है तथा 2 (0.40 प्रतिशत) प्रतिवादियों ने धर्म बताने से इंकार किया । नगरीय क्षेत्र के 94 (74.60 प्रतिशत), 28(22.22 प्रतिशत), 3 (2.38 प्रतिशत) तथा 1 (0.79 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, धर्म के हैं । कुल प्रतिवादियों में से 404 (65.16 प्रतिशत), 190 (30.65 प्रतिशत), 21 (3.39 प्रतिशत), 3 (0.48 प्रतिशत) तथा 2 (0.32 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः हिन्दू, मुस्लिम, सिख इसाई धर्म के लोग हैं ।

इसी तरह सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों में लगभग दो तिहाई हिन्दू तथा लगभग एक तिहाई मुस्लिम प्रतिवादी है, जब कि नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों में लगभग तीन चौथाई हिन्दू तथा लगभग एक चौथाई मुस्लिम प्रतिवादी है। कुल प्रतिवादियों में लगभग दो तिहाई हिन्दू तथा लगभग एक तिहाई मुस्लिम प्रतिवादी हैं । उल्लेखनीय तथ्य यह उभर कर आया कि 2 प्रतिवादियों ने अपना धर्म बताने से इंकार कर दिया । प्रतिवादियों का जातिनुसार वितरण निम्न सारणी 4.4 में दिया गया है :-

सारणी संख्या 4.4

कुल प्रतिवादियों का उनके जातिनुसार ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रानुसार वितरण :

जाति	ग्रामीण प्रतिवादी		नगरीय प्रतिवादी		योग प्रतिवादी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
सामान्य	256	51.82	86	68.25	342	55.16
पिछड़ी	159	32.19	27	21.43	186	30.00
अनुसूचित	079	15.99	13	10.32	92	14.84
योग	494	100	126	100	620	100

यह सारणी कुल प्रतिवादियों का उनके जाति नुसार एवं ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रानुसार वितरण को दर्शाती है । सारणी के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र के 256 (51.82 प्रतिशत), 159 (32.19 प्रतिशत), 79 (15.99 प्रतिशत), क्रमशः सामान्य, पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के हैं । नगरीय क्षेत्र के 86 (68.25 प्रतिशत), 27 (21.43 प्रतिशत), 13 (10.32 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः सामान्य, पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के हैं । कुल प्रतिवादियों में 342 (55.16 प्रतिशत), 186 (30 प्रतिशत), 92 (14.84 प्रतिशत) क्रमशः सामान्य, पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के हैं ।

इस सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में दो चौथाई सामान्य जाते के तथा एक चौथाई से अधिक पिछड़ी जाति के प्रतिवादी हैं, वही नगरीय क्षेत्र में दो तिहाई सामान्य जाते के तथा लगभग एक चौथाई पिछड़ी जाति के प्रतिवादी हैं । कुल प्रतिवादियों की संख्या देखने से स्पष्ट है कि दो चौथाई से अधिक सामान्य जाति के तथा एक चौथाई से अधिक पिछड़ी जाति के प्रतिवादी है जब कि अनुसूचित जाति के प्रतिवादियों की संख्या एक चौथाई से भी काफी कम हैं। प्रतिवादियों का उनके शैक्षिक स्तर के अनुसार वितरण निम्न सारणी 4.5में दिया गया है:-

सारणी संख्या 4.5

कुल प्रतिवादियों का उनके शैक्षिक स्तर का ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रानुसार वितरण

शैक्षिक स्तर	ग्रामीण प्रतिवादी		नगरीय प्रतिवादी		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	197	39.88	1	0.79	198	31.94
साक्षर	104	21.05	--	--	104	16.77
प्राइमरी	6	1.21	2	1.59	8	1.29
जू0 हा0 स्कूल	101	20.45	4	3.17	105	16.93
हाई स्कूल	47	9.51	29	23.02	76	12.26
इण्टर	24	4.86	73	57.94	97	15.65
स्नातक एवं उससे अधिक	15	3.04	17	13.49	32	5.16
योग	494	100	126	100	620	100

यह सारणी ग्रामीण, नगरीय तथा कुल क्षेत्र के प्रतिवादियों के शैक्षिक स्तर का विवरण प्रस्तुत करती है। ग्रामीण क्षेत्र के 197 (39.88 प्रतिशत), 104 (21.05 प्रतिशत), 6 (1.21 प्रतिशत), 101 (20.45 प्रतिशत), 47 (9.51 प्रतिशत), 24 (4.86 प्रतिशत), तथा 15 (3.04 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः निरक्षर, साक्षर, प्राइमरी, जूनियर हाई स्कूल, इण्टरमीडिएट स्नातक एवं उससे अधिक के शैक्षिक स्तर के हैं । नगरीय क्षेत्र के 1 (0.79 प्रतिशत), 2 (1.59 प्रतिशत), 4 (3.17 प्रतिशत), 29 (23.02 प्रतिशत), 73 (57.94 प्रतिशंत) एवं 17 (13.49 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः निरक्षर, प्राइमरी, जूनियर हाई स्कूल, हाई स्कूल, इण्टर एवं स्नातक तथा उससे अधिक के शैक्षिक स्तर के हैं । कुल प्रतिवादियों में से 198 (31.94 प्रतिशत), 104 (16.77 प्रतिशत), 8 (1.29 प्रतिशत) 105 (16.93 प्रतिशत), 76 (12.26 प्रतिशत), 97 (15.65 प्रतिशत), तथा 32 (5.16 प्रतिशत) क्रमशः निरक्षर, प्राइमरी, जूनियर हाई स्कूल, इण्टर मीडिएट, स्नातक एवं उससे अधिक शैक्षिक स्तर के हैं ।

सारणी से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में एक तिहाई से अधिक प्रतिवादी निरक्षर है, जब कि एक तिहाई से अधिक प्रतिवादी साक्षरता से लेकर जूनियर हाई स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त किये हैं तथा हाई स्कूल एवं उससे अधिक की शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या नगण्य है । नगरीय क्षेत्र में तीन चौथाई से भी काफी अधिक तथा शतप्रतिशित से कुछ कम प्रतिवादी हाई स्कूल से लेकर स्नातक या उससे अधिक तक की शिक्षा प्राप्त किये हुये हुं । मात्र स्नातक तक की शिक्षा ही दो चौथाई नगरीय प्रतिवादियों को प्राप्त है । कुल प्रतिवादियों की संख्या पर दृष्टि डालने से स्पष्ट है कि लगभग एक तिहाई प्रतिवादी निरक्षर तथा लगभग एक तिहाई प्रतिवादी साक्षरता से लेकर जूनियर हाई स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त किये हुये हैं तथा लगभग एक तिहाई प्रतिवादी हाई स्कूल से लेकर स्नातक या उससे अधिक प्रतिवादी शिक्षा प्राप्त किये हुये हैं ।

प्रतिवादियों में पुरूषों के शैक्षिक स्तर का ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रानुसार वितरण निम्न सारिणी 4.6 में किया गया है :-

सारणी संख्या 4.6

कुल प्रतिवादियों में पुरूषों के शैक्षिक स्तर का ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रानुसार वितरण

शैक्षिक स्तर	पुरूष प्रतिवादी		महिला प्रतिवादी		योग पुरूष प्रतिवादी	
	ग्रामीण संख्या	प्रतिशत	नगरीय संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	94	30.42	--	--	94	25.97
साक्षर	73	23.62	--	--	73	20.17
प्राइमरी	3	0.97	--	--	3	0.83
जूनियर हाई स्कूल	74	23.95	1	1.89	75	20.72
हाई स्कूल	36	11.65	12	22.64	48	13.26
इण्टर	16	5.18	30	56.60	46	12.70
स्नातक उससे अधिक	13	4.21	10	18.87	23	6.23
	309	100	53	100	362	100

यह सारणी ग्रामीण, नगरीय तथा कुल क्षेत्र के पुरूष प्रतिवादियों के शैक्षिक स्तर का वितरण प्रस्तुत करती है। ग्रामीण क्षेत्र में 94 (30.42 प्रतिशत), 73 (23.62 प्रतिशत), 3 (0.97 प्रतिशत), 74 (23.95 प्रतिशत), 36 (11.65 प्रतिशत), 16 (5.18 प्रतिशत), तथा 13 (4.21 प्रतिशत) पुरूष प्रतिवादी क्रमशः निरक्षर, साक्षर, प्राइमरी, जूनियर हाईस्कूल, हाई स्कूल, इण्टर मीडिएट, स्नातक एवं उससे अधिक के शैक्षिक स्तर के हैं । नगरीय क्षेत्र में 1 (1.89 प्रतिशत), 12 (22.64 प्रतिशत), 30 (56.60 प्रतिशत), 10 (18.87 प्रतिशत), पुरूष प्रतिवादी क्रमशः जूनियर हाई स्कूल, हाई स्कूल, इण्टर मीडिएट, स्नातक एवं उससे अधिक के शैक्षिक स्तर के हैं । कुल प्रतिवादियों में 94

(25.97 प्रतिशत), 73 (20.17 प्रतिशत), 3 (0.83 प्रतिशत), 75 (20.72 प्रतिशत), 48 (13.26 प्रतिशत), 46 (12.70 प्रतिशत) तथा 23 (6.35 प्रतिशत) पुरूष प्रतिवादी क्रमशः निरक्षर, साक्षर, प्राइमरी, जूनियर हाई स्कूल, इण्टर मीडिएट, स्नातक एवं उससे अधिक शैक्षिक स्तर के हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष प्रतिवादियों में से लगभग एक तिहाई पुरूष प्रतिवादी निरक्षर हैं, जब कि एक तिहाई से अधिक पुरूष प्रतिवादी साक्षरता से जूनियर हाई स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त किये हैं, जब कि हाई स्कूल एवं उससे अधिक का शिक्षा स्तर एक चौथाई से भी कम है । नगरीय क्षेत्र के पुरूष प्रतिवादियों में इसके विपरीत तीन चौथाई से अधिक पुरूष प्रतिवादी हाई स्कूल से इण्टर मीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त किये हैं । स्नातक एवं उससे अधिक से शिक्षा स्तर वाले पुरूष प्रतिवादियों का अनुपात भी एक चौथाई से कुछ कम है । कुल पुरूष प्रतिवादियों की संख्या पर दृष्टि डालने से स्पष्ट है कि एक चौथाई पुरूष प्रतिवादी निरक्षर है तथा एक तिहाई से अधिक साक्षरता से जूनियर हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त किये हैं, जब कि एक तिहाई पुरूष प्रतिवादी हाई स्कूल एवं उससे अधिक की शिक्षा प्राप्त किये हैं । स्नातक एवं उससे अधिक की शिक्षा प्राप्त करने वाले पुरूष प्रतिवादियों का अनुपात नगण्य है ।

प्रतिवादियों में महिलाओं के शैक्षिक स्तर का ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रानुसार वितरण निम्न सारणी 4.7 में दिया गया है :-

सारणी संख्या 4 .7

कुल प्रतिवादियों में महिलाओं में शैक्षिक स्तर का ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रानुसार वितरण

शैक्षिक स्तर	महिला प्रतिवादी ग्रामीण संख्या	प्रतिशत	नगरीय संख्या	प्रतिशत	योग संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	103	55.68	1	1.37	104	40.31
साक्षर	31	16.76	-	-	31	12.02
प्राइमरी	3	1.62	2	2.74	5	1.94
जूनियर हाई स्कूल	27	14.59	3	4.11	30	11.62
हाई स्कूल	11	5.95	17	23.29	28	10.85
इण्टर	8	4.32	43	58.90	51	19.77
स्नातक एवं उससे अधिक	2	1.08	7	9.59	9	3.49
योग	185	100	73	100	258	100

यह सारणी महिलाओं के शैक्षिक स्तर का ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रानुसार विवरण प्रस्तुत करती है । ग्रामीण क्षेत्र में 103 (55.68 प्रतिशत),31 (16.76 प्रतिशत), 3 (1.62 प्रतिशत), 27 (14.59 प्रतिशत), 11 (5.95 प्रतिशत), 8 (4.32 प्रतिशत), तथा 2 (1.08 प्रतिशत), महिला प्रतिवादी क्रमशः निरक्षर, साक्षर, प्राइमरी, जूनियर हाई, हाई स्कूल, इण्टर मीडिएट तथा स्नातक एवं उससे अधिक के शैक्षिक स्तर के हैं । नगरीय क्षेत्र में 1 (1.37 प्रतिशत), 2 (2.74 प्रतिशत), 3 (4.11 प्रतिशत), 17 (23.29 प्रतिशत), 43 (58.90 प्रतिशत), तथा 7 (9.59 प्रतिशत) महिला प्रतिवादी क्रमशः

निरक्षर, साक्षर, प्रामइरी, जूनियरहाई स्कूल, हाई स्कूल, इण्टर मीडिएट एवं स्नातक एवं उससे अधिक के शैक्षिक स्तर के हैं। कुल महिला प्रतिवादियों में 104 (40.31 प्रतिशत), 31 (12.02 प्रतिशत), 5 (1.94 प्रतिशत), 30 (11.62 प्रतिशत), 28 (10.85 प्रतिशत), 51 (19.77 प्रतिशत), तथा 9 (3.49 प्रतिशत) क्रमशः निरक्षर साक्षर, प्राइमरी, जूनेयर हाई स्कूल, हाई स्कूल, इण्टर मीडिएट एवं स्नातक एवं उससे अधिक के शैक्षिक स्तर के हे।

सारणी से स्पष्ट है कि. प्रतिवादियों में लगभग दो चौथाई प्रतिवादी निरक्षर है । तथा लगभग एक तिहाई प्रतिवादी साक्षरता से जूनियरहाई स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त किये हैं । हाई स्कूल से स्नातक एवं उससे अधिक की शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रतिवादी बहुत ही कम हैं । नगरीय महिला प्रतिवादियों में तीन चौथाई से अधिक तथा शत प्रतिशत से कुछ कम प्रतिवादी हाई स्कूल से लेकर स्नातक से अधिक तक शिक्षा प्राप्त किये हैं। जब कि निरक्षरता एवं प्राइमरी से जूनियर हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त प्रतिवादियों का अनुपात नगण्य है। इस तरह नगरीय महिलाओं के शैक्षिक स्तर की स्थिति ग्रामीण महिलाओं से विपरीत है । कुल महिला प्रतिवादियों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट है कि एक तिहाई से अधिक निरक्षर तथा लगभग एक चौथाई महिला प्रतिवादी साक्षरता से जूनेयर हाई स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त किये हैं । लगभग एक चौथाई महिला प्रतिवादी इण्टर से लेकर बी.ए. एवं उससे अधिक की शिक्षा प्राप्त किये हैं ।

प्रतिवादियों पुरूषों एवं महिलाओं का उनके काम की प्रकृति के अनुसार वितरण निम्न सारणी 4.8 में दिया गया है :-

सारणी संख्या 4.8

कुल प्रतिवादियों में पुरूष एवं महिला प्रतिवादियों का उनके काम की प्रकृति के अनुसार वितरण

काम की प्रकृति	पुरूष प्रतिवादी		महिला प्रतिवादी		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
मजदूरी	75	20.72	26	10.08	101	16.29
नौकरी	98	27.07	54	20.93	152	24.52
व्यवसायी/ प्रोफेशनल	55	15.19	7	2.71	62	10.00
कृषि	134	37.01	21	8.13	155	25.00
गृह कार्य	--	--	150	58.14	150	24.19
योग	362	99.99 या 100	258	99.99 या 100	620	100

यह सारणी कुल प्रतिवादियों में पुरूष एवं महिला प्रतिवादियों का उनके काम की प्रकृति के अनुसार वितरण दर्शाती है । 75 (20.72 प्रतिशत), 98 (27.07 प्रतिशत), 55 (15.19 प्रतिशत), तथा 134 (37.01 प्रतिशत) पुरूष प्रतिवादी क्रमशः मजदूरी, नौकरी, व्यवसाय प्रोफेशनल तथा कृषि कार्यो में लगे है । कुल महिला प्रतिवादियों में से 26 (10.08 प्रतिशत), 54 (20.93 प्रतिशत), 7 (2.71 प्रतिशत), 21 (8.13 प्रतिशत), तथा 150 (58.14 प्रतिशत) महिला प्रतिवादी क्रमशः मजदूरी, नौकरी, व्यवसाय / प्रोफेशनल, कृषि तथा गृह कार्यो में लगी हुई है। कुल प्रतिवादियों में से 101 (16.29

प्रतिशत), 152 (24.52 प्रतिशत), 62 (10 प्रतिशत), 155 (25 प्रतिशत), 150 (24.19 प्रतिशत), क्रमश: मजदूरी, नौकरी, व्यवसाय/प्रोफेशनल, कृषि एवं गृह कार्यो में लगे हुये हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि पुरूष प्रतिवादियों में से लगभग दो चौथाई प्रतिवादी मजदूरी एवं नौकरी में तथा शेष दो चौथाई व्यवसाय / प्रोफेशनल एवं कृषि कार्यो में लगे हैं । महिला प्रतिवादियों में से लगभग एक तिहाई प्रतिवादी मजदूरी एवं नौकरी में लगे हैं, जो कि पुरूषों द्वारा इसी काम में लगे होने के लिये अनुपात से कम है । महिला प्रतिवादियों में से लगभग दो चौथाई प्रतिवदी गृहकार्यो को करती हैं । कुल प्रतिवादियों पर द्रृष्टि डालने से स्पष्ट है कि एक तिहाई से अधिक प्रतिवादी मजदुरी एवं नौकरी में तथा एक चौथाई कृषि कार्यो में एवं लगभग एक चौथाई गृह कार्यो में लगे हुये हैं । प्रतिवादियों में ग्रामीण के पुरूष एवं महिलाओं का उनके काम की प्रकृति के अनुसार वितरण निम्न सारणी 4.9 में किया गया है :-

सारणी संख्या 4.9

कुल प्रतिवादियों में ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष एवं महिलाओं का उनके काम की प्रकृति के अनुसार वितरण

काम की प्रकृति	ग्रामीण प्रतिवादी				योग	
	पुरूष		महिला		संख्या	प्रतिशत
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत		
मजदूरी	73	23.62	26	14.05	99	20.04
नौकरी	56	18.12	8	4.32	64	12.95
व्यवसाय/ प्रोफेशनल	46	14.89	4	2.16	50	10.12
कृषि	134	43.37	21	11.35	155	31.38
गृहकार्य	--	--	126	68.11	126	25.51
योग	309	100	185	99.99 या 100	494	100 या 100

यह सारणी कुल प्रतिवादियों में ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष एवं महिलाओं का उनके काम की प्रकृति के अनुसार वितरण क्रीं को दर्शाती है । सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष प्रतिवादियों में 73 (23.62 प्रतिशत), 56 (18.12. प्रतिशत), 46 (14.89 प्रतिशत), 134 (43.37 प्रतिशत), प्रतिवादी क्रमशः मजदूरी, नौकरी, व्यवसाय / प्रोफेशनल, कृषि, गृहकार्य आदि में लगे हैं । ग्रामीण क्षेत्र के महिला प्रतिवादियों में 26 (14.05 प्रतिशत), 8 (4.32 प्रतिशत), 4 (2.16 प्रतिशत), 21 (11.35 प्रतिशत), तथा 126 (68.11 प्रतिशत), प्रतिवादी क्रमशः मजदूरी, नौकरी, व्यवसाय / प्रोफेशनल, कृषि एवं गृह कार्यों में लगे हैं । कुल ग्रामीण प्रतिवादियों में से 99 (20.04 प्रतिशत), 64 (12.95 प्रतिशत), 50 (10.12 प्रतिशत), 155 (31.38 प्रतिशत) तथा 126 (25.51 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः मजदूरी, नौकरी, व्यवसाय / प्रोफोशनल कृषि एवं गृह कार्यों में लगे हुये हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष प्रतिवादियों में से एक तिहाई से अधिक मजदूरी एवं नौकरी में तथा दो चौथाई से अधिक व्यवसाय / प्रोफेशनल एवं कृषि कार्यों में लगे हैं । ग्रामीण क्षेत्र की महिला प्रतिवादियों में से एक चौथाई से भी कम मजदूरी एवं नौकरी में लगी है । जब कि लगभग दो तिहाई महिला प्रतिवादी गृह कार्यों में लगी है । इस तरह अधिकांश महिला गृह कार्यों में लगी हैं । कुल प्रतिवादियों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट है कि लगभग एक तिहाई प्रतिवादी मजदूरी एवं नौकरी, में एक तिहाई कृषि कार्यों में एक चौथाई गृह कार्यों में लगे हैं । जब कि व्यवसाय एवं प्रोफेसशनल में लगे प्रतिवादियों की संख्या कम है ।

प्रतिवादियों में नगरीय क्षेत्र के पुरूष एवं महिलाओं का उनके काम की प्रकृति के अनुसार वितरण निम्न सारणी संख्या 4.10 में दिया गया है :-

सारणी संख्या 4.10

कुल प्रतिवादियों में नगरीय क्षेत्र के पुरूष एवं महिलाओं का उनके काम की प्रकृति के अनुसार वितरण

काम की प्रकृति	नगरीय प्रतिवादी.					
	पुरूष		महिला		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
मजदूरी	2	3.77	-	-	2	1.59
नौकरी	42	79.25	46	63.00	88	69.84
व्यवसाय/ प्रोफेशनल	9	16.98	3	4.11	12	9.52
कृषि	-	-	-	-	-	-
गृह कार्य	-	-	24	32.88	24	19.05
योग	53	100	73	99.99 या 100	126	100

यह सारणी कुल प्रतिवादियों में नगरीय क्षेत्र के पुरूष एवं महिलाओं का, उनके काम की प्रकृति के अनुसार वितरण दर्शाती है। नगरीय क्षेत्र में 2 (3.77 प्रतिशत), 42 (79.25 प्रतिशत), 9 (16.98 प्रतिशत), पुरूष प्रतिवादी क्रमशः मजदूरी, नौकरी, एवं व्यवसाय /प्रोफेशनल कार्यो में लगे हैं । शहरी क्षेत्र में 46, (63 प्रतिशत), 3 (4.11 प्रतिशत), 24 (32.88 प्रतिशत), महिला प्रतिवादी क्रमशः नौकरी, व्यवसाय / प्रोफेशनल तथा गृह कार्यो में लगे हैं । सारणी से स्पष्ट है कि मजदूरी एवं कृषि कार्य में नगरीय क्षेत्र में कोई महिला प्रतिवादी नहीं लगी है । कुल नगरीय क्षेत्र में प्रतिवादियों में से 2 (1.59 प्रतिशत), 88

(69.84 प्रतिशत), 12 (9.52 प्रतिशत) तथा 24 (19.05 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः मजदूरी , नौकरी, व्यवसाय / प्रोफेशनल कृषि एवं गृह कार्यो में लगे हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि नगरीय क्षेत्र के पुरूष प्रतिवादियों में तीन चौथाई से अधिक नौकरी मे लगे हैं तथा मजदूरी में लगे लोगों की संख्या नगण्य है, एवं व्यवसाय / प्रोफेशनल में लगे पुरूषों की संख्या कम हे तथा कृषि कार्य में कोई प्रतिवादी नही लगा है। नगरीय क्षेत्र के महिला प्रतिवादी भी लगभग दो तिहाई नौकरी क्षेत्र में तथा एक तिहाई गृह कार्यो में लगी है । कुल नगरीय प्रतिवादियों में से दो तिहाई नौकरी में तथा एक चौथाई से कम गृह कार्यो में लगे हैं जब कि शहरी क्षेत्र के प्रतिवादियों में कृषि में कोई व्यक्ति नहीं लगा है एवं व्यवासाय / प्रोफेशनल में लगे प्रतिवादियों की संख्या कम है तथा मजदूरी में लगे लोगों की संख्या नगण्य है । ग्रामीण एवं नगरीय तथा कुल प्रतिवादियों की दम्पत्ति की समस्त स्त्रोतों से प्राप्त मासिक आय का विवरण निम्न सारणी 4.11 में दिया गया है :-

सारणी संख्या 4.11

ग्रामीण एवं नगरीय तथा कुल प्रतिवादियों की दम्पति की समस्त स्त्रोतो से प्राप्त मासिक आय

दम्पति की कुल मासिक आय (रूपयों में)	ग्रामीण पतिवादी		नगरीय प्रतिवादी		कुल प्रतिवादी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
0 - 500	40	8.10	7	5.56	47	7.58
500 - 1000	168	34.00	39	30.95	207	33.39
1000 - 2000	143	28.95	42	33.33	185	29.84
2000 - 3000	92	18.62	14	11.11	106	17.10
3000 - 4000	33	6.68	15	11.90	48	7.74
4000 के ऊपर	18	3.64	09	7.14	27	4.36
योग	494	99.99 या 100	126	99.99 या 100	620	100

यह सारणी ग्रामीण एवं नगरीय तथा कुल प्रतिवादियों की दम्पति की समस्त स्त्रोतों से प्राप्त मासिक आय की दर्शाती है । ग्रामीण प्रतिवादियों में 40 (8.10 प्रतिशत), 168 (34 प्रतिशत), 143 (28.95 प्रतिशत), 92 (18.62 प्रतिशत), 33 (6.68 प्रतिशत), एवं 18 (3.64 प्रतिशत) प्रतिवादियों की दम्पत्ति की समस्त स्त्रोंतों से प्राप्त मासिक आय क्रमशः (0.500), (500.1000),(1000.2000), (2000-3000), (3000-4000) एवं 4000 रूपयों से अधिक है । नगरीय प्रतिवादियों में 7(5.56 प्रतिशत), 39 (30.95 प्रतिशत) 42 (33.33 प्रतिशत), 14 (11.11 प्रतिशत), 15 (11.90 प्रतिशत), एवं 9 (7.14 प्रतिशत) प्रतिवादियों की दम्पति की समस्त स्त्रोतों से कुल मासिक आय क्रमशः (0.500), (500-1000), (1000-2000), (2000.3000), (3000.4000) एवं 4000 रूपयों से अधिक है । कुल प्रतिवादियों में 47 (7.58 प्रतिशत), 207 (33.39 प्रतिशत), 185 (29.84 प्रतिशत), 106 (17.10 प्रतिशत), 48 (7.74 प्रतिशत) एवं 27 (4.36 प्रतिशत) प्रतिवादियों की दम्पति की समस्त स्त्रोतो से कुल मासिक आय क्रमशः (0-500), 500-1000), (1000-2000), (2000-3000), (3000-4000), एवं 4000 रूपयों से अधिक है ।

सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण प्रतिवादियों में से एक तिहाई से अधिक प्रतिवादियों की दम्पति की कुल मासिक आय (0-500) (500-1000) रूपयों के मध्य हैं, जब कि एक चौथाई ग्रामीण प्रतिवादियों की दम्पति की कुल मासिक आय (1000-2000) रूपये है, । तथा लगभग एक चौथाई से अधिक ग्रामीण प्रतिवादियों की दम्पति की कुल मासिक आय 2000 रूपयों से लेकर 4000 से अधिक रूपयों तक है । नगरीय प्रतिवादियों में से एक तिहाई से अधिक प्रतिवादियों की कुल मासिक आय 1000 रूपये तक हैं एवं एक तिहाई प्रतिवादियों की दम्पति की मासिक आय 1000 से 2000 रूपयों तक है, एवं एक

तिहाई से कम नगरीय प्रतिवादियों की दम्पति की कुल मासिक आय 2000 रूपये से लेकर 4000 रूपये से अधिक है । कुल प्रतिवादियों में एक तिहाई प्रतिवादियों की दम्पति की कुल मासिक आय 500 से 1000 रूपया है तथा एक तिहाई से कम प्रतिवादियों की दम्पति की मासिक आय 1000 से 2000 रूपयों तक है । लगभग एक चौथाई प्रतिवादियों की दम्पति की कुल मासिक आय 2000 से 4000 रूपये तक मासिक है । 500 रूपये तक की मासिक आय एवं 4000 रूपयों से अधिक की मासिक आय वाले दम्पति के प्रतिवादियों की संख्या नगण्य है।

अध्याय-5 : नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्ष एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन

CHAPTER-5 : THE FINDINGS FROM THE URBAN AND RURAL AREA & THEIR COMPRATIVE STUDY

(CHAPTER-5)

नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्ष एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन

(The findings from the Urban & Rural Area, & Their comparative study)

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत जनपद से प्राप्त निष्कर्षों का अवलोकन करने के पूर्व ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से सर्वप्रथम न्यादर्श में उपलब्ध नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों से प्राप्त निष्कर्षों का अध्ययन प्रारम्भ किया जायेगा।

5.1 नगरीय क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्ष

नगरीय क्षेत्र के कुल 126 प्रतिवादियों में से मात्र 3 प्रतिवादी ऐसे थे जो किसी भी जनमाध्यम द्वारा प्रभावित नहीं हुए एवं इस तरह 123 या 97.62 प्रतिशत प्रतिवादी ऐसे थे, जो किसी न किसी जनमाध्यम से प्रभावित हुए हैं। जबकि 3 या 2.38 प्रतिशत प्रतिवादी ऐसे थे, जो किसी भी जनमाध्यम से प्रभावित नहीं हुए हैं।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादी जो छोटा परिवार आकार रखने हेतु विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित हुए उन का अध्ययन निम्न सारणी से किया गया है :-

सारणी संख्या - 5.1

प्रतिवादियों को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले जनमाध्यम का विवरण

प्रभावी जनमाध्यम	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
समाचार पत्र	08	6.50
पत्रिकाएं	06	4.88
रेडियो	14	11.38
दूरदर्शन	79	64.23

दीवाल प्रिंटिंग एवं पोस्टर	-	-
चलचित्र	2	1.63
पारंपरिक लोक गीत एवं नृत्य	-	-
परिवार कल्याण केन्द्र	-	-
मित्र	14	11.38
कुल योग :	123	100

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों को, विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित किये जाने के अनुसार निर्मित की गयी है। सारणीनुसार 8 (6.50 प्रतिशत), 6 (4.88 प्रतिशत), 14 (11.38 प्रतिशत), 79 (64.23 प्रतिशत), 2 (1.63 प्रतिशत) तथा 14 (11.38 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र एवं मित्रों द्वारा छोटा परिवार आकार रखने हेतु प्रभावित हुए।

जनमाध्यमों में सर्वाधिक लगभग दो तिहाई प्रतिवादी दूरदर्शन से प्रभावित हुए। दूसरा स्थान रेडियो का रहा, जिससे 11.38 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुए। चलचित्र से सबसे कम 1.63 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुए जबकि पारंपरिक लोक गीत एवं नृत्य से कोई भी प्रतिवादी प्रभावित नहीं हुआ। मित्रों से 11.38 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुए। उल्लेखनीय तथ्य यह उभर कर सामने आया कि परिवार कल्याण केन्द्र से कोई भी व्यक्ति प्रभावित नहीं हुआ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों का विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा, उनके विभिन्न आयु अन्तरालों में प्रभावित होने का विश्लेषण निम्न सारणी 5.2 से किया गया है :-

सारणी संख्या - 5.2

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के समय की आयु के अनुसार प्रतिवादियों का विवरण

आयु अन्तराल (वर्ष में)	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
15-20	17	13.82
20-25	32	26.02
25-30	50	40.65
30-35	19	15.44
35-40	4	3.25
40 तथा अधिक	1	0.81
योग	123	99.99 या 100

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों का उनकी आयु के अनुसार विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित किये जाने के अनुसार निर्मित की गयी है। सारणीनुसार विवरण इस प्रकार मिला है कि कुल प्रभावित हुए 123 प्रतिवादियों में से सर्वाधिक 50 (40.65 प्रतिशत) प्रतिवादी 25 से 30 वर्ष आयु वर्ग के हैं। 32 प्रतिवादी (26.02 प्रतिशत) 20-25 वर्ष आयु वर्ग के, 19 प्रतिवादी (15.44 प्रतिशत) 30-35 वर्ष आयु वर्ग के, 17 प्रतिवादी (13.82 प्रतिशत) 15-20 वर्ष आयु वर्ग के, 4 प्रतिवादी (3.25 प्रतिशत) 35-40 वर्ष आयु वर्ग के तथा 1 प्रतिवादी (0.81 प्रतिशत) 40-45 आयु वर्ग के हैं।

उपर्युक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 99 (80.49 प्रतिशत) प्रतिवादी 15 से 30 वर्ष आयु वर्ग के है जो कि विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित हुए। अतः युवा वर्ग ही सर्वाधिक जनमाध्यमों से प्रभावित हुआ है।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों का विभिन्न कैलेन्डर वर्षों के अनुसार, जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित होने का विश्लेषण निम्न सारणी 5.3 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5.3

विभिन्न वर्षों में जनमाध्यमों से प्रभावित होने वाले प्रतिवादियों का वितरण

कैलेण्डर वर्ष	प्रभावित प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1955 - 60	1	0.81
1960 - 65	2	1.63
1965 - 70	5	4.07
1970 - 75	14	11.38
1975 - 80	21	17.07
1980 - 85	33	26.83
1985 - 90	29	23.58
1990 से अब तक	18	14.63
	123	100.00

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के जो प्रतिवादी विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा विभिन्न आयु वर्ष में विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित होने के आधार पर विभिन्न केलेन्डर वर्षो पर बनायी गयी है। सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों का विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा केलेन्डर वर्षो में प्रभावित होने को दर्शाती है।

सारणी के अनुसार सर्वाधिक 33 (26.83 प्रतिशत) प्रतिवादी वर्ष 1980-85 में प्रभावित हुए जबकि 29 (23.58 प्रतिशत) वर्ष 1985-90 में, 21 (17.07 प्रतिशत) वर्ष 1975-80 में, 18 (14.63 प्रतिशत) वर्ष 1990 से अब तक में, 14 (11.38 प्रतिशत) वर्ष 1970-75 में 5(4.07 प्रतिशत) वर्ष 1965-70 में 2 (1.63 प्रतिशत) वर्ष 1960-65 में, 1 (0.81 प्रतिशत) वर्ष 1955-60 में प्रभावित हुए।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 80 प्रतिवादी (65.04 प्रतिशत) वर्ष 1980 से लेकर अब तक विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित हुए।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों का विभिन्न केलेन्डर वर्षों में विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित होने का विश्लेषण निम्न सारणी 5.4 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5.4

प्रतिवादियों का विभिन्न वर्षों में विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित होने का विवरण

केलेण्डर वर्ष	समाचार पत्र	पत्रिका	रेडियो	दूरदर्शन	चलचित्र	मित्र	योग
19955-60	1(0.81)						1(0.81%)
1960-65			2(1.63%)				2(1.63%)
1965-70			5(4.07%)				5(4.07%)
1970-75	3(2.44%)	4(3.25%)	2(1.63%)		1(0.81%)	4(325%)	14(11.38%)
1975-80	4(3.25%)	2(1.63%)	5(4.07%)			10(8.13%)	21(17.08%)
1980-85				33(26.83%)			33(26.83%)
1985-90				28(22.76%)	1(0.81%)		29(23.57%)
1990 से अब तक				18(14.63%)			18(14.63%)
	8 (6.50%)	6 (4.88%)	14 (11.40%)	79 (64.22%)	2 (1.62%)	14 (11.38%)	123 (100%)

यह सारणी विभिन्न प्रतिवादियों को भिन्न - भिन्न जनमाध्यमों द्वारा भिन्न - भिन्न कैलेन्डर वर्षों में प्रभावित होने की स्थिति को दर्शाती है। सारणी से स्पष्ट है कि समाचार पत्र से प्रभावित होने वाले 8 प्रतिवादियों में 1 प्रतिवादी (0.81 प्रतिशत) वर्ष 1955 -60 में, 3 प्रतिवादी (2.44 प्रतिशत) वर्ष 1970-75 में, 4 प्रतिवादी (3.25 प्रतिशत) वर्ष 1975-80 में प्रभावित हुए। पत्रिका से प्रभावित होने वाले प्रतिवादियों में से 4(3.25 प्रतिशत) वर्ष 1970-75 में, 2 (1.63 प्रतिशत) वर्ष 1975-80 में प्रभावित हुए। रेडियों से प्रभावित होने वाले प्रतिवादियों में से 2 (1.63 प्रतिशत) वर्ष 1960-65 में 5(4.07 प्रतिशत) 1965-70 में, 2 (1.63 प्रतिशत) वर्ष 1970-75 में, 5 (4.07 प्रतिशत) वर्ष 1975-80 में प्रभावित हुये। दुरदर्शन से प्रभावित होने वाले प्रतिवादियों में से 33 (26.83 प्रतिशत) वर्ष 1980-85 में, 28 (22.76 प्रतिशत) वर्ष 1985-90 में तथा 18 (14.63 प्रतिशत) वर्ष 1990 के बाद प्रभावित हुए। चलचित्र से 1 (0.81 प्रतिशत) वर्ष 1970-75 में तथा 1(0.81 प्रतिशत) 1985-90 में प्रतिवादी प्रभावित हुए। मित्रों से प्रभावित होने वालों में 4 प्रतिवादी (3.25 प्रतिशत) वर्ष 1970-75 में तथा 10 प्रतिवादी (8.13 प्रतिशत) 1975-80 में प्रभावित हुए।

सारणी से स्पष्ट है कि दुरदर्शन जो कि प्रतिवादियों को प्रभावित करने वाला सशक्त माध्यम रहा है जिससे लगभग आधे प्रतिवादी वर्ष 1980-85 एवं 1985-90 में प्रभावित हुए।

अब नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व या जनमाध्यमों से अप्रभावित अवस्था का अध्ययन किया जायेगा। इसके अन्तर्गत जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों की प्रभावित होने के पूर्व की स्थिति तथा जो प्रतिवादी जनमाध्यमों से प्रभावित नहीं हुए हैं अर्थात अप्रभावित प्रतिवादियों की स्थिति का अध्ययन किया है। चूंकि दोनों प्रकार के प्रतिवादियों पर इस अवस्था में जनमाध्यमों का कोई प्रभाव नहीं है, अतः इसका अध्ययन हमने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व तथा अप्रभावित अवस्था के शीर्षक द्वारा किया है।

इस अवस्था में प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न की गयी संतानों का विश्लेषण निम्न सारणी सं0 5.5 में दिखाया गया है:-

सारणी संख्या 5.5

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों में प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित स्थिति में उत्पन्न की गयी संतानों का विवरण

उत्पन्न संतान की संख्या	प्रभावित प्रतिवादयों की संख्या		अप्रभावित प्रतिवादियों की संख्या		योग प्रतिवादी एवं	
	संख्या	प्रतिश	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	12	(12.90)			12	(12.90)
2	10	(10.75)			10	(10.75)
3	23	(24.73)	02	(2.15)	25	(26.88)
4	21	(22.58)	01	(1.08)	22	(23.66)
5	13	(13.98)			13	(13.98)
6	5	(5.38)			5	(5.38)
7	4	(4.30)			4	(4.30)
8	2	(2.15)			2	(2.15)
योग	90	(96.77)	3	(3.23)	93	(100)

यह सारणी जनमाध्यमों से प्रभावित नगरीय क्षेत्रों के प्रतिवादियों का उनकी जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व, उत्पन्न की गयी संतान तथा अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न की गयी संतान का विश्लेषण करती है। सारणी के विवरणानुसार 90 (96.77

प्रतिशत) प्रतिवादी ऐसे हैं जिन्होंने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व संतानोत्पति की। 3(3.23 प्रतिशत) प्रतिवादी जो किसी भी जनमाध्यम से प्रभावित नहीं हुए थे, ने सन्तानोत्पति की। प्रभावित प्रतिवादियों की जनमाध्यम के पूर्व की स्थिति या उन प्रतिवादियों की स्थिति जो जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे, दोनों की स्थितियां समान हैं। अतः हम इनका विश्लेषण प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में उत्पन्न की गयी संतानों के रूप में करेंगे।

इस तरह यह सारणी नगरीय क्षेत्र के उन प्रतिवादियों की जिन्होने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व अप्रभावित अवस्था में संतान उत्पन्न की गयी, उनके द्वारा उत्पन्न की गयी संतानों का विवरण प्रस्तुत करती है। सारणी के विवरणानुसार एक, दो, तीन, चार, पांच, छः सात एवं आठ संतान क्रमशः 12 (12.90 प्रतिशत), 10 (10.75 प्रतिशत), 25 (26.88 प्रतिशत), 22 (23.66 प्रतिशत), 13 (13.98 प्रतिशत), 5 (5.38 प्रतिशत), 4 (4.30 प्रतिशत) तथा 2 (2.15 प्रतिशत) प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न की गयी।

सारणी से स्पष्ट है कि लगभग एक चौथाई प्रतिवादियों में प्रत्येक द्वारा 1 से 2 संतान उत्पन्न की गयी है। जबकि एक चौथाई से अधिक प्रतिवादियों द्वारा 3 संतान एवं लगभग एक चौथाई प्रतिवादियों में प्रत्येक द्वारा 4 संतान उत्पन्न की गयी है। इस तरह लगभग दो चौथाई प्रतिवादियों में प्रत्येक द्वारा 3 से 4 संताने उत्पन्न की गयी हैं । लगभग 14 प्रतिशत प्रतिवादियों द्वारा प्रत्येक ने पांच संताने उत्पन्न की गयी है। अतः प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न की गयी संतानों की संख्या अधिक है। तीन प्रतिवादी जो जनमाध्यमों में अप्रभावित रहे, उनके द्वारा 3 एवं 4 संताने उत्पन्न की गयी। जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों ने प्रभावित होने के पूर्व औसत 3.344 संतान उत्पन्न की जबकि अप्रभावित प्रतिवादियों ने औसत 3.333 संतान उत्पन्न की।

सारणी से स्पष्ट है कि कुल 93 प्रतिवादियों द्वारा 334 संताने उत्पन्न की गयी हैं। इस तरह प्रति प्रतिवादी द्वारा उत्पन्न की गयी औसत संतान उत्पति की संख्या 3.59।

है, जो कि बड़े परिवार आकार को इंगित करती है। स्पष्ट है कि जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व अधिकांश प्रतिवादियों ने अधिक संताने उत्पन्न की।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व तथा अप्रभावित अवस्था में विवाह एवं प्रथम संतान उत्पति के मध्य रखे गये समय अंतराल को निम्न सारणी 5.6 से स्पष्ट किया गया है :-

सारणी संख्या 5.6

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में विवाह के पश्चात् प्रथम सन्तानोत्पत्ति के मध्य रखे गये समय अंतराल का विवरण

संतानोत्पत्ति समय अंत-राल वर्ष में	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		प्रतिवादी योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	78	(83.87)	2	(2.15)	80	(86.02)
2	08	(8.60)	1	(1.08)	09	(9.68)
3	03	(3.23)	-		03	(3.23)
4	01	(1.07)	-		01	(1.07)
योग	90	(96.77)	3	(3.23)	93	(100)

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के जनमाध्यमों से प्रभावित एवं अप्रभावित प्रतिवादियों का विश्लेषण करती है जिन्होंने संतानोत्पति की। सारणी के द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों द्वारा प्रभावित होने के पूर्व विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य

रखे गये समय अंतराल का विश्लेषण किया गया है। इसी तरह अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखे गये समय अंतराल का विश्लेषण किया गया है। चूंकि दोनों स्थितियों में जनमाध्यमों का प्रभाव नहीं है, अतः इसें प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यम से प्रभावित होने के पुर्व विवाह आयु एवं प्रथम संतान के मध्य रखे समय अंतराल के रूप में विश्लेषण किया गया है।

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पुर्व, विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतानोत्पति के मध्य के समय अंतराल को प्रस्तुत करतीं है। सारणी के विवरणानुसार 80 (86.02 प्रतिशत), 9 (9.68 प्रतिशत), 3(3.23 प्रतिशत) तथा 1 (1.07 प्रतिशत) प्रतिवादियों ने विवाह के पश्चात क्रमशः एक दो, तीन एवं चार वर्ष की समयावधि के अंतराल पर प्रथम संतान उत्पन्न की।

सारणी से स्पष्ट है कि तीन चौथाई से अधिक प्रतिवादियों ने बहुत ही शीघ्र एक वर्ष बाद प्रथम संतान उत्पन्न की। तीन एवं चार वर्ष के समय अंतराल पर संतान उत्पति करने वाले प्रतिवादियों की संख्या नगण्य है। जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों ने प्रभावित होने के पुर्व विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखा गया औसत समय अंतराल = 1.189 वर्ष है, जबकि अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा विवाह के पश्चात एवं प्रथम संता उत्पति के मध्य रखा गया औसत समय अंतराल 1.333 वर्ष रहा। कुल प्रतिवादियों द्वारा विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतान के मध्य रखे गये समयावधि का औसत अंतराल 1.194 वर्ष रहा, जो कि बहुत ही शीघ्र संतानोत्पति को दर्शाता है।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पुर्व तथा अप्रभावित अवस्था में दो संतानों की उत्पति के मध्य रखे गये समय अंतराल को निम्न सारणी 5.7 से स्पष्ट किया गया है :-

सारणी संख्या 5.7

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में

दो संतानो की उत्पत्ति के मध्य रखा गया समय अंतराल

संतान उत्पत्ति अंतराल (वर्ष में)	प्रभावित प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न संतान		अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न संतान		उत्पन्न संतान योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	129	53.53	5	2.07	134	55.60
2	67	27.80	3	1.25	70	29.05
3	30	12.45	2	0.83	32	13.28
4	1	0.41	-	-	1	0.41
5	3	1.24	-	-	3	1.24
6	-	-	-	-	-	-
7	1	0.41	-	-	1	0.41
योग	231	95.84	10	4.15	241	99.99 या 100

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के जनमाध्यमों से प्रभावित, प्रतिवादियों को प्रभावित होने के पूर्व तथा अप्रभावित प्रतिवादियों की अप्रभावित अवस्था में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे गये समय अंतराल को प्रकट करती है। चूंकि दोनों स्थितियों में जनमाध्यमों का कोई प्रभाव नहीं है, अतः इसे जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व, प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न की गयी संतानो के मध्य रखे गये समय अंतराल के रूप में देखा गया है।

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व दो संतानों की उत्पति के मध्य रखे गये समय अंतराल को दर्शाती है। सारणी के विवरणानुसार 134 (55.60 प्रतिशत), 70 (29.05 प्रतिशत), 32 (13.28 प्रतिशत), 1(0.41 प्रतिशत), 3 (1.24 प्रतिशत) तथा 1 (0.41 प्रतिशत) संताने क्रमशः एक, दो, तीन, चार पांच, सात वर्ष के अंतराल में उत्पन्न हुई है।

सारिणी से स्पष्ट है कि दो चौथाई सें अधिक संताने एक वर्ष की समयावधि में लोगो द्वारा उत्पन्न हुई है तथा एक चौथाई से अधिक संताने 2 वर्ष की समयावधि में उत्पन्न हुई है। इसतरह चार, पांच एवं सात वर्ष के समय अंतराल में उत्पन्न होने वाली संतानो की संख्या नगण्य है। जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों द्वारा दो संतानो के मध्य रखा गया औसत समयांतराल 1.640 वर्ष है, जब कि अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा दो संतानो के मध्य रखा गया औसत समयावधि अंतराल = 1.7 वर्ष है । इस तरह दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व रखा गया औसत समय अंतराल 1.643 वर्ष है जो कि बहुत ही तीव्र संतानोत्पत्ति को प्रकट करता है ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व तथा अप्रभावित अवस्था में उनके लड़को की विवाह के समय की आयु का विश्लेषण निम्न सारिणी 5.8 से किया गया है :-

सारिणी संख्या 5.8

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभवित अवस्था में प्रतिवादियों के लड़कों की विवाह के समय आयु

विवाह आयु (वर्ष में)	प्रभावित प्रतिवादियों के लड़कों की संख्या	प्रतिशत
18	10	45.45
19	2	9.09
20	4	18.18
21	1	4.55
23	2	9.09
24	2	9.09
29	1	4.55
योग	22	100

यह सारिणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व उनके लड़कों की विवाह के समय की आयु को दर्शाती है। प्रतिवादियों द्वारा कुल अपने 22 लड़कों का विवाह किया गया है । सारणी से विवरणानुसार स्पष्ट है कि प्रतिवादियों ने अपने 10 (45.45 प्रतिशत), 2 (9.09 प्रतिशत), 4 (18.18 प्रतिशत), 1(4.55 प्रतिशत), 2 (9.09 प्रतिशत), 2 (9.09 प्रतिशत) एवं 1 (4.55 प्रतिशत), लड़कों का विवाह क्रमशः 18, 19, 20, 21, 23, 24, एवं 29 वर्ष की आयु में किया गया है। जनमाध्यमों से अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा अपनी लड़की का कोई विवाह नहीं किया गया है।

सारणी से स्पष्ट है कि लगभग दो चौथाई लड़कों का विवाह, प्रतिवादियों ने 18 वर्ष की आयु में किया है, जो कि वर्तमान समय में सरकार द्वारा घोषित विवाह आयु से कम है। सरकार द्वारा घोषित लड़कों का विवाह आयु 21 वर्ष एवं उससे अधिक की आयु में मात्र 6 लड़कों का विवाह किया गया है, जो कि लगभग एक चौथाई भाग है । लड़को के विवाह की औसत आयु 20.09 वर्ष है, जो कि सरकार द्वारा घोषित लड़कों की विवाह आयु 21 वर्ष से कम है । अतः स्पष्ट है कि जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व प्रतिवादियों द्वारा अपने अधिकांश लड़कों का विवाह सरकार द्वारा घोषित विवाह आयु से कम विवाह आयु पर किया है ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में, उनकी लड़कियों की विवाह के समय की आयु का विश्लेषण निम्न सारणी सं0 5.9 में दिया गया है :-

सारिणी संख्या 5.9

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में प्रतिवादियों के लड़कियों की विवाह के समय आयु

विवाह आयु (वर्ष में)	प्रभावित प्रतिवादियों की लड़कियों की संख्या	प्रतिशत
17	11	23.40
18	32	68.09
19	3	6.38
25	1	2.13
योग	47	100-00

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व उनकी लड़कियों की विवाह के समय की आयु को दर्शाता है । सारणी के विवरणानुसार स्पष्ट है कि प्रतिवादियों ने अपनी कुल 47 लड़कियों का विवाह किया है । प्रतिवादियों ने अपनी 11(23.40 प्रतिशत), 32 (68.09 प्रतिशत), 3 (6.38 प्रतिशत) एवं 1 (2.13 प्रतिशत) लड़कियों का विवाह क्रमशः 17, 18, 19 एवं 25 वर्ष की आयु में किया है। जनमाध्यमों से अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा अपनी किसी भी लड़की का विवाह नहीं किया गया है।

सारणी से स्पष्ट है कि प्रतिवादियों ने लगभग दो तिहाई लड़कियों का विवाह 18 वर्ष की आयु में किया है। यहां यह तथ्य उल्लेखनीय है, कि अधिकांश प्रतिवादियों ने सरकार द्वारा लड़कियों के लिए घोषित विवाह आयु 18 वर्ष का पालन जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व भी किया है । किन्तु फिर भी लगभग एक चोथाई प्रतिवादियों ने सरकार द्वारा घोषित विवाह आयु से कम विवाह आयु 17 वर्ष में लड़कियों का विवाह किया है । प्रतिवादियों की उनकी लड़कियों की विवाह के समय की आयु का औसत 17.98 वर्ष है, जो कि सरकारी विवाह आयु से नाममात्र कम है ।

अब नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न जनमाध्यमों की विभिन्न केलेण्डर वर्षो में उपलब्धता का अध्ययन किया जायेगा ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की विभिन्न केलेन्डर वर्षो से समाचार पत्र की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी संख्या 5.10 से किया गया है:-

सारिणी संख्या 5.10

विभिन्न केलेंण्डर वर्षों में प्रतिवादियों को समाचारपत्र की उपलब्धता का विवरण

केलेण्डर वर्ष	प्रतिवादियो की संख्या	प्रतिशत
1955.60	3	2.38
1960.65	3	2.38
1965-70	6	4.76
1970-75	18	14.29
1975-80	27	21.43
1980-85	27	21.43
1985-90	21	16.67
1990- सें अब तक	5	3.96
उपलब्धता	110	87.30
अनुपलब्धता	16	12.70
कुल योग	126	100

यह सारणी विभिन्न केलेण्डर वर्षो में प्रतिवादियों कों समाचार पत्र की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कूल 110 (87.30 प्रतिशत) प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध है । केलेण्डर वर्षो की दृष्टि से देखने पर स्पष्ट है कि 3 (2.38 प्रतिशत), 3 (2.38 प्रतिशत), 6 (4.76 प्रतिशत), 18 (14.29 प्रतिशत), 27 (21.43 प्रतिशत), 27(21.43 प्रतिशत), 21 (16.67 प्रतिशत) तथा 5 (3.96 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1955-60, 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 तथा 1990 सें अब तक समाचार पत्र उपलब्ध हैं ।

सारणी सें स्पष्ट है कि 1975-80, एवं 1980-85 के मध्य सर्वाधिक (62.86 प्रतिशत प्रतिवादियों कों समाचार पत्र उपलब्ध हुआ । 16 (12.70 प्रतिशत) प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध नहीं हैं ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न केलेण्डर वर्षो से पत्रिकाओं की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 5.11 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5.11

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को पत्रिका की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अंतराल	प्रतिवादियों की की संख्या	कुल प्रतिवादियों में प्रतिशत
1940-45	1	0.79
1945-50	2	1.59
1950-55	4	3.17
1955-60	5	3.97
1960-65	2	1.59
1965-70	8	6.35
1970-75	7	5.56
1975-80	17	13.49
1980-85	16	12.70
1985-90	01	0.79
1990 से अब तक	01	0.79
योग उपलब्धता	64	50.79
अनुउपलब्धता	62	49.21
कुल योग	126	100.00%

यह सारणी विभिन्न केलेण्डर वर्षो में नगरीय प्रतिवादियों को पत्रिका की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 64 (50.79 प्रतिशत), प्रतिवादियों को पत्रिका उपलब्ध है । केलेण्डर वर्षो की दृष्टि से देखने पर 1 (0.79 प्रतिशत), 2 (1.59 प्रतिशत), 4 (3.17 प्रतिशत), 5 (3.97 प्रतिशत), 2 (1.59 प्रतिशत), 8 (6.35 प्रतिशत), 7(5.56 प्रतिशत), 17 (13.49 प्रतिशत), 16 (12.70 प्रतिशत), 1 (0.79 प्रतिशत) तथा 1 (0.79 प्रतिशत), प्रतिवादियों की क्रमशः 1940-45, 1945-50, 1950-55, 1955-60, 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक पत्रिका उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि 1975-80, 1980-85, के मध्य लगभग एक चौथाई से अधिक प्रतिवादियों को पत्रिका उपलब्ध हुई है । 1985-90 एवं 1990 के बाद न्यादर्श के मात्र दो प्रतिवादियों को पत्रिका उपलब्ध हुई । 62 (49.21 प्रतिशत) प्रतिवादियों को पत्रिकाएं अभी उपलब्ध नहीं है ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न केलेण्डर वर्षो में रेडियो माध्यम की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी में किया गया है :-

सारणी संख्या 5.12

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को रेडियो की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अंतराल	प्रतिवादियों की संख्या	कुल प्रतिवादियों में प्रतिशत
1945-50	1	0.79
1950-55	4	3.17
1955-60	4	3.17
1960-65	10	7.94
1965-70	8	6.35
1970-75	18	14.29
1975-80	28	22.22
1980-85	39	30.95
1985-90	4	3.17
योग उपलब्धता	116	92.05
अनउपलब्धता	10	7.94
कुल योग	126	99.99 या 100%

यह सारणी विभिन्न केलेण्डर वर्षों में, नगरीय प्रतिवादियों को रेडियो की उपलब्धता का विवरण देती है। सारणी के अनुसार कुल 116 (92.05 प्रतिशत) प्रतिवादियों को रेडियो उपलब्ध है । केलेंण्डर वर्षों की दृष्टि से देखने पर 1(0.79 प्रतिशत), 4 (3.17 प्रतिशत), 4 (3.17 प्रतिशत), 10 (7.94 प्रतिशत), 8 (6.35 प्रतिशत), 18 (14.29 प्रतिशत), 28 (22.22 प्रतिशत), 39 (30.95 प्रतिशत), 4 (3.17 प्रतिशत) प्रतिवादियों

यह सारणी विभिन्न केलेंण्डर वर्षों में नगरीय प्रतिवादियों को दूरदर्शन की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 122 (96.83 प्रतिशत) प्रतिवादियों को दूरदर्शन उपलब्ध है । केलेंण्डर वर्षों की दृष्टि से देखने पर 32 (25.40 प्रतिशत), 80 (63.49 प्रतिशत), 10 (7.94 प्रतिशत) प्रवितादियों को क्रमशः 1980-85, 1985-90, एवं 1990 से अब तक से दूरदर्शन उपलब्ध है एवं उसके कार्यक्रम देखते हैं । उल्लेखनीय तथ्य यह है कि दूरदर्शन का आगमन जिले में 1983 से हुआ है। सारणी से स्पष्ट है कि चूंकि दूरदर्शन का आगमन 1980-85 के मध्य हुआ था। अतः उस समय केवल एक चौथाई व्यक्तियों को ही दूरदर्शन माध्यम उपलब्ध था। किन्तु 1985-90 में लगभग दो तिहाई और प्रतिवादियों को यह उपलब्ध हो गया।

दूरदर्शन की न उपलब्धता वाले, नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की संख्या नाम मात्र है । मात्र 4 (3.17 प्रतिशत) प्रतिवादियों को दूरदर्शन की सुविधा आज भी उपलब्ध नहीं है । यह अनुपात लगभग नगण्य है।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न केलेंण्डर वर्षों से पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिंग जन माध्यम की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 5.14 में किया गया है:-

सारणी संख्या 5.14

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिंग की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अंतराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1970-75	01	0.79
1975-80	01	0.79
1980-85	16	12.70
1985-90	06	4.76
योग उपलब्धता	24	19.04
अनुपलब्धता	102	80.95
कुल योग	126	99.99 या 100%

यह सारणी विभिन्न कैलेंण्डर वर्षो में नगरीय प्रतिवादियों की पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिग की उपलब्धता का विवरण देती है। सारणी के अनुसार कुल 24 (19.04 प्रतिशत), प्रतिवादियों को पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिंग माध्यम उपलब्ध हुआ । कैलेण्डर वर्षो की दृष्टि से देखने पर 01 (0.79 प्रतिशत), 01 (0.79 प्रतिशत), 16 (12.70 प्रतिशत), 06 (4.76 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः वर्ष 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 से दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर जनमाध्यम उपलब्ध हुआ ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 12.70 प्रतिशत प्रतिवादियों को वर्ष 1980-85 में दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर माध्यम उपलब्ध हुआ । 102 (80.95 प्रतिशत) प्रतिवादियों

कों दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर उपलब्ध नहीं है । स्पष्ट है कि दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर माध्यम द्वारा सरकार द्वारा किया गया प्रचार स्थानीय लोगों कों ठीक तरीके से उपलब्ध नहीं हुआ है। ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों कों विभिन्न कैलेण्डर वर्षों सें चलचित्र जनमाध्यम की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 5.15 सें किया गया है :-

सारणी संख्या 5.15

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों कों चलचित्र की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अंतराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1960-65	2	1.59
1965-70	4	3.17
1970-75	17	13.49
1975-80	12	9.52
1980-85	53	42.06
1985-90	16	12.70
योग उपलब्धता	104	82.53
अनुपलब्धता	22	17.46
कुल योग	126	99.99 या 100%

यह सारणी विभिन्न कैलेण्डर वर्षों में नगरीय प्रतिवादियों को चलचित्र की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 104 (82.53 प्रतिशत), प्रतिवादियों कों

चलचित्र उपलब्ध है । कैलेंण्डर वर्षों की दृष्टि से देखने पर 2 (1.59 प्रतिशत) 4 (3.17 प्रतिशत), 17 (13.49 प्रतिशत), 12 (9.52 प्रतिशत), 53 (42.06 प्रतिशत), 16 (12.70 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः वर्ष 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980 - 85 एवं 1985-90, से चलचित्र माध्यम उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक एक तिहाई से अधिक प्रतिवादियों को चलचित्र माध्यम वर्ष 1980-85 से उपलब्ध हुआ । वर्ष 1960-65 में मात्र 2 (1.59 प्रतिशत), प्रतिवादियों को चलचित्र माध्यम उपलब्ध हुआ । 22 (17.46 प्रतिशत) प्रतिवादियों को चलचित्र जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है, अर्थात वे चलचित्र को नहीं देखते है ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंण्डर वर्षों से पारिवारिक लोकगीत एवं नृत्य की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 5.16 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5.16

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को पारम्परिक लोकगीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्धता का विवरण

वर्ष अन्तराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1960-65	1	0.79
1965-70	1	0.79
1970-75	7	5.56
1975-80	3	2.38
1980-85	२५	19.84
1985-90	12	9.52
योग उपलब्धता	49	38.88
अनुपलब्धता	77	61.11
कुल योग	126	99.99 100%

यह सारणी विभिन्न कैलेण्डर वर्षों में नगरीय प्रतिवादियों को पारंपरिक लोक गीत एवं नृत्य जनमाध्यम की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 49 (38.88 प्रतिशत) प्रतिवादियों को पारम्परिक लोक गीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्ध है। कैलेण्डर वर्षों को देखने पर 1 (0.79 प्रतिशत), 1 (0.79 प्रतिशत), 7 (5.56 प्रतिशत), 3 (2.38 प्रतिशत) 25 (19.84 प्रतिशत), 12 (9.52 प्रतिशत), प्रतिवादियों को क्रमशः वर्ष 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 से पारम्परिक लोक गीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 19.84 प्रतिशत प्रतिवादियों को वर्ष 1980-85 में पारम्परिक लोक गीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्ध हुआ । वर्ष 1960-65 में मात्र 1 (0.79 प्रतिशत) प्रतिवादी के पारम्परिक लोक गीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्ध हुआ । 77 (61.11 प्रतिशत) प्रतिवादियों को पारम्परिक लोक गीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्ध नहीं हैं ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों को परिवार कल्याण केन्द्र जनमाध्यम की विभिन्न कैलेण्डर वर्षों से उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 5.17 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5.17

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को परिवार कल्याण केन्द्र की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अन्तराल	प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत
1970-75	03	2.38
1975-80	11	08.73
1980-85	14	11.11
1985-90	14	11.11
1990 सें अब तक	01	0.79
कुल उपलब्धता	0.43	34.12
अनुपलब्धता	83	65.87
कुल योग	126	99.99 100%

यह सारणी विभिन्न केलेण्डर वर्षो में, नगरीय प्रतिवादियों कों परिवार कल्याण केन्द्र की उपलब्धता का विवरण देंती है। सारणी के अनुसार कुल 43 (34.12 प्रतिशत) प्रतिवादियों कों परिवार कल्याण केन्द्र माध्यम की उपलब्धता है । केलेंण्डर वर्षो की दृष्टि सें देंखनें पर , 03 (2.38 प्रतिशत), 11 (8.73 प्रतिशत) 14 (11.11 प्रतिशत), 14 (11.11 प्रतिशत), 1 (0.79 प्रतिशत) प्रतिवादियों कों क्रमशः वर्ष 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90, एवें 1990 सें अब तक परिवार कल्याण केन्द्र माध्यम उपलब्ध है ।

सारणी सें स्पष्ट है कि वर्ष1980-85 एवें 1985-90 में सर्वाधिक 22.22 प्रतिशत प्रतिवादियों कों परिवार कल्याण केन्द्र माध्यम उपलब्ध हुआ । 83 (65.87 प्रतिशत) प्रतिवादियों को परिवार कल्याण केन्द्र माध्यम अब भी उपलब्ध नहीं है ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्रों की विभिन्न केलेण्डर वर्षो से उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 5.18 से किया गया है ।

सारणी संख्या 5.18

विभिन्न वर्षो में परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी देने वाले प्रतिवादियों को मित्रों की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अंतराल	प्रतिवादियों की सं0	प्रतिशत
1980-85	6	4.76
1985-90	25	19.84
उपलब्धता	31	24.60
अनुउपलब्धता	95	75.40
योग	126	100.00%

यह सारणी विभिन्न केलेण्डर वर्षो में नगरीय प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम जानने वाले मित्रों की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 31(24.60 प्रतिशत) प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्र उपलब्ध है। केलेण्डर वर्षो की दृष्टि से देखने पर 6 (4.76 प्रतिशत), 25 (19.84 प्रतिशत), ऐसे मित्रों की उपलब्धता प्रतिवादियों को क्रमशः वर्ष 1980-85, 1985-90 से हुई है।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 19.84 प्रतिशत प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्र वर्ष 1985-90 में उपलब्ध हुये । 95 (75.40 प्रतिशत) प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्र उपलब्ध नहीं है ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा एक दिन में समाचार पत्र, पत्रिका, रेडियो एवं दूरदर्शन जनमाध्यमों पर दिये गये समय का विश्लेषण निम्न सारणी 5.19 से किया गया है:-

सारणी संख्या 5.19

एक दिन में प्रतिवादियों द्वारा विभिन्न जनमाध्यमों पर दिया गया समय

समय (मिनट एवं घंटो में)	समाचार पत्र	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
0 - 15 मिनट	71	(56.34)	6	(4.76)			12	(9.52)
15 - 30 मिनट	14	(11.11)	4	(3.17)	10	(7.94)	05	(3.97)
30 मिनट से 1 घंटा	13	(10.32)	19	(15.08)	56	(44.44)	09	(7.14)
1 घंटे से अधिक	10	(7.94)	20	(15.87)	23	(18.25)	94	(74.60)
समय नहीं देते	2	(1.59)	15	(11.90)	27	(21.43)	01	(0.79)
प्रतिवादियों को विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता	110	(87.30)	64	(50.78)	116	(92.06)	121	(96.02)
प्रतिवादियों की संख्या जिन्हें उक्त जनमाध्यम उपलब्ध नहीं हैं	16	((12.70)	62	(49.21)	10	(7.94)	05	(3.97)
कुल प्रतिवादी	126	(100)	126	(99.99)	126	(100)	126	(99.99)

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा विभिन्न जनमाध्यमों पर एक दिन में दियें गयें समय का विवरण देंती है । सारणी के विवरणानुसार समाचार पत्र पर 71 (56.34 प्रतिशत), 14 (11.11 प्रतिशत), 13 (10.32 प्रतिशत), 10 (7.94 प्रतिशत), प्रतिवादी क्रमशः 0-15 मिनट, 15-30 मिनट, 30 मिनट सें एक घंटा एवं एक घंटे सें अधिक का समय देंतें हैं । 2(1.59 प्रतिशत) प्रतिवादी समाचार पत्र पढ़नें पर प्रतिदिन कोई समय नहीं देतें है । इस तरह कुल 110 (87.30 प्रतिशत) प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध है तथा 108 (85.71 प्रतिशत) प्रतिवादी प्रतिदिन नियमित रूप से समाचार पत्र पढ़तें हैं । 16 (12.70 प्रतिशत) प्रतिवादियों कों समाचार पत्र उपलब्ध नहीं है ।

इसी तरह सारणी कें विवरणानुसार 6 (4.76 प्रतिशत), 4 (3.17 प्रतिशत), 19 (15.05 प्रतिशत), 20 (15.87 प्रतिशत), प्रतिवादी पत्रिका पढ़नें में प्रतिदिन क्रमशः 0-15 मिनट, 15-30 मिनट, 30 मिनट सें एक घंटा, एवं 1 घंटे सें अधिक का समय देंतें हैं । जब कि 15 (11.90 प्रतिशत) प्रतिवादियों कों पत्रिका उपलब्ध है, किन्तु वें प्रतिदिन उसें पढ़नें में कोई समय नहीं देंतें है । कुल 64 (50.76 प्रतिशत) प्रतिवादियों कों पत्रिका उपलब्ध है, जब कि 62 (49.21 प्रतिशत) प्रतिवादियों कों पत्रिका उपलब्ध नहीं है ।

इसी तरह सारणी कें विवरणानुसार 10 (7.94 प्रतिशत), 56 (44.44 प्रतिशत), 23 (18.25 प्रतिशत) प्रतिवादी रेंडियों कें कार्यक्रमों कों सुननें में क्रमशः 0-15 मिनट, 15-30 मिनट, 30 मिनट सें एक घंटा, एवं 1 घंटे सें अधिक का समय प्रतिदिन देंतें हैं । 27 (21.43 प्रतिशत) प्रतिवादियों कों रेंडियों माध्यम उपलब्ध तों है किन्तु उसें सुननें में वें कोई समय नहीं देंतें हैं । इस तरह 116 (92.06 प्रतिशत) प्रतिवादियों कों रेंडियों माध्यम उपलब्ध है, जब कि 10 (7.94 प्रतिशत) प्रतिवादियों कों रेंडियों जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है।

इसी तरह सारणी कें विवरणानुसार 12 (9.52 प्रतिशत), 05 (3.97 प्रतिशत), 09 (7,14 प्रतिशत), 94 (74.60 प्रतिशत) प्रतिवादी दूरदर्शन के कार्यक्रम कों देंखनें में क्रमशः

0-15 मिनट, 15-30 मिनट, 30 मिनट से एक घंटा का समय प्रतिदिन देते हैं, जब कि 01 (0.79 प्रतिशत), प्रतिवादी को दूरदर्शन उपलब्ध तो है किन्तु वह उसके कार्यक्रम प्रतिदिन नहीं देखता है । इस तरह कुल 121 (96.02 प्रतिशत) प्रतिवादियों को दूरदर्शन जनमाध्यम उपलब्ध है, जब कि 5 (3.97 प्रतिशत) प्रतिवादियों को दूरदर्शन जनमाध्यम. उपलब्ध नहीं है ।

सारणी से स्पष्ट है कि नगरीय क्षेत्र के कुल प्रतिवादियों में समाचार पत्र पढ़ने वालों में सर्वाधिक 71 (56.34 प्रतिशत) प्रतिवादी प्रतिदिन समाचार पत्र पढ़ने में मात्र 0-15 मिनट का समय देते है । इसी तरह कुल प्रतिवादियों में पत्रिका पढ़ने वालों में 20 (15.87 प्रतिशत) प्रतिवादी प्रतिदिन पत्रिका पढ़ने में एक घंटे से अधिक का समय देते हैं। इसी तरह कुल प्रतिवादियों में रेडियो के कार्यक्रम सुनने वालों में, सर्वाधिक 56 (44.44 प्रतिशत) प्रतिवादी प्रतिदिन रेडियो के कार्यक्रम सुनने में आधे से एक घंटे का समय देते हैं । इसी तरह कुल प्रतिवादियों में दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने वाले प्रतिवादियों में सर्वाधिक 94 (74.60 प्रतिशत) प्रतिवादी दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने में 1 घंटे से अधिक का समय देते है । इस तरह स्पष्ट है कि जहाँ समाचार पत्र पढ़ने वाले सर्वाधिक प्रतिवादी, बहुत कम 0-15 मिनट का समय, पत्रिका पढ़ने वाले सर्वाधिक प्रतिवादी 1 घंटा से अधिक का समय, रेडियो सुनने वाले सर्वाधिक प्रतिवादी 30 मिनट से 1 घंटे का समय तथा दूरदर्शन देखने वाले सर्वाधिक प्रतिवादी 1 घंटे से अधिक का समय कार्यक्रम देखने में व्यय करते हैं ।

अब नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों के जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात की जनांकिकी स्थिति का विश्लेषण किया जायेगा ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात उत्पन्न की गई संतानों का विवरण निम्न सारणी संख्या 5-20 में दिखाया गया है :-

सारिणी संख्या 5.20

जनमाध्यमों से प्रभावित होनें के पश्चात प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न की गयी सन्तानों का विवरण

उत्पन्न संतानों की संख्या	प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत
1	27	58.70%
2	14	30.43%
3	3	6.52%
4	1	2.17%
5	1	2.17%
6		
7		
8		
	46	99.99 या 100%

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों के पश्चात उत्पन्न की गयी संतानों का विवरण प्रस्तुत करती है । सारणी के विवरणानुसार 27 (58.70 प्रतिशत), 14 (30.43 प्रतिशत), 3 (6.52 प्रतिशत), 1 (2.17 प्रतिशत) तथा 1 (2.17 प्रतिशत) प्रतिवादियों नें क्रमशः एक, दो, तीन, चार, एवं पांच संतान उत्पन्न की है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक आधे से अधिक प्रतिवादियों द्वारा मात्र एक संतान उत्पन्न की गयी है । जब कि लगभग एक तिहाई प्रतिवादियों द्वारा मात्र 2 संतान उत्पन्न की गयी है । तीन, चार, एवं पांच संतान उत्पन्न करने वाले प्रतिवादयों की संख्या नगण्य है । औसत संतान उत्पत्ति प्रति प्रतिवादी 1.586 संतान है ।

नगरीय क्षेत्र केप्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों सें प्रभावित होंनें कें पश्चात् दो संतानों की उत्पति के मध्य रखें जानें वालें समयांतराल कों निम्न सारणी 5.21 में दिखाया गया है ।

सारणी संख्या 5.21

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों सें प्रभावित होंनें कें पश्चात, दों संतानों की उत्पत्ति कें मध्य रखा गया समयांतराल

संतानोंत्पत्ति अंतराल (वर्ष में)	प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न संतान	प्रतिशत
1	26	19.12
2	52	38.24
3	45	33.09
4	8	5.88
5	5	3.67
योंग	136	100

यह सारणी नगरीय क्षेत्र कें प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों सें प्रभावित होंनें कें पश्चात, प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न की गयी, संतानों में दों संतानों कें मध्य रखें गयें समयांतराल कों दर्शाती है । सारणी कें विवरणानुसार 26(19.12 प्रतिशत), 52 (38.24 प्रतिशत), 45 (33.09 प्रतिशत), 8 (5.88प्रतिशत), एवं 5 (3 .67 प्रतिशत) प्रतिवादियों नें दों संतानों की उत्पत्ति कें मध्य रखा गया समयांतराल क्रमशः एक, दों, तीन, चार एवं पांच वर्ष का है ।

सारणी सें स्पष्ट हैं कि सर्वाधिक एक तिहाई सें अधिक प्रतिवादियों नें दों संतानों की उत्पत्ति कें मध्य दों वर्ष का तथा लगभग एक तिहाई प्रतिवादियों नें दों संतानों की

उत्पत्ति के मध्य तीन वर्ष का समयांतराल रखा है । प्रतिवादियों द्वारा दो संतानों की उत्पति के मध्य रखा गया औसत संतनोत्पत्ति अंतराल 1.943 वर्ष है ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों के लड़को एवं लड़कियों की विवाह के समय की आयु का विश्लेषण निम्न है :-

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात अपने मात्र दो लड़कों तथा पांच लड़कियों का विवाह किया है। दो लड़कों का विवाह उनकी क्रमशः 21 एवं 23 वर्ष की आयु में किया गया है । इस तरह प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात अपने लड़कों का विवाह उनकी औसत 22 वर्ष की आयु में किया है । इसी तरह प्रतिवादियों ने अपनी 2 लड़कियों का विवाह उनकी 18 वर्ष की आयु में तथा 3 लड़कियों का विवाह उनकी 19 वर्ष की आयु में किया है। इस तरह प्रतिवादियों ने अपनी लड़कियों का विवाह, उनकी औसत आयु 18.60 वर्ष में किया ।

स्पष्ट है कि प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात लड़कों एवं लड़कियों का विवाह उनकी औसत क्रमशः 22 एवं 18.6 वर्ष की आयु में किया।

अब नगरीय क्षेत्र में प्रतिवादियों के जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात विभिन्न जंनाकिकी चरों पर उनके वर्तमान समय के विचारों, के अनुसार एक परिवार में उपयुक्त संतानों की संख्या (परिवार आकार) का विश्लेषण निम्न सारणी 5.22 में किया गया है :-

सारणी संख्या 5.22

<u>प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में उपयुक्त परिवार आकर</u>

संतान संख्या	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		योग प्रतिवादी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	40	31.75	-	-	40	31.75
2	55	43.65	-	-	55	43.65
3	14	11.11	3	2.38	17	13.49
4	11	8.73	-	-	11	8.73
5	3	2.38	-	-	3	2.38
योग	123	97.62	3	2.38	126	100

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में उपयुक्त परिवार आकार का विवरण प्रस्तुत करती है। सारणी के विवरणानुसार कुल प्रतिवादियों में 40 (31.75 प्रतिशत), 55 (43.65 प्रतिशत), 17 (13.49 प्रतिशत), 11 (8.73 प्रतिशत), एवं 3 (2.38 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः एक, दो, तीन, चार एवं पांच संतान के आकार वाला परिवार आकार उपयुक्त मानते हैं । सारणी से स्पष्ट है कि जो प्रतिवादी जनमाध्यमों से प्रभावित नहीं हुये थे, उनकी दृष्टि में वर्तमान समय में प्रति परिवार में 3 संतान का होना उपयुक्त है ।

सारणी सें स्पष्ट हैं कि एक तिहाई सें अधिक प्रतिवादी वर्तमान समय में एक परिवार में दों संतानों का होंना उपयुक्त मानतें हैं जबकि लगभग एक तिहाई प्रतिवादी एक संतान का प्रति परिवार में होंना उपयुक्त मानतें हैं । जनमाध्यमों सें प्रभावित होंनें वालें प्रतिवादियों की औसत प्रतिवादी की दृष्टि में वर्तमान समय में औसत 2.040 संतान का होंना उपयुक्त है । जब कि जनमाध्यमों सें जों प्रतिवादी प्रभावित नहीं हुयें हैं उनकी दृष्टि में औसत 3 संतान प्रति परिवार में होंना उपयुक्त है । कुल प्रतिवादियों पर दृष्टि डालनें सें स्पष्ट है कि उनकी दृष्टि में औसत 2.063 संतान प्रति परिवार में होंना उपयुक्त है ।

नगरीय क्षेत्र कें प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में, विवाह कें पश्चात एवं प्रथम संतान उत्पत्ति कें मध्य, रखें जानें वालें समय अंतराल पर, उनकें विचारों का विश्लेषण निम्न सारणी 5.23 सें किया गया है :-

सारणी संख्या 5.23

प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में विवाह कें पश्चात् एवं प्रथम संतान की उत्पत्ति कें मध्य रखें जानें वाला उपयुक्त समयांतराल.

समय अंतराल	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		योग प्रतिशत	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1 वर्ष	58	46.03	2	1.59	60.	47.62
2 वर्ष	27	21.43	1	0.79	28	22.22
3 वर्ष	38	30.16	-	-	38	30.16
योग	123	97.62	3	2.38	126	100.00

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में विवाह के पश्चात, प्रथम संतान की उत्पत्ति के मध्य रखे जाने वाले उपयुक्त समयांतराल का विवरण देती है । सारणी के विवरणानुसार कुल प्रतिवादियों में 60 (47.62 प्रतिशत), 28 (22.22 प्रतिशत), 38(30.16 प्रतिशत), प्रतिवादी यह मानते हैं कि विवाह एवं प्रथम संतान उत्पति के मध्य क्रमशः एक, दो, एवं तीन, वर्ष का समय का अंतर होना चाहिए। सारणी से स्पष्ट है कि जो प्रतिवादी जनमाध्यमों से प्रभावित नहीं हुये है उनमें 2 (.1.59 प्रतिशत), 1 (0.79 प्रतिशत), यह मानते हैं कि विवाह एवं प्रथम संतान के उत्पति के मध्य क्रमशः एक एवं दो वर्ष का समयांतराल होना चाहिए।

सारणी से स्पष्ट है कि, लगभग आधे प्रतिवादियों की वर्तमान समय की दृष्टि में, विवाह के पश्चात एक वर्ष बाद प्रथम संतान उत्पन्न होनी चाहिए, जब कि लगभग एक तिहाई प्रतिवादियों का मानना है कि विवाह के तीन वर्ष पश्चात प्रथम संतान उत्पन्न होनी चाहिए । जब कि लगभग एक चौथाई प्रतिवादियों का वर्तमान समय में दृष्टि कोण यह है कि विवाह के पश्चात प्रथम संतान दो वर्ष के बाद उत्पन्न होनी चाहिए । सारणी के विवरणानुसार गणना करने से स्पष्ट है कि जो प्रतिवादी जनमाध्यमों से प्रभावित हुये हैं औसत प्रतिवादी के वर्तमान दृष्टि कोण के अनुसार विवाह के पश्चात प्रथम संतान उत्पति के मध्य समयांतराल 1.837 वर्ष होना चाहिये, जब कि यही समयांतराल जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों की दृष्टि में औसत 1.333 वर्ष है। कुल प्रतिवादियों के वर्तमान दृष्टि कोण में विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतान उत्पति के मध्य औसत 1.825 वर्ष का समय अंतराल रहना चाहिए।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की, वर्तमान दृष्टि में, संतानों में, दो संतानों की उत्पति रखे जाने वाले उपयुक्त समय अंतराल का विश्लेषण निम्न सारणी 5.24 से किया गया है

सारिणी संख्या 5.24

प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में दो संतानों की उत्पति के मध्य उपयुक्त समयांतराल

संतानोत्पति अंतराल (वर्षमें	प्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत	अप्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत	योग प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत
1	26	20.63	1	0.79	27	21.42
2	75	59.52	2	1.59	77	61.11
3	19	15.08	-	-	19	15.08
4	2	1.59	-	-	2	1.59
5	1	0.79	-	-	1	0.79
योग	123	97.61	3	2.38	126	99.99 या 100

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में, वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में, दो संतानों की उत्पत्ति में मध्य रखें जानें वालें समयांतराल का विवरण देती है। सारणी के विवरणानुसार कुल 27 (21.42 प्रतिशत), 77 (61.11 प्रतिशत), 19 (15.08 प्रतिशत), 2 (1.59 प्रतिशत), तथा 1 (0.79 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः एक, दो, तीन, चार एवं पांच वर्ष का समयांतराल दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखना उपयुक्त मानतें हैं । जो प्रतिवादी जनमाध्यमों से प्रभावित नहीं हुए हैं उनमें 1 (0.79 प्रतिशत) 2 (1.59 प्रतिशत

प्रतिवादी इसी के लिये क्रमशः एक एवं दो वर्ष का समयंतराल उचित मानते है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक लगभग दो तिहाई प्रतिवादी दो संतानों की उत्पति के मध्य 2 वर्ष का समयांतराल उपयुक्त मानते है, जब कि लगभग एक चौथाई प्रतिवादी अब भी दो संतानों की उत्पति के मध्य एक वर्ष का समयांतराल उपयुक्त मानते हैं । जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों की दृष्टि में प्रति प्रतिवादी औसत समयांतराल 2 वर्ष उपयुक्त मानते हैं जब कि जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादी इसी के लिये औसत 1.667 वर्ष का समय अंतराल उपयुक्त मानते हैं । कुल प्रतिवादियों की दृष्टि में औसत प्रतिवादी 1.992 वर्ष का समय अंतराल दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य में उपयुक्त मानते हैं ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में लड़कों की विवाह के समय की उपयुक्त विवाह आयु का विश्लेषण निम्न सारणी 5.25 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5.25

प्रतिवादियों की दृष्टि में, वर्तमान समय में लड़कों के विवाह के समय उपयुक्त विवाह आयु

विवाह आयु	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		योग प्रतिवादी.	
(वर्ष में)	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
17	2	1.59	1	0.79	3	2.38
18	17	13.49	2	1.59	19	15.08
19	5	3.97	-	-	5	3.97
20	22	17.46	-	-	22	17.46
21	43	34.13	-	-	43	34.13
22	11	8.73	-	-	11	8.73
23	16	12.70	-	-	16	12.70
26	7	5.55	-	-	7	5.55
योग	123	97.62	3	2.38	126	100.0,

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के, प्रतिवादियों के लड़कों की विवाह के समय की आयु संबधी उनके वर्तमान दृष्टि कोण को प्रस्तुत करती है । सारणी के विवरणानुसार 3 (2.38 प्रतिशत), 19 (15.08 प्रतिशत), 5 (3.97 प्रतिशत), 22 (17.46 प्रतिशत), 43 (34.13 प्रतिशत), 11 (8.73 प्रतिशत), 16 (12.70 प्रतिशत) तथा 7 (5.55 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23 एवं 26 वर्ष की आयु को लड़कों के लिऐ उपयुक्त विवाह आयु मानते है। जनमाध्यमों सें अप्रभावित रहे प्रतिवादियों में 1 (0.79 प्रतिशत), 2 (1.59 प्रतिशत), प्रतिवादी क्रमशः 17 एवं 18 वर्ष की आयु को लड़को हेतु सर्वाधिक उपयुक्त विवाह आयु मानते हैं ।

सारणी से स्पष्ट है, कि सर्वाधिक एक तिहाई से अधिक प्रतिवादी, 21 वर्ष की आयु को लड़को के लिए उपयुक्त विवाह आयु मानते हैं। जब कि अभी एक तिहाई से अधिक प्रतिवादी 17 से 20 वर्ष की विवाह आयु को लड़कों हेतु उपयुक्त मानते हैं जो कि सरकारी विवाह आयु से कम हैं । जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादी औसत विवाह आयु 20.89 वर्ष उपयुक्त मानते हैं, जब कि अप्रभावित प्रतिवादी लड़कों हेतु औसत विवाह आयु 17.67 वर्ष उपयुक्त मानते हैं। कुल प्रतिवादी लड़को हेतु औसत विवाह आयु 20.82 वर्ष उपयुक्त मानते हैं जो कि सरकारी विवाह आयु से लगभग बराबर है ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कियों की विवाह के समय की उपयुक्त विवाह आयु का विश्लेषण निम्न सारणी 5.26 से किया गया है :-

सारिणी संख्या 5.26

प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में लड़कियों की विवाह के समय की उपयुक्त विवाह :

विवाह आयु (वर्ष में)	प्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत	प्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत	योग प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत
16	-	-	1	0.79	1	0.79
17	19	15.08	2	1.59	21	16.67
18	12	9.52	-	-	12	9.52
19	29	23.02	-	-	29	23.02
20	26	20.63	-	-	26	20.63
21	26	20.63	-	-	26	20.63
22	4	3.17	-	-	4	3.17
23	7	5.55	-	-	7	5.55
योग	123	97.60	3	2.38	126	99.98 या 100.00

यह सारणी नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की वर्तमान समय के दृष्टिकोण के अनुसार, लड़कियों की विवाह के समय की उपयुक्त आयु को दर्शाती है । सारणी के विवरणानुसार । (0.79 प्रतिशत), 21 (16.67 प्रतिशत), 12 (9.52 प्रतिशत), 29 (23.02 प्रतिशत), 26 (20.63 प्रतिशत) 26 (20.63 प्रतिशत), 4 (3.17 प्रतिशत), एवं 7 (5.55 प्रतिशत), प्रतिवादी क्रमशः 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, वर्ष की आयु को लड़कियों हेतु उपयुक्त विवाह आयु मानते हैं ।

जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों में । (0.79 प्रतिशत), 2 (1.59 प्रतिशत), प्रतिवादी क्रमशः 16 एवं 17 वर्ष की आयु को लड़कियों के लिए उपयुक्त विवाह आयु मानते हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि, सर्वाधिक लगभग एक चौथाई प्रतिवादी 19 वर्ष की आयु को लड़कियों के विवाह हेतु उपयुक्त विवाह आयु मानते हैं । जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों की दृष्टि में, लड़कियों की औसत उपयुक्त विवाह आयु 19.55 वर्ष है जब कि जनमाध्यमों से उप्रभावित प्रतिवादियों की दृष्टि से लड़कियों की औसत उपयुक्त विवाह आयु 16.67 वर्ष है । कुल प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि से लड़कियों की औसत उपयुक्त विवाह आयु 19.40 वर्ष है ।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की, वर्तमान दृष्टि में परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू कराने में सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम का विश्लेषण निम्न सारणी 5.27 से किया गया है :-

सारिणी संख्या 5.27

प्रतिवादियों की दृष्टि में, परिवार कल्याण कार्यक्रम को लागू कराने में सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम

जनमाध्यम	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		कुल प्रतिवादी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
समाचार पत्र	06	4.76	-	-	6	4.76
पत्रिका	07	5.56	-	-	7	5.56
रेडियो	05	3.97	-	-	5	3.97
दूरदर्शन	102	80.95	1	0.79	103	81.74
दीवार प्रिन्टिंग पोस्टर	01	0.79	-	-	1	0.79
चलचित्र	02	1.59	1	0.79	03	2.38
पारिवारिक लोकगीत एवं नृत्य	-	-	1	0.79	1	0.79
योग	123	97.62	03	2.37	126	99.99 या 100.00

यह सारणी, नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में, वर्तमान समय में परिवार कल्याण कार्यक्रम को प्रभावी बनाने में, सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम को दर्शाती है । सारणी के विवरणानुसार 6(4.76 प्रतिशत), 7 (5.56 प्रतिशत), 5 (3.97 प्रतिशत), 103 (81.74

प्रतिशत), । (0.79 प्रतिशत,) 3 (2.38 प्रतिशत) एवं । (0.79 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः समाचार पत्र, पत्रिका, रेडियों, दूरदर्शन, दीवार प्रिन्टिंग पोस्टर, चलचित्र तथा पारंपरिक लोक गीत एवं नृत्य को सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम मानते हैं। जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों में । (0.79 प्रतिशत), । (0.79 प्रतिशत । (0.79 प्रतिशत), प्रतिवादी क्रमशः दूरदर्शन, चल चित्र एवं पारंपरिक लोक गीत एवं नृत्य को वर्तमान समय में परिवार कल्याण कार्यक्रम को लागू कराने में प्रभावी जनमाध्यम मानते हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक तीन चौथाई से अधिक प्रतिवादी वर्तमान समय में परिवार कल्याण कार्यक्रम को लागू कराने में दूरदर्शन को सबसे प्रभावी जनमाध्यम मानते है ।

5.2- नगरीय क्षेत्र: परिवार आकार निर्धारण में जनमाध्यमों की भूमिका :- (Urban Area: The role of Mass-Media in family size determination)

जनपद के सर्वेक्षण के अन्तर्गत, इसके पूर्व हमने जो नगरीय क्षेत्र के सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्षों का विश्लेषण किया, उससें यह स्पष्ट हो गया कि परिवार आकार निर्धारण में जनमाध्मयों की महत्वपूर्ण एवं धनात्मक प्रभाव की भूमिका रही है। नगरीय क्षेत्र के निष्कर्षों कें विश्लेषण सें यह स्पष्ट हो गया कि जनमाध्यमों द्वारा लोगों को प्रभावित करने के परिणाम स्वरूप लोगों के न केवल परिवार आकार को छोटा रखने संबंधी विचारों में परिवर्तन आया है बल्कि अधिकांश प्रतिवादियों ने प्रेरित होकर छोटा परिवार आकार रखने हेतु कम संतानोत्पति भी की।

नगरीय क्षेत्र के विश्लेषण में यह स्पष्ट हो गया कि परिवार आकार को छोटा रखने में जनमाध्यमों ने ही लोगों को प्रभावित किया। अधिकांश 97.62 प्रतिशत प्रतिवादी, जनमाध्यमों द्वारा छोटा परिवार आकार रखने हेतु प्रभावित हुये। संतानोत्पति पर दृष्टि डालने पर स्पष्ट है कि प्रभावित हुये प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व जहां औसत 3.344 संतान उत्पन्न की वही जनमाध्यमों के प्रभाव के पश्चात् मात्र 1.586 संतान उत्पन्न की, जो बहुत ही बड़ी उपलब्धि रही है । इसके साथ ही वर्तमान समय में इन्हीं प्रतिवादियों

के विचारों के अनुसार प्रति परिवार में औसत 2·040 संतान होनी चाहिए । विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखे जाने वाली समयांतराल प्रभावित प्रतिवादियों का जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व औसत 1·189 वर्ष था, वहीं जनमाध्यमों के प्रभाव के पश्चात वर्तमान समय में उनका इसी समयांतराल पर विचार औसत 1·837 वर्ष का है । इससे स्पष्ट है कि अब प्रतिवादी शादी के बाद प्रथम संतान पहले से कहीं अधिक देर से चाहते हैं । इसी तरह प्रभावित होने के पूर्व प्रतिवादियों ने दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखा गया समयांतराल का औसत 1·640 वर्ष रहा वहीं जनमाध्यमों के प्रभाव के पश्चात बढ़कर यह समय अंतराल 1·943 वर्ष हो गया तथा वर्तमान समय में प्रतिवादी दो संतानों के मध्य 2 वर्ष का समय अंतराल रखना चाहते हैं जो कि छोटा परिवार आकार रखने में सहायक होगा । प्रभावित प्रतिवादियों द्वारा जहां जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व अपने लड़कों एवं लड़कियों का विवाह उनकी औसत क्रमशः 20·09 तथा 17·98 वर्ष की आयु में किया था वहीं जनमाध्यमों के प्रभाव के पश्चात उनके लड़के एवं लड़कियों का विवाह क्रमशः औसत 22 तथा 18·60 वर्ष की आयु में हुआ, जबकि वर्तमान समय में उनके विचारों के अनुसार लड़कों एवं लड़कियों की उपयुक्त विवाह आयु क्रमशः 20·89 तथा 19·55 वर्ष है ।

किन्तु जब हम जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों पर दृष्टि डालते हैं तो स्पष्ट है कि अप्रभावित रहे प्रतिवादियों द्वारा जहां पहले औसत 3·333 संतान उत्पत्ति की वहीं वर्तमान समय में उनका औसत संतान पर विचार 3 संतान का है जो कि पहले के लगभग बराबर है । अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा जहां विवाह एवं प्रथम संतान के मध्य औसत 1·333 वर्ष समय अंतराल रखा था वह उनके विचारों में अभी औसत 1·333 वर्ष है । दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत समयांतराल पहले 1·700 था वह अब उनके विचारों में 1·667 वर्ष है । अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा अपने लड़कों एवं लड़कियों का कोई विवाह नहीं किया गया है । किन्तु उनका वर्तमान समय में लड़कों एवं लड़कियों हेतु उपयुक्त

विवाह आयु का औसत क्रमशः 17.67 एवं 16.67 वर्ष है जो कि सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु से काफी कम है। स्पष्ट है कि जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादी अभी अधिक संतानोत्पत्ति, जल्दी - जल्दी संतानोत्पत्ति एवं शीघ्र विवाह पर विश्वास रखते हैं तथा उनके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

जब हम नगरीय क्षेत्र के कुल प्रतिवादियों के परिवार आकार निर्धारण में जनमाध्यमों की भूमिका का विश्लेषण करते हैं तो स्पष्ट है कि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व अनके द्वारा औसत 3.591 संतान उत्पन्न की गयी जब कि प्रभावित होने के पश्चात उनके द्वारा औसत 1.586 संतान उत्पति की गयी तथा वर्तमान समय में औसत उनकी दृष्टि में उपयुक्त परिवार आकार में औसत 2.063 संतान होनी चाहिए । इसी तरह विवाह के पश्चात प्रथम संतान उत्पति के मध्य पहले रखा गया समयांतराल 1.194 वर्ष था जबकि वर्तमान समय में उनके विचारों में 1.825 वर्ष है। दो संतानो की उत्पति के मध्य पहले औसत अंतराल 1.643 वर्ष था जो कि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात 1.943 वर्ष हुआ तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में दो संतानों के मध्य उपयुक्त औसत समयांतराल 1.992 वर्ष है । जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व उनके द्वारा लड़को एवं लड़कियों का विवाह आयु क्रमशः 20.09 एवं 17.98 वर्ष में किया वहीं प्रभावित होने के पश्चात औसत विवाह क्रमशः 22 तथा 18.60 वर्ष में किया जब कि वर्तमान समय में उनके विचारों में लड़को एवं लड़कियों की उपयुक्त विवाह आयु क्रमशः 20.82 तथा 19.48 वर्ष है । इस तरह कुल प्रतिवादियों के परिवार आकार छोटा रखने के लिये प्रेरित करने एवं विचारों में परिवर्तन हेतु जनमाध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है ।

इस तरह जनमाध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण ही परिवार आकार छोटा रखने हेतु नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों ने जहां संतानों की संख्या में कमी, संतानोत्पत्ति अंतराल एवं विवाह आयु में वृद्धि की वहीं उनके विचारों में परिवर्तन भी इसी दिशा में हुआ । इस तरह परिवार आकार छोटा रखने में जनमाध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी ।

5·3 - ग्रामीण क्षेत्र के सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्ष (The findings of the survey of Rural Area)

ग्रामीण क्षेत्र के कुल 494 प्रतिवादियों में से मात्र 133 प्रतिवादी (26·92 प्रतिशत) ऐसे हैं जो जनमाध्यमों से प्रभावित नहीं हुये हैं । इस तरह 361 (73·08) प्रतिशत प्रतिवादी ऐसे हैं, जो विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित हुये हैं ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादी जो छोटा परिवार आकार रखने हेतु विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित हुये प्रतिवादियों का विश्लेषण निम्न सारणी 5·28 में किया गया है:-

सारणी संख्या 5·28

प्रतिवादियों को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले जनमाध्यम का विवरण

प्रभावी जनमाध्यम	प्रभावित प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
समाचार पत्र	11	3·05
पत्रिकाएं	2	0·55
रेडियों	211	58·45
दूरदर्शन	82	22·71
दीवार प्रिंटिंग, पोस्टर	-	-
चलचित्र	3	0·83
पारम्परिक लोकगीत एवं नृत्य	2	0·55
परिवार कल्याण केन्द्र	1	0·28
मित्र	49	13·57
योग	361	99·99 या 100

सारणी के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों में से 11 §3·05 प्रतिशत§ 2 §0·55 प्रतिशत§, 211 §58·45 प्रतिशत§, 82 §22·71 प्रतिशत§, 3§0·83 प्रतिशत§, 2§0·55 प्रतिशत§, 1§0·28 प्रतिशत§ एवं 49§13·57 प्रतिशत§ प्रतिवादी क्रमशः समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन, दीवार प्रिंटिंग पोस्टर, चलचित्र, पारम्परिक लोक गीत एवं नृत्य, परिवार कल्याण केन्द्र एवं मित्र जनमाध्यमों से प्रभावित हुये ।

सारणी से यह भी स्पष्ट है कि दो चौथाई से अधिक प्रतिवादी रेडियो जनमाध्यम से, एवं लगभग एक चौथाई प्रतिवादी दूरदर्शन जनमाध्यम से प्रभावित हुये । प्रतिवादियों को प्रभावित करने में तृतीय स्थान मित्रों का रहा जिससे 13·57 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुये । सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम रेडियो रहा जबकि सरकारी परिवार कल्याण केन्द्र की प्रभावित करने में भूमिका नगण्य रही एवं दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर से कोई भी प्रतिवादी प्रभावित न हुआ ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों जो विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित हुये, प्रभावित होने के समय उनकी आयु को विभिन्न आयु अन्तराल के अन्तर्गत निम्न सारणी 5·29 में दिखाया गया है :-

सारणी संख्या 5·29

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के समय की आयु के अनुसार प्रतिवादियों का वितरण

आयु अन्तराल §वर्ष में§	प्रभावित प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
15-20	96	26·59%
20-25	120	33·24%
25-30	112	31·02%
30-35	24	6·64%
35-40	5	1·39%
40 तथा ऊपर	4	1·11%
योग	361	99·99 या 100%

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की उनकी आयु अन्तराल के अनुसार जनमाध्यमों से प्रभावित होने का विवरण देती है । सारणी के विवरणानुसार 96 (26·59 प्रतिशत), 120 (33·24 प्रतिशत), 112 (31·02 प्रतिशत), 24 (6·64 प्रतिशत), 5 (1·39 प्रतिशत) तथा 4(1·11 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 15-20, 20-25, 25-30, 30-35, 35-40, 40 से ऊपर की आयु अंतराल में जनमाध्यमों से प्रभावित हुये ।

सारणी से स्पष्ट है कि एक तिहाई प्रतिवादी 20-25 आयु वर्षो में तथा लगभग एक तिहाई 25-30 आयु वर्ष अन्तराल में, एवं लगभग एक चौथाई प्रतिवादी 15-20 वर्ष आयु अंतराल में प्रभावित हुये । सबसे कम 4(1·11 प्रतिशत) प्रतिवादी 40एवं उससेअधिक कीआयु अंतराल वाले हैं । इस तरह ग्रामीण क्षेत्र में जनमाध्यमों से प्रभावित होने वाले प्रतिवादियों में अधिकांशतः युवा वर्ग के हैं ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादी जो विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित हुये हैं, उनकी प्रभावित होने की गणना कैलेण्डर वर्षो में निम्न सारणी 5·30 से प्रतिवादियों के विभिन्न कैलेण्डर वर्षो में प्रभावित होने की स्थिति को दिखाया गया है :-

सारणी संख्या 5·30

विभिन्नवर्षो में जनमाध्यमों से प्रभावित हुये प्रतिवादियों का विवरण

कैलेण्डर वर्ष	प्रभावित प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1950-55	2	0·55 %
1955-60	13	3·60%
1960-65	29	8·03%
1965-70	32	8·86%
1970-75	52	14·40%
1975-80	90	24·93%
1980-85	30	8·31%
1985-90	74	20·50%
1990 से अब तक	39	10·80%
योग	361	99·98 या 100%

यह सारणी जनमाध्यमों से विभिन्न कैलेंडर वर्षो में ग्रामीण क्षेत्र के प्रभावित होने वाले प्रतिवादियों का विवरण देती है । सारणी के विवरणानुसार 2 (0·55 प्रतिशत), 13 (3·60 प्रतिशत), 29 (8·03 प्रतिशत), 32 (8·86 प्रतिशत), 52 (14·40 प्रतिशत), 90 (24·93 प्रतिशत), 30 (8·31 प्रतिशत), 74 (20·50 प्रतिशत) एवं 39 (10·80 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 1950-55 1955-60, 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 के बाद के वर्षो में प्रभावित हुये ।

सारणी से स्पष्ट है कि लगभग एक चौथाई प्रतिवादी 1975-80 में प्रभावित हुये जबकि एक तिहाई से अधिक प्रतिवादी 1980 से लेकर अब तक की समयावधि में प्रभावित हुये ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादी भिन्न-भिन्न जनमाध्यमों से किन-किन कैलेन्डर वर्षो में प्रभावित हुए इसका विश्लेषण निम्न सारणी 5·31 में दिया गया है :-

सारणी संख्या - 5·31

विभिन्न वर्षों में विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित होने वाले प्रतिवादियों का विवरण

कैलेण्डर वर्ष	समाचार पत्र		पत्रिका		रेडियो		दूरदर्शन		चलचित्र		पारंपरिक, लोकगीत एवं नृत्य		परिवार कल्याण केन्द्र		मित्र		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
1950-55					2	0·56											2	0·56
1955-60					8	2·22									5	1·38	13	3·60
1960-65					27	7·48									2	0·55	29	8·03
1965-70					25	6·93									7	1·93	32	8·86
1970-75					43	11·91									9	2·49	52	14·40
1975-80	5	1·38			80	22·16									5	1·39	90	24·93
1980-85	6	1·66	2	0·56			10	2·77	3	0·83					9	2·49	30	8·31
1985-90					14	3·88	46	12·74			2	0·56	1	0·28	11	3·04	74	20·50
1990 से अब तक					12	3·32	26	7·20							1	0·28	39	10·80
योग	11	3·04	2	0·56	211	58·46	82	22·71	3	0·83	2	0·56	1	0·28	49	13·55	361	99·99 या 100

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की विभिन्न जनमाध्यमों की विभिन्न कैलेन्डर वर्षों में प्रभाविकता को दर्शाती है । सारणी के विवरणानुसार 5 (1·38 प्रतिशत), 6 (1·66 प्रतिशत), प्रतिवादी क्रमशः 1975-80, 1980-85 में समाचार पत्रों द्वारा प्रभावित हुए । 2 (0·56 प्रतिशत) प्रतिवादी 1980-85 में पत्रिकाओं से प्रभावित हुए । 2 (0·56 प्रतिशत), 8 (2·22 प्रतिशत), 27 (7·48 प्रतिशत), 25 (6·93 प्रतिशत), 43 (11·91 प्रतिशत), 80 (22·16 प्रतिशत), 14 (3·88 प्रतिशत), एवं 12 (3·32 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 1950-55, 1955-60, 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, , 1985-90 एवं 1990 से अब तक रेडियो जनमाध्यम से प्रभावित हुए । 10 (2·77 प्रतिशत), 46 (12·74 प्रतिशत), 26 (7·20 प्रतिशत), प्रतिवादी क्रमशः 1980-85, 1985-90, 1990 से अब तक दूरदर्शन से प्रभावित हुए । 3 (0·83 प्रतिशत) प्रतिवादी चलचित्र से 1980-85 में प्रभावित हुए। 2 (0·56 प्रतिशत) प्रतिवादी 1985-90 में पारम्परिक लोकगीत एवं नृत्य से प्रभावित हुए । 1 (0·28 प्रतिशत) प्रतिवादी 1985-90 में परिवार कल्याण केन्द्र से प्रभावित हुये । 5 (1·38 प्रतिशत), 2 (0·55 प्रतिशत), 7 (1·93 प्रतिशत), 9 (2·49 प्रतिशत), 5 (1·39 प्रतिशत), 9 (2·49 प्रतिशत), 11 (3·04 प्रतिशत) एवं 1 (0·28 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 1955-60, 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक प्रभावित हुये ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक प्रभावी जन माध्यम रेडियो रहा जिससे लगभग आधे प्रतिवादी वर्ष 1960 से 1980 के मध्य प्रभावित हुये । द्वितीय प्रभावी जनमाध्यम दूरदर्शन रहा जिससे सर्वाधिक 19·94 प्रतिशत प्रतिवादी वर्ष 1985 से अब तक प्रभावित हुये ।

अब ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व या जनमाध्यमों से अप्रभावित अवस्था का अध्ययन किया जायेगा । इसके अन्तर्गत जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों को प्रभावित होने के पूर्व की स्थिति तथा जो प्रतिवादी जनमाध्यमों से प्रभावित नहीं हुए हैं अर्थात् अप्रभावित प्रतिवादियों की स्थिति का अध्ययन किया गया है । चूंकि दोनों तरह के प्रतिवादियों पर इस अवस्था में जनमाध्यमों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है अतः इसका अध्ययन हमने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व तथा अप्रभावित अवस्था के द्वारा किया है ।

प्रभावित प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यम से प्रभाव के पूर्व तथा अप्रभावित रहे प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न की गयी संतानों का विवरण निम्न सारणी 5·32 से स्पष्ट है :-

सारणी संख्या 5·32

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित स्थिति में उत्पन्न की गयी संतानों का विवरण

उत्पन्न संतान संख्या	प्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत	अप्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत	कुल प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत
1	20	4·40	-	-	20·	4·40
2	76	16·74	10	2·20	86	18·94
3	83	18·28	20	4·41	103	22·69
4	68	14·98	24	5·29	92	20·27
5	35	7·71	30	6·61	65	14·32
6	33	7·27	9	1·98	42	9·25
7	8	1·76	10	2·20	18	3·96
8	2	·44	8	1·76	10	2·20
9	2	·44	11	2·42	13	2·86
10	1	·22	1	·22	2	·44
11	1	·22	-	-	1	·22
12	-	-	1	·22	1	·22
13	1	·22	-	-	1	·22
योग	330	72·68	124	27·31	454	99·99 या 100%

सारणी के विवरणानुसार जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों में से 330 प्रतिवादी ऐसे हैं जिन्होंने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व संतानोत्पत्ति की तथा जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों में से 124 प्रतिवादी ऐसे है जिन्होंने सन्तानोत्पत्ति की । इस तरह स्पष्ट है कि प्रभावित प्रतिवादियों तथा अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से अप्रभावित अवस्था में कुल प्रतिवादियों में 454 प्रतिवादियों ने संतानोत्पत्ति की । जनमाध्यमों से अप्रभावित अवस्था में 20 (4·40 प्रतिशत), 86 (18·94 प्रतिशत), 103 (22·69 प्रतिशत), 92 (20 27 प्रतिशत), 65 (14·32 प्रतिशत), 42 (9·25 प्रतिशत), 18 (3·96 प्रतिशत), 10 (2·20 प्रतिशत), 13 (2·86 प्रतिशत), 2 (·44 पतिशत), 1 (·22 प्रतिशत), 1 (·22 प्रतिशत) तथा 1 (·22 प्रतिशत) प्रतिवादियों ने क्रमशः एक, दो, तीन. चार, पांच , छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, वारह एवं तेरह संतान उत्पन्न की ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 57·28 प्रतिशत या आधे से अधिक प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में 3 से लेकर 5 संतान उत्पन्न की । प्रभावित प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व औसत 3·606 संतान उत्पन्न की, जबकि जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों ने 5·121 संतान उत्पन्न की । इस तरह बगैर जनमाध्यमों से प्रभावित हुए अप्रभावित अवस्था में संतानोत्पत्ति करने वाले प्रतिवादियों ने औसत 4·019 संतान उत्पन्न की ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व अप्रभावित अवस्था में विवाह के पश्चात् एवं प्रथम संतान के मध्य रखे गये समय अंतराल का विश्लेषण निम्न सारणी 5·33 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5·33

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में विवाह के पश्चात् प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखे गये समय अंतराल का विवरण

समय अंतराल वर्ष में	प्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रभावित प्रतिवादी प्रतिशत	अप्रभावित प्रतिवादी संख्या	अप्रभावित प्रतिवादी प्रतिशत	योग प्रतिवादी संख्या	योग प्रतिवादी प्रतिशत
1	219	48·24	110	24·23	329	72·47
2	86	18·94	7	1·54	93	20·48
3	21	4·63	7	1·54	28	6·17
4	3	·66	-	-	3	·66
5	1	·22	-	-	1	·22
योग	330	72·69	124	27·31	454	100

सारणी के विवरणानुसार जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में 329 (72·47 प्रतिशत), 93 (20·48 प्रतिशत), 28 (6·17 प्रतिशत), 3 (·66 प्रतिशत) एवं 1 (·22 प्रतिशत) प्रतिवादियों ने विवाह के पश्चात क्रमशः एक, दो, तीन, चार एवं पांच वर्षो में अपनी प्रथम संतान की उत्पत्ति की ।

सारणी से स्पष्ट है कि लगभग तीन चौथाई प्रतिवादियों ने विवाह के पश्चात बहुत ही शीघ्र 1 वर्ष बाद संतानोत्पत्ति की । जनमाध्यमों से प्रभावित रहे प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व, विवाह एवं प्रथम संतान के मध्य औसत 1·427 वर्ष का समय अन्तराल रखा जबकि इसी के लिए अप्रभावित प्रतिवादियों ने 1·169 वर्ष का समय अंतराल रखा । अप्रभावित अवस्था में संतानोत्पत्ति करने वाले कुल प्रतिवादियों ने विवाह एवं प्रथम संतान के मध्य औसत 1·357 वर्ष का समय अंतराल रखा जो कि तीव्र संतानोत्पत्ति का द्योतक रहा ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे गये समय अंतराल को निम्न सारणी 5·34 से दिखाया गया है :-

सारणी संख्या 5·34

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे गये समय अंतराल का विवरण

समय अंतराल	प्रभावित प्रतिवादी द्वारा उत्पन्न संतान		अप्रभावित प्रतिवादी द्वारा उत्पन्न संतान		संतान योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	480	35·01	298	21·74	778	56·75
2	273	19·91	155	11·31	428	31·22
3	71	5·18	52	3·79	123	8·97
4	31	2·26	6	·44	37	2·70
5	4	·29	-	-	4	·29
6	1	·07	-	-	1	·07
योग	860	62·72	511	37·28	1371	100

सारणी के विवरणानुसार जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में 778 (56·75 प्रतिशत), 428 (31·22 प्रतिशत), 123 (8·97 प्रतिशत), 37 (2·70 प्रतिशत), 4 (·29 प्रतिशत) एवं 1 (·07 प्रतिशन) संतानें क्रमशः एक, दो, तीन, चार, पाँच एवं छः वर्ष की समयावधि के अंतराल में उत्पन्न की गयी सर्वाधिक 56·75 प्रतिशत या आधे से अधिक संतानों की उत्पत्ति प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व या अप्रभावित अवस्था में 1 वर्ष के अन्तराल पर संतानोत्पत्ति की । जो कि तीव्र संतानोत्पत्ति का द्योतक है । प्रभावित प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व दो संतानों के मध्य औसत 1·615 वर्ष का अन्तर रखा, जबकि अप्रभावित प्रतिवादियों ने इसी के लिए औसत 1·542 वर्ष का समय अन्तराल रखा । जनमाध्यमों से अप्रभावित रहते हुए इस अवधि में संतानोत्पत्ति करने वाले प्रतिवादियों ने औसत दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य 1·588 वर्ष का अन्तर रखा ।

किया । इस तरह जनमाध्यमों से अप्रभावित रहते हुए कुल प्रतिवादियों ने अपने लड़कों का औसत 16·462 वर्ष की आयु में विवाह किया ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में अपने लड़कियों की की गयी विवाह आयु का विश्लेषण निम्न सारणी 5·36 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5·36

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में प्रतिवादियों के लड़कियों की विवाह के समय आयु

विवाह आयु वर्ष में	प्रभावित प्रतिवादियों की लड़कियाँ		अप्रभावित प्रतिवादियों की लड़कियाँ		प्रतिवादियों की लड़कियों का योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
14	8	2·94	74	27·21	82	30·15
15	12	4·41	71	26·10	83	30·51
16	4	1·47	27	9·93	31	11·40
17	-		49	18·01	49	18·01
18	-		27	9·93	27	9·93
योग	24	8·82	248	91·18	272	100

सारणी के विवरणानुसार जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में प्रतिवादियों द्वारा अपनी 82 (30·15 प्रतिशत), 83 (30·51 प्रतिशत), 31 (11·40 प्रतिशत), 49 (18·01 प्रतिशत), 27 (9·93 प्रतिशत) लड़कियों का विवाह क्रमशः 14, 15, 16, 17 एवं 18 वर्ष की आयु में किया है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 60·66 प्रतिशत लड़कियों का विवाह 14 से 15 वर्ष की आयु में किया गया है जो कि सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु से बहुत कम है । जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों ने प्रभावित होने के पूर्व अपनी लड़कियों का विवाह औसत 14·833 वर्ष की आयु में किया है तथा अप्रभावित प्रतिवादियों ने अपनी लड़कियों का विवाह औसत 15·532 वर्ष में किया है । अप्रभावित अवस्था में कुल प्रतिवादियों ने अपनी लड़कियों का विवाह औसत 14·471 वर्ष में किया है जो कि सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु से काफी कम है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व की स्थिति एवं अप्रभावित रहे प्रतिवादियों की स्थिति का अध्ययन करने के पश्चात् प्रतिवादियों की विभिन्न कैलेन्डर वर्षों में जनमाध्यमों की उपलब्धता का विश्लेषण किया गया है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेन्डर वर्षों में समाचार पत्र की उपलब्धता को निम्न सारणी 5·37 द्वारा दर्शाया गया है :-

सारणी संख्या 5·37

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को समाचार पत्र की उपलब्धता का विवरण

कैलेन्डर वर्ष	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1950-55	1	0·20
1955-60	5	1·01
1960-65	8	1·62
1965-70	13	2·63
1970-75	23	4·66
1975-80	35	7·09
1980-85	25	5·06
1985-90	24	4·86
1990 से अब तक	4	·81
कुल उपलब्धता	138	27·94
अनुपलब्धता	356	72·06

यह सारणी विभिन्न कैलेंण्डर वर्षों में प्रतिवादियों को समाचार पत्रों की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 138 (27·94 प्रतिशत) प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध है । कैलेण्डर वर्षों की दृष्टि से देखने पर 1 (0·20 प्रतिशत), 5 (1·01 प्रतिशत), 8 (1·62 प्रतिशत), 13 (2·63 प्रतिशत), 23 (4·66 प्रतिशत), 35 (7·09 प्रतिशत), 25 (5·06 प्रतिशत), 24 (4·86 प्रतिशत) एवं 4 (·81 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1950-55, 1955-60, 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक समाचार पत्र उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि समाचार पत्रों की ग्रामीण प्रतिवादियों को उपलब्धता बहुत ही कम रही है । सर्वाधिक 17·02 प्रतिशत प्रतिवादियों को 1975 से अब तक समाचार पत्र उपलब्ध हुये । अब भी 356 (72·06 प्रतिशत) ग्रामीण प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध नहीं है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेण्डर वर्षों में पत्रिका की उपलब्धता को निम्न सारणी 5·38 द्वारा दर्शाया गया है :-

सारणी संख्या 5·38

विभिन्न वर्षों में पत्रिका की उपलब्धता का विवरण

कैलेंडर वर्ष	प्रतिवादी.	प्रतिशत
1955-60	-	-
1960-65	1	·20
1965-70	-	-
1970-75	13	2·63
1975-80	14	2·83
1980-85	18	3·64
1985-90	14	2·83
1990 से अब तक	2	·40
कुल उपलब्धता	62	12·53
अनुउपलब्धता	432	87·44
योग	494	99·97 या 100

यह सारणी विभिन्न कैलेंडर वर्षों में प्रतिवादियों को पत्रिका की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 62 (12·53 प्रतिशत) प्रतिवादियों को पत्रिकाएं उपलब्ध हैं । कैलेंडर वर्षों की दृष्टि से देखने पर 1 (·20 प्रतिशत), 13 (2·63 प्रतिशत), 14 (2·83 प्रतिशत), 18 (3·64 प्रतिशत), 14 (2·83 प्रतिशत), 2 (·40 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः वर्ष 1960-65, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से लेकर अब तक पत्रिका उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि पत्रिका की ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्धता बहुत ही कम नगण्य है । सर्वाधिक 6·47 प्रतिशत लोगों को वर्ष 1980 से 1990 के मध्य पत्रिका उपलब्ध हुई । अब भी 432 (87·44 प्रतिशत) ग्रामीण प्रतिवादियों को पत्रिकाएं उपलब्ध नहीं है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षो में रेडियो की उपलब्धता को निम्न सारणी 5·39 द्वारा दर्शाया गया है :-

सारणी संख्या 5·39

विभिन्न वर्षो में प्रतिवादियों को रेडियों की उपलब्धता का विवरण

कैलेंडर वर्ष	प्रतिवादी	प्रतिशत
1960-65	8	1·62
1970-75	81	16·40
1975-80	1.75	35·43
1980-85	88	17·81
1985-90	35	7·09
1990 से अब तक	5	1·01
कुल उपलब्धता	392	79·36
अनुपलब्धता	102	20·64
योग	494	100·00

यह सारणी विभिन्न कैलेंडर वर्षो में प्रतिवादियों को रेडियो जनमाध्यम की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 392 (79·36 प्रतिशत), प्रतिवादियों को रेडियों जनमाध्यम उपलब्ध है । जो कि ग्रामीण क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धता है । कैलेंडर वर्षो की दृष्टि से देखने पर 8 (1·62 प्रतिशत),

81 (16·40 प्रतिशत), 175 (35·43 प्रतिशत), 88 (17·81 प्रतिशत), 35 (7·09 प्रतिशत) तथा 5 (1·01 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1960-65, 1970-75, 1975-80, 1980-85 1985-90 एवं 1990 से अब तक रेडियो जनमाध्यम उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक एक तिहाई से अधिक प्रतिवादियों को 1975-80 के मध्य रेडियो जनमाध्यम ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्ध हुआ । लगभग एक चौथाई प्रतिवादियों को 1980-90 के मध्य रेडियो जनमाध्यम उपलब्ध हुआ । रेडियों की लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्धता एक महान उपलब्धि है । अब भी 102 (20·64 प्रतिशत) ग्रामीण प्रतिवादियों को रेडियो जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षो में दूरदर्शन माध्यम की उपलब्धता को निम्न सारणी 5·40 दारा दर्शाया गया है :-

सारणी संख्या 5·40

विभिन्न वर्षो में दूरदर्शन की उपलब्धता का विवरण

कैलेंडर वर्ष	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1980-85	28	5·67
1985-90	104	21·05
1990 से अब तक	20	4·05
कुल उपलब्धता	152	30·77
अनुपलब्धता	342	69·23
योग	494	100·00

यह सारणी विभिन्न कैलेंडर वर्षों में प्रतिवादियों को दूरदर्शन जनमाध्यम की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 152 (30·77 प्रतिशत) प्रतिवादियों को दूरदर्शन जनमाध्यम उपलब्ध है । कैलेंडर वर्षों की दृष्टि से देखने पर 28 (5·67 प्रतिशत), 104 (21·05 प्रतिशत), 20 (4·05 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक दूरदर्शन जनमाध्यम उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक लगभग एक चौथाई प्रतिवादियों को दूरदर्शन जनमाध्यम 1985-90 से उपलब्ध हुआ । चूंकि दूरदर्शन ट्रांसमीटर को जिले में वर्ष 1984 में लगाया गया । अतः अभी ग्रामीण क्षेत्र में यह उस अनुपात में नहीं उपलब्ध हो पाया है जिस अनुपात में होना चाहिए । अब भी 342 (69·23 प्रतिशत) ग्रामीण प्रतिवादियों को दूरदर्शन जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षों में दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 5·41 द्वारा किया गया है :-

सारणी संख्या 5·41

विभिन्न कैलेंडर वर्षों में प्रतिवादियों को पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिंग की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अन्तराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1965-70	2	·40
1970-75	3	·61
1975-80	14	2·83
1985-90	8	1·62
1990 से अब तक	4	·81
कुल उपलब्धता	31	6·27
अनुउपलब्धता	463	93·72

यह सारणी विभिन्न कैलेंडर वर्षो में प्रतिवादियों को पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिंग की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 31 (6·27 प्रतिशत) प्रतिवादियों को पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिंग जनमाध्यम उपलब्ध है । कैलेंडर वर्षो की दृष्टि से देखने पर 2 (·40 प्रतिशत), 3(0·61 प्रतिशत), 14 (2·83 प्रतिशत), 8 (1·62 प्रतिशत), 4 (0·81 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1985-90 एवं 1990 से लेकर अब तक पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिंग जनमाध्यम उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर जनमाध्यम की उपलब्धता ग्रामीण क्षेत्र में नाममात्र है । सर्वाधिक 4·45 प्रतिशत प्रतिवादियों को यह जनमाध्यम 1975-1990 के मध्य उपलब्ध हुआ । अब भी 4·63 (93·72 प्रतिशत) ग्रामीण प्रतिवादियों को पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिंग जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षो में चलचित्र जनमाध्यम की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 5·42 में किया गया है :-

सारणी संख्या 5·42

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को चलचित्र की उपलब्धता का विवरण

,वर्ष अन्तराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1965-70	25	5·06
1970-75	73	14·78
1975-80	102	20·65
1980-85	40	8·10
1985-90	13	2·63
कुल उपलब्धता	253	51·22
नहीं उपलब्धता	241	48·78
योग	494	100·00

यह सारणी विभिन्न कैलेंडर वर्षों में ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को चलचित्र जनमाध्यम की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 253 ﴾51·22 प्रतिशत﴿ प्रतिवादियों को चलचित्र जनमाध्यम उपलब्ध है । कैलेंडर वर्षों की दृष्टि से देखने पर 25 ﴾5·06 प्रतिशत﴿, 73 ﴾14·78 प्रतिशत﴿, 102 ﴾20·65 प्रतिशत﴿, 40 ﴾8·10 प्रतिशत﴿, 13 ﴾2·63 प्रतिशत﴿ प्रतिवादियों को क्रमशः 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 से चलचित्र जनमाध्यम उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 20·65 प्रतिशत प्रतिवादियों को चलचित्र जनमाध्यम 1975-80 से उपलब्ध हुआ । चलचित्र जनमाध्यम ग्रामीण क्षेत्र के 241 (48·78 प्रतिशत) प्रतिवादियों को आज भी उपलब्ध नहीं है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षों में पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य, जनमाध्यम की उपलब्धता निम्न **सारणी** 5·43 से स्पष्ट है :-

सारणी संख्या 5·43

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अंतराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1950-55	21	4·25
1955-60	10	2·02
1960-65	35	7·09
1965-70	30	6·07
1970-75	65	13·16
1975-80	50	10·12
1980-85	15	3·04
1985-90	45	9·11
1990 से अब तक	11	2·23
कुल उपलब्धता	282	57·09
अनुपलब्धता	212	42·91
योग	494	100·00

यह सारणी विभिन्न कैलेंडर वर्षो में ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य जनमाध्यम की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 282 (57·09 प्रतिशत) प्रतिवादियों को पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य उपलब्ध है । कैलेंडर वर्षो की दृष्टि से देखने पर 21 (4·25 प्रतिशत), 10 (2·02 प्रतिशत), 35 (7·09 प्रतिशत), 30 (6·07 प्रतिशत) 65 (13·16 प्रतिशत), 50 (10·12 प्रतिशत), 15 (3·04 प्रतिशत), 45 (9·11 प्रतिशत) तथा 11 (2·23 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1950-55, 1955-60, 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85 1985-90 एवं 1990 से लेकर अब तक पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्ध है। उल्लेखनीय है कि यह माध्यम ग्रामीण क्षेत्र में काफी प्रचलित एवं लोकप्रिय है

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक लगभग एक चौथाई प्रतिवादियों को वर्ष 1970-80 से पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्ध है यह जनमाध्यंम आज भी 212 (42·91 प्रतिशत) ग्रामीण प्रतिवादियों को उपलब्ध नहीं है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षो में परिवार कल्याण केन्द्र की उपलब्धता को निम्न सारणी 5·44 से दिखाया गया है :-

सारणी संख्या 5·44

विभिन्न वर्षो से प्रतिवादियों को परिवार कल्याण केन्द्र की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अंतराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1975-80	4	0·81
1980-85	18	3·64
1985-90	22	4·45
1990 से अब तक	10	2·02
कुल उपलब्धता	54	10·92
अनपुलब्धता	440	89·07
योग	494	99·99 या 100

यह सारणी विभिन्न कैलेंडर वर्षो में ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को परिवार कल्याण केन्द्र की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 54 (10·92 प्रतिशत), प्रतिवादियों को परिवार कल्याण केन्द्र की उपलब्धता है । कैलेंडर वर्षो की दृष्टि से देखने पर 4 (0·81 प्रतिशत), 18 (3·64 प्रतिशत), 22 (4·45 प्रतिशत), 10 (2·02 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक परिवार कल्याण केन्द्र उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में यद्यपि परिवार कल्याण केन्द्र की उपलब्धता नाममात्र प्रतिवादियों को है । सर्वाधिक 6·47 प्रतिशत प्रतिवादियों को परिवार कल्याण केन्द्र 1985 के पश्चात उपलब्ध हुआ । यह जनमाध्यम 440 (89·07 प्रतिशत) प्रतिवादियों को अब भी उपलब्ध नहीं है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को, परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्रों की उपलब्धता निम्न सारणी 5·45 से स्पष्ट है :-

सारणी संख्या 5·45

विभिन्न वर्षो में प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी देने वाले मित्रों की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अंतराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1975-80	2	0·40
1980-85	12	2·43
1985-90	15	3·04
1990 से अब तक	14	2·83
कुल उपलब्धता	43	8·70
अनुपलब्धता	451	91·30
योग	494	100·00

यह सारणी विभिन्न कैलेंडर वर्षों में ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्रों की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 43 (8·70 प्रतिशत) प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्र उपलब्ध है । कैलेंडर वर्षों की दृष्टि से देखने पर 2 (0·40 प्रतिशत), 12 (2·43 प्रतिशत), 15 (3·04 प्रतिशत), 14 (2·83 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से लेकर अब तक परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्र उपलब्ध है । सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 8·30 प्रतिशत प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्रों की उपलब्धता 1980 के पश्चात से है । परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्रों की 451 (91·30 प्रतिशत) प्रतिवादियों को आज भी उपलब्धता नहीं है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा एक दिन में विभिन्न जनमाध्यमों पर दिये गये समय का विश्लेषण निम्न सारणी 5·46 द्वारा किया गया है :-

सारणी संख्या 5·46

एक दिन में प्रतिवादियों द्वारा विभिन्न जनमाध्यमों पर दिये गये समय का विवरण

समय (मिनट एवं घंटों में	समाचार पत्र संख्या प्रतिवादी	प्रतिशत	पत्रिका संख्या प्रतिवादी	प्रतिशत	रेडियोसं0 प्रतिवादी	प्रतिशत	दूरदर्शन संख्या प्रतिवादी	प्रतिशत
0 - 15 मिनट	73	(14·78)	2	(·41)	52	(10·53)	15	(3·04)
15-30	11	(2·23)	10	(2·02)	72	(14·57)	32	(06·48)
30 मिनट से एक घंटा	8	(1·62)	8	(1·62)	163	(33·00)	18	(3·64)
1 घंटा से अधिक	6	(1·21)	5	(1·01)	73	(14·78)	66	(13·36)
योग प्रतिवादी जो प्रतिदिन समय देते हैं	98	(19·84)	25	(5·06)	360	(72·88)	131	(26·52)
प्रतिवादी जो प्रतिदिन समय नहीं देते	40	(8·10)	37	(7·49)	32	(6·48)	21	(4·25)
प्रतिवादियों को विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता	138	(27·94)	62	(12·55)	392	(79·36)	152	(30·77)
प्रतिवादियों की संख्या जिन्हें उक्त जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है	356	(72·06)	432	(87·45)	102	(20·64)	342	(69·23)
योग प्रतिवादी	494	(100·00)	494	(100·00)	494	(100·00)	494	(100·00)

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न प्रतिवादियों द्वारा समाचार पत्र, पत्रिका, रेडियो एवं दूरदर्शन पर एक दिन में दिये गये समय का विश्लेषण करती है । समाचार पत्र पढ़ने वालों में 73 §14·78 प्रतिशत§, 11 §2·23 प्रतिशत§, 8 §1·62 प्रतिशत§, 6 §1·21 प्रतिशत§ प्रतिवादी क्रमशः 0-15 मिनट, 15-30 मिनट, 30 मिनट से एक घंटा एवं 1 घंटे से अधिक का समय देते हैं । इस तरह कुल 98 §19·84 प्रतिशत§ प्रतिवादी समाचार पत्र पढ़ने में प्रतिदिन समय देते हैं जबकि 40 §8·10 प्रतिशत§ को समाचार पत्र उपलब्ध तो है किन्तु वे प्रतिदिन उस पर समय नहीं देते । इसी तरह पत्रिका पढ़ने वालों में 2 §0·41 प्रतिशत§, 10 §2·02 प्रतिशत§, 8 §1·62 प्रतिशत§, 5 §1·01 प्रतिशत§ प्रतिवादी प्रतिदिन क्रमशः 0-15 मिनट,, 15-30 मिनट, 30 मिनट से 1 घंटा तथा 1 घंटा से अधिक का समय देते हैं जबकि 37 §7·49 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को पत्रिका तो उपलब्ध है किन्तु उस पर प्रतिदिन समय नहीं देते । रेडियो के कार्यक्रम सुनने वालों में 52 §10:53 प्रतिशत§, 72 §14·57 प्रतिशत§, 163 §33 प्रतिशत§ एवं 73 §14·78 प्रतिशत§, प्रतिवादी रेडियों के कार्यक्रम सुनने में क्रमशः 0-15 मिनट, 15-30 मिनट, 30 मिनट से 1 घंटा तथा 1 घंटा से अधिक का समय देते हैं । जबकि 32 §6·48 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को रेडियो उपलब्ध तो है परन्तु वे उस पर प्रतिदिन समय नहीं देते । दूरदर्शन देखने वाले प्रतिवादियों में 15 §3·04 प्रतिशत§, 32 §6·48 प्रतिशत§, 18 §3·64 प्रतिशत§, 66 §13·36 प्रतिशत§ प्रतिवादी दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने में क्रमशः 0-15 मिनट, 15-30 मिनट, 30 मिनट से 1 घंटा तथा 1 घंटे से अधिक का समय देते हैं । 21 §4·25 प्रतिशत§ प्रतिबादी ऐसे हैं जो दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने में प्रतिदिन कोई समय नहीं देते ।

सारणी से स्पष्ट है कि समाचार पत्र पढ़ने वालों में सर्वाधिक 73 §14·78 प्रतिशत§ पत्रिका पढ़ने वालों में सर्वाधिक 10 §2·02 प्रतिशत§, रेडियो सुनने वालों में 163 §33 प्रतिशत§ तथा दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने वालों में सर्वाधिक 66 §13·36 प्रतिशत§ प्रतिवादी इन माध्यमों पर क्रमशः 0-15 मिनट, 15-30 मिनट, 30 मिनट से 1 घंटा तथा एक घंटे से अधिक का समय देते हैं ।

अब ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादी जो जनमाध्यमों से परिवार आकार छोटा रखने हेतु प्रभावित हुये हैं का, जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात की स्थिति का अध्ययन किया जायेगा ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात उत्पन्न की गयी संतान का विश्लेषण निम्न सारणी संख्या 5·47 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5·47

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् उत्पन्न की गयी संतानों का विवरण

संतान संख्या	प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत
1	41	17·08
2	63	26·25
3	118	49·17
4	14	5·83
5	3	1·25
6	1	0·42
योग	240	100·00

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् उत्पन्न की गयी संतानों का विवरण प्रस्तुत करती है । सारणी के विवरणानुसार 41 §17·08 प्रतिशत§, 63 §26·25 प्रतिशत§, 118 §49·17 प्रतिशत§, 14 §5·83 प्रतिशत§, 3 §1·25 प्रतिशत§ तथा 1 §0·42 प्रतिशत§ प्रतिवादियों ने क्रमशः एक, दो, तीन, चार, पाँच एवं छः संताने उत्पन्न की ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 118 (49·17 प्रतिशत) या लगभग आधे प्रतिवादियों द्वारा 3 संतानें उत्पन्न की गयी तथा तीन चौथाई से अधिक (75·42 प्रतिशत) प्रतिवादियों द्वारा 2 से 3 संतानें उत्पन्न की गयी । प्रति प्रतिवादी द्वारा जनमाध्यमों के प्रभाव के पश्चात औसत 2·492 संतान उत्पन्न की गयी, जो कि जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व या अप्रभावित अवस्था में उत्पन्न की गयी संख्या से कम है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात दो संतानों की उत्पति के मध्य रखा गया समय अंतराल निम्न सारणी 5·48 से स्पष्ट है :-

सारणी संख्या 5·48

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात दो संतानों की उत्पति के मध्य रखे गये समय अंतराल का विवरण

समय अंतराल	संतान संख्या	प्रतिशत
1	306	45·42
2	199	37·19
3	67	12·52
4	22	4·11
5	4	0·75
योग	598	99·99 या 100 प्रतिशत

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात दो संतानों की उत्पति के मध्य रखे गये समय अंतराल का विवरण प्रस्तुत करती है । सारणी के विवरणानुसार प्रतिवादियों की 306 (45·42 प्रतिशत) 199 (37·19 प्रतिशत), 67 (12·52 प्रतिशत), 22 (4·11 प्रतिशत) एवं 4 (0·75 प्रतिशत) संतानों का जन्म क्रमशः एक, दो, तीन, चार एवं पांच वर्ष के अंतराल पर हुआ ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 45·42 प्रतिशत संतानों का जन्म 1 वर्ष बाद हुआ । दो संतानों के मध्य प्रतिवादियों द्वारा औसत 1·694 वर्ष का समय अंतराल रखा गया ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात अपने लड़कों की गयी विवाह आयु का विश्लेषण निम्न सारणी 5·49 से स्पष्ट है:-

सारणी संख्या, 5·49

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात लड़कों के विवाह के समय की आयु का विवरण

विवाह आयु वर्ष में	प्रतिवादियों के लड़कों की संख्या	प्रतिशत
15	57	17·98
16	45	14·20
17	75	23·66
18	82	25·87
19	32	10·09
20	26	8·20
योग	317	100·00

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात उनके लड़कों के विवाह के समय की आयु का विवरण प्रस्तुत करती है सारणी के विवरणानुसार जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात प्रतिवादियों ने अपने 57 (17·98 प्रतिशत) 45 (14·20 प्रतिशत), 75 (23·66 प्रतिशत), 82 (25·87 प्रतिशत), 32 (10·09 प्रतिशत), 26 (8·20 प्रतिशत) लड़कों का विवाह क्रमशः 15, 16, 17, 18, 19, 20 आयु वर्षों में किया है ।

सारणी से स्पष्ट है कि 49·53 प्रतिशत या लगभग आधे प्रतिवादियों ने अपने लड़कों की शादी 17 से 18 वर्ष की आयु में की है । प्रतिवादियों के लड़कों की विवाह आयु का औसत 17·205 वर्ष है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात लड़कियों के किये गये विवाह के समय की आयु को निम्न सारणी 5·50 द्वारा दिखाया गया है :-

सारणी संख्या 5·50

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात लड़कियों की विवाह के समय आयु का विवरण

विवाह आयु वर्ष में	प्रभावित प्रतिवादियों के लड़कियों की संख्या	प्रतिशत
14	54	16·46
15	51	15·55
16	127	38·72
17	49	14·94
18	47	14·33
योग	328	100·00

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् उनकी लड़कियों के विवाह के समय की आयु का विवरण प्रस्तुत करती है । सारणी के विवरणानुसार जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात प्रतिवादियों ने अपनी 54 (16·46 प्रतिशत), 51 (15·55 प्रतिशत), 127 (38·72 प्रतिशत), 49 (14·94 प्रतिशत) 47 (14·33 प्रतिशत) लड़कियों का विवाह क्रमशः 14, 15, 16, 17, 18 वर्ष में किया है ।

सारणी से स्पष्ट है कि प्रतिवादियों की सर्वाधिक 127 §38·72 प्रतिशत§ लड़कियों का विवाह 16 वर्ष की आयु में किया गया है । प्रतिवादियों की लड़कियों की विवाह आयु का औसत 15·951 वर्ष है ।

प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात की जनांकिकी स्थिति का अध्ययन करने के पश्चात अब ग्रामीण क्षेत्र में जनमाध्यमों से प्रभावित एवं अप्रभावित रहे प्रतिवादियों का विभिन्न जनांकिकी चरों पर उनके वर्तमान दृष्टिकोण का अध्ययन किया जायेगा, जिससे लोगों के विचारों में परिवर्तन में, जनमाध्यमों की भूमिका का विश्लेषण किया जायेगा ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में उपयुक्त परिवार का आकार क्या होना चाहिये, का विश्लेषण निम्न सारणी 5·51 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5·51

प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में उपयुक्त परिवार आकार

संतान संख्या	प्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रभावित प्रतिवादी प्रतिशत	अप्रभावित प्रतिवादी संख्या	अप्रभावित प्रतिवादी प्रतिशत	योग प्रतिवादी संख्या	योग प्रतिवादी प्रतिशत
1	42	8·50	3	0·61	45	9·11
2	46	9·31	5	1·01	51	10·32
3	83	16·80	6	1·21	89	18·01
4	125	25·30	13	2·63	138	27·94
5	38	7·69	61	12·35	99	20·04
6	25	5·06	32	6·48	57	11·54
7	2	·49	13	2·63	15	3·04
योग	361	73·07	133	26·92	494	100·00

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में उपयुक्त परिवार आकार {संतान} पर उनके विचारों का विवरण प्रस्तुत करती है । सारणीकेविवरणानुसार वर्तमान समय में 45 {9·11 प्रतिशत}, 51 {10·32 प्रतिशत}, 89 {18·01 प्रतिशत}, 138 {27·94 प्रतिशत}, 99 {20·04 प्रतिशत}, 57 {11·54 प्रतिशत} तथा 15 {3·04 प्रतिशत} प्रतिवादी क्रमशः एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः एवं सात संतान के परिवार को उपयुक्त मानते हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि अभी एक चौथाई से अधिक प्रतिवादी 4 संतान के परिवार आकार को उपयुक्त मानते हैं । जबकि 47·98% या लगभग आधे प्रतिवादी 4 से 5 संतान के परिवार आकार को उपयुक्त मानते हैं । जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों की दृष्टि से वर्तमान समय में एक परिवार में औसत 3·426 संतान उपयुक्त है जबकि जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों की दृष्टि में एक परिवार में औसत 5·045 संतान उपयुक्त है । कुल प्रतिवादियों का औसत दृष्टिकोण देखने से स्पष्ट है कि एक परिवार में औसत 3·862 संतान उपयुक्त है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों के वर्तमान दृष्टिकोण में विवाह एवं प्रथम संतान के मध्य उपयुक्त समयातंराल निम्न सारणी 5·52 से स्पष्ट है :-

सारणी संख्या 5·52

प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य उपयुक्त समय अंतराल

समय अंतराल वर्ष में	प्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रभावित प्रतिवादी प्रतिशत	अप्रभावित प्रतिवादी संख्या	अप्रभावित प्रतिवादी प्रतिशत	योग प्रतिवादी संख्या	योग प्रतिवादी प्रतिशत
1	224	45·34	115	23·28	339	68·62
2	98	19·84	11	2·23	109	22·07
3	34	6·88	7	1·42	41	8·30
4	3	0·61			3	0·61
5	2	0·40			2	0·40
योग	361	73·07	133	26·93	494	100·00

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखे जाने वाले समयतंराल विचारों का विवरण प्रस्तुत करती है । सारणी के विवरणानुसार 339 (68·62 प्रतिशत), 109 (22·07 प्रतिशत), 41 (8·30 प्रतिशत), 3 (0·61 प्रतिशत), 2 (0·40 प्रतिशत) प्रतिवादी विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य क्रमशः एक, दो, तीन, चार एवं पाँच वर्ष का अंतराल उपयुक्त मानते हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि दो तिहाई से अधिक प्रतिवादी अभी विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य एक वर्ष के अंतराल की समयावधि को उपयुक्त मानते हैं । जनमाध्यमों से प्रभावित हुए प्रतिवादियों की दृष्टि में विवाह एवं प्रथम संतान के मध्य औसत अंतराल 1·506 वर्ष है जबकि इसी का अप्रभावित प्रतिवादियों की दृष्टि में औसत अंतराल 1·188 वर्ष है । कुल प्रतिवादियों की दृष्टि में विवाह एवं प्रथम संतान के मध्य औसत 1·421 वर्ष का अंतराल होना चाहिये ।

ग्रामीण प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे जाने वाले समय अंतराल का विश्लेषण निम्न सारणी 5·53 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5·53

प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य उपयुक्त समय अंतराल

समय अंतराल वर्ष में	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		योग प्रतिवादी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	140	28·34	85	17·21	225	45·55
2	162	32·79	34	6·88	196	39·67
3	50	10·12	06	1·21	56	11·33
4	6	1·21	8	1·62	14	2·83
5	3	0·61			3	0·61
योग	361	73·07	133	26·92	494	99·99 या 100·

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे जाने वाले उपयुक्त समयातंराल पर उनके विचारों का विश्लेषण करती है । सारणी के विवरणानुसार 225 (45·55 प्रतिशत), 196 (39·67 प्रतिशत), 56 (11·33 प्रतिशत), 14 (2·83 प्रतिशत) एवं 3 (0·61 प्रतिशत) प्रतिवादी दो संतानों के मध्य क्रमशः एक, दो, तीन, चार, पाँच वर्ष का समय अंतराल उपयुक्त मानते हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 45·55 प्रतिशत प्रतिवादी अभी दो संतानों के मध्य 1 वर्ष का समय अंतराल उपयुक्त मानते हैं । जनमाध्यमों से प्रभावित हुए प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में दो संतानों के मध्य औसत 1·809 वर्ष की समयावधि उपयुक्त है जबकि अप्रभावित रहे प्रतिवादियों की दृष्टि में इसी के लिए औसत 1·676 वर्ष की समयावधि उपयुक्त है । कुल प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में दो संतानों के मध्य औसत 1·733 वर्ष की समयावधि उपयुक्त है ।

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में लड़कों की उपयुक्त विवाह आयु का विश्लेषण निम्न सारणी से किया गया है :-

सारणी संख्या 5·54

प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में लड़कों की उपयुक्त विवाह आयु

विवाह आयु वर्ष में	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		योग प्रतिवादी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
15	18	3·64	34	6·88	52	10·52
16	12	2·43	39	7·89	51	10·32
17	22	4·45	19	3·85	41	8·30
18	105	21·26	30	6·07	135	27·33
19	55	11·13	08	1·62	63	12·75
20	110	22·27	03	0·61	113	22·88
21	35	7·09	-	-	35	7·09
22	4	0·81	-	-	4	0·81
योग	361	73·08	133	26·92	494	100·00

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में, लड़कों की उपयुक्त विवाह आयु पर उनके विचारों का विश्लेषण करती है ।

सारणी के विवरणानुसार 52 §10·52 प्रतिशत§, 51 §10·32 प्रतिशत§ 41 §8·30 प्रतिशत§, 135 §27·33 प्रतिशत§, 63 §12·75 प्रतिशत§, 113 §22·88 प्रतिशत§, 35 §7·09 प्रतिशत§, एवं 4 §0·81 प्रतिशत§ प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में लड़कों की उपयुक्त विवाह आयु क्रमशः 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21 एवं 22 वर्ष है ।

सारणी से स्पष्ट है कि एक चौथाई से अधिक प्रतिवादी 18 वर्ष की आयु को लड़कों की सर्वाधिक उपयुक्त विवाह आयु मानते हैं । जनमाध्यमों से प्रभावित हुये प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कों की सर्वाधिक उपयुक्त विवाह आयु का औसत 18·820 है जबकि इसी के लिए अप्रभावित प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कों की उपयुक्त विवाह आयु का औसत 16·609 वर्ष है । कुल प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कों की उपयुक्त विवाह आयु का औसत 18·225 वर्ष है, जो कि सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु से काफी कम है ।

ग्रामीण प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में लड़कियों हेतु उपयुक्त विवाह आयु का विश्लेषण निम्न सारणी 5·55 से किया गया है :-

सारणी संख्या 5·55

प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि से लड़कियों की उपयुक्त विवाह आयु

विवाह आयु वर्ष में	प्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत	अप्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत	योग प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत
14	20	4·05	38	7·69	58	11·74
15	28	5·67	42	8·50	70	14·17
16	22	4·46	13	2·63	35	7·09
17	190	38·46	25	5·06	215	43·52
18	72	14·57	8	1·62	80	16·19
19	12	2·43	7	1·42	19	3·85
20	14	2·83	-	-	14	2·83
21	2	0·40	-	-	2	0·40
22	1	0·20	-	-	1	0·20
योग	361	73·07	133	26·92	494	99·99या 100

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में लड़कियों की उपयुक्त विवाह आयु पर उनके विचारों का विश्लेषण करती है ।

सारणी के विवरणानुसार 58 (11·74 प्रतिशत), 70 (14·17 प्रतिशत), 35 (7·09 प्रतिशत), 215 (43·52 प्रतिशत), 80 (16·19 प्रतिशत), 19 (3·85 प्रतिशत), 14 (2·83 प्रतिशत), 2 (0·40 प्रतिशत), 1 (0·20 प्रतिशत) प्रतिवादी लड़कियों के लिए क्रमशः 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21 एवं 22 वर्ष की आयु विवाह के लिये उपयुक्त मानते हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 43·52 प्रतिशत प्रतिवादी 17 वर्ष की आयु को लड़की के लिये उपयुक्त विवाह आयु मानते हैं । प्रभावित प्रतिवादियों के वर्तमान दृष्टिकोण के अनुसार औसत प्रतिवादी की दृष्टि में लड़कियों की उपयुक्त विवाह आयु औसत 17·036 वर्ष है जबकि इसी के लिए अप्रभावित प्रतिवादियों की दृष्टि में उपयुक्त विवाह आयु का औसत 15·579 वर्ष है । कुल प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कियों की औसत विवाह आयु 16·644 वर्ष है ।

ग्रामीण प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू कराने में सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम का विश्लेषण निम्न सारणी 5·56 द्वारा किया गया है :-

सारणी संख्या 5·56

प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में परिवार कल्याण कार्यक्रम के लिए उपयुक्त प्रभावी जनमाध्यम

जनमाध्यम	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		कुल प्रतिवादी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
समाचार पत्र	22	4·45	3	0·61	25	5·06
पत्रिका	9	1·82	-	-	9	1·82
रेडियो	52	10·53	42	8·50	94	19·03
दूरदर्शन	182	36·84	85	17·21	267	54·05
दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर	14	2·83	-	-	14	2·83
चलचित्र	32	6·48	3	0·61	35	7·09
पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य	28	5·67			28	5·67
परिवार कल्याण केन्द्र	22	4·45			22	4·45
योग	361	73·07	133	26·93	494	100·00

यह सारणी ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू कराने में उपयुक्त प्रभावी जनमाध्यम पर उनके विचारों का विवरण प्रस्तुत करती है ।

सारणी के विवरणानुसार 25 §5·06 प्रतिशत§, 9 §1·82 प्रतिशत§, 94 §19·03 प्रतिशत§, 267 §54·05 प्रतिशत§, 14 §2·83 प्रतिशत§, 35 §7·09 प्रतिशत§, 28 §5·67 प्रतिशत§, 22 §4·45 प्रतिशत§ प्रतिवादियों की दृष्टि में परिवार कल्याण को लागू कराने हेतु लोगों को प्रभावित करने में क्रमशः समाचार पत्र, पत्रिका, रेडियो, दूरदर्शन, दीवार प्रिंटिंग पोस्टर, चलचित्र, पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य तथा परिवार कल्याण केन्द्र उपयुक्त जनमाध्यम है ।

सारणी से स्पष्ट है कि प्रभावित प्रतिवादियों में 36·84 एवं अप्रभावित प्रतिवादियों में 17·21 प्रतिशत तथा कुल प्रतिवादियों में 54·05 प्रतिशत सर्वाधिक प्रतिवादी दूरदर्शन को परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू कराने में प्रभावित करने हेतु सर्वाधिक उपयुक्त मानते हैं । प्रतिवादियों की दृष्टि में लोगों को प्रभावित करने में द्वितीय प्रभावी जनमाध्यम रेडियो जिसे 19·03 प्रतिशत प्रतिवादियों ने उपयुक्त बताया है ।

5·4 ग्रामीण क्षेत्र: परिवार आकार निर्धारण में जनमाध्यमों की भूमिका :-

Rural Area: Role of man media in family size determination

जनपद के सर्वेक्षण के अन्तर्गत इसके पूर्व हमने ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त सर्वेक्षण के निष्कर्षो का विश्लेषण किया । उससे यह स्पष्ट हो गया कि परिवार आकार निर्धारण में ग्रामीण क्षेत्र में जनमाध्यमों की भूमिका, यद्यपि नगरीय क्षेत्र से कम रही है किन्तु फिर भी धनात्मक एवं प्रभावकारी भूमिका रही है । ग्रामीण क्षेत्र के निकर्ष के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो गया कि जनमाध्यमों के द्वारा लोगों को प्रभावित करने के परिणामस्वरूप, लोगों के न केवल परिवार आकार को छोटा रखने संबंधी विचारों में परिवर्तन आया बल्कि अधिकांश प्रतिवादियों ने प्रेरित होकर छोटा परिवार आकार रखने हेतु कम संतानोपत्ति भी की ।

ग्रामीण क्षेत्र के विश्लेषण। से यह स्पष्ट हो गया कि परिवार आकार को छोटा रखने में जनमाध्यमों ने ही लोगों को प्रभावित किया । अधिकांश 73·08 प्रतिशत प्रतिवादी जनमाध्यमों द्वारा छोटा परिवार आकार रखने हेतु प्रभावित हुए ।

सर्वप्रथम जनमाध्यमों से प्रभावित हुये प्रतिवादियों का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि जनमाध्यमों से प्रभाव के पूर्व जहाँ उन्होंने औसत 3·606 संतान उत्पत्ति की, वहीं उन्होंने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात्, औसत मात्र 2·492 संतान उत्पत्ति की तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में एक परिवार में औसत 3·426 संतान होनी चाहिये जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व विवाह एवं प्रथम संतान की उत्पत्ति के मध्य जहाँ उन्होंने औसत 1·427 वर्ष का समय अन्तर रखा, वहीं वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में यह अन्तर बढ़कर औसत 1·506 वर्ष है । इसी तरह दो सन्तानों की उत्पत्ति के मध्य जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व जहाँ उन्होंने औसत 1·615 वर्ष का समय अन्तराल रखा, वहीं प्रभावित

होने के पश्चात् यही समयातंराल औसत 1·694 वर्ष रखा तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि के अनुसार यह समयातंराल औसत 1·809 वर्ष होना चाहिये । प्रभावित होने के पूर्व जहाँ उन्होंने अपने लड़कों एवं लड़कियों का विवाह औसत क्रमशः 16·125 तथा 14·833 वर्ष आयु में किया था, वहीं जनमाध्यमों से प्रभावित होने के बाद लड़कों एवं लड़कियों का उनके द्वारा औसत क्रमशः 17·205 तथा 15·951 वर्ष में विवाह किया गया तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में लड़कों एवं लड़कियों के विवाह की उपयुक्त औसत आयु क्रमशः 18·820 तथा 17·036 वर्ष है । इस तरह स्पष्ट है कि जो प्रतिवादी जनमाध्यमों से प्रभावित हुये उन्होंने प्रभावित होने के पश्चात्, कम संतानोत्पत्ति, संतानोत्पत्ति समयावधि अंतराल में वृद्वि एवं विवाह आयु में वृद्वि संबंधित विचारों में न केवल परिवर्तन किया बल्कि उनसे प्रेरित होकर उसे अमल में भी लाया ।

इसके विपरीत जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे, प्रतिवादियों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट है कि उन्होंने जहाँ पहले औसत 5·121 संतान उत्पत्ति की । उनके विचार में अभी यह औसत 5·045 संतान बना है जो पहले के औसत के लगभग समान है । उनके द्वारा पहले विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य 1·169 वर्ष का समयातंराल रखा, उनके विचार में अभी यह औसत 1·188 वर्ष है, जो कि लगभग पहले के औसत के समान है । दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य उनके द्वारा जहाँ पहले समय अंतराल 1·542 वर्ष था, उनके वर्तमान विचारों में अब भी वह 1·676 वर्ष है जो कि लगभग पहले के अन्तराल के समान है । लड़कों एवं लड़कियों का विवाह जहाँ उन्होंने पहले औसत क्रमशः 16·514 तथा 15·532 वर्ष की आयु में किया था वही उनकी दृष्टि से अब भी लड़के एवं लड़कियों की उपयुक्त विवाह आयु का औसत क्रमशः 16·609 तथा 15·579 वर्ष है जो कि लगभग पहले के औसत के समान है । इस तरह जनमाध्यमों से प्रभावित नहीं हुए प्रतिवादियों के विचारों में माममात्र या नगण्य परिवर्तन हुआ है । अतः उनके द्वारा अभी भी अधिक संतानोत्पत्ति, संतानोत्पत्ति

में कम समयातंराल एवं कम विवाह आयु का विचार है । अब हम ग्रामीण क्षेत्र के कुल प्रतिवादियों पर जनमाध्यमों की भूमिका का विश्लेषण करेंगे:-

संतानोत्पत्ति पर दृष्टि डालने से स्पष्ट है कि प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व जहाँ औसत 4·019 संतान उत्पन्न की, वहीं जनमाध्यमों के प्रभाव के पश्चात् मात्र 2·492 संतान उत्पन्न की गयी जो कि जनमाध्यमों की परिवार आकार छोटा रखने में बहुत बड़ी भूमिका रही । इसके साथ ही वर्तमान समय में प्रतिवादियों का वर्तमान विचार प्रति परिवार में औसत 3·862 संतान का है जो कि प्रभावित होने के पूर्व उत्पन्न की गयी औसत संतान से कम है । विवाह के पश्चात प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखा गया समयातंराल जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व प्रतिवादियों का औसत 1·357 वर्ष था जो कि वर्तमान समय में उनके विचारों में औसत 1·421 वर्ष है । यह समय अंतराल पहले से अधिक है । अतः जनमाध्यमों की इस पर भी धनात्मक भूमिका रही । इसी तरह जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व प्रतिवादियों ने दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत समय अंतराल 1·588 वर्ष रखा था जो कि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात बढ़कर 1·694 वर्ष हो गया । वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में दो संतानों के मध्य उपयुक्त समयातंराल 1·733 वर्ष है जो कि प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं पश्चात में रखे गये समयातंराल से अधिक है । यह छोटा परिवार आकार रखने में सहायक है । प्रतिवादियों ने जहाँ जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व अपने लड़कों एवं लड़कियों का विवाह क्रमशः औसत 16·462 एवं 15·471 वर्ष आयु में किया वहीं प्रभावित होने के पश्चात् उन्होंने अपने लड़कों एवं लड़कियों का विवाह क्रमशः औसत 17·205 तथा 15·951 आयु में किया साथ ही उनकी दृष्टि में वर्तमान समय में लड़कों एवं लड़कियों की उपयुक्त विवाह आयु का औसत क्रमशः 18·225 वर्ष एवं 16·644 वर्ष है इस तरह प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों के प्रभाव के पूर्व अपने लड़को एवं लड़कियों के किये गये

विवाह आयु से ,जनमाध्यमों के प्रभाव के पश्चात् संतानों के विवाह के समय की आयु एवं वर्तमान समय में उनके विवाह आयु अधिक है, जो कि जनमाध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है ।

इस तरह जनमाध्यमों की ग्रामीण क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका के कारण ही परिवार आकार छोटा रखने हेतु प्रतिवादियों ने जहाँ संतानों की संख्या में कमी की, संतानोत्पत्ति अंतराल एवं विवाह आयु में वृद्धि हुयी, वही उनके विचारों में परिवर्तन भी इसी दिशा में हुआ । इस तरह ग्रामीण क्षेत्र में परिवार आकार छोटा रखने में जनमाध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी ।

5·5 नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्षों का तुलनात्मक अध्ययन

The comprative study of the finding of the Urban & Rural Area

नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के निष्कर्षों के अलग-अलग अध्ययन के पश्चात् उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

सर्वाधिक प्रभावित करने वाले जनमाध्यम के तुलनात्मक अध्ययन से यह तथ्य उभर कर आया कि जहाँ नगरीय क्षेत्र में लोगों को छोटा परिवार आकार रखने के लिए, प्रभावित करने में दूरदर्शन जनमाध्यम की महत्वपूर्ण भूमिका रही, वहीं ग्रामीण क्षेत्र में रेडियों जनमाध्यम की महत्वपूर्ण भूमिका रही । नगरीय क्षेत्र में दूरदर्शन से 64·23 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुये, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में रेडियो से 58·45 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुये । नगरीय क्षेत्र में दूसरे स्थान पर प्रभावी जनमाध्यम रेडियो रहा, जिससे 11·38 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुये, वही ग्रामीण क्षेत्र में द्वितीय प्रभावी जनमाध्यम दूरदर्शन रहा जिससे 22·71 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुये । उल्लेखनीय तथ्य यह रहा कि दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर से कोई भी प्रतिवादी प्रभावित नहीं हुआ । दूसरा तथ्य यह उभर कर आया कि जहाँ परिवार कल्याण केन्द्र से नगरीय क्षेत्र में कोई प्रतिवादी प्रभावित नहीं हुआ, वही ग्रामीण क्षेत्र में परिवार कल्याण केन्द्र से एक प्रतिवादी प्रभावित हुआ । मित्रों से प्रभावित होने वाले नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों का प्रतिशत लगभग बराबर है ।

प्रतिवादियों के प्रभावित होने के समय उनकी आयु की दृष्टि से जहाँ नगरीय क्षेत्र में सर्वाधिक 66·67 प्रतिशत प्रतिवादी 20-30 वर्ष की आयु अंतराल में प्रभावित हुये, वहीं ग्रामीण क्षेत्र में सर्वाधिक 64·26 प्रतिशत प्रतिवादी 20-30 वर्ष की आयु अंतराल में प्रभावित हुये । इस तरह स्पष्ट है कि नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र में सर्वाधिक प्रतिवादी, जो विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित हुये, वे युवा वर्ग के थे ।

विभिन्न कैलेंडर वर्षो में, प्रतिवादियों की जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित होने की स्थिति का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि जहाँ नगरीय क्षेत्र में सर्वाधिक 50·41 प्रतिशत प्रतिवादी वर्ष 1980-90 के मध्य प्रभावित हुये । वहीं गामीण क्षेत्र में सर्वाधिक 52·63 प्रतिशत प्रतिवादी 1980-90 के प्रभावित हुये । अतः दोनों क्षेत्र के सर्वाधिक प्रतिवादी 1980-90 के मध्य प्रभावित हुये ।

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में जहाँ नगरीय क्षेत्र के प्रभावित प्रतिवादियों, अप्रभावित प्रतिवादियों तथा कुल प्रतिवादियों द्वारा औसत क्रमशः 3·344, 3·333 एवं 3·591 संतान उत्पन्न की गयी वहीं ग्रामीण क्षेत्र में प्रभावित होने के पूर्व प्रभावित अप्रभावित एवं कुल प्रतिवादियों द्वारा औसत क्रमशः 3·606, 5·121 एवं 4·019 संतान उत्पन्न की गयी । स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के प्रभावित, अप्रभावित एवं कुल प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व, नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की अपेक्षा अधिक संतानोत्पत्ति की गयी ।

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में नगरीय क्षेत्र के प्रभावित, अप्रभावित तथा कुल प्रतिवादियों द्वारा विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य औसत क्रमशः 1·189, 1·333 तथा 1·194 वर्ष का समय अंतराल रखा गया वहीं, ग्रामीण क्षेत्र के प्रभावित, अप्रभावित एवं कुल प्रतिवादियों द्वारा क्रमशः इसी के लिए औसत क्रमशः 1·161, 1·169 एवं 1·163 वर्ष का समय अन्तराल रखा गया । इस तरह ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा, नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की अपेक्षा विवाह के पश्चात कुछ जल्दी संतान उत्पन्न की गयी ।

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में, नगरीय क्षेत्र के प्रभावित, अप्रभावित एवं कुल प्रतिवादियों द्वारा दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत 1·640, 1·700, 1·643 वर्ष का समय

अंतराल रखा । जब कि ग्रामीण क्षेत्र के प्रभावित, अप्रभावित एवं कुल प्रतिवादियों द्वारा दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत 1·615, 1·542, 1·588 वर्ष का समयातंराल रखा गया जो कि नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा रखे गये समय अंतराल से कम है अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों द्वारा नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की अपेक्षा जल्दी-जल्दी संतानोत्पत्ति की गयी ।

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में नगरीय क्षेत्र के प्रभावित प्रतिवादियों द्वारा अपने लड़कों का विवाह औसत 20·09 आयु वर्ष में किया गया है जबकि अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा अपने किसी लड़के का विवाह नहीं किया गया है । इस तरह जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में कुल प्रतिवादियों द्वारा अपने लड़कों का विवाह औसत आयु 20·09 वर्ष में किया गया है । इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्र के प्रभावित, अप्रभावित एवं कुल प्रतिवादियों द्वारा औसत 16·125, 16·514 एवं 16·462 वर्ष की आयु में विवाह किया गया है जो कि नगरीय क्षेत्र में किये गये लड़कों की विवाह आयु से काफी कम है ।

इसी तरह नगरीय क्षेत्र के प्रभावित प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में अपने लड़कियों का विवाह औसत 17·978 वर्ष में किया है और चूंकि इस अवस्था में अप्रभावित प्रतिवादियों ने अपनी किसी लड़की का विवाह नहीं किया है अतः कुल प्रतिवादियों की लड़कियों की औसत विवाह आयु 17·978 वर्ष है । इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्र के प्रभावित, अप्रभावित एवं कुल प्रतिवादियों द्वारा औसत क्रमशः 14·833, 15·332 एवं 15·471 वर्ष की आयु में लड़कियों का विवाह किया है, जो कि नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की लड़कियों की औसत विवाह आयु से काफी कम है ।

जनमाध्यमों की उपलब्धता का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट है कि जहाँ नगरीय क्षेत्र में 87·30 प्रतिशत प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के मात्र 27·94 प्रतिशत प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध है । अतः ग्रामीण क्षेत्र में नगरीय क्षेत्र से आधे से कम प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध हैं । इस तरह ग्रामीण क्षेत्र में नगरीय क्षेत्र की अपेक्षा कम समाचार पत्र प्रतिवादियों को उपलब्ध हैं । नगरीय क्षेत्र में जहाँ 49·21 प्रतिशत प्रतिवादियों को पत्रिकाओं की उपलब्धता है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के मात्र 12·53 प्रतिशत प्रतिवादियों को पत्रिका की उपलब्धता है । इस तरह नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र में पत्रिका माध्यम की उपलब्धता का अनुपात लगभग 4:1 है । रेडियो जनमाध्यम जहाँ नगरीय क्षेत्र में 92·05 प्रतिशत प्रतिवादियों को उपलब्ध है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र में यह मात्र 79·36 प्रतिशत प्रतिवादियों को उपलब्ध है । अतः अभी ग्रामीण क्षेत्र में नगरीय क्षेत्र की अपेक्षा रेडियो की लोगों को कम उपलब्धता है । यद्यपि ग्रामीण क्षेत्र में अन्य जनमाध्यमों से इसकी उपलब्धता सबसे अधिक है । सर्वाधिक प्रभावकारी एवं लोकप्रिय जनमाध्यम दूरदर्शन जहाँ नगरीय क्षेत्र में 96·83 प्रतिशत प्रतिवादियों को उपलब्ध है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र में दूरदर्शन की उपलब्धता, मात्र 30·77 प्रतिशत प्रतिवादियों की है । इस तरह उपलब्धता की दृष्टि से दूरदर्शन की नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र में अनुपात लगभग 3:1 का है । इस तरह नगरीय क्षेत्र की अपेक्षा, ग्रामीण क्षेत्र में दूरदर्शन की उपलब्धता बहुत ही कम है । नगरीय क्षेत्र के 19·04 प्रतिशत प्रतिवादियों को जहाँ परिवार नियोजन से संबंधित पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिंग उपलब्ध रही, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को इसकी उपलब्धता मात्र 6·27 प्रतिशत रही जो कि बहुत ही कम है । नगरीय क्षेत्र में जहाँ 82·53 प्रतिशत प्रतिवादियों को चलचित्र जनमाध्यम की उपलब्धता रही, वहीं ग्रामीण क्षेत्र में इसकी उपलब्धता मात्र 51·22 प्रतिशत प्रतिवादियों को रही, जो कि नगरीय क्षेत्र से कम है । जहाँ तक पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य जनमाध्यम की उपलब्धता की बात है,

एकमात्र इस जनमाध्यम की उपलब्धता ग्रामीण क्षेत्र में, नगरीय क्षेत्र से अधिक रही। ग्रामीण क्षेत्र में जहाँ यह 57·09 प्रतिशत प्रतिवादियों को उपलब्ध है, वहीं नगरीय क्षेत्र में यह मात्र 38·88 प्रतिशत प्रतिवादियों को उपलब्ध है। नगरीय क्षेत्र में 34·12 प्रतिशत प्रतिवादियों को परिवार कल्याणकेन्द्र जनमाध्यम की उपलब्धता रही, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों में इसकी उपलब्धता मात्र 10·92 प्रतिशत रही। नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों में परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी देने वाले मित्रों की उपलब्धता 24·60 प्रतिशत रही, वहीं ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे मित्रों की प्रतिवादियों को उपलब्धता मात्र 8·70 प्रतिशत रही। इस तरह कुल जनमाध्यमों की उपलब्धता का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि केवल पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य को छोड़कर, बाकी सभी जनमाध्यमों की नगरीय क्षेत्र में, ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में अधिक उपलब्धता रही।

विभिन्न जनमाध्यमों पर प्रतिवादियों द्वारा एक दिन में दिये गये समय का नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों में तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट है कि जहाँ नगरीय प्रतिवादियों में से 56·34 प्रतिशत प्रतिवादी समाचार पत्र पढ़ने में प्रतिदिन 0-15 मिनट, 15·87 प्रतिशत प्रतिवादी पत्रिका पढ़ने में 1 घंटे का समय, 44·44 प्रतिशत प्रतिवादी रेडियो के कार्यक्रम सुनने में 30 मिनट से 1 घंटा का समय एवं 74·60 प्रतिशत प्रतिवादी दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने में 1 घंटे से अधिक का समय देते हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों में 14·78 प्रतिशत समाचार पत्र पढ़ने में प्रतिदिन मात्र 0-15 मिनट का समय देते हैं, वहीं पत्रिका पढ़ने में 2·02 प्रतिशत प्रतिवादी 15-30 मिनट, रेडियो के कार्यक्रम सुनने में 33 प्रतिशत प्रतिवादी 30 मिनट से 1 घंटा एवं 13·36 प्रतिशत प्रतिवादी दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने में एक घंटे से अधिक का समय देते हैं। तुलनात्मक दृष्टि से जहाँ समाचार पत्र पढ़ने में दोनों क्षेत्रों के सर्वाधिक प्रतिवादी 0-15 मिनट का समय देते हैं। जहाँ पत्रिका पढ़ने वाले नगरीय

प्रतिवादियों के, वर्तमान समय के विचारों का, नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र से तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट है कि जहाँ जनमाध्यमों के प्रभावित होने के पश्चात दोनों क्षेत्रों के प्रभावित प्रतिवादियों के विचारों में परिवर्तन आया है, किन्तु दोनों क्षेत्रों के अप्रभावित प्रतिवादियों के विचारों में परिवर्तन नगण्य रहा है। परिवार आकार के संबंध में नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों के वर्तमान विचारों के अनुसार एक परिवार में औसत 2·063 संतान होनी चाहिये, जबकि इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों के वर्तमान विचारों के अनुसार यह औसत 3·862 संतान है, जो कि नगरीय क्षेत्र से अधिक है। इसी तरह नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों के वर्तमान विचारों के अनुसार विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य के समय अंतराल तथा दो संतानों के उत्पत्ति के मध्य के समय अंतराल का औसत क्रमशः 1·825 एवं 1·992 वर्ष है, जबकि इसी का ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों में समयान्तराल का औसत क्रमशः 1·421 एवं 1·733 वर्ष है, जो कि नगरीय क्षेत्र से कम है। इसी तरह नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों के वर्तमान विचारों के अनुसार लड़कों के लिये उपयुक्त विवाह आयु का औसत 20·82 वर्ष एवं लड़कियों के लिये यह औसत 19·48 वर्ष है। वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादी वर्तमान विचारों के अनुसार लड़कों के लिये औसत 18·225 वर्ष तथा लड़कियों के लिये 16·64 वर्ष की आयु विवाह के लिये उपयुक्त मानते हैं, जो कि नगरीय क्षेत्र से कम है।

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू कराने में, जहाँ सर्वाधिक 81·74 प्रतिशत प्रतिवादियों ने दूरदर्शन जनमाध्यम को उपयुक्त बताया, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के सर्वाधिक 54·05 प्रतिशत प्रतिवादी भी दूरदर्शन को ही परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू कराने में उपयुक्त जनमाध्यम स्वीकारते हैं। इस तरह दोनों ही क्षेत्र के सर्वाधिक प्रतिवादियों की दृष्टि में, दूरदर्शन की परिवार आकार छोटा रखने में महत्वपूर्ण भूमिका मानते हैं।

अध्याय-6 : सकल जनपद से प्राप्त निष्कर्ष
एवं उनका अध्यंयन

CHAPTER-6 : THE FINDINGS FROM THE WHOLE DISTRICT

अध्याय-6

सकल जनपद से प्राप्त निष्कर्ष एवं उनका अध्ययन

(The findings from the whole District & their study)

6·1 सकल जनपद के सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्ष (The findings from survey of whole district)

इसके पूर्व के अध्याय में जनपद के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्षो का, अलग-अलग एवं तुलनात्मक विश्लेषण करने के पश्चात्, इस अध्याय में सकल जनपद के निष्कर्षो का विश्लेषण किया जायेगा । गामीण एवं नगरीय क्षेत्र के सर्वेक्षण से प्राप्त आकड़ों का योग ही सकल जनपद के आकड़ों को प्रदर्शित करता है।

जनपद के सर्वेक्षण हेतु कुल 620 प्रतिवादियों ने प्रश्नोत्तरी पत्रक के प्रश्नों का उत्तर दिया । जिसमें से 484 (78·07 प्रतिशत) प्रतिवादी ऐसे हैं, जो कि परिवार आकार छोटा रखने हेतु विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित हुये, जबकि 136 (21·93 प्रतिशत) प्रतिवादी ऐसे हैं जो कि किसी भी जनमाध्यम से परिवार आकार छोटा रखने हेतु प्रभावित नहीं हुये ।

जनपद के प्रतिवादियों को, छोटा परिवार आकार रखने हेतु, सर्वाधिक प्रभावित करने वाले जनमाध्यमों का विश्लेषण निम्न सारणीसं 6·1 से किया गया है :-

सारणी संख्या - 6·1

प्रतिवादियों को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले जनमाध्यम का विवरण

प्रभावी जनमाध्यम	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
समाचार पत्र	19	3·93
पत्रिकाएं	8	1·65
रेडियों	225	46·49
दूरदर्शन	161	33·26
दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर		
चलचित्र	5	1·03
पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य	2	0·41

यह सारणी सकल इलाहाबाद जनपद के प्रतिवादियों का, विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित होने का विवरण प्रस्तुत करती है । सारणी के विवरणानुसार कुल 620 प्रतिवादियों में से 484 (78·06 प्रतिशत) प्रतिवादी जनमाध्यमों से प्रभावित हुये, जबकि 136 (21·94 प्रतिशत) प्रतिवादी जनमाध्यमों से प्रभावित नहीं हुये हैं ।

सारणी के विवरणानुसार जनपद के 19 (3·93 प्रतिशत), 8 (1·65 प्रतिशत), 225 (46·49 प्रतिशत), 161 (33·26 प्रतिशत), 5 (1·03 प्रतिशत), 2 (0·41 प्रतिशत), 1 (0·21 प्रतिशत) तथा 63 (13·02 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य, परिवार कल्याण केन्द्र तथा मित्रों से प्रभावित हुये ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 46·49 प्रतिशत या लगभग आधे प्रतिवादी, रेडियो जनमाध्यम से छोटा परिवार आकार रखने के लिए प्रभावित हुये हैं । जनपद के प्रतिवादियों को प्रभावित करने में द्वितीय स्थान दूरदर्शन का रहा, जिससे 33·26 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुये ।

जनपद के प्रतिवादियों का, जो विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित हुये, प्रभावित होने के समय उनकी आयु को, विभिन्न आयु अंतराल के अन्तर्गत निम्न सारणी सं 6·2 में दिखाया गया है :-

सारणी संख्या - 6·2

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के समय की आयु के अनुसार प्रतिवादियों का विवरण

आयु अंतराल §वर्ष में§	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
15-20	113	23·35
20-25	152	31·40
25-30	162	33·47
30-35	43	8·88
35-40	9	1·86
40 तथा अधिक	5	1·03
योग	484	99·99 या 100

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों की उनकी आयु अंतराल के अनुसार जनमाध्यमों से प्रभावित होने का विवरण देती है । सारणी के विवरणानुसार 113 §23·35 प्रतिशत§, 152 §31·40 प्रतिशत§, 162 §33·47 प्रतिशत§, 43 §8·88 प्रतिशत§, 9 §1·86 प्रतिशत§ एवं 5 §1·03 प्रतिशत§ प्रतिवादी क्रमशः 15-20, 20-25, 25-30, 30-35, 35-40 एवं 40 तथा उससे अधिक की आयु अंतरालों में जनमाध्यमों से प्रभावित हुये ।

सारणी से स्पष्ट है कि एक तिहाई प्रतिवादी 25-30 आयु वर्षों में, तथा लगभग एक तिहाई प्रतिवादी 20-25 वर्ष की आयु अंतराल में प्रभावित हुये । इस तरह जनपद में जनमाध्यमों से प्रभावित होने वाले प्रतिवादियों में से अधिकांशतः युवा वर्ग के हैं ।

जनपद के प्रतिवादी, जो विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित हुये हैं उनके प्रभावित होने की गणना, विभिन्न कैलेंडर वर्षो में निम्न सारणी संख्या 6·3 से दिखाया गया है :-

सारणी संख्या 6·3

विभिन्न वर्षो में जनमाध्यमों से प्रभावित हुये प्रतिवादियों का विवरण

कैलेंडर वर्ष	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1955-60	1	0·21
1960-65	4	0·83
1965-70	7	1·45
1970-75	46	9·50
1975-80	80	16·52
1980-85	114	23·55
1985-90	138	28·51
1990 से अब तक	94	19·42
योग	484	99·99 या 100

यह सारणी जनमाध्यमों से, विभिन्न कैलेंडर वर्षो में जनपद के प्रभावित होने वाले प्रतिवादियों का विवरण देती है । सारणी के विवरणानुसार 1 (0·21 प्रतिशत), 4 (0·83 प्रतिशत), 7 (1·45 प्रतिशत), 46 (9·50 प्रतिशत), 80 (16·52 प्रतिशत), 114 (23·55 प्रतिशत), 138 (28·51 प्रतिशत), एवं 94 (19·42 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 1955-60, 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित हुये ।

सारणी से स्पष्ट है कि एक चौथाई से अधिक प्रतिवादी 1985-90 एवं लगभग एक चौथाई प्रतिवादी 1980-85 में प्रभावित हुये । इस तरह सर्वाधिक आधे से अधिक प्रतिवादी वर्ष 1980-1990 के मध्य प्रभावित हुये।

जनपद के प्रतिवादियों का भिन्न-भिन्न जनमाध्यमों से भिन्न-भिन्न कैलेंडर वर्षों में प्रभावित होने का विश्लेषण निम्न सारणी संख्या 6·4 में किया गया है :-

सारणी संख्या- 6·4

प्रतिवादियों का विभिन्न वर्षों में विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित होने का विवरण

कैलेंडर वर्ष	समाचार पत्र		पत्रिका		रेडियो		दूरदर्शन		चलचित्र		पारंपरिक लोक गीत एवं नृत्य		परिवार कल्याण		मित्र		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1955-60	1	0·21															1	0·21
1960-65					4	0·83											4	0·83
1965-70					7	1·45											7	1·45
1970-75	3	0·62	4	0·82	20	4·13			1	0·21					18	3·72	46	9·50
1975-80	4	0·82	2	0·41	54	11·16									20	4·13	80	16·52
1980-85	5	1·03			63	13·02	43	8·88	3	0·62							114	23·55
1985-90	6	1·24	2	0·41	40	8·26	74	15·29	1	0·21	2	0·41			13	2·69	138	28·51
1990 से अब तक					37	7·64	44	9·09					1	0·21	12	2·48	94	19·42
योग	19	3·92	8	1·64	225	46·49	161	33·26	5	1·04	2	0·41	1	0·21	63	13·02	484	99·99 या 100

यह सारणी, जनपद के प्रतिवादियों की विभिन्न जनमाध्यमों से विभिन्न कैलेंडर वर्षों में प्रभाविकता को दर्शाती है । सारणी के विवरणानुसार 1 (0·21 प्रतिशत), 3 (0·62 प्रतिशत), 4 (0·82 प्रतिशत), 5 (1·03 प्रतिशत) तथा 6 (1·24 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 1955-60, 1970--75, 1975-80, 1980-85 तथा 1985-90 में समाचार पत्रों द्वारा प्रभावित हुए । 4 (0·82 प्रतिशत), 2 (0·41 प्रतिशत), 2 (0·41 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 1970-75, 1975-80 एवं 1985-90 में पत्रिकाओं से प्रभावित हुये । 4 (0·83 प्रतिशत), 7 (1·45 प्रतिशत), 20 (4·13 प्रतिशत), 54 (11·16 प्रतिशत), 63 (13·02 प्रतिशत), 40 (8·26 प्रतिशत), 37 (7·64 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90, 1990 से अब तक रेडियों जनमाध्यम से प्रभावित हुये । दूरदर्शन जनमाध्यम से 43 (8·88 प्रतिशत), 74 (15·29 प्रतिशत), 44 (9·09 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक प्रभावित हुये । चलचित्र जनमाध्यम से 1 (0·21 प्रतिशत), 3 (0·62 प्रतिशत), 1 (0·21 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 1970-75, 1980-85, 1985-90 में प्रभावित हुये । पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य से 2 (0·41 प्रतिशत) प्रतिवादी 1985-90 के मध्य प्रभावित हुये । परिवार कल्याण केन्द्र से 1 (0·21 प्रतिशत) प्रतिवादी 1990 से अब तक प्रभावित हुये । परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्रों से 18 (3·72 प्रतिशत), 20 (4·13 प्रतिशत), 13 (2·69 प्रतिशत) 12 (2·47 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः 1970-75, 1975-80, 1985-90 एवं 1990 से अब तक प्रभावित हुये ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम रेडियों रहा, जिससे लगभग एक तिहाई प्रतिवादी वर्ष 1975-90 के मध्य प्रभावित हुये । द्वितीय प्रभावी जनमाध्यम दूरदर्शन रहा, जिससे लगभग एक तिहाई प्रतिवादी वर्ष 1980 से लेकर अब तक प्रभावित हुए ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम रेडियो रहा, जिससे लगभग एक तिहाई प्रतिवादी वर्ष 1975-90के मध्य प्रभावित हुये । द्वितीय प्रभावी जनमाध्यम दूरदर्शनरहा जिससे लगभग एक तिहाई प्रतिवादी वर्ष 1980 से लेकर अब तक प्रभावित हुए ।

अब सकल जनपद के प्रतिवादियों का जनमाध्यम से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में उनके द्वारा उत्पन्न संतान, संतानोत्पत्ति समयातंराल एवं उनके संतानों की विवाह आयु का विश्लेषण किया जायेगा ।

जनपद के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व, अप्रभावित अवस्था में उत्पन्न की गयी संतानों का विश्लेषण निम्न सारणी 6·5 से स्पष्ट है :-

सारणी संख्या -6·5

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित स्थिति में उत्पन्न की गयी संतानों का विवरण

उत्पन्न संतान की संख्या	प्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रभावित प्रतिवादी प्रतिशत	अप्रभावित प्रतिवादी संख्या	अप्रभावित प्रतिवादी प्रतिशत	योग प्रतिवादी संख्या	योग प्रतिवादी प्रतिशत
1	32	5·85	-	-	32	5·85
2	86	15·72	10	1·83	96	17·55
3	106	19·38	22	4·02	128	23·40
4·	89	16·27	25	4·57	114	20·84
5·	48	8·78	30	5·48	78	14·26
6·	38	6·95	9	1·65	47	8·60
7·	12	2·19	10	1·83	22	4·02
8·	4	0·73	8	1·46	12	2·19
9·	2	0·37	11	2·01	13	2·38
10·	1	0·18	1	0·18	2	0·36
11·	1	0·18	-	-	1	0·18
12·	-	-	1	0·18	1	0·18
13·	1	0·18	-	-	1	0·18
योग	420	76·78	127	23·21	547	99·99 या 100

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में, उनके द्वारा उत्पन्न की गयी संतानों का विवरण देती है । सारणी के विवरणानुसार 32 §5·85 प्रतिशत§, 96 §17·55 प्रतिशत§, 128 §23·40 प्रतिशत§, 114 §20·84 प्रतिशत§, 78 §14·26 प्रतिशत§, 47 §8·60 प्रतिशत§, 22 §4·02 प्रतिशत§, 12 §2·19 प्रतिशत§, 13 §2·38 प्रतिशत§, 2 §0·36 प्रतिशत§, 1 §0·18 प्रतिशत§, 1 §0·18 प्रतिशत§ एवं 1 §0·18 प्रतिशत§ प्रतिवादियों ने क्रमशः 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10,11,12 एवं 13 संतानें उत्पन्न की गयी हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक लगभग एक चौथाई प्रतिवादियों ने 3 संतानें उत्पन्न की है । इसी तरह 58·50 प्रतिशत प्रतिवादियों ने 3 से 5 संतानें उत्पन्न की गयी हैं । जो कि तीव्र संतानोत्पत्ति को दर्शाता है । प्रभावित प्रतिवादियों नें जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व औसत 3·605 संतान उत्पन्न की एवं अप्रभावित प्रतिवादियों ने अप्रभावित अवस्था में औसत 5·079 संतान उत्पन्न की । जनपद के कुल प्रतिवादियों मै जनमाध्यमों से प्रभावित होनें के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में औसत 3·947 संतान उत्पन्न की ।

जनपद के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखे गये समयातंराल को निम्न सारणी संख्या - 6·6 में दिखाया गया है :-

सारणी संख्या 6·6

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में विवाह के पश्चात् एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखा गया समयांतराल का विवरण

समय अंतराल (वर्ष में)	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		योग प्रतिवादी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	375	68·56	112	20·48	487	89·04
2	27	4·94	8	1·46	35	6·40
3	12	2·19	7	1·28	19	3·47
4	5	0·91			5	0·91
5	1	0·18			1	0·18
योग	420	76·78	127	23·22	547	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में उनके द्वारा विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखे गये समयातंराल को दर्शाती है । सारणी के विवरणानुसार 487 (89·04 प्रतिशत), 35 (6·40 प्रतिशत), 19 (3·47 प्रतिशत), 5 (0·91 प्रतिशत), एवं 1 (0·18 प्रतिशत) प्रतिवादियों ने क्रमशः 1,2,3,4 एवं 5 वर्ष के समय का अंतराल अपने विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखा है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक तीन चौथाई से अधिक प्रतिवादियों ने, विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य बहुत ही कम एक वर्ष का समयातंराल रखा, जो कि तीव्र संतानोत्पत्ति को दर्शाता है । प्रभावित प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व तथा अप्रभावित अवस्था में, विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य औसत क्रमशः 1·167 एवं 1·173 वर्ष का समयातंराल रखा । कुल जनपद के प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में, विवाह एवं प्रथम संतानोत्पत्ति के मध्य औसत 1·168 वर्ष का समयातंराल रखा ।

जनपद के प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे गये समयान्तराल को निम्न सारणी 6·7 में प्रदर्शित किया गया है :-

सारणी संख्या - 6·7

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे गये समयातंराल का विवरण

समय अंतराल (वर्ष में)	प्रभावित प्रतिवादियों की संतान		अप्रभावित प्रतिवादियों की संतान		योग प्रतिवादियों की संतान	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	609	37·78	303	18·80	912	56·58
2	340	21·09	158	9·80	498	30·89
3	101	6·27	54	3·35	155	9·62
4	32	1·99	6	0·37	38	2·36
5	7	0·43	-	-	7	0·43
6	1	0·06	-	-	1	0·06
7	1	0·06	-	-	1	0·06
	1091	67·68	521	32·32	1612	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में उनके द्वारा दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे गये समय अंतराल को दर्शाती है ।

सारणी के विवरणानुसार 912 ﴾56·58 प्रतिशत﴿, 498 ﴾30·89 प्रतिशत﴿, 155 ﴾9·62 प्रतिशत﴿, 38 ﴾2·36 प्रतिशत﴿, 7 ﴾0·43 प्रतिशत﴿, 1 ﴾0·06 प्रतिशत﴿, 1 ﴾0·06 प्रतिशत﴿ प्रतिवादियों ने दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य क्रमशः 1,2,3,4,5,6 एवं 7 वर्ष का समयातंराल रखा ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक आधे से अधिक प्रतिवादियों ने दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य एक वर्ष का समयांतराल रखा । यह समयातंराल कम है तथा तीव्र संतानोंपत्ति को दर्शाता है ।

प्रभावित प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व तथा अप्रभावित प्रतिवादियों ने अप्रभावित अवस्था में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत क्रमशः 1·621 एवं 1·545 वर्ष का समयातंराल रखा । जनपद के कुल प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत 1·596 वर्ष का समयातंराल रखा ।

जनपद के प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व तथा अप्रभावित अवस्था में उनके लड़कों के विवाह के समय की आयु का विवरण निम्न सारणी 6·8 से दिखाया गया है :-

सारणी संख्या 6·8

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में प्रतिवादियों के लड़कों की विवाह के समय आयु

विवाह आयु §वर्षों में§	प्रभावित प्रतिवादियों के लड़के		अप्रभावित प्रतिवादियों के लड़के		प्रतिवादियों के लड़कों का योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
15	10	3·82	66	25·18	76	29·00
16	12	4·58	25	9·54	37	14·12
17	7	2·67	73	27·86	80	30·53
18	12	4·58	38	14·50	50	19·08
19	3	1·15	-	-	3	1·15
20	4	1·53	6	2·29	10	3·82
21	1	0·38	-	-	1	0·38
23	2	0·76	-	-	2	0·76
24	2	0·76	-	-	2	0·76
29	1	0·38	-	-	1	0·38
योग	54	20·61	208	79·37	262	99·98 या 100·00

यह सारणी प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व अप्रभावित अवस्था में उनके लड़कों की विवाह के समय की आयु का विवरण दर्शाती है ।

सारणी के विवरणानुसार 76 §29 प्रतिशत§, 37 §14·12 प्रतिशत§, 80 §30·53 प्रतिशत§, 50 §19·08 प्रतिशत§, 3 §1·15 प्रतिशत§, 10 §3·82 प्रतिशत§, 1 §0·38 प्रतिशत§, 2 §0·76 प्रतिशत§, 2 §0·76 प्रतिशत§, एवं 1 §0·38 प्रतिशत§ प्रतिवादियों के लड़कों की विवाह के समय आयु, क्रमशः 15,16,17,18,19,20,21,23,24 एवं 29 वर्ष है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक लगभग एक तिहाई प्रतिवादियों ने अपने लड़कों का विवाह उनकी 17 वर्ष की आयु में किया जो कि सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु से काफी कम है । प्रभावित तथा अप्रभावित प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में उनके लड़कों के विवाह के समय की आयु का औसत क्रमशः 17·741 तथा 16·514 वर्ष रहा, जबकि जनपद के कुल प्रतिवादियों के लड़कों के विवाह के समय की आयु का औसत 16·767 वर्ष रहा है ।

जनपद के प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में, उनके लड़कियों की विवाह के समय की आयु काविश्लेषण निम्न सारणी संख्या 6·9 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·9

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में प्रतिवादियों के लड़कियों की विवाह के समय आयु

विवाह आयु	प्रभावित प्रतिवादियों की लड़कियाँ		अप्रभावित प्रतिवादियों की लड़कियाँ		प्रतिवादियों की लड़कियाँ	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
14	8	2·51	74	23·20	82	25·71
15	12	3·76	71	22·25	83	26·01
16	4	1·25	27	8·46	31	9·71
17	11	3·45	49	15·36	60	18·81
18	32	10·03	27	8·46	59	18·49
19	3	0·94	-	-	3	0·94
25	1	0·31	-	-	1	0·31
योग	71	22·25	248	77·73	319	99·98 या 100

यह सारणी के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में लड़कियों की विवाह के समय की आयु का विश्लेषण करती है । सारणी के विवरणानुसार 82 (25·71 प्रतिशत), 83 (26·01 प्रतिशत), 31 (9·71 प्रतिशत), 60 (18·81 प्रतिशत), 59 (18·49 प्रतिशत), 3 (0·94 प्रतिशत) एवं 1 (0·31 प्रतिशत) प्रतिवादियों की लड़कियों का विवाह उनकी क्रमशः 14,15,16, 17,18,19 एवं 25 वर्ष की आयु में किया गया ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक आधे से अधिक प्रतिवादियों की लड़कियों का विवाह 14 एवं 15 वर्ष की आयु में किया गया । जो कि सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु से काफी कम है ।

प्रभावित एवं अप्रभावित प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में, उनके लड़कियों की विवाह के समय की आयु का औसत क्रमशः 16·915, 15·532 वर्ष रहा, जबकि जनपद के कुल प्रतिवादियों के लड़कियों के विवाह आयु का इसी अवधि के लिए औसत 15·840 वर्ष रहा ।

जनपद के प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में विभिन्न केलेंडर वर्षों में समाचार पत्रों की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 6·10 में प्रदर्शित किया गया है :-

सारणी संख्या 6·10

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को समाचार पत्र की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अन्तराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1950-55	1	0·16
1955-60	8	1·29
1960-65	11	1·77
1965-70	19	3·07
1970-75	41	6·61
1975-80	62	10·00
1980-85	52	8·39
1985-90	45	7·26
1990 से अब तक	9	1·45
कुल उपलब्धता	248	40·00
अनुपलब्धता	372	60·00
योग	620	100·00

यह सारणी 6·10 जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षों में समाचार पत्र की उपलब्धता का विवरण देती है । सारणी के अनुसार कुल 248 (40 प्रतिशत) प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध है । सारणी के विवरणानुसार 1 (0·16 प्रतिशत), 8 (1·29 प्रतिशत), 11 (1·77 प्रतिशत), 19 (3·07 प्रतिशत), 41 (6·61 प्रतिशत), 62 (10 प्रतिशत), 52 (8·39 प्रतिशत), 45 (7·26 प्रतिशत) एवं 9 (1·45 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1950-55, 1955-60,

1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक समाचार पत्र उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक मात्र 10 प्रतिशत प्रतिवादियों को, समाचार पत्र वर्ष 1975-80 के मध्य उपलब्ध हुये । इस तरह जनपद के 372 (60 प्रतिशत) प्रतिवादियों को अब भी समाचार पत्र उपलब्ध नहीं है ।

जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न वर्षो में पत्रिका की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी संख्या 6·11 में किया गया है. :-

सारणी संख्या 6·11

विभिन्न वर्षो में प्रतिवादियों को पत्रिका की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अन्तराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1940-45	1	0·16
1945-50	2	0·32
1950-55	4	0·65
1955-60	5	0·81
1960-65	3	0·48
1965-70	8	1·29
1970-75	20	3·23
1975-80	31	5·00
1980-85	34	5·48
1985-90	15	2·42
1990 से अब तक	3	0·48
कुल उपलब्धता	126	20·32
अनुपलब्धता	494	79·68
योग	620	100·00

यह सारणी 6·11 प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षों में पत्रिका की उपलब्धता का विश्लेषण करती है । पत्रिका जनमाध्यम 126 §20·32 प्रतिशत प्रतिवादियों§ को उपलब्ध है । सारणी के विवरणानुसार 1 §0·16 प्रतिशत§, 2 §0·32 प्रतिशत§, 4 §0·65 प्रतिशत§, 5 §0·81 प्रतिशत§, 3 §0·48 प्रतिशत§, 8 §1·29 प्रतिशत§, 20 §3·23 प्रतिशत§, 31 §5 प्रतिशत§, 34 §5·48 प्रतिशत§, 15 §2·42 प्रतिशत§ एवं 3 §0·48 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को क्रमशः 1940-45, 1945-50, 1950-55, 1955-60, 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक पत्रिका की उपलब्धता है ।

जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षों में रेडियो जनमाध्यम की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी संख्या 6·12 में दिया गया है :-

सारणी संख्या 6·12

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को रेडियों की उपलब्धता का विवरण

वर्ष	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1945-50	1	0·16
1950-55	4	0·65
1955-60	4	0·65
1960-65	18	2·90
1965-70	8	1·29
1970-75	99	15·97
1975-80	203	32·74
1980-85	127	20·48
1985-90	39	6·29
1990 से अब तक	5	0·81
कुल उपलब्धता	508	81·94
अनुपलब्धता	112	18·06
योग	620	100·00

यह सारणी 6·12 विभिन्न केलेंडर वर्षो में जनपद के प्रतिवादियों को रेडियों जनमाध्यम की उपलब्धता का विश्लेषण करती है । जनपद के कुल 508 (81·94 प्रतिशत) प्रतिवादियों को रेडियों जनमाध्यम उपलब्ध है । सारणी के विवरणानुसार 1 (0·16 प्रतिशत), 4 (0·65 प्रतिशत), 4 (0·65 प्रतिशत), 18 (2·90 प्रतिशत), 8 (1·29 प्रतिशत), 99 (15·97 प्रतिशत), 203 (32·74 प्रतिशत),

127 §20·48 प्रतिशत§, 39 §6·29 प्रतिशत§ एवं 5 §0·81 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को क्रमशः 1945-50, 1950-55, 1955-60, 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक रेडियों जनमाध्यम उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक लगभग एक तिहाई प्रतिवादियों को वर्ष 1975-80 से रेडियों जनमाध्यम उपलब्ध हुआ । अभी जनपद के 112 §18·06 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को रेडियों जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है ।

जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न केलेंडर वर्षो में दूरदर्शन की उपलब्धता का विवरण निम्न सारणी 6·13 में दिया गया है :-

सारणी संख्या 6·13

विभिन्न वर्षो में प्रतिवादियों को दूरदर्शन की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अन्तराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1980-85	60	9·68
1985-90	184	29·68
1990 से अब तक	30	4·84
कुल उपलब्धता	274	44·20
अनुपलब्धता	346	55·80
योग	620	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न केलेंडर वर्षो में दूरदर्शन जनमाध्यम की उपलब्धता का विश्लेषण करती है । सारणी के अनुसार 274 §44·20 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को यह जनमाध्यम उपलब्ध है । सारणी के विवरणानुसार 60 §9·68

प्रतिशत§, 184 §29·68 प्रतिशत§, 30 §4·84 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को वर्ष 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक दूरदर्शन जनमाध्यम उपलब्ध है।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 29·68 प्रतिशत प्रतिवादियों को दूरदर्शन जनमाध्यम वर्ष 1985-90 से उपलब्ध हुआ । अब भी 346 §55·80 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को दूरदर्शन जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है ।

जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षों में पोस्टर एवं दीवार प्रिन्टिंग जनमाध्यम की उपलब्धता का विवरण निम्न सारणी संख्या 6·14 में दिया गया है:-

सारणी संख्या 6·14

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों के पोस्टर एवं दीवार प्रिन्टिंग की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अन्तराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1965-70	2	0·32
1970-75	4	0·65
1975-80	15	2·42
1980-85	16	2·58
1985-90	14	2·26
1990 से अब तक	4	0·65
कुल उपलब्धता	55	8·88
अनुपलब्धता	565	91·12
योग	620	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षों में पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिंग जनमाध्यम की उपलब्धता का विश्लेषण करती है । सारणी के विवरणानुसार 55 (8·88 प्रतिशत) प्रतिवादियों को पोस्टर एवं दीवार प्रिंटिंग जनमाध्यम उपलब्ध है । सारणी के विवरणानुसार 2 (0·32 प्रतिशत), 4 (0·65 प्रतिशत), 15 (2·42 प्रतिशत), 16 (2·58 प्रतिशत), 14 (2·26 प्रतिशत), 4 (0·65 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर जनमाध्यम उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक मात्र 7·26 प्रतिशत प्रतिवादियों को 1975-90 से दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर जनमाध्यम उपलब्ध हुआ । अब भी 565 (91·12 प्रतिशत) प्रतिवादियों को दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है ।

जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षों में चलचित्र जनमाध्यम की उपलब्धता का विवरण निम्न सारणी संख्या 6·15 में दिया गया है :-

सारणी संख्या 6·15

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को चलचित्र की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अन्तराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1960-65	2	0·32
1965-70	29	4·68
1970-75	90	14·52
1975-80	114	18·39
1980-85	93	15·00
1985-90	29	4·68
1990 से अब तक	-	
कुल उपलब्धता	357	57·59
अनुपलब्धता	263	42·41
योग	620	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों की विभिन्न कैलेंडर वर्षों में चलचित्र की उपलब्धता का विश्लेषण करती है । कुल 357 (57·59 प्रतिशत) प्रतिवादियों को चलचित्र जनमाध्यम उपलब्ध है । सारणी के विवरणानुसार 2 (0·32 प्रतिशत), 29 (4·68 प्रतिशत), 90 (14·52 प्रतिशत), 114 (18·39 प्रतिशत), 93 (15 प्रतिशत), 29 (4·68 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1960-65, 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक चलचित्र जनमाध्यम उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक लगभग एक तिहाई प्रतिवादियों को 1970-80 से चलचित्र जनमाध्यम उपलब्ध हुआ । चलचित्र जनमाध्यम 263 (42·41 प्रतिशत) प्रतिवादियों को उपलब्ध नहीं है ।

जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षो में पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य जनमाध्यम की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 6·16 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·16

विभिन्न वर्षो में प्रतिवादियों को पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य की, उपलब्धता का विवरण

वर्ष अन्तराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1950-55	21	3·39
1955-60	10	1·61
1960-65	36	5·81
1965-70	31	5·00
1970-75	72	11·61
1975-80	53	8·55
1980-85	40	6·45
1985-90	57	9·19
1990 से अब तक	11	1·77
कुल उपलब्धता	331	53·38
अनुपलब्धता	289	46·62
योग	620	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों को पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य जनमाध्यम की उपलब्धता का विश्लेषण करती है । सारणी के अनुसार कुल 331 (53·38 प्रतिशत) प्रतिवादियों को पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्ध है। सारणी के विवरणानुसार 21 (3·39 प्रतिशत), 10 (1·61 प्रतिशत), 36 (5·81 प्रतिशत), 31 (5 प्रतिशत), 72 (11·61 प्रतिशत), 53 (8·55 प्रतिशत), 40 (6·45 प्रतिशत), 57 (9·19 प्रतिशत) एवं 11 (1·77 प्रतिशत) प्रतिवादी क्रमशः वर्ष 1950-55, 1955-60, 60-65 1965-70, 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90, 90 तथा उसके बाद से पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक एक चौथाई से अधिक प्रतिवादियों को 1970-1985 के मध्य पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्ध है । यह जनमाध्यम 1970-75 के मध्य 11·61 प्रतिशत प्रतिवादियों के मध्य उपलब्ध है । यह जनमाध्यम अब भी 289 (46·62 प्रतिशत) प्रतिवादियों को उपलब्ध नहीं है ।

जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न कैलेंडर वर्षों में परिवार कल्याण केन्द्र की एक जनमाध्यम के रूप में उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 6·17 से किया गया है :-

सारणी संख्या 6·17

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को परिवार कल्याण केन्द्र की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अन्तराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1970-75	3	0·48
1975-80	15	2·42
1980-85	32	5·16
1985-90	36	5·81
1990 से अबतक	11	1·77
कुल उपलब्धता	97	15·64
अनुपलब्धता	523	84·36
योग	620	100·00

यह सारणी विभिन्न कैलेंडर वर्षों में परिवार कल्याण केन्द्र की एक जनमाध्यम के रूप में उपलब्धता का विश्लेषण करती है । सारणी के अनुसार 97 (15·64 प्रतिशत) प्रतिवादियों को परिवार कल्याण केन्द्र एक जनमाध्यम के रूप में उपलब्ध है । सारणी के विवरणानुसार 3 (0·48 प्रतिशत), 15 (2·42 प्रतिशत), 32 (5·16 प्रतिशत), 36 (5·81 प्रतिशत), 11 (1·77 प्रतिशत) प्रतिवादियों को वर्ष क्रमशः 1970-75, 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक यह जनमाध्यम उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 10·97 प्रतिशत प्रतिवादियों को वर्ष 1980-90 के मध्य यह जनमाध्यम उपलब्ध हुआ । यह जनमाध्यम अब भी 523 (84·36 प्रतिशत) प्रतिवादियों को उपलब्ध नहीं है।

जनपद के प्रतिवादियों का विभिन्न केलेंडर वर्षों में परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्रों की उपलब्धता का विश्लेषण निम्न सारणी 6·18 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·18

विभिन्न वर्षों में प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी देने वाले मित्रों की उपलब्धता का विवरण

वर्ष अन्तराल	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
1975-80	2	0·32
1980-85	18	2·90
1985-90	40	6·45
1990 से अब तक	14	2·26
कुल उपलब्धता	74	11·93
अनुपलब्धता	546	88·07
योग	620	100·00

यह सारणी 6·18 विभिन्न केलेंडर वर्षों में प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्रों की जनमाध्यम के रूप में उपलब्धता का विश्लेषण करती है ।

सारणी के विवरणानुसार कुल 74 (11·93 प्रतिशत) प्रतिवादियों को इस तरह के मित्र उपलब्ध हैं । सारणी के विवरणानुसार 2 (0·32 प्रतिशत), 18 (2·90 प्रतिशत), 40 (6·45 प्रतिशत) एवं 14 (2·26 प्रतिशत) प्रतिवादियों को क्रमशः 1975-80, 1980-85, 1985-90 एवं 1990 से अब तक परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी देने वाले मित्र, जनमाध्यम के रूप में उपलब्ध है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 6·45 प्रतिशत प्रतिवादियों को ऐसे मित्र वर्ष 1985-90 के मध्य उपलब्ध हुये । अब भी 546 (88·07 प्रतिशत) प्रतिवादी ऐसे हैं जिन्हें ऐसे मित्र जनमाध्यम के रूप में उपलब्ध नहीं है ।

जनपद के प्रतिवादियों द्वारा विभिन्न जनमाध्यमों पर प्रतिदिन दिये जाने वाले समय का विश्लेषण निम्न सारणी संख्या 6·19 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·19

प्रतिवादियों द्वारा प्रतिदिन विभिन्न जनमाध्यमों पर दिये गये समय का विवरण

समय (मिनट एवं घंटों में)	समाचार-पत्र संख्या (प्रतिवादी)	समाचार-पत्र प्रतिशत	पत्रिका संख्या (प्रतिवादी)	पत्रिका प्रतिशत	रेडियो संख्या (प्रतिवादी)	रेडियो प्रतिशत	दूरदर्शन संख्या (प्रतिवादी)	दूरदर्शन प्रतिशत
0-15 मिनट	144	23·33	8	1·29	52	8·39	27	4·35
15-30 मिनट	25	4·03	14	2·26	82	13·23	37	5·97
30 मिनट-1 घंटा	21	3·39	27	4·35	219	35·32	27	4·35
1 घंटा से अधिक	16	2·58	25	4·04	96	15·48	160	25·81
योग (प्रतिवादी जो समय देते हैं)	206	33·23	74	11·94	449	72·42	251	40·48
प्रतिवादी जो प्रतिदिन समय नहीं देते हैं।	42	6·77	52	8·39	59	9·52	22	3·55
प्रतिवादियों को विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता	248	40·00	126	20·33	508	81·94	273	44·03
प्रतिवादियों की सं0 जिन्हें उक्त जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है	372	60·00	494	79·67	112	18·06	347	55·97
कुल प्रतिवादी	620	100·00	620	100·00	620	100·00	620	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों द्वारा विभिन्न जनमाध्यमों पर एक दिन में दिये गये समय का विश्लेषण करती है । सारणी के विवरणानुसार 144 (23·23 प्रतिशत), 25 (4·03 प्रतिशत), 21 (3·39 प्रतिशत), 16 (2·58 प्रतिशत) प्रतिवादी समाचार पत्र पढ़ने में क्रमशः 0-15 मिनट, 15-30 मिनट, 30 मिनट से 1 घंटा एवं 1 घंटे से अधिक का समय देते हैं । 42 (6·77 प्रतिशत), प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध तो हैं किन्तु उस पर वह प्रतिदिन समय नहीं देते हैं । पत्रिका पढ़ने वालों में 8 (1·29 प्रतिशत), 14 (2·26 प्रतिशत), 27 (4·35 प्रतिशत), 25 (4·04 प्रतिशत) प्रतिवादी प्रतिदिन पत्रिका पढ़ने क्रमशः 0-15 मिनट, 15-30 मिनट, 30 मिनट से 1 घंटा एवं 1 घंटे से अधिक का समय देते हैं । 52 (8·39 प्रतिशत) प्रतिवादी पत्रिका पढ़ने पर प्रतिदिन समय नहीं देते हैं रेडियों के कार्यक्रम सुनने वालों में 52 (8·39 प्रतिशत), 82 (13·23 प्रतिशत), 219 (35·32 प्रतिशत), 96 (15·48 प्रतिशत) प्रतिवादी प्रतिदिन क्रमशः 0-15 मिमट, 15-30 मिनट, 30 मिनट से 1 घंटा एवं 1 घंटे से अधिक का समय देते हैं । 59 (9·52 प्रतिशत) प्रतिबादी रेडियों के कार्यक्रम सुनने में प्रतिदिन समय नहीं देते हैं । दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने वालों में 27 (4·35 प्रतिशत), 37 (5·97 प्रतिशत), 27 (4·35 प्रतिशत), 160 (25·81 प्रतिशत) प्रतिवादी प्रतिदिन दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने में क्रमशः 0-15 मिनट, 15-30 मिनट, 30 मिनट से 1 घंटा एवं 1 घंटा से अधिक का समय देते हैं । 22 (3·55 प्रतिशत) प्रतिवादी दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने में प्रतिदिन का समय नहीं देते हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि समाचार पत्र प्रतिदिन पढ़ने में सर्वाधिक 144 (23·23 प्रतिशत) प्रतिवादी 0-15 मिनट का समय देते हैं । पत्रिका पढ़ने में सर्वाधिक 27 (4·35 प्रतिशत) प्रतिवादी 30 मिनट से 1 घंटा का समय,

रेडियों के कार्यक्रम सुनने में सर्वाधिक 219 §35·32 प्रतिशत§ प्रतिवादी 30 मिनट से 1 घंटा तथा दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने वालों में सर्वाधिक 160 §25·81 प्रतिशत§ प्रतिवादी 1 घंटे से अधिक का समय देते हैं । इस तरह स्पष्ट है कि समाचार पत्र पढ़ने वाले अधिकांश प्रतिवादी इस पर बहुत कम 0-15 मिनट समय देते हैं जबकि पत्रिका पढ़ने वाले सर्वाधिक प्रतिवादी उस पर कुछ अधिक 30 मिनट से 1 घंटा का समय देते हैं । इसी तरह रेडियों के कार्यक्रम सुनने वाले प्रतिवादियों में सर्वाधिक उससे अधिक 30 मिनट से 1 घंटा का समय देते हैं तथा दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने वाले प्रतिवादियों में सर्वाधिक बहुत अधिक समय 1 घंटा से अधिक का देते हैं ।

जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता का विश्लेषण करने के पश्चात् प्रभावित प्रतिवादियों के जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् उनकी संतानोत्पत्ति, संतानोत्पत्ति अंतराल एवं उनकी संतानों की विवाह आयु का विश्लेषण किया जायेगा ।

जनपद के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् उत्पन्न की गयी संतानों का विश्लेषण निम्न सारणी 6·20 से स्पष्ट है :-

सारणी संख्या 6·20

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् उत्पन्न की गयी संतानों का विवरण

संतान संख्या	प्रतिवादी	प्रतिशत
1	68	23·78
2	77	26·92
3	121	42·31
4	15	5·24
5	4	1·40
6	1	0·35
योग	286	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् उत्पन्न की गयी संतानों का विश्लेषण करती है । सारणी के अनुसार कुल 286 प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् संतान उत्पन्न की गयी है । सारणी के विवरणानुसार 68 (23·78 प्रतिशत), 77 (26·92 प्रतिशत), 121 (42·31 प्रतिशत), 15 (5·24 प्रतिशत), 4 (1·40 प्रतिशत) तथा 1 (0·35 प्रतिशत) प्रतिवादियों ने क्रमशः 1,2,3,4,5 एवं 6 संतानें उत्पन्न की हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि 42·31 प्रतिशत या लगभग आधे प्रतिवादियों द्वारा 3 संतानें, जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात उत्पन्न की गयी है एक से तीन संतान उत्पन्न करने वाले प्रतिवादियों का प्रतिशत 93·01 है इस तरह जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् प्रतिवादियों ने पहले की अपेक्षा कम संतानोत्पत्ति की है। जनपद के प्रभावित प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात औसत 2·346 संतानें उत्पन्न की गयी हैं।

जनपद के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे गये समयातंराल को निम्न सारणी 6·21 में दिखाया गया है :-

सारणी संख्या 6·21

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् दो सन्तानों की उत्पत्ति के मध्य रखा गया समय अंतराल

संतानोत्पत्ति अंतराल (वर्ष में)	प्रतिवादियों द्वारा उत्पन्न संतान	प्रतिशत
1	332	45·23
2	251	34·20
3	112	15·26
4	30	4·09
5	9	1·22
योग	734	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों के जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे गये समय अंतराल का विश्लेषण करती है । सारणी के विवरणानुसार जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् प्रभावित प्रतिवादियों द्वारा कुल 734 संतान उत्पन्न की गयी है । सारणी के विवरणानुसार 332 {45·23 प्रतिशत}, 251 {34·20 प्रतिशत}, 112 {15·26 प्रतिशत}, 30 {4·09 प्रतिशत} एवं 9 {1·22 प्रतिशत} प्रतिवादियों ने दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य क्रमशः 1,2,3,4 एवं 5 वर्ष का समयातंराल रखा है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 79·43 प्रतिशत या तीन चौथाई से अधिक प्रतिवादियों ने दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य 1 से 2 वर्ष का समयावधि का अन्तराल रखा है । यह समयान्तराल प्रभावित होने के पूर्व के रखे गये समयान्तराल से अधिक है । जनपद के प्रभावित प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत 1·819 वर्ष का समयातंराल रखा गया है ।

जनपद के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात उनके लड़कों की विवाह के समय की आयु का विश्लेषण निम्न सारणी 6·22 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·22

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् लड़कों की विवाह के समय की आयु का विवरण

विवाह आयु (वर्षों में)	प्रतिवादियों के लड़कों की संख्या	प्रतिशत
15	57	17·87
16	45	14·11
17	75	23·51
18	82	25·71
19	32	10·03
20	26	8·15
21	1	0·31
23	1	0·31
योग	319	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात्, उनके लड़कों के विवाह के समय की आयु का विश्लेषण करती है।

सारणी के विवरणानुसार प्रतिवादियों ने अपने 57 (17·87 प्रतिशत), 45 (14·11 प्रतिशत), 75 (23·51 प्रतिशत), 82 (25·71 प्रतिशत), 32 (10·03 प्रतिशत), 26 (8·15 प्रतिशत), 1 (0·31 प्रतिशत) एवं 1 (0·31 प्रतिशत) लड़कों का विवाह उनकी आयु क्रमशः 15,16,17,18,19, 20,21, एवं 23 वर्ष में किया है ।

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों द्वारा उनकी लड़कियों की विवाह के समय की आयु का विश्लेषण करती है । सारणी के विवरणानुसार 54 §16·22 प्रतिशत§, 51 §15·32 प्रतिशत§, 127 §38·14 प्रतिशत§, 49 §14·71 प्रतिशत§, 49 §14·71 प्रतिशत§ एवं 3 §0·90 प्रतिशत§ प्रतिवादियों की लड़कियों का विवाह उनकी आयु क्रमशः 14,15,16,17,18,19 वर्षों में हुआ ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक एक तिहाई से अधिक लड़कियों का विवाह 16 वर्ष की आयु में हुआ । जो कि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व अप्रभावित अवस्था की विवाह आयु से अधिक है । जनपद के प्रभावित प्रतिवादियों का जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् उनके लड़कियों के विवाह के समय की आयु का औसत 15·991 वर्ष रहा है ।

प्रतिवादियों की जनमाध्यमों से प्रभावित होंने के पश्चात् की स्थिति या उनके प्रेरित होने की स्थिति काअध्ययन करने के पश्चात् अब प्रतिवादियों के वर्तमान समय में उपयुक्त परिवार आकर, विवाह एवं प्रथम संतान की उत्पत्ति के मध्य उपयुक्त समय अंतराल, दो संतानों केक उत्पत्ति के मध्य उपयुक्त समयातंराल उपयुक्त विवाह आयु एवं उपयुकत जनमाध्यम संबंधी विचारों का अध्ययन किया जायेगा।

जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में उपयुक्त परिवार आकार §संतान संख्या§ पर उनके विचारों का विवरण निम्न सारणी 6·24 में दिया गया है :-

सारणी संख्या 6·24

प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में उपयुक्त परिवार आकार

संतान संख्या	प्रभावित प्रतिवादी संख्या	प्रभावित प्रतिवादी प्रतिशत	अप्रभावित प्रतिवादी संख्या	अप्रभावित प्रतिवादी प्रतिशत	योग प्रतिवादी संख्या	योग प्रतिवादी प्रतिशत
1	82	13·23	3	0·48	85	13·71
2	101	16·29	5	0·81	106	17·10
3	97	15·65	9	1·45	106	17·10
4	136	21·93	13	2·10	149	24·03
5	41	6·61	61	9·84	102	16·45
6	25	4·03	32	5·16	57	9·19
7	2	0·32	13	2·10	15	2·42
योग	484	78·06	136	21·94	620	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में एक परिवार में उपयुक्त संतानों की संख्या पर उनके विचारों का विश्लेषण करती है । सारणी के विवरणानुसार 85 §13·71 प्रतिशत§, 106 §17·10 प्रतिशत§, 106 §17·10 प्रतिशत§, 149 §24·03 प्रतिशत§, 102 §16·45 प्रतिशत§, 57 §9·19 प्रतिशत§ एवं 15 §2·42 प्रतिशत§ प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में एक परिवार में उपर्युक्त क्रमशः 1,2,3,4,5,6 एवं 7 संतानें होनी चाहिए ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक लगभग एक चौथाई प्रतिवादियों की दृष्टि में एक परिवार में 4 संतान का होना उपयुंक्त है । किन्तु 47·91 प्रतिशत

या लगभग आधे प्रतिवादी 1 से 3 संतान का एक परिवार में होना उपयुक्त मानते हैं । उनका यह विचार परिवर्तन का द्योतक है क्योंकि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व उनके द्वारा अधिक संतान उत्पन्न की गयी थी । प्रभावित एवं अप्रभावित प्रतिवादियों के दृष्टिकोण में वर्तमान समय में एक परिवार में औसत क्रमशः 3·074 तथा 5 संतानें उपयुक्त हैं । जनपद के कुल प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में एक परिवार में औसत 3·497 संताने उपयुक्त हैं ।

जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में विवाह के पश्चात् एवं प्रथम संतान की उत्पत्ति के मध्य उपयुक्त समयातंराल पर उनके विचारों-विश्लेषण निम्न सारणी 6·25 से किया गया है :-

सारणी संख्या 6·25

प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में विवाह के पश्चात् एवं प्रथम सन्तान की उत्पत्ति के मध्य उपयुक्त समयान्तराल

समय अन्तराल	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		योग प्रतिवादी	
(वर्ष में)	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	282	45·49	117	18·87	399	64·36
2	125	20·16	12	1·94	137	22·10
3	72	11·61	7	1·13	79	12·74
4	3	0·48			3	0·48
5	2	0·32			2	0·32
योग	484	78·06	136	21·94	620	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में, विवाह के पश्चात् प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखे जाने वाले समय अंतराल पर उनके विचारों का विश्लेषण करती है । सारणी के विवरणानुसार 399 §64·36 प्रतिशत§, 137 §22·10 प्रतिशत§, 79 §12·74 प्रतिशत§, 3 §0·48 प्रतिशत§ एवं 2 §0·32 प्रतिशत§ प्रतिवादियों की दृष्टि में विवाह के पश्चात्, प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य रखा जाने वाला उपयुक्त समयातंराल क्रमशः 1,2,3,4 एवं 5 वर्ष है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक लगभग दो तिहाई प्रतिवादी अभी 1 वर्ष का समयातंराल विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति को मध्य उपयुक्त मानते हैं । किन्तु जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व के 1 वर्ष का समयातंराल रखने वाले प्रतिवादियों के प्रतिशत से, वर्तमान समय में 1 वर्ष के समयातंराल का विचार रखने वाले प्रतिवादियों का प्रतिशत कम है । प्रभावित एवं अप्रभावित प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में विवाह के पश्चात् एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य उपयुक्त समयांतराल का औसत क्रमशः 1·591 तथा 1·191 वर्ष है । जनपद के कुल प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में इसी का उपयुक्त समयातंराल का औसत 1·503 वर्ष है ।

जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे जाने वाले समयातंराल पर उनके विचारों को निम्न सारणी 6·26 में दिखाया गया है :-

सारणी संख्या 6·26

प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में दो सन्तानों की उत्पत्ति के मध्य उपयुक्त समयान्तराल

सन्तानोत्पत्ति अन्तराल §वर्ष में§	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		योग प्रतिवादी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	166	26·77	86	13·87	252	40·64
2	237	38·22	36	5·81	273	44·03
3	69	11·13	6	0·97	75	12·10
4	8	1·29	8	1·29	16	2·58
5	4	0·65			4	0·65
योग	484	78·06	136	21·94	620	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे जाने वाले समयातंराल पर उनके विचारों का विवरण प्रस्तुत करती है। सारणी के विवरणानुसार 252 §40·64 प्रतिशत§, 273 §44·03 प्रतिशत§, 75 §12·10 प्रतिशत§, 16 §2·58 प्रतिशत§, 4§0·65 प्रतिशत§ प्रतिवादियों की दृष्टि में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे जाने वाला समयातंराल क्रमशः 1,2,3,4 एवं 5 वर्ष उपयुक्त है।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 44·03 प्रतिशत या आधे से कुछ कम प्रतिवादी दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य दो वर्ष का समयातंराल उपयुक्त मानते हैं। जो कि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे गये समयातंराल से अधिक है। प्रभावित एवं अप्रभावित प्रतिवादियों

की दृष्टि में वर्तमान समय में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य उपयुक्त समयातंराल का औसत क्रमशः 1·857 तथा 1·529 वर्ष है, जबकि कुल प्रतिवादियों की दृष्टि में इसी समयातंराल का उपयुक्त औसत 1·785 वर्ष है ।

जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में लड़कों की उपयुक्त विवाह आयु पर उनके विचारों का विश्लेषण निम्न सारणी 6·27 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·27

प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में लड़कों के विवाह के समय की उपयुक्त विवाह आयु

विवाह आयु	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		योग प्रतिवादी	
(वर्ष में)	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
15	18	2·90	34	5·48	52	8·38
16	12	1·94	39	6·29	51	8·23
17	24	3·87	20	3·23	44	7·10
18	122	19·68	32	5·16	154	24·84
19	60	9·68	8	1·29	68	10·97
20	132	21·29	3	0·48	135	21·77
21	78	12·58			78	12·58
22	15	2·42			15	2·42
23	16	2·58			16	2·58
26	7	1·13			7	1·13
योग	484	78·07	136	21·93	620	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कों के लिए उपयुक्त विवाह आयु पर उनके वर्तमान विचारों का विश्लेषण करती है । सारणी के विवरणानुसार 52 (8·38 प्रतिशत), 51 (8·23 प्रतिशत), 44 (7·10 प्रतिशत), 154 (24·84 प्रतिशत), 68 (10·97 प्रतिशत), 135 (21·77 प्रतिशत), 78 (12·58 प्रतिशत), 15 (2·42 प्रतिशत), 16 (2·58 प्रतिशत) एवं 7 (1·13 प्रतिशत) प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कों की विवाह के समय उपयुक्त आयु क्रमशः 15,16,17,18,19,20,21,22,23 एवं 26 वर्ष होनी चाहिए ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक लगभग एक चौथाई प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कों की विवाह के समय उपयुक्त आयु 18 वर्ष होनी चाहिए । जबकि 57·58 प्रतिशत प्रतिवादी लड़कों के विवाह के लिए 18 से 20 वर्ष की आयु उपयुक्त मानते हैं । प्रभावित एवं अप्रभावित प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में लड़कों की उपयुक्त विवाह आयु का औसत क्रमशः 19·347 तथा 16·632 वर्ष है, जबकि जनपद के कुल प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कों की उपयुक्त विवाह आयु का औसत 18·752 वर्ष है । इस तरह लड़कों के विवाह आयु के सबंध में उनके विचारों में परिवर्तन हुआ है ।

जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में लड़कियों के विवाह की उपयुक्त आयु पर उनके विचारों का विश्लेषण निम्न सारणी 6·28 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·28

प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में लड़कियों की विवाह के समय की उपयुक्त विवाह आयु

विवाह आयु	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		योग प्रतिवादी	
(वर्षों में)	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
14	20	3·23	38	6·13	58	9·35
15	28	4·52	42	6·77	70	11·29
16	22	3·55	14	2·26	36	5·81
17	209	33·71	27	4·35	236	38·06
18	84	13·55	8	1·29	92	14·84
19	41	6·61	7	1·12	48	7·74
20	40	6·45			40	6·45
21	28	4·52			28	4·52
22	5	0·81			5	0·81
23	7	1·13			7	1·13
योग	484	78·08	136	21·92	620	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कियों के लिए उपयुक्त विवाह आयु के संबंध में उनके वर्तमान विचारों का विश्लेषण करती है । सारणी के विवरणानुसार 58 (9·35 प्रतिशत), 70 (11·29 प्रतिशत), 36 (5·81 प्रतिशत), 236 (38·06 प्रतिशत), 92 (14·84 प्रतिशत), 48 (7·74 प्रतिशत), 40 (6·45 प्रतिशत), 28 (4·52 प्रतिशत), 5 (0·81 प्रतिशत) एवं 7 (1·13 प्रतिशत) प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कियों के लिए उपयुक्त

विवाह आयु क्रमशः 14,15,16,17,18,19,20,21,22 एवं 23 वर्ष होनी चाहिये ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक एक तिहाई से अधिक प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कियों के लिए उपयुवत विवाह आयु 17 वर्ष है । इसी तरह 60·64 प्रतिशत प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कियों के विवाह के लिए उपयुक्त विवाह आयु 17 से 19 वर्ष है । प्रभावित एवं अप्रभावित प्रतिवादियों लड़कियों की विवाह आयु का उपयुक्त औसत 17,676 एवं 15·603 वर्ष है । जबकि जनपद में कुल प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में लड़कियों की विवाह आयु का उपयुक्त औसत 17·221 वर्ष है ।

जनपद के प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में परिवार नियोजन का सर्वाधिक उपयुक्त साधन का विश्लेषण निम्न सारणी 6·29 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·29

प्रतिवादियों की दृष्टि में सर्वाधिक उपयुक्त परिवार नियोजन का साधन

परिवार नियोजन के साधन	पुरुष		स्त्री		योग	
1· आत्मसंयम	182	29·35%	130	20·97%	312	50·32%
2· नसबन्दी	18	2·90%	11	1·78%	29	4·68%
3· निरोध	162	26·13*			162	26·13%
4· कापरटी			15	2·42%	15	2·42%
5· लूप			12	1·93%	12	1·93%
6· खाने वाली गोलियाँ			58	9·35%	58	9·35%
7· सुरक्षित काल			32	5·16%	32	5·16%
	362	58·38%	258	41·61%	620	99·99 या 100·00

सारणी के अनुसार कुल प्रतिवादियों में 182 (29·35 प्रतिशत), 18 (2·90 प्रतिशत) तथा 162 (26·13 प्रतिशत) पुरूष प्रतिवादियों की दृष्टि में परिवार नियोजन का सर्वाधिक उपयुक्त साधन क्रमशः आत्म संयम, नसबन्दी एवं निरोध है । इसी तरह कुल प्रतिवादियों में 130 (20·97 प्रतिशत), 11(1·78 प्रतिशत,) 15 (2·42 प्रतिश्त), 12 (1·93 प्रतिशत), 58 (9·35 प्रतिशत) एवं 32 (5·16 प्रतिशत) महिला प्रतिवादियों की दृष्टि में परिवार नियोजन का सर्वाधिक उपयुक्त साधन क्रमशः आत्मसंयम, नसबन्दी, निरोध, कापरटी, लूप, खाने वाली गोलियां एवं सुरक्षित काल है । कुल प्रतिवादियों की दृष्टि में 312 (50·32 प्रतिशत), 29 (4·68 प्रतिशत), 162 (26·13 प्रतिशत), 15 (2·42 प्रतिशत), 12 (1·93 प्रतिशत), 58 (9·35 प्रतिशत) एवं 32 (5·16 प्रतिश्त) प्रतिवादी परिवार नियोजन का सर्वाधिक उपयुक्त साधन क्रमशः आत्म संयम, नसबन्दी, निरोध, कापरटी, लूप, खाने वाली गोलियां एवं सुरक्षित काल को मानते हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक आधे से अधिक प्रतिवादी अभी आत्म संयम को ही परिवार नियोजन का सर्वाधिक उपयुक्त साधन मानते हैं । एक चौथाई से अधिक प्रतिवादियों की दृष्टि में परिवार नियोजन का द्वितीय सर्वाधिक उपयुक्त साधन निरोध है । नसबन्दो को परिवार नियोजन का उपयुक्त साधन मानने वाले प्रतिवादी मात्र 4·68 प्रतिशत है । इस तरह अधिकांशतः प्रतिवादियों की दृष्टि में नसबन्दी परिवार नियोजन का उपयुक्त साधन नहीं है ।

जनपद के प्रतिवादियों को सर्वाधिक उपयुक्त परिवार नियोजन के साधन की जानकारी देने वाले विभिन्न जनमाध्यमों का विवरण निम्न सारणी 6·30 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·30

प्रतिवादियों को उपर्युक्त परिवार नियोजन के साधन की जानकारी कराने वाले जनमाध्यम

परिवार नियोजन के साधन	समाचार पत्र	पत्रिका	रेडियो	दूरदर्शन	दीवार प्रिन्टिंग एवं पोस्टर	चलचित्र	परिवार कल्याण केन्द्र	मित्र	योग
	सं0/प्रतिशत	सं0/प्रतिशत	सं0/प्रति	सं0/प्रति·	सं·/प्रति·	सं0/प्रति0	सं0/प्रति0	सं0/प्रति0	सं0/प्रति·
आत्म संयम	85 (13·71%)	22 (3·55%)	95 (15·32%)	55 (8·87)		55 (8·87)			312 (50·32)
नसबन्दी	5 (0·81)		4 (0·65)	18 (2·90)		2 (0·32)			29 (4·68)
निरोध	51 (8·23)	30 (4·84)	32 (5·16)	29 (4·68)	5 (0·80)	15 (2·42)			162 (26·13)
कापरटी	4 (0·65)		3 (0·48)	6 (0·97)		2 (0·32)			15 (2·42)
लूप		8 (1·29)		3 (0·48)		1 (0·16)			12 (1·93)
खाने वाली गोलियां	10 (1·61)	14 (2·25)		7 (1·13)			1 (0·16)	26 (4·19)	58 (9·35)
सुरक्षित काल		5 (0·81)					3 (0·48)	24 (3·87)	32 (5·16)
योग	155 (25·0)	79 (12·74)	134 (21·61)	118 (19·03)	5 (0·80)	75 (12·10)	4 (0·64)	50 (18·04)	620 99·99 या 100%

सारणी के अनुसार कुल प्रतिवादियों में 85 §13·71 प्रतिशत§, 5 §0·81 प्रतिशत§, 51 §8·23 प्रतिशत§, 4 §0·65 प्रतिशत§ एवं 10 §1·61 प्रतिशत§ को समाचार पत्र जनमाध्यम से परिवार नियोजन के क्रमशः आत्म संयम, नसबन्दी, निरोध, कापर टी, लूप, खाने वाली गोलियां एवं सुरक्षित काल साधन की जानकारी प्राप्त हुई । इसी तरह 22 §3·55 प्रतिशत§, 30 §4·84 प्रतिशत§, 8 §1·29 प्रतिश्त§, 14 §2·25 प्रतिशत§, 5 §0·81 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को पत्रिका जनमाध्यम से परिवार नियोजन के क्रमशः आत्मसंयम, निरोध, लूप, खाने वाली गोलियां एवं सुरक्षित काल साधन की जानकारी प्राप्त हुई । इसी तरह 95 §15·32 प्रतिशत§, 4 §0·65 प्रतिशत§, 32 §5·16 प्रतिशत§, 3 §0·48 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को रेडियों जनमाध्यम से परिवार नियोजन के क्रमशः आत्मसंयम, नसबन्दी, निरोध एवं कापर टी साधन की जानकारी प्राप्त हुई । इसी तरह 55 §8·87 प्रतिशत§, 18 §2·90 प्रतिशत§, 2,9 §4·68 प्रतिशत§, 6 §0·97 प्रतिशत§, 3 §0·48 प्रतिशत§ एवं 7 §1·13 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को दूरदर्शन जनमाध्यम से परिवार नियोजन के क्रमशः आत्मसंयम, नसबन्दी, निरोध, कापर टी, लूप, खाने वाली गोलियां, साधन की जानकारी प्राप्त हुई । 5 § §0·80 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर से निरोध साधन की जानकारी प्राप्त हुई । इसी तरह 55 §8·87 प्रतिशत§, 2 §0·32 प्रतिशत§, 15 §2·42 प्रतिशत§, 2 §0·32 प्रतिशत§ एवं 1 §0·16 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को चलचित्र जनमाध्यम से परिवार नियोजन के क्रमशः आत्मसंयम, नसबन्दी, निरोध, कापर टी, लूप एवं खाने वाली गोलियां साधन की जानकारी प्राप्त हुई । परिवार कल्याण केन्द्र जनमाध्यम से 1 §0·16 प्रतिशत§, 3 §0·48 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को क्रमशः खाने वाली गोलियां एवं सुरक्षित काल साधन की जानकारी प्राप्त हुई मित्रों से 26 §4·19 प्रतिशत§, 24 §3·87 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को क्रमशः खाने वाली गोलियां एवं सुरक्षित काल साधन की जानकारी प्राप्त हुई । कुल प्रतिवादियों

में 155 §25·01 प्रतिशत§, 79 §12·74 प्रतिशत§, 134 §21·61 प्रतिशत§, 118 §19·03 प्रतिशत§, 5 §0·80 प्रतिशत§, 75 §12·10 प्रतिशत§, 4 §0·64 प्रतिशत§ एवं 50 §8·06 प्रतिशत§ प्रतिवादियों को विभिन्न परिवार नियोजन के साधन की जानकारी क्रमशः समाचार पत्र, पत्रिका, रेडियों, दूरदर्शन, दीवार प्रिटिंग एवं पोस्टर, चलचित्र, परिवार कल्याण केन्द्र एवं मित्रों से हुई । सारणी से स्पष्ट है कि परिवार नियोजन के साधन की जानकारी देने में सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम समाचार पत्र रहा जिससे लगभग एक चौथाई प्रतिवादियों को जानकारी प्राप्त हुई ।

जनपद के प्रतिवादियों को विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता में कठिनाई का विश्लेषण निम्न सारणी 6·31 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·31

प्रतिवादियों को विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता में कठिनाई का विवरण

जनमाध्यम	आर्थिक कारण		क्षेत्र में उपलब्ध न होना		संयोगवश		विद्युत का ना होना		अशिक्षा		योग	
	प्रतिवादियों को उपलब्धता में कठिनाई प्रतिवादियों की संख्या एवं प्रतिशत											
समाचार पत्र	130	34·95	88	23·66	2	0·53			152	40·86	372	100·00
पत्रिका	182	36·84	124	25·10					188	38·06	494	100·00
रेडियो	102	91·07					10	8·93			112	100·00
दूरदर्शन	278	80·35	15	4·34			53	15·31			346	100·00
चलचित्र	78	29·66	185	70·34							263	100·00
दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर			380	67·26	25	4·42			160	28·32	565	100·00
पारंपरिक लोक-गीत एवं नृत्य	62	21·45	122	42·22	105	36·33					289	100·00
परिवार कल्याण केन्द्र			373	71·32	138	26·39			12	2·29	523	100·00
परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्र			51	9·34	495	90·66					546	100·00
योग	832		1338		765		63		512		3510	

सारणी के अनुसार जिन्हें समाचार पत्र जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है उनमें 130 §34·95 प्रतिशत§, 88 §23·66 प्रतिशत§, 2 §0·53 प्रतिशत§ तथा 152 §40·86 प्रतिशत§ प्रतिवादी समाचार पत्रों की उपलब्धता में कठिनाई का क्रमशः आर्थिक कारण, क्षेत्र में उपलब्ध न होना, संयोगवश, विद्युत का न होना एवं अशिक्षा को कारण मानते हैं । इसी तरह जिन्हें पत्रिका जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है उनमें 182 §36·84 प्रतिशत§, 124 §25·10 प्रतिशत§, 188 §38·06 प्रतिशत§प्रतिवादी, उपलब्धता में कठिनाई का क्रमशः आर्थिक कारण, क्षेत्र में उपलब्ध न होना, संयोगवश, विद्युत का न होना एवं अशिक्षा को कारण मानते हैं । इसी तरह जिन प्रतिवादियों को रेडियो जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है उनमें 102 §91·07प्रतिशत§, 10 §8·93 प्रतिशत§ प्रतिवादी, उपलब्धता में कठिनाई का कारण क्रमशः आर्थिक कारण एवं विद्युत का न होना मानते हैं इसी तरह जिन प्रतिवादियों को दूरदर्शन जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है उनमें 278 §80·35 प्रतिशत§, 15 §4·34 प्रतिशत§, 53 §15·31 प्रतिशत§ प्रतिवादी, उपलब्धता में कठिनाई का क्रमशः आर्थिक कारण, क्षेत्र में उपलब्धता न होना एवं विद्युत का न होना कारण मानते हैं । इसी तरह जिन प्रतिवादियों को चलचित्र जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है उनमें 78 §29·66 प्रतिशत§, 185 §70·34 प्रतिशत§ प्रतिवादी न उपलब्धता का कारण क्रमशः आर्थिक एवं क्षेत्र में उपलब्ध न होना मानते हैं । इसी तरह जिन्हें दीवार प्रिन्टिग एवं पोस्टर जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है उनमें 380 §67·26 प्रतिशत§, 25 §4·42 प्रतिशत§, 160 §28·32 प्रतिशत§ प्रतिवादी क्रमशः क्षेत्र में उपलब्धता, संयोगवश एवं अशिक्षा को कारण मानते हैं । जिन प्रतिवादियों को पारंपरिक लोक गीत एवं नृत्य जनमाध्यम उपलब्ध नहीं है उनमें 62 §21·45 प्रतिशत§, 122 §§42·22 प्रतिशत§, 105 §36·33 प्रतिशत§, प्रतिवादी उपलब्धता का कारण क्रमशः आर्थिक, क्षेत्र में उपलब्ध न होना एवं संयोगवश मानते हैं । जिन प्रतिवादियों को परिवार कल्याण केन्द्र की एक जनमाध्यम के रूप में उपलब्धता नहीं है उनमें 373 §71·32 प्रतिशत§, 138 §26·39 प्रतिशत§ एवं 12 §2·29 प्रतिशत§,

प्रतिवादी न उपलब्धता का कारण क्रमशः क्षेत्र में उपलब्ध न होना, संयोगवश एवं अशिक्षा मानते हैं । जिन प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्रों की उपलब्धता नहीं है उनमें 51 (9·34 प्रतिशत), 495 (90·66 प्रतिशत) प्रतिवादी, न उपलब्धता का कारण क्रमशः क्षेत्र में न होना एवं संयोगवश मानते हैं । सारणी से स्पष्ट है कि विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता में कठिनाई का प्रमुख कारण क्षेत्र में उपलब्ध न होना एवं आर्थिक कारण है ।

जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में जनमाध्यमों के छोटा परिवार आकार रखने में प्रभावी होने में बाधक कारणों का विश्लेषण निम्न सारणी 6·32 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·32

प्रतिवादियों की दृष्टि में जनमाध्यमों के प्रभावी होने में बाधक कारण

कारण	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
भाषा की समस्या	345	55·65
साम्प्रदायिक केन्द्र का अभाव	122	19·68
कार्यक्रमों की नीरसता	82	13·23
कार्यक्रमों का उपयुक्त समय न होना	27	4·35
सरकारी कर्मचारियों की उदासीनता	44	7·09
योग	620	100·00

सारणी के विवरणानुसार 345 (55·65 प्रतिशत), 122 (19·68 प्रतिशत) 82 (13·23 प्रतिशत), 27 (4·35 प्रतिशत) एवं 44 (7·09 प्रतिशत), प्रतिवादी जनमाध्यमों के प्रभावी होने में क्रमशः भाषा की समस्या (जैसे अंग्रेजी का अधिक प्रयोग होना), सामुदायिक केन्द्र का अभाव, कार्यक्रमों की नीरसता, कार्यक्रमों के समय का उपयुक्त एवं उचित न होना एवं सरकारी कर्मचारियों की उदासीनता मानते हैं ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक आधे से अधिक प्रतिवादी जनमाध्यमों की प्रभाविकता में प्रमुख कारण भाषा की समस्या (अंग्रेजी का कार्यक्रमों में अधिक प्रयोग होना) मानते हैं ।

प्रतिवादियों के अनुसार जनमाध्यमों द्वारा छोटा परिवार आकार जनसामान्य तक स्वीकार कराने एवं प्रभावी बनाने हेतु, सुझावों का विश्लेषण निम्न सारणी 6·33 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·33

प्रतिवादियों के अनुसार जनमाध्यमों को प्रभावी बनाने हेतु सुझाव

सुझाव	प्रतिवादियों की संख्या	प्रतिशत
कार्यक्रमों का हिन्दी में होना	318	51·29
सामुदायिक केन्द्र एवं उनमें कार्यक्रम उपलब्ध कराना	120	19·35
कार्यक्रमों हेतु अधिक एवं उपयुक्त समय होना	88	14·19
सरकारी कर्मचारियों को गतिशील बनाना	22	3·55
कार्यक्रम अधिक रूचिकर एवं मनोरंजनदायक बनाना	72	11·61
योग	620	99·99 या 100·00

सारणी के विवरणानुसार 318 (51·29 प्रतिशत), 120 (19·35 प्रतिशत), 88 (14·19 प्रतिशत), 22 (3·55 प्रतिशत) एवं 72 (11·61 प्रतिशत) प्रतिवादी जनमाध्यमों से छोटा परिवार आकार अपनाने हेतु उन्हें प्रभावी बनाने के लिए क्रमशः कार्यक्रमों का हिन्दी में होना, सामुदायिक केन्द्र एवं उनमें कार्यक्रम उपलब्ध कराना, कार्यक्रमों हेतु अधिक एवं उपयुक्त समय रखना, सरकारी कर्मचारियों को गतिशील बनाना तथा कार्यक्रम को अधिक रूचिकर एवं मनोरंजन दायक बनाने का सुझाव दिया है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक आधे से अधिक प्रतिवादी कार्यक्रमों का हिन्दी में होना, अधिक उपयुक्त मानते हैं ।

जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू करने में वर्तमान समय में सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम का विश्लेषण निम्न सारणी 6·34 में किया गया है :-

सारणी संख्या 6·34

प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में परिवार कल्याण कार्यक्रम के लिए सर्वाधिक उपयुक्त प्रभावी जनमाध्यम

जनमाध्यम	प्रभावित प्रतिवादी		अप्रभावित प्रतिवादी		योग प्रतिवादी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
समाचार पत्र	28	4·52	3	0·48	31	5·00
पत्रिका	16	2·58	-	-	16	2·58
रेडियो	57	9·19	42	6·77	99	15·96
दूरदर्शन	284	45·81	86	13·87	370	59·68
दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर	15	2·42	-	-	15	2·42
चलचित्र	34	5·48	4	0·65	38	6·13
पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य	28	4·52	1	0·16	29	4·68
परिवार कल्याण केन्द्र	22	3·55	-	-	22	3·55
योग	484	78·07	136	21·93	620	100·00

यह सारणी जनपद के प्रतिवादियों की दृष्टि में, परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू करने में सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम पर उनके वर्तमान विचारों का विश्लेषण करती है । सारणी के विवरणानुसार 31 (5 प्रतिशत), 16 (2·58 प्रतिशत), 99 (15·96 प्रतिशत), 370 (59·68 प्रतिशत), 15 (2·42 प्रतिशत), 38 (6·13 प्रतिशत), 29 (4·68 प्रतिशत) एवं 22 (3·55 प्रतिशत) प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में परिवार कल्याण कार्यक्रम को लागू कराने में सर्वाधिक उपयुक्त प्रभावी जनमाध्यम क्रमशः समाचार-पत्र, पत्रिका, रेडियो, दूरदर्शन, दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर, चलचित्र, पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य तथा परिवार कल्याण केन्द्र है ।

सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 59·68% या लगभग दो तिहाई प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम दूरदर्शन है ।

जनमाध्यमों के विभिन्न उपकरणों में विज्ञापन, लेख तथा फोटो फीचर में जनपद के विभिन्न प्रतिवादियों की दृष्टि में 36·36 प्रतिशत प्रतिवादी विज्ञापन को, 19·42 प्रतिशत प्रतिवादी लेख को तथा 44·22प्रतिशत प्रतिवादी फोटो फीचर को सर्वाधिक प्रभावी मानते हैं । निष्कर्षतः अधिकांश प्रतिवादी फोटो फीचर को ही सर्वाधिक प्रभावी उपकरण मानते हैं ।

6.2 जनपद : परिवार आकार निर्धारण में जनमाध्यमों की भूमिका -

(District : The Role of Mass-Media in family size determination)

जनपद के सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्षो का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि परिवार आकार को छोटा रखने के लिए जनमाध्यमों ने ही लोगों को प्रभावित किया, अधिकांश: 78·07 प्रतिशत प्रतिवादी ऐसे हैं जो कि परिवार आकार छोटा रखने हेतु विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित हुये ।

जनमाध्यमों से प्रभावित हुये प्रतिवादियों का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि इन प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व औसत 3·605 संतान उत्पन्न की जबकि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात इन्हीं प्रतिवादियों द्वारा औसत 2·346 संतान उत्पन्न की गयी तथा वर्तमान समय में इन्हीं प्रतिवादियों की दृष्टि में एक परिवार में उपयुक्त संतान की संख्या का औसत 3·074 संतान है । विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य इन्हीं प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व औसत 1·167 वर्ष का समयातंराल रखा था, वहीं अब उनका इसी समयातंराल के लिए विचारों का औसत 1·591 वर्ष है । इसी तरह जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत 1·621 वर्ष का समयातंराल रखा, वहीं जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात इसी के लिए औसत 1·819 वर्ष का समयातंराल रखा तथा वर्तमान समय में इसी समयातंराल के लिए इनका वर्तमान विचारों में औसत 1·857 वर्ष है । इन प्रतिवादियों द्वारा जहां जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व अपने लड़कों का विवाह उनकी औसत 17·741 वर्ष की आयु में किया था वही जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात अपने लड़कों का विवाह उनकी औसत 17·235 वर्ष की आयु में किया तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में लड़कों के लिए उपयुक्त विवाह आयु का औसत 19·347 वर्ष है । इन्हीं प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व अपनी लड़कियों का विवाह उनकी औसत 16·915 वर्ष की आयु में किया गया, वहीं जनमाध्यमों से प्रभावित होने के

पश्चात अपनी लड़कियों का विवाह उनकी औसत 15·991 वर्ष की आयु में किया गया तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में लड़कियों के विवाह की उपयुक्त आयु का औसत 17·676 वर्ष है ।

इस तरह जनमाध्यमों की प्रभावपूर्ण भूमिका के कारण ही परिवार आकार छोटा रखने के लिए प्रभावित प्रतिवादियों ने जहां संतानों की संख्या में कमी की, संतानोपत्ति समयातंराल में वृद्वि की तथा अपनी संतानो का विवाह पहले की अपेक्षा अधिक आयु में किया, वहीं उनके वर्तमान विचारों में परिवर्तन भी इसी दिशा में हुआ । इस तरह परिवार आकार छोटा रखने के लिए प्रतिवादियों पर जनमाध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी ।

किन्तु जब हम जनपद के जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों पर दृष्टि डालते हैं तो स्पष्ट है कि इन प्रतिवादियों द्वारा जहां पहले अप्रभावित अवस्था में औसत 5·079 संतान उत्पन्न की थी, वहीं उनके वर्तमान विचारों के अनुसार एक परिवार में औसत उपयुक्त संतान संख्या 5 संतान है । इसी तरह इन्हीं प्रतिवादियों ने जहां अप्रभावित अवस्था में विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य औसत 1·173 वर्ष का समयातंराल रखा था, वहीं वर्तमान समय में उनके विचारों के अनुसार इसी के लिए उपयुक्त समयातंराल का औसत 1·191 वर्ष है । अप्रभावित रहे प्रतिवादियों ने जहां अप्रभावित अवस्था में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत 1·545 वर्ष का समयातंराल रखा था, वहीं उनके वर्तमान विचारों के अनुसार इसी के लिए उपयुक्त समयातंराल 1·529 वर्ष है । इन्हीं प्रतिवादियों द्वारा अप्रभावित अवस्था में जहां अपने लड़कों एवं लड़कियों का विवाह औसत क्रमशः 16·514 वर्ष तथा 15·532 वर्ष की आयु में किया था वहीं इन्हीं प्रतिवादियों की दृष्टि में वर्तमान समय में लड़कों एवं लड़कियों के विवाह के लिए उपयुक्त आयु का औसत क्रमशः 16·632 वर्ष तथा 15·603 वर्ष है । जो कि सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु से काफी कम है ।

इस तरह स्पष्ट है कि जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों ने अधिक संतानोत्पत्ति जल्दी-जल्दी संतानोत्पत्ति एवं अपनी संतानों का विवाह उनकी कम आयु में किया तथा वर्तमाम समय में भी उनके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है ।

जब हम जनपद के कुल प्रतिवादियों के परिवार आकार निर्धारण में जनमाध्यमों की भूमिका का विश्लेषण करते हैं तो स्पष्ट है कि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में उनके द्वारा औसत 3·947 संतान उत्पन्न की गयी, जबकि प्रभावित होने के पश्चात उनके द्वारा औसत 2·346 संतान उत्पन्न की गयी तथा वर्तमान समय में औसत उनकी दृष्टि में उपयुक्त परिवार आकार 3·497 संतान का होना चाहिये ऐसा उनका विचार है । इसी तरह जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में, विवाह एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य इनके द्वारा औसत 1·168 वर्ष का समयातंराल रखा गया था, वहीं प्रभावित होने के पश्चात इनके वर्तमान विचारों में इसका उपयुक्त समयातंराल का औसत 1·503 वर्ष है । इसी तरह जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में इन्हीं प्रतिवादियों द्वारा दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत 1·596 वर्ष का समयातंराल रखा गया था, वहीं प्रभावित होने के पश्चात यह बढ़कर 1·819 वर्ष हो गया तथा वर्तमान समय में इनकी दृष्टि में इसका उपयुक्त समयातंराल का औसत 1·785 वर्ष है । इन्हीं कुल प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में अपने लड़कों एवं लड़कियों का विवाह उनकी औसत क्रमशः 16·767 वर्ष तथा 15·840 वर्ष की आयु में किया था, वहीं जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात अपने लड़कों एवं लड़कियों का विवाह उन्होंनें उनकी औसत क्रमशः 17·235 वर्ष तथा 15·991 वर्ष की आयु में किया तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में लड़कों एवं लड़कियों की उपयुक्त विवाह आयु का औसत क्रमशः 18·752 वर्ष तथा 17·221 वर्ष है जो कि अभी सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु से कम है ।

इस तरह जनपद के कुल प्रतिवादियों को परिवार आकार छोटा रखने के लिए उन्हें प्रभावित एवं प्रेरित करने में एवं उनके विचारों में परिवर्तन लाने में जनमाध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है ।

अध्याय-7 : सारांश, निष्कर्ष तथा नीतिपरक सुझाव

CHAPTER-7 : SUMMARY, FINDINGS & POLICY IMPLICATION SUGGESTION

अध्याय-7

सारांश, निष्कर्ष तथा नीति परक सुझाव

(Summary, Findings & Policy implication suggestion)

देश के आर्थिक विकास में, जनसंख्या वृद्धि मुख्य समस्या है । जनसंख्या में वृद्धि, उत्पन्न संतानो की संख्या पर निर्भर करती है तथा संतानों की संख्या ही परिवार आकार का निर्धारण करती है । देश की जनसंख्या वृद्धि रोकने के लिए परिवार आकार छोटा रखने से होने वाले लाभों की लोगों को जानकारी देने एवं उन्हें छोटा परिवार आकार रखने के लिए प्रेरित करने के लिए विभिन्न जनमाध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है ।

परिवार आकार निर्धारण में जनमाध्यमों की भूमिका, इलाहाबाद जिले के प्रभावी स्वरूप का एक अध्ययन, का सारांश अध्याय क्रमानुसार निम्न है :-

अध्याय-2 में सारांशतः यह निष्कर्ष पाया गया कि जनमाध्यमों का परिवार आकार तथा जनसंख्या नियोजन के संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका है । एक ओर जहाँ जनमाध्यमों का आधार सूचना संचरण सिद्धान्त है । जिसके अनुसार किसी भी सूचना या संदेश का संचरण कम्युनिकेटर एवं श्रोतागण के मध्य चैनल द्वारा होता है । इस सिद्धान्त के अनुसार सूचना अथवा संदेश का प्रभावी संचरण तब ही संभव है जब कि संचरण की प्रक्रिया में कोई बाधा न हो ।

जनमाध्यमों के विभिन्न साधन मुद्रण, दृश्य एवं श्रव्य के रूप में है । सैद्धान्तिक अध्ययन के विश्लेषण में यह निष्कर्ष सारांशतः पाया गया कि मुद्रण जनमाध्यम समाचार पत्र, पत्रिका, दीवार प्रिन्टिंग एवं पोस्टर, श्रव्य माध्यम रेडियो तथा दृश्य माध्यम चलचित्र, पारंपरिक लोकगीत

एवं नृत्य, तथा अन्य जनमाध्यम परिवार कल्याण केन्द्र तथा परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी रखने वाले मित्रों का, परिवार आकार छोटा रखने के लिए, लोगों को जानकारी देने एवं प्रभावित करने में महत्वपूर्ण योगदान है । सैद्धान्तिक विश्लेषण में यह तथ्य पाया गया कि समय के साथ-साथ जनमाध्यमों की उपलब्धता में ज्यों-ज्यों वृद्धि होती है, वैसे-वैसे लोग परिवार आकार छोटा रखने के लिए प्रेरित होते हैं । व्यवहारिक विश्लेषण में भी यह तथ्य उभर कर आया कि हमारे देश के योजनाकाल में जनमाध्यमों के तीव्र विकास के साथ-साथ लोगों को परिवार आकार छोटा रखने से होने वाले आर्थिक एवं सामाजिक लाभों की जानकारी प्राप्त हुई है तथा वे छोटा परिवार आकार सिद्धान्त को स्वीकारने लगे हैं ।

अध्याय-3 में सारांशतः यह निष्कर्ष पाया गया कि इलाहाबाद जनपद की जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर, देश की जनसंख्या की वृद्धि दर से अधिक है, तथा उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद जनपद की जनसंख्या सर्वाधिक है । ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों का अनुपात 4 : 1 है । जनपद में विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता, देश में जनमाध्यमों की उपलब्धता के लगभग समान है ।

अध्याय - 4 में, इलाहाबाद जनपद की जनांकिकी एवं जनमाध्यमों की स्थिति की, देश की स्थिति से समानता के कारण सर्वेक्षण हेतु इलाहाबाद जनपद का चयन किया गया तथा कुल 620 प्रतिवादियों में से प्रश्नोत्तरी पत्रक के प्रश्नों के उत्तर पूछ कर भरे गये । प्रतिवादियों में 494 (79·68 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्र के तथा 126 (20·32 प्रतिशत) नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादी थे ।

न्यादर्श जनसंख्या की सामाजिक-आर्थिक संरचना के विश्लेषण के अन्तर्गत यह तथ्य पाया गया कि लगभग तीन चौथाई प्रतिवादी 15 से 50 वर्ष आयु अतंराल के हैं तथा अभी संतानोत्पत्ति क्षमता रखते हैं । कुल प्रतिवादियों में 65·16 प्रतिशत हिन्दू, 30·65 प्रतिशत मुस्लिम तथा 4·19 प्रतिशत अन्य धर्मों के थे । जातिनुसार प्रतिवादियों के विवरणानुसार 55·16 प्रतिशत सामान्य जाति के, 30 प्रतिशत पिछड़ी जाति के एवं 14·84 प्रतिशत अनुसूचित जाति के प्रतिवादी थे । शैक्षिक स्तर के अनुसार 31·94 प्रतिशत प्रतिवादी अभी निरक्षर है तथा 16·77 प्रतिशत प्रतिवादी मात्र साक्षर हैं, जिसमें पुरूषों की अपेक्षा महिलाएं ज्यादा निरक्षर एवं कम पढ़ी-लिखी हैं । काम की प्रकृति के अनुसार 25 प्रतिशत प्रतिवादी कृषि में, 24·52 प्रतिशत नौकरी में, तथा 16·29 प्रतिशत मजदूरी में लगे हैं । कुल महिला प्रतिवादियों में 58·14 प्रतिशत महिलायें गृह कार्यों में लगी हैं । प्रतिवादियों की समस्त स्रोतो से कुल मासिक आय के विवरण के अनुसार सर्वाधिक 33·39 प्रतिशत प्रतिवादियों की मासिक आय 500-1000 रूपये हैं जबकि 29·84 प्रतिशत प्रतिवादियों की मासिक आय 1000-2000 रूपये हैं ।

. . . .

नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्षों का तुलनात्मक विश्लेषण करने पर अध्याय - 5 में सारांशतः यह निष्कर्ष पाया गया कि जनसामान्य में छोटा परिवार आकार का सिद्धांत अपनाने के लिए नगरीय क्षेत्र में सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम दूरदर्शन रहा, जिससे 64·23 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुये जबकि ग्रामीण क्षेत्र में सर्वाधिक प्रभावी जनमाध्यम रेडियो रहा जिससे 58·45 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुये । द्वितीय प्रभावी जनमाध्यम नगरीय क्षेत्र में रेडियो तथा ग्रामीण क्षेत्र में दूरदर्शन रहा । इस तरह

स्पष्ट है कि लोगों को प्रभावित करने में दूरदर्शन एवं रेडियो जनमाध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी । दीवार प्रिंटिंग एवं पोस्टर से कोई भी प्रतिवादी प्रभावित नहीं हुआ । नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादी, मुद्रण जनमाध्यम में समाचार पत्रों से §6·50 प्रतिशत§, पत्रिका से §4·88 प्रतिशत§ प्रतिवादी परिवार आकार छोटा रखने हेतु प्रभावित हुये । इस तरह नगरीय क्षेत्र में कुल 11·38 प्रतिशत प्रतिवादी मुद्रण जनमाध्यमों से प्रभावित हुये । ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादी मुद्रण जनमाध्यमों में समाचार पत्रों से 3·05 प्रतिशत, पत्रिका से 0·55 प्रतिशत, प्रतिवादी प्रभावित हुये इस तरह कुल 3·60 प्रतिशत प्रतिवादी मुद्रण जनमाध्यमों से प्रभावित हुये । तुलनात्मक दृष्टि से मुद्रण जनमाध्यमों से प्रभावित होने वाले नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों से अधिक है । इस तरह मुद्रण जनमाध्यम की अधिकांश उपलब्धता एवं प्रभाव नगरीय क्षेत्र पर ही रहा । इस तरह दूरदर्शन जनमाध्यम ने जहाँ नगरीय क्षेत्र के अधिकांश प्रतिवादियों को प्रभावित किया, वहीं अपने अल्प समय के दौरान उसने ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों को भी प्रभावित कर अपना द्वितीय स्थान प्रभाविकता की दृष्टि से रखा । भविष्य में भी दूरदर्शन ही छोटा परिवार आकार रखने के लिए लोगों को प्रभावित एवं प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा । दोनों क्षेत्रों के प्रभावित होने वाले सर्वाधिक प्रतिवादी, 20-30 आयु वर्ष युवा वर्ग के थे, जिससे नगरीय क्षेत्र के 66·67 प्रतिशत एवं ग्रामीण क्षेत्र के 64·26 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुये । इस तरह सर्वाधिक नवयुवक प्रतिवादी ही वृद्धों की अपेक्षा विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित हुये । निष्कर्षतः नयी पीढ़ी के नवयुवक प्रतिवादी जनमाध्यमों से प्रभावित होकर छोटा परिवार आकार सिद्धान्त को स्वीकारने लगे हैं । दोनों ही क्षेत्रों में सर्वाधिक प्रतिवादी 1980-90 के मध्य जनमाध्यमों द्वारा प्रभावित हुये, जिसमें नगरीय क्षेत्र

के 50·41 प्रतिशत तथा ग्रामीण क्षेत्र के 52·63 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुये । इस तरह जनमाध्यमों की प्रभाविकता की दृष्टि से 1980-90 का दशक महत्वपूर्ण रहा ।

विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता का नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र में तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट है कि जहाँ नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों में, सर्वाधिक 96·02 प्रतिशत प्रतिवादियों को दूरदर्शन जनमाध्यम उपलब्ध है, वहीं, ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों में सर्वाधिक 79·36 प्रतिशत प्रतिवादियों को रेडियों जनमाध्यम उपलब्ध हैं । समाचार पत्र एवं पत्रिका की उपलब्धता नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों को ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा अधिक है । सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रभावी दूरदर्शन जनमाध्यम की उपलब्धता ग्रामीण क्षेत्र में मात्र 30·77 प्रतिशत है जो कि नगरीय क्षेत्र की उपलब्धता से काफी कम है । प्रतिदिन विभिन्न जनमाध्यमों पर दिये जाने वाले समय का दोनों क्षेत्र के प्रतिवादियों में तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट है कि जहाँ नगरीय क्षेत्र में सर्वाधिक 74·60 प्रतिशत प्रतिवादी दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने में 1 घंटे का समय देते हैं वहीं ग्रामीण क्षेत्र में सर्वाधिक 33 प्रतिशत प्रतिवादी रेडियो के कार्यक्रम सुनने में 30 मिनट से 1 घंटा का समय देते हैं । इस तरह स्पष्ट है कि दोनों क्षेत्र के सर्वाधिक प्रतिवादी जिन जनमाध्यमों पर अधिक समय देते हैं, उन्हीं जनमाध्यमों द्वारा छोटा परिवार आकार रखने हेतु प्रभावित हुये ।

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों ने औसत 3·591 संतान उत्पन्न की, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों ने औसत 4·019 संतान उत्पन्न की। जनमाध्यमों से छोटा परिवार आकार रखने हेतु प्रभावित होने के पश्चात नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों ने औसत 1·586 संतान उत्पन्न की, वहीं

ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों ने औसत 2·492 संतान उत्पन्न की । इस तरह नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रेरित होकर ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की अपेक्षा औसत कम संतान उत्पन्न की । वर्तमान समय में एक परिवार में जहाँ नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादी औसत 2·063 संतान उपयुक्त मानते हैं वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादी औसत 3·862 संतान उपयुक्त मानते हैं ।

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था मे नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों ने विवाह के पश्चात् एवं प्रथम संतान उत्पत्ति के मध्य औसत 1·194 वर्ष का समयातंराल रखा, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों ने इसी के लिए औसत 1·163 वर्ष का समयातंराल रखा । इस तरह ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों ने विवाह के पश्चात प्रथम संतान जल्दी उत्पन्न की । वर्तमान समय में उनके विचारों के अनुसार इसी के लिए नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादी औसत 1·825 वर्ष तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादी औसत 1·421 वर्ष का समयातंराल उपयुक्त मानते हैं । किन्तु अभी सरकार द्वारा प्रचारित 2-3 वर्ष का समयातंराल अधिकांश लोगों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया है । जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों ने दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत 1·643 वर्ष का समयातंराल रखा वही ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों ने इसी के लिए औसत 1·588 वर्ष का समयातंराल रखा । जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों ने दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत 1·943 वर्ष का समयातंराल रखा, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों ने इसी के लिए औसत 1·694 वर्ष की समयावधि का अंतराल रखा । इस तरह जनमाध्यमों से नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादी अधिक प्रेरित हुये । वर्तमान

समय में नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में दो संतानों की उत्पति के मध्य उपयुक्त औसत समयातंराल 1·992 वर्ष है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में इसी के लिए उपयुक्त समयातंराल 1·733 वर्ष है । इस तरह जनमाध्यमों ने नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों के विचारों में परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी ।

जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों ने अपने लड़कों का विवाह अपनी औसत 20·09 वर्ष की आयु में किया जबकि ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों ने इसी अवस्था में अपने लड़कों का विवाह उनकी औसत 16·462 वर्षकी आयु में किया । जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों ने अपने लड़को का विवाह उनकी औसत आयु 22 वर्ष में किया जबकि ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् अपने लड़कों का विवाह उनकी औसत आयु 17·205 वर्ष की आयु में किया । वर्तमान समय में नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कों के लिए उपयुक्त विवाह आयु का औसत 20·82 वर्ष है, वही ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़कों के लिए उपयुक्त विवाह आयु का औसत 18·225 वर्ष है ।

इस तरह लड़कों के विवाह को अधिक आयु में करने के लिए जनमाध्यमों ने नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों को ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की अपेक्षा अधिक प्रभावित एवं प्रेरित किया । जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों ने अपने लडकियों का विवाह उनकी औसत आयु 17·978 वर्ष में किया तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों ने इसी अवस्था में लड़कियों का विवाह औसत आयु 15·471 वर्ष में किया । जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात्

नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों ने अपनी लड़कियों का विवाह उनकी औसत 18·60 वर्ष की आयु में किया तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् लड़कियों का विवाह उनकी औसत 15·951 वर्ष की आयु में किया । नगरीय क्षेत्र के प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में लड़कियों के लिए उपयुक्त विवाह आयु काऔसत 19·48 वर्ष है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों की वर्तमान दृष्टि में लड़कियों के लिए उपयुक्त विवाह आयु का औसत 16·644 वर्ष मानते हैं । स्पष्ट है कि जनमाध्यमों ने नगरीय एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्र के प्रतिवादियों को लड़कियों के विवाह देर से करने के लिए प्रभावित एवं प्रेरित किया । किन्तु वर्तमान समय में भी दोनों क्षेत्र के प्रतिवादियों की दृष्टि में लड़के एवं लडकी की उपयुक्त विवाह आयु का औसत, सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु के औसत से कम है ।

नगरीय क्षेत्र के सर्वाधिक 81·74 प्रतिशत प्रतिवादियों की दृष्टि में परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू कराने में सर्वाधिक प्रभावी उपयुक्त जनमाध्यम दूरदर्शन है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के सर्वाधिक 54·05 प्रतिशत प्रतिवादियों ने भी दूरदर्शन को सर्वाधिक उपयुक्त एवं प्रभावी जनमाध्यम बताया । स्पष्ट है कि दोनों क्षेत्र के प्रतिवादी परिवार कल्याण कार्यक्रम को लागू कराने में, दूरदर्शन जनमाध्यम की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारते हैं ।

इस तरह नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिवादियों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि जनमाध्यमों का प्रभाव, दोनों क्षेत्र के जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों पर पड़ा है । जबकि दोनों क्षेत्र के जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों के जनांकिकी चरों संबंधित विचारों पर कोई

परिवर्तन नहीं हुआ है । निष्कर्षतः दोनों क्षेत्र के प्रतिवादियों पर छोटा परिवार आकार सिद्धान्त स्वीकारने एवं अमल मे लाने के लिए जनमाध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है ।

अध्याय- 6 का सारांश के निष्कर्ष में यह पाया गया कि इलाहाबाद जनपद में कुल 620 प्रतिवादियों में से मात्र 484 (78·07 प्रतिशत) प्रतिवादी विभिन्न जनमाध्यमों से छोटा परिवार आकार रखने हेतु प्रभावित हुये । सर्वाधिक 46·49 प्रतिशत प्रतिवादी रेडियो जनमाध्यम से प्रभावित हुये । प्रतिवादियों को प्रभावित करने में दूसरा स्थान दूरदर्शन जनमाध्यम का रहा जिससे 33·26 प्रतिशत प्रतिवादी प्रभावित हुये । मित्रों से प्रभावित होने वाले प्रतिवादियों का प्रतिशत 13·02 रहा । विभिन्न आयु अंतराल जिसमें प्रतिवादी प्रभावित हुये ,की दृष्टि से सर्वाधिक 64·87 प्रतिशत प्रतिवादी 20 से 30 वर्ष की आयु अंतराल के थे । इस तरह प्रभावित होने वाले अधिकांशतः प्रतिवादी युवा वर्ग के थे । इस तरह सर्वाधिक नवयुवक प्रतिवादी ही वृद्धों की अपेक्षा विभिन्न जनमाध्यमों से प्रभावित हुये । निष्कर्षतः नयी पीढ़ी के नवयुवक प्रतिवादी जनमाध्यमों से प्रभावित होकर छोटा परिवार आकार सिद्धान्त को स्वीकारने लगे हैं । विभिन्न कैलेंडर वर्षों की दृष्टि से 52·06 प्रतिशत प्रतिवादी वर्ष 1980 से 1990 के मध्य प्रभावित हुये ।

प्रतिवादियों को विभिन्न जनमाध्यमों की उपलब्धता की दृष्टि से 40 प्रतिशत प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध हैं । 20·32 प्रतिशत प्रतिवादियों को पत्रिका उपलब्ध हैं । 20·32 प्रतिशत प्रतिवादियों को पत्रिका उपलब्ध हैं । 81·94 प्रतिशत प्रतिवादियों को रेडियो जनमाध्यम उपलब्ध है । 44·20 प्रतिशत प्रतिवादियों को दूरदर्शन उपलब्ध है । इसी तरह 8·88 प्रतिशत प्रतिवादियों को पोस्टर एवं दीवार पेंटिंग

57·59 प्रतिशत प्रतिवादियों को चलचित्र 53·38 प्रतिशत प्रतिवादियों को पारंपरिक लोकगीत एवं नृत्य, 15·64 प्रतिशत प्रतिवादियों को परिवार कल्याण केन्द्र एक जनमाध्यम के रूप में तथा 11·93 प्रतिशत प्रतिवादियों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी देने वाले मित्र उपलब्ध है । विभिन्न जनमाध्यमों पर प्रतिदिन दिये जाने वाले समय की दृष्टि से समाचार पत्रों पर सर्वाधिक 23·23 प्रतिशत प्रतिवादी 0-15 मिनट का समय प्रतिदिन व्यय करते हैं, पत्रिका पर 4·35 प्रतिशत प्रतिवादी 30 मिनट से 1 घंटा का समय व्यय करते हैं, रेडियो पर 35·32 प्रतिशत प्रतिवादी 30 मिनट से 1 घंटा का समय प्रतिदिन व्यय करते हैं । दूरदर्शन पर सर्वाधिक 25·81 प्रतिशत प्रतिवादी 1 घंटे से अधिक का समय व्यय करते हैं । इस तरह स्पष्ट है कि प्रतिवादियों द्वारा जिस जनमाध्यम पर प्रतिदिन अधिक समय दिया जाता है उसी से वे अधिक प्रभावित हुये ।

प्रतिवादियों द्वारा जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व तथा अप्रभावित अवस्था में सर्वाधिक 58·30 प्रतिशत प्रतिवादियों ने उसे 5 संतानें उत्पन्न की । जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में जनमाध्यमों से प्रभावित प्रतिवादियों ने औसत 3·605 संताने उत्पन्न की जबकि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् औसत 2·346 संतान उत्पन्न की तथा वर्तमान समय में उनके विचारों में 3·074 संतान का एक परिवार में होना उपयुक्त है । जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों ने अप्रभावित अवस्था में औसत 5·079 संतान उत्पन्न की तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में एक परिवार में औसत 5 संतान होनी चाहिए । कुल प्रतिवादियों का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में उनके द्वारा औसत 3·947 संतान उत्पन्न की एवं प्रभावित होने के पश्चात् उनके द्वारा

औसत 2·346 संतान उत्पन्न की गयी तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में एक परिवार में औसत 3·497 संतान होना उपयुक्त है । इस तरह स्पष्ट है कि जहाँ जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों के परिवार आकार संबंधी दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन नहीं आया है, वहीं जनमाध्यमों से प्रभावित हुये एवं कुल प्रतिवादियों के परिवार आकार संबंधी विचारों में भी परिवर्तन आया है तथा वे न केवल छोटा परिवार आकार के सिद्धान्त को स्वीकारते हैं बल्कि जनमाध्यमों से प्रेरित होकर उन्होंने पहले कम संतानोत्पत्ति भी की ।

विवाह के पश्चात एवं प्रथम संतान की उत्पति के मध्य रखे जाने वाले समयातंराल के संबंध में, जनमाध्यमों से प्रभावित हुये प्रतिवादियों ने प्रभावित होने के पूर्व औसत 1·167 वर्ष की समयावधि रखी, वहीं जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात उनके विचारों में उपयुक्त इसी के लिए समयातंराल का औसत 1·591 वर्ष है । अप्रभावित प्रतिवादियों ने अप्रभावित अवस्था में इसी के लिए औसत 1·173 वर्ष का समयातंराल रखा था, उनकी वर्तमान दृष्टि में अभी इसी के लिए औसत 1·191 वर्ष का समयातंराल उपयुक्त है । कुल प्रतिवादियों का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एव अप्रभावित अवस्था में इसी के लिए औसत 1·168 वर्ष का समयातंराल रखा गया तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में इसी के लिए औसत 1·503 वर्ष का समयातंराल उपयुक्त है । इस तरह प्रभावित तथा कुल प्रतिवादी जनमाध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण ही विवाह एवं प्रथम संतान की उत्पत्ति के मध्य पहले से अधिक समयातंराल रखने को स्वीकारने लगे हैं, जबकि अप्रभावित प्रतिवादियों के दृष्टिकोण में अभी इस संबंध में कोई परिवर्तन नहीं आया है ।

दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य रखे जाने वाले समयातंराल के संबंध में, जनपद के जनमाध्यमों से प्रभावित हुये प्रतिवादियों ने प्रभावित होने के पूर्व औसत 1·621 वर्ष का समयातंराल रखा गया, वही जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात् इसी के लिए औसत 1·819 वर्ष का समयातंराल रखा गया तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में इसी के लिए उपयुक्त समयातंराल का औसत 1·857 वर्ष है। जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों ने अप्रभावित अवस्था में दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत 1·545 वर्ष का समयातंराल रखा गया, वही उनकी दृष्टि में वर्तमान समय में इसी के लिए उपयुक्त समयातंराल का औसत 1·529 वर्ष है। कुल प्रतिवादियों का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में जहाँ उन्होंने दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य औसत 1·596 वर्ष का समयातंराल रखा, वही जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात इसी के लिए औसत 1·819 वर्ष का समयातंराल रखा गया तथा वर्तमान समय में उनके विचारों की दृष्टि में इसी के लिए उपयुक्त समयातंराल का औसत 1·785 वर्ष है। इस तरह जनमाध्यमों से अप्रभाबित रहे प्रतिवादियों के विचारों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है जबकि जनमाध्यमों से प्रभावित हुए तथा कुल प्रतिवादियों ने जनमाध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण ही दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य पहले से अधिक का समयातंरात रख कर देर से संतानोत्पत्ति की एवं उनके वर्तमान समय के विचारों में भी परिवर्तन आया है तथा वे अब दो संतानों की उत्पत्ति के मध्य पहले से अधिक का समयातंराल उपयुक्त मानते हैं।

प्रतिवादियों के लड़कों के विवाह के समय की आयु का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि जनमाध्यमों से प्रभावित हुये प्रतिवादियों ने प्रभावित होने के पूर्व अपने लड़कों का विवाह औसत 17·741 वर्ष की आयु में किया, तथा प्रभावित होने के पश्चात् लड़कों का विवाह औसत 17·235

का विवाह उनकी औसत 15·991 वर्ष की आयु में किया तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में लड़कियों के विवाह के लिए उपयुक्त विवाह आयु का औसत 17·676 वर्ष है । जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों ने अप्रभावित अवस्था में अपनी लड़कियों का विवाह उनकी औसत 15·532 वर्ष की आयु में किया तथा उनकी दृष्टि में इसी के लिए वर्तमान समय में उपयुक्त विवाह आयु का औसत 15·603 वर्ष है । कुल प्रतिवादियों का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पूर्व एवं अप्रभावित अवस्था में उनके द्वारा अपनी लड़कियों का विवाह उनकी औसत आयु 15·840 वर्ष में किया, जबकि जनमाध्यमों से प्रभावित होने के पश्चात अपनी लड़कियों का विवाह उनकी औसत आयु 15·991 वर्ष में किया तथा वर्तमान समय में उनकी दृष्टि में लड़कियों के विवाह हेतु उपयुक्त आयु का औसत 17·221 वर्ष है । इस तरह स्पष्ट है कि जनमाध्यमों से अप्रभावित रहे प्रतिवादियों की लड़कियों के विवाह आयु के दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन नहीं आया है । इसके विपरीत जनमाध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण प्रभावित हुये तथा कुल प्रतिवादियों ने प्रेरित होकर लड़कियों का विवाह पहले से अधिक आयु में किया तथा वर्तमान समय में वे लड़कियों के विवाह हेतु पहले से अधिक की विवाह आयु को उपयुक्त मानते हैं । यद्यपि यह औसत सरकार द्वारा निर्धारित लड़कियों की विवाह आयु से कम है ।

प्रतिवादियों की दृष्टि में सर्वाधिक परिवार नियोजन का उपयुक्त साधन का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि अधिकांशतः 50·32 प्रतिशत प्रतिवादी आत्मसंयम को परिवार नियोजन का उपयुक्त साधन मानते हैं जबकि उनकी दृष्टि द्वितीय उपयुक्त साधन निरोध है जिसे 26·13 प्रतिशत

प्रतिवादी उपयुक्त मानते हैं । कुल प्रतिवादियों में 29·35 प्रतिशत पुरूष प्रतिवादी आत्मसंयम को ही उपयुक्त परिवार नियोजन का साधम मानते हैं इसी तरह 20·97 प्रतिशत महिला प्रतिवादी भी आत्मसंयम को परिवार नियोजन का उपयुक्त साधन मानते हैं । नसबन्दी को पुरूष एवं महिला दोनों में नगण्य प्रतिवादी ही उपयुक्त मानते हैं । अतः प्रतिवादियों में नसबन्दी लोकप्रिय साधन नहीं है ।

प्रतिवादियों को परिवार नियोजन के आत्म संयम साधन की जानकारी सर्वाधिक 15·32 प्रतिशत प्रतिवादियों को रेडियों से, नसबन्दी की जानकारी सर्वाधिक 2·90 प्रतिशत प्रतिवादियों को दूरदर्शन से निरोध की जानकारी सर्वाधिक 8·23 प्रतिशत प्रतिवादियों को समाचार पत्र से, कापर टी की जानकारी सर्वाधिक 0·97 प्रतिशत प्रतिवादियों को दूरदर्शन से, लूप की जानकारी सर्वाधिक 1·29 प्रतिशत प्रतिवादियों को लूप से, खाने वालो गोलियों की जानकारी सर्वाधिक 4·19 प्रतिशत प्रतिवादियों को मित्रों से, तथा सुरक्षित काल की जानकारी सर्वाधिक 3·87 प्रतिशत प्रतिवादियों को मित्रों से हुई । जनमाध्यमों के विभिन्न उपकरणों में विज्ञापन, लेख तथा फोटो फीचर में विभिन्न प्रतिवादियों की दृष्टि में 36·36 प्रतिशत प्रतिवादी विज्ञापन को, 19·42 प्रतिशत प्रतिवादी लेख को तथा 44·22 प्रतिशत प्रतिवादी फोटो फीचर को सर्वाधिक प्रभावी मानते हैं । निष्कर्षतः अधिकांश प्रतिवादी फोटो फीचर को ही सर्वाधिक प्रभावी उपकरण मानते हैं ।

जनमाध्यमों की उपलब्धता की कठिनाई का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि जिन प्रतिवादियों को समाचार पत्र उपलब्ध नहीं है उनमें सर्वाधिक 40·86 प्रतिशत अशिक्षा की, जिन प्रतिवादियों को पत्रिका

उपलब्ध नहीं है उनमें सर्वाधिक 38·06 प्रतिशत अशिक्षा को जिन प्रतिवादियों को रेडियो उपलब्ध नहीं है उनमें 91·07 प्रतिशत आर्थिक स्थिति को, जिन प्रतिवादियों को दूरदर्शन उपलब्ध नहीं है उनमें सर्वाधिक 80·35 प्रतिशत प्रतिवादी आर्थिक स्थिति को, अनुपलब्धता का प्रमुख कारण मानते हैं ।

जनमाध्यमों की परिवार आकार छोटा रखने में लोगों को पूर्ण रूप से प्रभावित एवं प्रेरित करने में, अधिकांश प्रतिवादियों की दृष्टि में बाधक कारण कार्यक्रमों का अंग्रेजी में होना, सामुदायिक केन्द्र का न होना आदि मानते हैं । अधिकांशतः प्रतिवादियों के सुझाव के अनुसार जनमाध्यमों द्वारा छोटा परिवार आकार सिद्धान्त को लोगों को स्वीकार कराने एवं उस पर अमल कराने हेतु संबंधित कार्यक्रमों की भाषा हिन्दी होनी चाहिए तथा सामुदायिक केन्द्रों का विकास किया जाना चाहिये ।

अधिकांश 59·68 प्रतिशत प्रतिवादियों की दृष्टि में परिवार कल्याण कार्यक्रम से लोगों को प्रभावित एवं प्रेरित करने में वर्तमान समय में दूरदर्शन ही उपयुक्त प्रभावी जनमाध्यम है । रेडियो जो कि विश्लेषण में अब तक लोगों को प्रभावित करने में सबसे प्रभावी जनमाध्यम था, किन्तु अब लोगों के विचार में दूरदर्शन जनमाध्यम अपने श्रव्य एवं दृश्य दोनों विशेषताओं के कारण अधिक लोकप्रिय एवं प्रभावी है । दूरदर्शन को पूर्ण प्रभाविकता तभी संभव है जब कि इसकी उपलब्धता ग्रामीण क्षेत्र में सभी को हो । जनमाध्यमों के विभिन्न उपकरणों में विज्ञापन, लेख तथा फोटो फीचर में विभिन्न प्रतिवादियों की दृष्टि में 36·36 प्रतिशत प्रतिवादी विज्ञापन को, 19·42 प्रतिशत प्रतिवादी लेख को तथा 44·22 प्रतिशत प्रतिवादी फोटो फीचर को सर्वाधिक प्रभावी मानते हैं । निष्कर्षतः अधिकांश प्रतिवादी फोटो फीचर को ही सर्वाधिक प्रभावी उपकरण मानते हैं ।

इस तरह सारांशतः निष्कर्षतः स्पष्ट है कि जनमाध्यमों ने अधिकांश लोगों का परिवार आकार छोटा रखने हेतु कम संतानोत्पत्ति, संतानोत्पति का समयातंराल अधिक रखने, अधिक आयु में विवाह करने हेतु लोगों के विचारोंमेंन केवल परिवर्तन किया है बल्कि छोटा परिवार आकार रखने हेतु प्रेरित भी किया है । यद्यपि अभो इसमें पूर्ण सफलता नहीं मिली है । किन्तु फिर भी जनमाध्यमों ने लोगों को छोटा परिवार आकार रखने हेतु प्रभावित एवं प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है ।

नीति परक सुझाव

भारत के आर्थिक विकास एवं सुदृढ़ भारत के निर्माण हेतु देश की जनसंख्या में तीव्र वृद्धिदर की समस्या देखते हुये सरकार द्वारा सन् 2000 ई0 तक विशुद्ध पुनरूत्पादन दर एक करने का लक्ष्य है । इस लक्ष्य की प्राप्ति से निम्न परिणाम प्रत्याशित हैं :- परिवार में बच्चों की औसत संख्या 2·3 बच्चे हो जायेगी। जन्मदर 21प्रति हजार हो जायेगी, मृत्यु दर 9 प्रति हजार पर रहेगी । शिशु मृत्यु दर 60 प्रति हजार जनसंख्या हो जायेगी तथा दम्पति सुरक्षा दर 60 प्रतिशत हो जायेगी।

उपरोक्त लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अध्ययन के विश्लेषण के पश्चात् निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं :-

छोटा परिवार आकार एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम को सिर्फ परिवार कल्याण विभाग का ही कार्यक्रम नहीं मानना चाहिए बल्कि इसे लोगों तक छोटा परिवार आकार सिद्धान्त स्वीकार कराने तथा प्रेरित कराने के लिए सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय पर भी दायित्व डालना चाहिये ।

अब यह स्पष्ट हो चुका है कि लोगों को छोटा परिवार आकार रखने के लिए प्रभावित एवं प्रेरित करने में जनमाध्यम ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं । अतः जनमाध्यमों की उपलब्धता एवं उन्हें प्रभावी बनाने हेतु विशेष बल दिया जाना चाहिये ।

ग्रामीण क्षेत्र एवं महिलाओं के शैक्षिक स्तर को उठाने हेतु कारगर व्यवस्था की जानी चाहिये जिससे वे मुद्रण जनमाध्यमों से जानकारी प्राप्त कर सके । साथ ही विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा जनसंख्या शिक्षा के माध्यम

सेयोन. शिक्षा देने पर भी विचार करना होगा ।

ग्रामीण क्षेत्र में समाचार पत्र, पत्रिका, की उपलब्धता की स्थिति बहुत ही दयनीय है । शैक्षिक स्तर उठाने के साथ-साथ, विभिन्न क्षेत्रों में सामुदायिक केन्द्रों के माध्यम से परिवार आकार छोटा रखने, होने वाले लाभों की जानकारी देने वाले, पत्र एवं पत्रिकाओं को नियमित उपलब्ध कराया जाना चाहिये ।

दूरदर्शन जो कि वर्तमान समय में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रभावी जनमाध्यम उभर कर सामने आया है उसकी ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्धता बढ़ायी जानी चाहिये तथा कम से कम प्रत्येक एक गांव में एक दूरदर्शन सेट जनसामान्य को कार्यक्रम दिखलाने हेतु सरकार द्वारा निशुल्क उपलब्ध कराया जाना चाहिये । साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में विद्युत व्यवस्था का सुधार किया जाना चाहिये ।

दूरदर्शन पर परिवार कल्याण से संबंधित दिखाये जाने वाले कार्यक्रमों का समय बहुत ही कम होता है तथा इसे अक्सर रात्रि 9 बजे लोग जब खाना खाते रहते हैं तब दिखाया जाता है । जिससे लोगों को खाना खाते समय घिन लगती है । अतः दूरदर्शन पर परिवार कल्याण कार्यक्रमों की समयावधि बढ़ायी जानी चाहिए तथा इनका प्रसारण सायंकाल एवं पिक्चर आदि के दिखाते समय किया जाना चाहिये ।

दीवार पेंटिंग एवं पोस्टर से लोग परिवार आकार छोटा रखने के लिए प्रभावित नहीं हुये । इसके लिए सरकारी प्रयास किये जाने चाहिये तथा इन्हें सार्वजनिक एवं प्रथम दृष्टा स्थान पर लगाना चाहिये । कुछ

स्लोगन निम्न है जो कि लोगों को प्रभावित एवं प्रेरित कर सकते हैं :-

"खर्चा कम पालन आसान,
जब हो केवल दो संतान ।

धर्म के हम कोई हों,
बच्चे केवल दो ही हों ।

लड़की को तब व्याहिए उम्र अठारह साल ।
हो लड़का इक्कीस का इसका रखिये ख्याल ।

खुशहाली का एक मंतर ।
दो बच्चों में तीन वर्ष का अंतर ।"

एक उल्लेखनीय तथ्य यह उभर कर आया कि मित्रों से प्रभावित होने वाले प्रतिवादियों में अधिकांशतः महिला प्रतिवादी हैं । इस तरह लोक लज्जा के कारण, महिलाओं की ऐसी स्वयं सेविकाओं तथा दाइयों की उपलब्धता करायी जाय जो उन्हें व्यक्तिगत रूप से जाकर विभिन्न परिवार नियोजन के साधनों की जानकारी दे । सुरक्षित काल एक प्रभावी परिवार नियोजन का उपाय है उसमें इन सेविकाओं की सेवा लोगों को जानकारी देने में ली जा सकती है ।

परिवार कल्याण केन्द्रों की लोगों को छोटा परिवार आकार अपनाने में विशेष भूमिका नहीं रही है । इसका प्रमुख कारण लोगों को जबरदस्ती नसबन्दी का भय रहा है । अतः इसका इस तरह प्रचार किया जाना चाहिये कि लोगों में भय एवं अंधविश्वास समाप्त हो ।

जनमाध्यम न केवल लोगों को अपने कार्यक्रमों से परिवार आकर छोटा रखने के कार्यक्रमों द्वारा प्रभावित कर सकते हैं बल्कि व्यक्तियों की बच्चे पैदा करने की कामना को विभिन्न मनोरंजन कार्यक्रमों द्वारा रोक सकते हैं ।

गरीब पति-पत्नी जिसके लिए वासना के सिवा कोई दूसरा मनोरंजन नहीं होता, उन्हें विभिन्न मनोरंजक कार्यक्रमों द्वारा मनोरंजन कराया जा सकता है ।

जनमाध्यमों को अधिक प्रभावी बनाने हेतु अंग्रेजी की जगह हिन्दी भाषा का प्रयोग विभिन्न कार्यक्रमों के प्रसारण में किया जाना चाहिये।

जहाँ तक एक परिवार में आदर्श बच्चों की संख्या का प्रश्न है, फिलहाल 2 बच्चों का ही लक्ष्य उपयुक्त है । विवाह के पश्चात् प्रथम संतान की उत्पत्ति का लक्ष्य कम से कम दो वर्ष तथा दो बच्चों की उत्पत्ति के मध्य का समयातंराल कम से कम तीन वर्ष लक्षित किया जाना चाहिए लड़कों एवं लड़कियों की विवाह आयु का औसत बढ़ाकर क्रमशः 24 एवं 20 वर्ष करना चाहिये । ग्रामीण क्षेत्र में अभी बाल विवाह का प्रचलन है तथा अभी सरकार द्वारा निर्धारित विवाह आयु से कम आयु पर विवाह होता है, अतः वहाँ सख्ती एवं कानूनों का कड़ाई से पालन कर इस प्रथा को बन्द किया जाना चाहिये ।

स्वयं सेवी संस्थाओं को ज्यादा सक्रिय दिलचस्पी लेने के लिए उत्प्रेरित करना होगा । अभी तक इनका कार्य नगरों में ही सीमित है, इनको ग्रामीण क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा निभानी होगी ।

भारत गांव में बसता है क्योंकि 75-80 प्रतिशत लोग गांवों में ही है । आर्थिक विकास के साथ मृत्यु दर एवं जन्म दर दोनों घटती है अतः अन्तग्रामीण विकास कार्यक्रम के साथ परिवार कल्याण कार्यक्रम को भी मिलाकर जनमाध्यमों द्वारा प्रसारित किया जाना चाहिये ।

जनमाध्यमों द्वारा लोगों के दिलों दिमाग से नसबन्दी आप्रेशन का भय समाप्त किया जाना चाहिये तथा इस दिशा में दूरदर्शन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है । साथ ही साथ जनमाध्यमों द्वारा लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिये कि वे संतति निरोध की किसी भी एक विधि को अवश्य अपनाये ।

गर्भवती माताओं एवं नवजात शिशुओं की मृत्युदर अधिक होने के कारण लोग अधिक बच्चे पैदा करने की ओर अग्रसर होते हैं अतः प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर प्रसव की सुरक्षित सुविधा देनी होगी तथा बच्चों के रोग प्रतिरक्षण की सुविधा देनी होगी । तथा इसकी लोगों तक जानकारी विभिन्न जनमाध्यमों द्वारा दी जा सकती है ।

प्रशासन तंत्र को अधिक सक्षम एवं कुशल बनाने के लिए प्रोत्साहन नीतियां अपनायी जानी चाहिये । इस कार्यक्रम के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण केन्द्र तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय दोनों में से एक-एक प्रशासक को जिम्मेदार बनाना होगा साथ ही सीमाबद्ध, समयबद्ध प्राथमिकता के आधार पर कार्यक्रम बनाया जाये ।

अतः स्पष्ट है कि जनमाध्यमों की उपलब्धता बढ़ाकर तथा उन्हें अधिक प्रभावी बनाकर और अधिक लोगों को छोटा परिवार आकार रखने हेतु प्रेरित किया जा सकता है ।

भविष्य में इस विषय पर और अधिक शोध की आवश्यकता है । इस शोध प्रबन्ध पर राष्ट्रीय स्तर पर शोध कार्य की आवश्यकता है तथा इसे और अधिक जनांकिकी चरों तथा और अधिक जनमाध्यमों पर विस्तृत करने की आवश्यकता है, जिससे विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों का अलग-अलग विश्लेषण कर, जनमाध्यमों को वहाँ की स्थिति के अनुरूप प्रभावी बनाकर लोगों को परिवार कल्याण कार्यक्रम अपनाने हेतु प्रेरित किया जा सके ।

BIBLIOGRAPHY

Agarwal S.N., Some problem of India's Population. Vora & Co. Publishers Ltd. Bombay-2.

Agarwal S.N., Mean age at Marriage and widowhood in India, Quoted in family planing news, Vol. 2 No. 10, Oct. 1961.

Agarwal S.N., Social and Cultural factors affecting fertile in India. Proceeding of the seventh International Planned Pasanthood Federation, Singapore, Feb. 1963.

Agrawals S.N., India's population problems in prospective planning. Asia Pub. House, Bombay.

Agrawals S.N., A Domographic study of six urbanising villages. Delhi, Institute of Economic Growth, 1964.

Agrawals S.N., Age at Marriages in India. Allahabad, Kitab Mahal, 1962.

Altekar A.S., The Koran (Translated), Peuguia Books, 1961.

Bagehot, W. Economic Studies (R.H. Hutton ed, London 1888).

Baljeet Singh, Five years of Finance, J.K. Institute Manograph No - 6.

Barcley, George, W. Techniques of population Analysis, John Willy & Sons, NEW YORK.

Bean Lal, Population and family planning Manpower and Training An occasional paper of the population Council, New York.

Belshow Harace, Population growth and levels of Consumption George Allen & Unwin Ltd. London.

Blacker, C.P, Voluntary Sterilination, The Garden City Press Limited, Letch worth.

Bose Ashish, Patterns of population Change in India, 1951 - 61, Allied Publishers, New Delhi.

Bowen, E. Hypotuesis of Population growth.

Bowen, Ian population, James Nishet & Co. Ltd. Cambridge, 1954.

Bhulan, Fertility pattern in the rural parts of Mirzapur District-1976.

Braber Ralf, Problem of Modern Mass Communication.

Burgeas and Look, "Family"

Bailey, W.B., Urban and rural new England, Quart. Publ. Amer. Statist. Asso. Vol. 8.

Canlton, C.G., The medieval Village (Cambridge 1925)

Case Saunders A.M., Differential fertility. Proc, World population Conference, London (Arnold).

Cass Saunders, World population, Oxford 1937.

Chandra Shanker, The Hindu Joint Family, Social Fores, Chapel Hist, March 1943.

Chandra Shanker, The Population Problems of India and Pakistan, Penguin Science News, 140-13, London 1949.

Chandra Shanker, Population and Planned parethood in India, London Allen & Unwin 1955.

Charles E., The changing singe of the family in Canda. Canda Dominion. Bureau of statics, Eigghts census of Canada Census monograph No-1 Ottawa 1948.

Chen Peters J., Public Policy and population Change in Singapore. The population Council, New York.

Coal, A.J. and Hooves, E.M. Population growth and Economic Development in India 1956.

Coale and Hoover, Population growth and Economic Development in low income countries.

Cox, Harald, The problems of population Jonathan cape, London 1922.

Coogan T.F., Catholic fertility among 4891, Florida Catholic Families. The Catholic University of America, studies in Socilogy Vol. 20, Washington 1946.

Coonty S.N., Population theories and the economic interpretation, London, 1957.

Carr Saunders, A.M., Differential Fertility Proc. World Population Conference, London (Aruold),

Chandrashekharan, The Mysore Population Study. A co-operative project of the U.N. and Government of India.

Chandrashekhar S., Census and Statistics in india Chidambaram Annamalai University, 1948.

Chandrashekhar, Caste class and colour in India. The Scientific Monthly Washington, Feb. 1946.

Chandrashekhar, The Hindu Joint Family, Social Forces, Chapel Hill, March, 1943.

David Brincley, Americal Society of News paper, Editor proceeding 1965.

Desai, P.B., A survey of Research in Demograpy, ICSSR, Popular Prakashan Bombay 1975.

Desh Mukh, D., Aspects of population policy in India, Council for social Development, New Delhi.

Dandekar, Kumudini, Demographic Survey of six rural communities, Bombay, Asia Pub. House, 1959.

Dandekar, V.M., Dandekar Kumudini, Gokhale Institute of Politics and Economics Publication No. 27.

Dandekar, Kumudini, Sovani, N.V., Fertility Survey of Nakik, Kulaba and Satana North District Gokhale Institute of Politics and Eco. Publication No. 31.

Davis, Kingeley, Population of India and Pakistan, Princeton University Press, 1951.

Driver, D. Edwill, Differential fertility in central India, Princeton University Press.

Davis Kingalay, Malthus and the Theory of population in P.S. Lozarsfeld & M. Hosenburg eds. The language of Social Research Glencee, 1955.

Davis Kingalay, The population of India - For Eastern Survey, New York, April 19, 1945.

Einenga W., Demographic Factors and savings, North Holland Publishing Company - Amsterdam, 1961.

Eversley, D.E.C., Social Theories of Fertility and the Malthusion Debate, Oxford University Press, London, 1959.

Edin, K.A. & B.P. Huchison, Studies of differential fertility in Sweden, London, P.S. King & Son. 1935.

El Badry M.A., Some aspect of fertility in Egypt. The M.M.F. quarterly Vol. XXXIV No. 1, Jan. 1956.

Elderton Ethel M. Army Barrington H., Egith M.M. De G Lamotte, H.J. Laski & Karl Pearson.,
On the correlation of Fertility with Social value. A comparative study Eugenies Lab. Mem. No. 18, 1931.

Engelman, G.J., Education not the cause of race decline population, Sci., Monthly, Vol. 63, 1903.

Fagley Richard M. The population Explosion and Christian Responsbility, OX Ford University Press. New York, 1960.

Fawcett James T., Psychology & population, The population Council, New York 1970.

Freedman Ronald, Family Planning stesilty and population growth Mc GRAW-HILL BOOK Company, New York 1959.

Fried Man David, LAISSEZ-FAIRE in population, An occasional paper of the population council 1972.

Field, J.A., Education not the cause of race decline population, Sci., Monthly, Vol. 63.

Field, J.A., Essays on population and other papers. H.F. Hohman Ed, and Camp Chicago, 1931.

Finch, F.H. & C.L. Nemzek, Differential Fertility Four Soc. Psychol. Vol. 6, 1935.

Frank Lorimer, Culture and Human Fertility, UNESCO Paris, 1954.

Freedman R. & Whelpton, P.K., Fertility planning and Fertility rates by adherence to traditions. The M.M.F. quarterly (U.S.A.) Vol. XXX, No. 1, Jan., 1958.

Guttmacher Alan H., Birth control, Ballantine Books, New York 1963.

Ghosh, B., Pressure of population and Economic Efficiency in London.

Gaur Amba Pd., Population Problem in India.

Glass, D.V. & Blacker, C.P., Population Policies and Pop. Fertility.

Glass D.V. & Eversley (D. Eo) et., Population in History, Essays in Historical Demography.

Griffith, J.B., Education and size of family in China Hered. Vol. 17.

Gupta, P.B. and C.R. Malanker, Fertility differential with level of living and adjestment of fertility birth and death rates (Sankhya Series) B Vol. 25 parts 1 & 2, No. 1963.

Hanser Philip M., The study of population, Asia publishing House, New Delhi 1961.

Hansar Philip M., Population Perspectives, Rutgers University Press, New Brunswick 1960.

HASKOVES - Introduction to News Agency Journalism, International Organization of Journalists.

Henry Louis (Translated by Sheps Mindel Co.) on the Measurement of Human Fertility, Else viesement of Human Fertility, Else-vier Publishing Company London 1972.

Hussain, I.Z., An Urban Bertility field, Published by the Demographic Research Centre, Lucknow University, Lucknow, 1970.

Honshaw, Adaptive Human Fertility.

Horon, D., On the relation of fertility in man to social status and on the canges in this relation that have taken place during the last fifty years (Drspers Company Research Memories). Studies in National Deterioration, London, 1906.

Huchinson & Karl Edin., Studies of differential fertility in Swedon.

Jones, Gavin, Population growth and educational planning in Developing Nations 1975.

John Hohenberg, The professional Journalist IV Edition 1980.

Jones Joseph Marion, Over population means poverty, Center-fen International Economic Growth 1962.

Kiser, Clyde V., Research in Family Planning, Princeton University Press, 1962.

Koya Yoshio, Pioneering in family planning, population council New York 1963.

Lathi B.P., Communication System.

Li, Ching Chun, Population Genetics, The University of Chicago Press 1955.

Meadoms Denella H., The limits to growth, PAN book Ltd. London.

OHLIN GORAN, Population Control and Economic Development, centre of the organisation for Economic Co. operation and development.

Ram Prakash Mani Tripathi, A study of Attitude towards family planning in Deoria District 1977.

RIVERS, Mass (Communication).

Singer S Fred, Is there an optimum level of population Mc GRAW - Hill Book Company, New Delhi.

Som Ranjan Kumar, Recall Lapse in Demographic Enquiries, Ass Publishing House, New Delhi 1973.

Spengler Joseph J., Population Theory and Policy, The free Press of Glencoe in Edition 1963.

Srikantan K.S., The family planning program in Socio economic context, The population council, New York.

Symonds Richard, The United Nations and the population question, 1945-1970, Mc GRAW-HILL Book Company, New York.

Wilson Hicks - Words and Picture 1952.

Wilkinson & Bhandarkar, Methodlogy and Technique of social Research, Himalya Pub. House Bombay.

Young Lowise B., Population in perspective, Oxford University Press, New York 1968.

PAPERS AND ARTICLES

A study of Births order states of India by S.P. Jain, Indian Journal of Medical Research No. 2, April, Vol. XXXIV, 1951.

Census of India 1991 paper-1 of 1992 Vol. 1.11

Hajnal, Hohn., Age at Marriage and Proportions Marrying Population studies Vol. VII, No. 2, pp. 111-136, Nov., 1953.

Family Planning and population programmes, Proceedings of the International Conference on Family Planning Program, Geneva, Aug. 1965. University of Chicago, Presston.

Poverty and Many Children a Census of Inadequate Nourishment Upbringing of Children, Journal of Family Welfare, June 1961.

Social Mobility and OccupationalCarreer Pattern by S.M. and R. Beadox, American Journal of Sociology March, 1952.

Trands and differentials in American age at marriage by J.R. Role, Milbank Memorial Fund Quarterly, Vol. XL III, No. 2, April 1965, Part I, Pages 219-233.

The Journal of family welfare Vol. XXI No. 3 March-75.

The Journal of family welfare Vol. XXI No. 4 June-75.

Varta Research Journal of the Indian Institute of Economic Research Vol. XII April and October 1991 No. 1 & 2.

अशोक कुमार - जनसंख्या एक समाज के वैज्ञानिक अध्ययन । उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ । 1978 ।

अम्बिका प्रसाद बाजपेयी - समाचार पत्र कला 1969

खरे एवं सिन्हा-जनांकिकी । साहित्य भवन लिमिटेड इलाहाबाद । 1983

जीवन चन्द्र पंत - जनांकिकी । गोयल पब्लिशिंग हाउस मेरठ । 1981

प्रवीण दीक्षित, जनमाध्यम और पत्रकारिता (प्रथम खण्ड) 1980

प्रवीण दीक्षित, जनमाध्यम और पत्रकारिता (द्वितीय खण्ड) 1980

मंगल सेन, डिक्शनरी आफ पालिप्रापइनेन्स भाग-1

रवीन्द्र मुकर्जी - सामाजिक सर्वेक्षण व सामाजिक शोध विवेक प्रकाशन दिल्ली 1984 ।

सरकार सेलेक्ट इठिकप्शन्स कलकत्ता 1946

श्रीवास्तव - जनांकिंकी स्थिति तकनीक एवं अध्ययन ।

—